Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शि०
१६६

डॉ० एस० एल० पचौरी

हिन्दी भाषा

२

विद्या[illegible] एण्ड सन्स
लखनऊ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हिन्दी भाषा द्वितीय भाग

भारत सरकार द्वारा उपलब्ध कराये गये रियायती मूल्य के कागज पर मुद्रित।

सरकार द्वारा निर्धारित मूल्य : बारह रूपये अस्सी पैसे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रिय विद्यार्थियों—

इस पुस्तक की निम्नलिखित विशेषतायें हैं :—

१. इस पुस्तक के लेखक में बिशेष रूप से यह ध्यान रखा गया है कि इसमें वह सभी सामग्री हो जो स्नातकीय स्तर के छात्रों के ज्ञान के लिये आवश्यक है।

२. इस पुस्तक का स्तर और भाषा स्नातकीय कक्षाओं के छात्र, छात्राओं की योग्यता के अनुरूप है। इसमें अनावश्यक सामग्री अथवा बागाडम्बर नहीं है।

३. इस पुस्तक में समीक्षा का स्तर बाजार से बिकने वाली पुस्तकों से नितांत भिन्न है।

४. इस पुस्तक में आपको नये निबन्धों का समावेश मिलेगा।

५. इस पुस्तक में कानपुर विश्वविद्यालय प्रश्न पत्र भी दिये गये हैं ताकि छात्रों को यह ज्ञान हो सके कि परीक्षा में किस प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं।

६. इस पुस्तक में पाठ्यक्रम में निर्धारित सभी रचनाओं की समीक्षा और विषयों का सन्निवेश है। कोई सामग्री छूटने नहीं पाई है।

७. इस पुस्तक की सबसे बड़ी उपलब्धि है, पाठ्यक्रम से सम्बन्धित सामग्री का प्रामाणिक और सरल-सुगम शैली में विवेचन प्रतिपादन।

हमें पूर्ण आशा है कि आप डॉ० पचौरी को इस कृति का हार्दिक स्वागत करेंगे और उसे अपनायेंगे।

—प्रकाशक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हिन्दी भाषा पाठ्यक्रम

[कानपुर एवं बुन्देलखंड विश्वविद्यालय की बी० ए० द्वितीय वर्ष की परीक्षा हेतु निर्धारित पाठ्यक्रम]

प्रथम प्रश्न पत्र

(क) व्यावहारिक हिन्दी
टिप्पणी और टिप्पण,
प्रालेखन, प्रतिवेदन, पत्राचार — २० अङ्क

(ख) पारिभाषिक शब्दावली — १० अङ्क

(ग) नाटक — २० अङ्क
जयादित्य
अथवा
जनकवि जगनिक

द्वितीय प्रश्न पत्र

(क) संक्षेपण और विस्तारण — १५ अङ्क

(ख) निबन्ध — २० अङ्क

(ग) संघर्ष (उपन्यास) : लेखन विश्वंभर नाथ शर्मा 'कौशिक' — १५ अङ्क

विशेष—नाटक एवं उपन्यासों से व्याख्या नहीं पूछी जायेगी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[कानपुर एवं बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के बी० ए० द्वितीय वर्ष १९८१-८२ के हिन्दी भाषा के पाठ्यक्रम पर आधारित वैज्ञानिक पद्धति से लिखी गयी ग्रन्थ]

हिन्दी भाषा

द्वितीय भाग

लेखक

डॉ० एस० एल० पचौरी

हिन्दी विभाग

नेहरू कालेज, छिबरामऊ

(कानपुर विश्वविद्यालय)

भारत सरकार द्वारा उपलब्ध कराये गये रियायती मूल्य के कागज पर मुद्रित।

१९८१

प्रकाशक

विद्याराम एन्ड सन्स

गुईनरोड, अमीनाबाद,

लखनऊ—२२६००१

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक :
विद्याराम एन्ड सन्स,
गुईन रोड,
लखनऊ

संस्करण :
१९८१

निर्धारित मूल्य :

मुद्रक :
वेस्टर्न प्रिन्टर्स,
कीडगंज,
इलाहाबाद ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भूमिका

हिन्दी भाषा (द्वितीय खण्ड) का यह संस्करण अपने छात्र-छात्राओं एवं सुधी पाठकों के हाथों में देते हुए हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ।

हिन्दी भारत की राष्ट्र-भाषा है। उत्तर प्रदेश हिन्दी भाषी क्षेत्र है। पर देखा गया है कि शिक्षित व्यक्ति भी पत्र, आवेदन पत्र तथा सरकारी कार्यालयों के पत्रों का प्रारूप नहीं लिख पाते। कानपुर विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम समिति ने कार्यालयी पत्र लेखन इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए पाठ्यक्रम में रखा गया है।

इस पुस्तक के प्रथम अध्याय में टिप्पण तथा टिप्पणी का विस्तृत विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय सरकारी, अर्द्ध-सरकारी, गैर-सरकारी पत्रों का प्रारूप लिखने पर प्रकाश डाला है। उदाहरण पर्याप्त मात्रा में दिये गये हैं। तृतीय अध्याय प्रतिवेदन से सम्बन्धित है। चतुर्थ अध्याय में पत्राचार है। इसके उपरान्त विश्व-विद्यालय के पाठ्यक्रमानुसार सामग्री प्रस्तुत की गई है।

सभी अध्यायों के अन्त में अभ्यासार्थ प्रश्न दिये गये हैं ताकि छात्र-छात्रायें अभ्यास कर लें। यद्यपि यह पुस्तक कानपुर विश्व विद्यालय के बी० ए० (उत्तरार्द्ध) के छात्र-छात्राओं के लिए लिखी गई है, साथ ही यह भी ध्यान रखा गया है कि जिज्ञासु पाठक भी लाभ उठा सकें। प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ अध्याय इस उद्देश्य की पूर्ति करते हैं।

संक्षेपण और विस्तारण का विवेचन भी सरल है। यह प्रयास किया गया है कि संक्षेपण और विस्तारण की कला से छात्र-छात्राएँ पूर्ण रूप से परिचित हो सकें।

मुझे यह लिखते हुए अत्यन्त दुःख हो रहा है कि पुस्तक प्रकाशन के समय हमारे प्रकाशक के पिता **स्वर्गीय पंडित विद्याराम जी** नहीं रहे। उनकी प्रेरणा से ही यह पुस्तक इस रूप में आ सकी है। **प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें** तथा उनके उत्तराधिकारियों में उनके बताये मार्ग पर चलने की शक्ति दें। मेरी कामना है।

यह पुस्तक उन्हीं की पावन स्मृति में समर्पित है।

पुस्तक के प्रकाशन में मेरे मित्र श्री राजेन्द्र द्विवेदी (प्रकाश पुस्तक भण्डार छिबरामऊ) तथा राजेन्द्र प्रकाश पाण्डेय 'राजे' रुचि ली हैं। दोनों ही मेरे अपने हैं अतः धन्यवाद की औपचारिकता में उन्हें बाँधना उचित नहीं समझता।

पुस्तक लिखने में मुझे डॉ॰ अवधेश अवस्थी अध्यक्ष हिन्दी विभाग पी० एस० एम० डिग्री कालेज कन्नौज तथा श्री मुकुट तिवारी अध्यक्ष हिन्दी विभाग, आर० पी० कालेज कमालगंज ने सहयोग दिया है। अतः उनके प्रति आभारी हूँ।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक बी० ए० उत्तरार्द्ध हिन्दी भाषा के छात्रों को विशेष उपादेय सिद्ध होगी। पुस्तक के सुधार हेतु सुझाव सादर आमन्त्रित हैं।

विनीत

नेहरू कालेज, छिबरामऊ

डॉ० एस० एल० पचौरी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहाँ क्या है ?

प्रथम प्रश्न पत्र

विषय	पृष्ठ संख्या
अध्याय १—टिप्पणी	१-१३
कार्यालयी प्रक्रिया	१
टिप्पण और टिप्पणी का अंतर	३
टिप्पणी का उद्देश्य	३
टिप्पणी लिखने की विधि	४
उदाहरण	६
अभ्यासार्थ प्रश्नावली	१३
अध्याय २—प्रालेखन	१४-३८
प्रालेखन का अर्थ तथा परिभाषा	१४
प्रालेखन-विधि	१४
शासकीय पत्र	१८
प्रालेखन के विविध प्रकार :	१९
१. शासकीय पत्र	२०
२. अर्द्ध-शासकीय पत्र	२२
३. कार्यालय ज्ञापन	२३
४. ज्ञापन	२४
५. परिपत्र	२६
६. अनुस्मारक	२७
७. कार्यालय आदेश	२८
८. पृष्ठांकन	२९
९. संकल्प	३०
१०. अधिसूचना	३०
११. प्रेस विज्ञप्ति	३१
१२. प्रेस नोट	३२
१३. सरकारी विज्ञप्ति	३३
१४. तार	३३
१५. द्रुत पत्र	३४
१६. मितव्ययिता पत्र	३५
१७. रेडियोग्राम	३५
१८. अभ्यासार्थ प्रश्नावली	३६
अध्याय ३—प्रतिवेदन	३९-४४
प्रतिवेदन का अर्थ तथा परिभाषा	३९

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ-संख्या
प्रतिवेदन का क्षेत्र	३९
प्रतिवेदन की विशेषताएँ	४०
प्रतिवेदन लिखने की विधि	४१
प्रतिवेदन के उदाहरण	४१
अभ्यासार्थ प्रश्नावली	४४
अध्याय ४—पत्राचार	४५-६५
पत्राचार का अर्थ	४५
अच्छे पत्र की विशेषताएँ	४५
पत्रों के प्रकार	४६
पत्रों के उदाहरण	४७
१. अग्रज का पत्र अनुज के नाम	४७
२. पिता का पत्र पुत्र के नाम	४७
३. माता का पत्र पुत्र के नाम	४८
४. पुत्र का पत्र पिता के नाम	४९
५. मित्र का पत्र	५०
६. मित्र को बधाई	५०
७. सखी का पत्र	५१
८. शोक पत्र	५१
९. शोक प्रस्ताव	५२
१०. व्यार्वहारिक पत्र	५२
११. निमन्त्रण पत्र (वैवाहिक)	५३
१२. निमंत्रण पत्र (जन्मोत्सव)	५३
१३. तिमन्त्रण (अनुष्ठान)	५४
१४. परिचय पत्र	५४
१५. परिवाद पत्र	५५
१६. राशन की अव्यवस्था के लिए शिकायत	५५
१७. सम्पादक के नाम पत्र	५६
१८. खोई हुई वस्तु की सूचना	५७
१९. वैवाहिक विज्ञापन (वधू चाहिए)	५७
२०. गुमशुदा की तलाश	५८
२१. गुमशुदा के लिए पत्र	५८
२२. आवश्यकता है	५८
२३. नीलाम सूचना	६०
२४. निविदा सूचना	६१

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ-संख्या
२५. अल्पकालीन निविदा सूचना	६१
२६. प्रमाण पत्र खोने की सूचना	६२
२७. चुनाव समाचार	६२
२८. आधिकारिक पत्र	६३
२९. अभ्यासार्थ प्रश्नावली	६५
अध्याय ५—पारिभाषिक शब्दावली	६६-११४
१. प्रशासनिक शब्दावली	६६
२. व्यावहारिक शब्दावली	१०८
३. अभ्यासार्थ प्रश्नावली	११२
अध्याय ६—नाटक तथा साहित्य की अन्य विधायें	११५-१६६
नाटक-परिभाषा, तत्व	११५
नाट्य-शैली की विशेषतायें	११७
नाटक की उत्पत्ति	११९
हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास	११९
नाटक के मूलभूत तत्व	१२५
नाटक में अभिनय तथा अभिनेयता	१२८
अभ्यासार्थ प्रश्नावली	१३६
जयादित्य नाटक का कथासार	१३७
जयादित्य नाटक में भारतीय एवं पाश्चात्य नाट्य-शिल्प	१४२
जयादित्य नाटक में अभिनेयता तथा नामकरण	१४६
जनकवि जगनिक	१५५
कथावस्तु	१५५
नाटकीय तत्व	१५९
पात्र : चरित्र चित्रण	१६२
अभ्यासार्थं प्रश्नावली	१६६

द्वितीय प्रश्न-पत्र

१. संक्षेपण	१६९-१८७
(क) अर्थ तथा परिभाषा	१६९
(ख) महत्व और उपयोगिता	१७०
(ग) संक्षेपण तथा अन्य समान रचना रूप	१७१
(घ) संक्षेपण की विशेषताएँ	१७१

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ-संख्या
(ङ) कुशल संक्षेपक के गुण	१७२
(च) संक्षेपण विधि	१७३
(छ) अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द	१७५
(ज) संक्षेपण के उदाहरण	१७९
(झ) अभ्यासार्थ अवतरण	१८१
२. विस्तारण	१८७-१९४
(क) अर्थ	१८४
(ख) महत्व	१८८
(ग) विस्तारण की विशेषतायें	१८९
(घ) विस्तारण करने की विधि	१९०
(ङ) उदाहरण	१९१
(च) अभ्यासार्थ प्रश्नावली	१९२
३. संघर्ष	१९५-२४०
हिन्दी उपन्यास विकास के तीन युग	१९५
उपन्यास तथा अन्य विधायें	२००
उपन्यास : प्रकार	२०४
उपन्यास के तत्व	२०६
लेखक-परिचय	२०९
उपन्यास कला	२०९
कथासार	२१०
संघर्ष : एक समस्यामूलक उपन्यास	२१७
संघर्ष : समीक्षा	२२३
स्नेहलता का चरित्र-चित्रण	२२६
शीर्षक की सार्थकता	२२८
उद्देश्य तथा कथावस्तु	२२९
नायक का चरित्र-चित्रण	२३०
छोटी रानी ज्योत्स्ना का चरित्र-चित्रण	२३५
प्रेम निरूपण	२३७
अभ्यासार्थ-प्रश्नावली	२३८
४. निबन्ध	१-८०

(१) स्वदेश प्रेम, (२) विद्यार्थी जीवन और अनुशासन अथवा जीवन के विकास की आधार-शिला, (३) वर्तमान शिक्षा-प्रणाली अथवा आधुनिक शिक्षा-प्रणाली के गुण और दोष अथवा यदि मैं शिक्षा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मन्त्री हो जाऊँ, (४) सह-शिक्षा, (५) छात्रों में अनुशासन अथवा छात्र असन्तोष अथवा छात्र अशान्ति : कारण और निदान अथवा विश्व-विद्यालयीय वातावरण अनुशासन अथवा युवा असन्तोष : कारण और निदान, (६) परिवार नियोजन अथवा भारत में जनसंख्या की समस्या अथवा विकास का सोपान-परिवार नियोजन, (७) भारत में बेकारी की समस्या अथवा बेरोजगारी : एक अभिशाप, (८) भारतीय संस्कृति अथवा नैतिक जीवन अथवा भारत और संस्कृति, (९) तुलसी की लोकप्रियता अथवा मेरा प्रिय कवि अथवा राष्ट्र-निर्माण में साहित्य-कार का योगदान, (१०) हिन्दी और राष्ट्र-भाषा अथवा हिन्दी और राष्ट्रीय एकता, (११) दैनिक जीवन में विज्ञान अथवा विज्ञान और मानव जीवन, (१२) भारत की समृद्धि साधन अथवा ग्रामीण जीवन का विकास अथवा राष्ट्रोन्नति के सोपान, (१३) परमाणु-शक्ति और विश्व-कल्याण अथवा परमाणु-शक्ति और मानवता अथवा नक्षत्र जगत में भारत का प्रवेश, (१४) सहकारिता, (१५) जीवन सफलता का रहस्य, (१६) परोपकार, (१७) भ्रष्टाचार : राष्ट्रीय अभिशाप अथवा राष्ट्र के विकास का शत्रु : भ्रष्टाचार,(१८) अनौपचापिक शिक्षा, अथवा प्रौढ़ शिक्षा, (१९) साहित्यकार का साहित्य के प्रति दायित्व अथवा साहित्य और समाज अथवा साहित्य और जीवन अथवा साहित्य समाज का दर्पण है, (२०) भारत की वैदेशिक नीति, (२१) भारतीय नारी अथवा आधुनिक नारी।

परीक्षा की दृष्टि से कुछ महत्वपूर्ण निबन्ध— १-२८

(१) भारत में लोकतन्त्र अथवा भारत में शासन प्रणाली अथवा भारत में प्रजातन्त्र का भविष्य। (२) राष्ट्रभाषा की समस्या और समाधान, (३) राष्ट्रीय भावात्मक एकता और हिन्दी, (४) भारत का नक्षत्र जगत् में प्रवेश अथवा भारत का अन्तरिक्ष युग में प्रवेश अथवा भारतीय उपग्रह आर्यभट्ट. (५) तुलसी की समन्वय-साधना। (६) सूर-सूर तुलसी शशि, (७) हिन्दी काव्य में प्रकृति-चित्रण।

———

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रथम प्रश्न पत्र

(क) व्यावहारिक हिन्दी
(ख) पारिभाषिक शब्दावली
(ग) नाटक अथवा एकांकी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

व्यावहारिक व्याकरण

(अ) टिप्पण

(ब) प्रालेखन

(स) प्रतिवेदन

(द) पत्राचार

[१] टिप्पण

यद्यपि व्यक्तिगत पत्रों का भी एक निश्चित ढाँचा होता है, पर लेखक पर यह प्रतिबन्ध नहीं है कि वह किसी ढाँचे में ही पत्र लिखें। लेकिन कार्यालयों में—चाहे वह सरकारी हो या अर्द्ध-सरकारी अथवा निजी प्रतिष्ठान—पत्र लिखने एवं कार्यालयी प्रक्रिया का एक निश्चित ढाँचा होता है जिसका पालन करना आवश्यक है।

कार्यालयों में प्रतिदिन अनेक पत्र आते हैं। अधिकारी के लिये यह सम्भव नहीं कि प्रत्येक पत्र पर पूर्ण विचार कर सकें। उसे उस पत्र पर संविधित लिपिक या अधीनस्थ अधिकारी की आख्या जानने की आवश्यकता होती है, टिप्पण या टिप्पणी इसी प्रक्रिया का अंग है। निजी प्रतिष्ठानों में कार्यालयी रचना सरकारी ढंग से ही होती है। वहां भी अनेकों पात्रों का आगम-निर्गम होता है, वहाँ भी कार्य प्रक्रिया इसी ढंग से होती है। इस प्रकार टिप्पण का क्षेत्र व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में भी है।

आज हिन्दी भारत की राष्ट्र-भाषा है। कार्यालयों की भाषा (राजभाषा) के रूप में भी हिन्दी प्रतिष्ठित हो रही है। इसलिये हिन्दी भाषी छात्र-छत्राओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों में रुचि रखने वाले व्यक्तियों को इसका ज्ञान आवश्यक है। जैसा कि ऊपर बताया जाता है कि कार्यालय चाहे सरकारी हो या गैर-सरकारी—कार्यालयी प्रक्रिया समान हैं। कार्यालयों में पत्र के आने से लेकर उसके उत्तर देने तक उसे कई स्तरों से गुजरना पड़ता है। जैसे डाक का आना, पंजीकरण, वितरण, कृत कार्यवाही तथा उत्तर प्रेषित करना।

(१) **डाक का आसादन**—बाहर से आने वाले पत्र आसादन कहे जाते हैं। सचिवालय या सरकारी कार्यालय अथवा निजी प्रतिष्ठान में एक विभागीय लिपिक या सहायक होता है जो कार्यालय में आये हुये तार, पत्र आदि सभी संचारणों को प्राप्त करता है तथा संबंधित विभाग में प्रेषित कर देता है। पंजीकृत डाक के साथ संलग्न 'पावती' को वह वापिस कर देता है।

कार्यालय में तीन प्रकार की डाक आती है।

(१) सम्बन्धित मन्त्री/वरिष्ठतम अधिकारी/अधिष्ठाता के पद-नाम से आने वाली डाक।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(२) नाम से आने वाली डाक ।

(३) गुप्त (गोपनीय) या परम गोपनीय डाक ।

(१) अधिकारी/सचिव/मन्त्री/अधिष्ठाता के पद-नाम से आने वाली डाक की कोटि में आती है । ऐसी डाक को आसादन लिपिक प्राप्त कर लेता है तथा संलग्नक की जाँच कर लेता है तथा आसादन की मुहर लगा देता है । यथा—

..................विभाग/मन्त्रालय
..................को प्राप्त
विभागीय रजिस्ट्री संख्या............
....
..................अनुभाग संख्या

(२) जो डाक अधिकारी/मन्त्री/अधिष्ठाता के नाम से होती है । उसे आसादन लिपिक सम्बन्धित अधिकारी के पास या उसके निजी सचिव के पास भेज देता है पर उसे वही व्यक्ति खोलता है जिसके नाम होती है ।

(३) वह डाक जिस पर गुप्त (गोपनीय) या परम गोपनीय लिखा होता है, सम्बन्धित अधिकारी ही खोलता है तथा वह अलग पंजिका पर चढ़ाई जाती है ।

(२) **डाक का पंजीकरण**—पंजीकरण का विभाग अलग होता है । पंजीकरण विभाग में पत्र पर पंजीयन संख्या अंकित की जाती है तथा पंजिका में पत्र चढ़ा लिया जाता है । पंजीयन पंजिका में चढ़ जाने के बाद तथा मुहर लग जाने के बाद सम्बन्धित लिपिक पत्र पर लगी मुहर में दिनांक पंजीयन संख्या लिख देता है ।

पंजीयम पंजिका

क्रमांक	प्राप्त पत्रादिक की संख्या दिनांक		प्रेषक	किसी अनुभाग को भेजा गया	अभ्युक्तियाँ
	संख्या	दिनांक			

(३) **डाक का वितरण**—(अ) पंजीयन लिपिक अनुभाग के अनुसार डाक का वितरण कर देता है । प्रत्येक अनुभाग के लिये वह बीजक की दो प्रतियाँ तैयार करके उन्हें अनुभाग में प्रेषित कर देता है ।

(ब) अनुभाग में अनुभाग अधिकारी सम्बन्धित लिपिकों के लिये डाक वितरण कर देता है । वह पत्र पर ध्वज लगाकर प्राथमिक, विशिष्ट तथा अति शीघ्र लिख कर भेज देता है जो डाक उच्च अधिकारी से सम्बन्धित होती है, उसे पृथक् कर अधिकारी के पास भेज देता है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बीजक का उदाहरण

दिनाङ्क	भेजे गये आसादनों की पंजीयन संख्या	भेजे गये आसादनों की कुल संख्या	पाने वाले के हस्ताक्षर

कार्यवाही सम्बन्धित आदेश—शाखा अध्यक्ष, अनुभाग अधिकारी या अवर सचिव सम्बन्धित पत्र पर आवश्यक निर्देश दे देते हैं। जटिल मामलों के लिए सम्बन्धित व्यक्ति को बुलाकर निर्देश देते हैं।

टिप्पणी या अभ्युक्ति—सम्बन्धित लिपिक पत्र पर अपनी आख्या अभ्युक्ति के साथ विभागीय ढंग से अधिकारियों के पास अनुमति के लिए भेज देता है ताकि कार्यवाही हो सके। -

टिप्पण और टिप्पणी में अन्तर

प्रायः लोग टिप्पण और टिप्पणी दोनों को एक समझ लेते हैं। लेकिन दोनों में मूलतः अन्तर जानना हिन्दी साहित्य के छात्र के लिये आवश्यक है। किसी पत्र पर प्रस्तुत की गई आख्या टिप्पणी (Note) कहलाती है तथा आख्या प्रस्तुत करने की प्रक्रिया टिप्पण (Noting) कहलाती है। टिप्पणी को 'टीप' भी कहते हैं। इसे दूसरे शब्दों में इस प्रकार भी कहा जा सकता है—"किसी कार्यालय में आए हुए पत्र पर कार्यवाही करने से पूर्व उस पर सहायक अधिकारी या संबंधित लिपिक द्वारा प्रस्तुत की गई अभ्युक्ति टिप्पणी कहलाती है। टिप्पणी लिखने की प्रक्रिया टिप्पण कहलाती है। इस प्रकार टिप्पणी संज्ञा है तथा टिप्पण क्रिया। प्रायः कार्यालय में या दैनिक बोल-चाल में टिप्पणी शब्द का ही प्रयोग होता है, टीप या टिप्पण का प्रयोग नहीं होता।

टिप्पणी का उद्देश्य

कार्यालय में आये हुए पत्र निर्णय लेने का कार्य अधिकारी का होता है। पर अधिकारी कार्यालय या विभाग के समस्त कार्यों से अवगत नहीं होता। फायलें भी विभाग में होती हैं। अतः पत्र पर निर्णय लेने से पूर्व सम्बन्धित लिपिक द्वारा आख्या प्रस्तुत की जाती है ताकि अधिकारी को निर्णय लेने में किसी प्रकार की कठिनाई न हो। टिप्पणी लिखने वाला लिपिक पत्र का पूर्ण रूप से अध्ययन करता है। यदि पत्र में कोई गलत तथ्य प्रस्तुत किए गए हैं तो वह अपनी आख्या में उनका उल्लेख कर देता है। यदि पत्र में कोई नीति सम्बन्धित तथ्य हैं तो भी वह उल्लेख कर देता है। कहने का आशय यह है कि पत्र के सम्बन्ध में विधि सम्बन्धी, विभा-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गीय परम्परा सम्बन्धी सभी तथ्यों का उल्लेख अभ्युक्ति में दिया जाता है। टिप्पणी के अन्त में वह अपने सुझाव प्रस्तुत करता है। इस प्रकार पत्र के निस्तारण के लिए टिप्पणी सरल या सुगम बनाने की प्रक्रिया है।

यहाँ यह भी स्मरण रखना है—

(१) टिप्पणी वही व्यक्ति करता है जिसे उस संबंध में पूर्ण जानकारी है। उच्चाधिकारी संबन्धित व्यक्ति के लिए लिखता है—"विस्तृत आख्या प्रस्तुत करें।" सामान्य स्थिति में आख्या सम्बन्धित लिपिक या कार्यालय सहायक करता है। लेकिन नीति सम्बन्धी मामले या उच्च अधिकारियों से किसी पेचीदा मामले को निपटाने के लिए अवर सचिव या उच्च अधिकारी भी टिप्पणी लिखते हैं।

(२) सामान्य पत्र पर विस्तृत आख्या नहीं दी जाती, वरन् आदेश ले लिया जाता है तथा सहायक अधिकारी या कार्यालय अधीक्षक या प्रधान लिपिक ही पत्र निस्तारण कर देता है।

(३) यदि कार्यालय में ऐसा कोई पत्र है जिसका सम्बन्ध इस कार्यालय से नहीं है तो प्रधान लिपिक ही उत्तर दे देता है या कोई उत्तर नहीं जाता तथा 'विविध पत्र' की फायल में लगा दिया जाता है।

(४) टिप्पणी में दी गई अभ्युक्ति संक्षिप्त, सारपूर्ण तथा सरल भाषा में लिखी जानी चाहिये।

टिप्पणी लिखने की विधि

किसी पत्र पर टिप्पणी करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

(१) जिस पत्र पर कार्यवाही होनी है, उस पत्र से सम्बन्धित विषय को आवश्यकतानुसार उपविषयों में विभाजित कर लिया जाता है तथा प्रत्येक उप-विषय का गम्भीर विवेचन किया जाता है। टिप्पणी कभी भी मूल पत्र पर नहीं लिखी जाती। अलग कागज पर टिप्पणी लिखी जाती है तथा उच्च अधिकारी को प्रस्तुत करते समय मूल पत्र को भी संलग्न किया जाता है। कुछ कार्यालय में टिप्पणी तथा आवश्यक कार्यवाही हेतु विशेष प्रकार के कागज होते हैं। यदि नहीं तो कागज के हाँसिये छोड़ दिये जाते हैं ताकि उच्च अधिकारी अपना आदेश या निर्देश लिख सकें।

(२) टिप्पणी फायल में ही प्रस्तुत की जाती है। अधिकारी का ध्यान आकर्षित करने के लिए उसमें ध्वज (Flag) लगा दिए जाते हैं।

(३) टिप्पणी जिस विषय पर प्रस्तुत की जा रही है उससे पूर्व भी उस संबंध में कार्यवाही हुई है तो टिप्पणी में उसका उल्लेख होना चाहिए तथा उससे संबंधित अभिलेख भी संलग्न करना चाहिए तथा उस पर ध्वज क, ख, ग आदि लगा होना चाहिए।

(४) टिप्पणी का क्रमाङ्क तथा दिनाङ्क भी अंकित होना चाहिये। यदि पत्र

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राजकीय है तो उसके प्रेषक नाम-पद, पत्राङ्क दिनाङ्क, तथा पत्र का विषय आदि का विवरण देना चाहिए।

(५) टिप्पणी के विषय को उपविषयों से विभाजित कर लेना चाहिये। प्रत्येक उपविषय का गम्भीरता से विवेचन देना चाहिए। उप-विषय को पृथक्-पृथक् अनुच्छेदों में लिखना चाहिए।

(६) यदि इस पत्र से पूर्व इस संबंध में कार्यवाही हुई है तथा अधिकारी के स्पष्ट आदेश हों, तो उसका उल्लेख होना चाहिए।

(७) यदि विभागीय कर्मचारी से संबंधित अभ्युक्ति दी जा रही है तो उसके सेवाकाल के अभिलेखों का उल्लेख करना आवश्यक है। नियुक्ति या प्रोन्नति या दण्ड से संबंधित आख्या है तो सेवा पंजिका आदि के द्वारा प्रदर्शित आचरण आदि का उल्लेख करना भी आवश्यक है।

(८) टिप्पणी लेखक को यह ध्यान सदैव रखना चाहिए कि टिप्पणी विषयानुकूल हो। विषय से इतर जाना टिप्पणी लेखक के अधिकार-क्षेत्र से बाहर है।

(९) टिप्पणी में संक्षिप्तता होनी चाहिए। संक्षिप्त में पूर्ण आख्या प्रस्तुत कर देना ही टिप्पणी लेखक की योग्यता है जो संक्षिप्त में विचार व्यक्त नहीं कर सकता वह कुशल टिप्पणी लेखक कहा नहीं जा सकता।

(१०) टिप्पणी की भाषा सरल, सुबोध तथा प्रवाहमय होना चाहिए। भाषा में सरलता तथा सुबोधता का गुण आवश्यक है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि भाषा संयत तथा विनीत होनी चाहिए, ताकि अधिकारी पर अच्छा प्रभाव पड़े। यदि पत्र पर विपरीत आख्या भी देनी पड़ रही है तो भी भाषा का संयत होना आवश्यक है।

(११) टिप्पणी लेखक को टिप्पणी लिखते समय तटस्थ भाव रखना चाहिए। यदि टिप्पणी लेखक पक्षपात का भाव रखेगा तो सही आख्या प्रस्तुत नहीं कर सकेगा। किसी विषय में अनुचित दिलचस्पी रखना या उसके विषय में पक्षधर बनना अधिकारी पर अच्छा प्रभाव नहीं डालता।

(१२) टिप्पणी लिखते समय प्रारम्भ में पत्र में प्रस्तुत विषय का उल्लेख करना चाहिए। उसके बाद द्वितीय परिच्छेद में पूर्व इतिहास, फिर क्रमशः विभागीय नीति, अपने सुझाव तथा अन्त में आदेश के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

(१३) टिप्पणी के अन्त में टिप्पणी लेखक के हस्ताक्षर तथा पद लिखना चाहिए। हस्ताक्षर के नीचे दिनाङ्क लिखना भी नहीं भूलना चाहिए।

(१४) टिप्पणी में पृष्ठ संख्या का भी उल्लेख आवश्यक है।

(१५) पत्र में उल्लिखित आँकड़े दिनाङ्क सहित टिप्पणी में देना चाहिए।

न करने योग्य बातें

(१) टिप्पणी में कभी भी प्रथम एवं मध्यम पुरुष का प्रयोग न करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(२) पूर्व इतिहास संदर्भ आदि का उल्लेख मूल टिप्पणी में नहीं करना चाहिए। मूल टिप्पणी के नीचे लिखना चाहिए।

(३) स्पष्ट बात लिखनी चाहिए। सन्देहास्पद भाषा का प्रयोग नहीं होना चाहिए।

(४) पक्षपातपूर्ण अभ्युक्ति नहीं लिखनी चाहिए।

उदाहरण—१

मूल पत्र (आसादित पत्र संख्या ५)

सेवा में,

निदेशक (उच्च-शिक्षा)

उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

पत्राङ्क १०२/वृ० ज०/७९–८० दिनाङ्क ५-३-८०

विषय—'हिन्दी, संस्कृत तथा वाणिज्य में प्रवक्ता पदों के सृजन हेतु'

महोदय,

निवेदन यह है कि श्री वृजेन्द्र जनता महाविद्यालय विसावर (मथुरा) ग्रामीण अंचल का महाविद्यालय है। इस क्षेत्र में अन्य कोई महाविद्यालय नहीं है। बी० ए० तथा बी० कॉम में प्रवेश लेने वाले छात्रों की संख्या अधिक है। शिक्षकों की संख्या देखते हुए छात्रों की संख्या बहुत अधिक है।

विवरण निम्नलिखित है—

	कक्षा	विषय	छात्र संख्या	शिक्षक	आवर्त्त	
(१)	बी० ए० पूर्वार्द्ध	हिन्दी भाषा	५०२	४	३६	} ६३
(२)	,, ,,	साहित्य	२०५	वही शिक्षक	२७	
(३)	,, ,,	संस्कृत	२०५	१	२७	
(४)	,, उत्तरार्द्ध	हिन्दी भाषा	४२२	क्रम संख्या १ में उल्लिखित	३०	} ४८
(५)	,, ,,	साहित्य	१८२	,,	१८	
(६)	,, ,,	संस्कृत	१४०	क्रम सं० ३ में उल्लिखित	१८	
(७)	बी० कॉम पूर्वार्द्ध	कामर्स	११०	१	३२	
(८)	,, उत्तरार्द्ध	,,	९०	,,	३२	

उपरोक्त विवरण से विदित होता है कि छात्र संख्या देखते हुए हिन्दी तथा वाणिज्य में २–२ शिक्षक तथा संस्कृत में एक प्रवक्ता का पद सृजित करना आवश्यक है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आपसे अनुरोध है कि प्रवक्ता पदों का सृजन करने की कृपा करें।

भवदीय

ह० वीरभद्र पाठक

प्राचार्य

५-३-८०

ह० हरिभानसिंह चौधरी

सचिव प्रवन्ध समिति

५-३-८०

टिप्पणी

उप-शि० नि० (उच्च-शिक्षा)

महोदय,

आसादित पत्र संख्या ५, जो प्राचार्य तथा प्रवन्ध समिति श्री वृजेन्द्र जनता डिग्री कालेज विसावर ने प्रेषित किया है, का अवलोकन करने का कष्ट करें।

इस पत्र में छात्र संख्या तथा शिक्षक संख्या दी गई है तथा हिन्दी, वाणिज्य विषय में दो-दो शिक्षक तथा संस्कृत में एक शिक्षक के पद सृजित करने का अनुरोध किया गया है।

इस सम्बन्ध में निवेदन यह है कि विभाग की नीति यह है कि जहाँ अत्यधिक आवश्यक हो वहीं शिक्षक के पद सृजित किये जायें। संस्था की छात्र संख्या देखते हुए यद्यपि सभी विषयों में शिक्षक कम हैं। फिर भी वाणिज्य तथा संस्कृत में मात्र एक-एक शिक्षक हैं। अतः इन विषयों में शिक्षक का एक-एक पद सृजित किया जा सकता है।

आदेश करने की कृपा करें, ताकि कार्यवाही की जा सके।

राजन लाल गौतम

का० स० (प्र०)

दिनांक ११-४-८०

प्र० लि० तथा सं० लि० शीघ्र विचार-विमर्श हेतु उपस्थित हों।

ला० प्र० वर्मा

उ० निदेशक (उ० शि०)

१४-४-८०

विचार-विमर्श के बाद निर्णय हुआ कि वाणिज्य में एक पद सृजित कराने के लिए संशोधित पत्र आख्या प्रस्तुत की जाय।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आख्या प्रस्तुत की गई तथा उप-निदेशक द्वारा स्वीकृत निदेशक के लिए आख्या प्रेषित की गई।

सेवा में,

निदेशक (उ० शि०)

आदेशार्थ निवेदन।

ला० प्र० वर्मा

१६-४-८०

प्रवक्ता वाणिज्य का एक पद स्वीकृत संस्था को मई में अवश्य सूचित कर दें।

हरिशंकर वर्मा

निदेशक (उ० शि०)

२२-४-८०

संस्था के लिए उत्तर

प्रारूप **अर्द्ध-शासकीय पत्र**

शिक्षा निदेशालय (उ० शि०)

इलाहाबाद।

प्रेषक,

उप-शिक्षा निदेशक (उ० शि०)

इलाहाबाद।

सेवा में,

सचिव/प्राचार्य

श्री बृजेन्द्र जनता महाविद्यालय विसावंर (मथुरा) पत्राङ्क १६१/शि० नि०/७६-८० दिनांक ५-५-८०

महोदय,

आपके पत्राङ्क १०२/ वृ० ज०/ ७६-८० के संदर्भ में आपको सूचित किया जाता है कि निदेशक उ० शि० ने आपके महाविद्यालय में वाणिज्य विषय में एक पद स्वीकृत करने की कृपा की है। हिन्दी तथा संस्कृत में इस वर्ष पद सृजित करना सम्भव नहीं है।

आप यथाशीघ्र वि० वि० अधिनियम के अनुसार उपरोक्त पद पर नियुक्ति कर लें तथा कार्यालय को सूचित करें।

भवदीय

ला० प्र० वर्मा,

उप-निशदेक (उ० शि०)

उत्तर प्रदेश।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रतिलिपि—

(१) कुलसचिव, आगरा विश्व-विद्यालय ।
(२) सचिव शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश ।

उदाहरण—२

प्रदेश के समस्त कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग हेतु उप-सचिव उत्तर प्रदेश शासन द्वारा भेजे गये पत्र के उत्तर में मुख्य नगर अधिकारी नगर महापालिका कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग की स्थिति पर प्रकाश डालने वाली टिप्पणी लिखिये ।

(कानपुर वि० वि०, १९७४)

टिप्पणी लिखने के पूर्व पत्र की कल्पना करनी होगी । वह इस प्रकार है—

उत्तर-प्रदेश शासन

अर्द्ध-शासकीय पत्र

प्रेषक

रामचन्द्र बनर्जी
उपसचिव
उत्तर प्रदेश सरकार

सेवा में,

मुख्य नगर अधिकारी
समस्त नगर महापलिकाएँ उ० प्र०

पत्राङ्क २०३/उ० प्र०/७९-८० दिनाङ्क ५-४-८०

विषय-'प्रदेश के समस्त कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग के सम्बन्ध में'

महोदय,

मुझे आपसे यह कहने का निर्देश हुआ है कि प्रदेश सरकार की नीति यह है कि भारतीय संविधान द्वारा निर्देशित राष्ट्र-भाषा हिन्दी के प्रयोग को यथाशीघ्र प्रदेश को क्रियान्वित किया जाय । प्रायः यह देखने में आया है प्रदेश के कार्यालयों में अब भी अंग्रेजी का प्रयोग होता है । इस कार्यालय में आये हुए पत्रों से विदित होता है कि राष्ट्रभाषा को उत्तर प्रदेश में पूर्ण रूप से राज-भाषा के रूप में स्वीकार नहीं किया गया है ।

भविष्य में आप अपने कार्यालय में हिन्दी का प्रयोग करें । हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषा में प्राप्त पत्रों पर उस समय तक विचार न करें जब तक हिन्दी अनुवाद उपस्थित न किया जाय ।

आप अपने कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग के सम्बन्ध में निर्देश दें तथा स्थिति से अधोहस्ताक्षर कर्त्ता को सूचित करें ।

ह० रामचन्द्र बनर्जी
उप-सचिव
५-४-८०

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुख्य नगर अधिकारी, नगर महापालिका इलाहाबाद के कार्यालय में उपरोक्त पत्र प्राप्त हुआ। वहाँ की गई टिप्पणी निम्नलिखित है—

उप-नगर अधिकारी (सा० प्र०)

विस्तृत आख्या प्रस्तुत करें।

स्वामी प्रसाद विशारद
मु० न० अ०
२६-५-८०

कार्यालय अधीक्षक

विस्तृत आख्या प्रस्तुत करें।

ज० प्र० निगम
उ० न० अधिकारी
२८-५-८०

कार्यालय अधीक्षक द्वारा निम्नलिखित टिप्पणी प्रस्तुत की गई—

टिप्पणी

उप-नगर अधिकारी, इलाहाबाद।

उप-संचिव :उ० प्र० शासन के पत्र संख्या २०३/उ० प्र०/७६-८० दिनांक ५-४-८० (अर्द्ध-सरकारी) का अवलोकन करने की कृपा करें। इस पत्र में हिन्दी के प्रयोग हेतु शासन के आदेश हैं तथा इस कार्यालय में हिन्दी की स्थिति के बारे में विवरण माँगा गया है। इस सम्बन्ध में निवेदन यह है—

(१) महापालिका के सभी कार्यालयों को हिन्दी में कार्य करने हेतु आदेश दे दिये गये हैं।

(२) महापालिका इलाहाबाद में पहिले ही हिन्दी को राज-भाषा के रूप में स्वीकार किया गया है।

(३) शासन के इस पत्र के प्राप्त करने के बाद से स्थिति में सतर्कता प्रयोग की जा रही है।

(४) महापालिका से सभी पत्र हिन्दी में लिखे जाते हैं।

(५) जनता के पत्रों का हिन्दी में उत्तर दिया जाता है।

(६) कार्यालय विज्ञप्ति, नियुक्ति पत्र, कार्यालय के आदेश सभी हिन्दी में प्रेषित किये जाते हैं।

(७) इस सम्बन्ध में हिन्दी टंकण की समस्या है। केवल एक ही हिन्दी आशु-लिपिक एवं टंकणकर्त्ता हैं। इस कार्य हेतु ४ टंकणकर्त्ता हिन्दी की आवश्यकता है।

रामरूप सिंह शाक्य
का० अ०
३०-५-८०
मु० न० अ०

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शासन के पत्र पर कार्यवाही की गई है। विस्तृत आख्या प्रस्तुत है।

ज० प्र० निगम
उप-नगर अधिकारी
३१/५/८०

उदाहरण—३

संचालक उद्योग विभाग की ओर से अधीनस्थ कार्यालय अधिकारी के पत्र का उत्तर देने के लिए इस आशय की स्वत: पूर्ण टिप्पणी का प्रारूप प्रस्तुत कीजिए कि उक्त कार्यालय को अब अंग्रेजी टाइप-राइटर खरीदने की अनुमति देना सम्भव नहीं है।

(कानपुर वि० वि०, १९७३)

स्वत: पूर्ण टिप्पणी लिखने के पहले अधीनस्थ कर्मचारी या अधिकारी के कार्यालय के पत्र की कल्पना करनी पड़ेगी जो संचालक उद्योग विभाग को लिखा गया है। जैसे—

उद्योग निदेशालय

प्रेषक,
हरि राम बाल्मीकि
उप-निदेशक उद्योग
बलिया।
सेवा में,
संचालक
उद्योग निदेशालय
कानपुर।
पत्राङ्क ५३२/सा०/७७-७८ दिनाङ्क ७-११-८०
विषय-'अंग्रेजी टाइपराइटर खरीदने के सम्बन्ध में'
महोदय

निवेदन यह है कि इस कार्यालय में कार्य बहुत बढ़ गया है तथा विगत पाँच वर्षों से टाइप-राइटर नहीं खरीदे गये हैं। अत: ५ टाइप-राइटर खरीदने की अनुमति प्रदान करें।

ह० हरि राम बाल्मीकि
उप-निदेशक
उद्योग निदेशालय बलिया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह पत्र उद्योग निदेशालय कानपुर में १४/११/७८ को प्राप्त हुआ जिस पर निम्नलिखित कार्यवाही हुई—

उपनिदेशक (सा०)

विस्तृत आख्या प्रस्तुत करें।

रा० स्व० निगम

उद्योग संचालक

कार्यालय अधीक्षक विस्तृत आख्या प्रस्तुत करें।

विनोद कश्यप

उ० नि० (सा०)

कार्यालय अधीक्षक की टिप्पणी—

आसादित पत्र संख्या ५३२/सा०/७७-७८।

उप-निदेशक (सा०)

बलिया प्रखण्ड के उप-निदेशक उद्योग का पत्र दि० ७/११/७८ जो इस कार्यालय में १४/११/७८ को प्राप्त हुआ। उप-निदेशक बलिया प्रखण्ड ने अपने पत्र में कार्यालय में बढ़ती हुई आवश्यकता के अनुसार पाँच अंग्रेजी टाइप-राइटर खरीदने की अनुमति माँगी है। इस सम्बन्ध में निवेदन यह है—

(१) उ० प्र० शासन के निर्णयानुसार प्रदेश के समस्त कार्यालयों में कार्य हिन्दी में किया जाना चाहिए। विगत ७ मई, ७८ को उप-सचिव उ० प्र० शासन का पत्र इस कार्यालय में आ चुका है जिसे सभी अधीनस्थ कार्यालयों को भेजा जा चुका है।

(२) विगत तीन वर्षों से ग्रामीण क्षेत्र में उद्योग इकाइयाँ स्थापित होने लगी हैं। फलस्वरूप उद्योग कार्यालयों में कार्य बढ़ा है।

(३) सरकारी नीति के अनुकूल ही उद्योग विभाग के कार्यालयों में समस्त कार्य हिन्दी में होना चाहिए। इस सम्बन्ध में उप-निदेशक उद्योग बलिया इस कार्यालय के परिपत्र १७, दिनांक ४-७-७८ का अवश्य अवलोकन कर लें।

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए अंग्रेजी टाइप-राइटरों को खरीदने की अनुमति देना सम्भव नहीं है।

किशन सिंह सोलंकी

का० अ०

२०/११/७८

कार्यालय अधीक्षक की इस आख्या को उप-निदेशक (सामान्य) ने अपनी आख्या के साथ संचालक के पास भेजा।

संचालक, उद्योग निदेशालय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विस्तृत आख्या संलग्न है।

अंग्रेजी टाइप-राइटर की अनुमति देना सम्भव नहीं है।

विनोद कश्यप

उप-निदेशक (सामान्य)

२२/११/७८

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

(१) टिप्पण और टिप्पणी में अन्तर स्पष्ट करते ए दोनों की परिभाषाएँ दीजिये।

(२) टिप्पणी की व्याख्या करते हुए टिप्पणी के उद्देश्यों को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। (कानपुर वि० वि०, १९७५)

(३) टिप्पण और टिप्पणी का अन्तर समझाते हुए बताइये कि टिप्पणी किसे कहते हैं तथा टिप्पणी लेखन में किन-किन बातों का ध्यान रखना पड़ता है? (कानपुर वि० वि०, १९७६)

(४) टिप्पण और टिप्पणी का अन्तर समझाते हुए टिप्पणी का एक उदाहरण प्रस्तुत कीजिए। (कानपुर वि० वि०, १९७७)

(५) टिप्पणी लेखन के लिए व्यक्ति में आपकी दृष्टि से कौन-कौन से गुण आवश्यक हैं? कारण सहित उत्तर दें। (कानपुर वि० वि०, १९७८)

(६) संचालक उद्योग विभाग की ओर से अधीनस्थ कार्यालय अधिकारी पत्र का उत्तर देने के लिए इस आशय की एक स्वतः पूर्ण टिप्पणी का प्रारूप प्रस्तुत कीजिए कि उक्त कार्यालय को अब अंग्रेजी टाइप राइटर खरीदने की अनुमति देना सम्भव नहीं है। (कानपुर वि० वि०, १९७३)

(७) प्रदेश के समस्त कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग हेतु उप-सचिव उत्तर-प्रदेश शासन द्वारा भेजे गये पत्र के उत्तर में मुख्य अधिकारी नगर महापालिका की ओर से महापालिका कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग की स्थिति पर प्रकाश डालने वाली स्वतापूर्ण टिप्पणी लिखिये। (कानपुर वि० वि०, १९७५)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[२] प्रालेखन

प्रालेखन को प्रारूप-लेखन भी कहा जाता है। टिप्पणी की भाँति प्रारूप-लेखन भी कार्यालयी प्रक्रिया का आवश्यक अंग है। यह सर्व-विदित है कि कार्यालयी पत्र मनमाने ढंग से नहीं लिखे जाते। उनके लिखने का एक निश्चित ढाँचा होता है। इस ढाँचे के अनुरूप ही पत्र लिखना पड़ता है। उन पत्रों का प्रारूप (Draft) तैयार करना ही प्रालेखन कहा जाता है। प्रारूप तैयार करना कार्यालय सहायकों, लिपिकों का कार्य है। कभी-कभी कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण पत्र होते हैं जिन्हें गोपनीयभी रखना पड़ता है। ऐसे पत्र कार्यालय में तैयार नहीं कराये जाते। अधिकारी स्वयं पत्र तैयार करते हैं। अतः पत्र का प्रारूप तैयार करने की कला से अधिकारी, लिपिक कार्यालय सहायक सभी का अवगत होना आवश्यक है। सरकारी, अर्द्ध-सरकारी या व्यक्तिगत। निजी व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में भी पत्र लिखे जाते हैं। सरकारी या गैर-सरकारी पत्रों का उत्तर दिया जाता है। इन सभी कार्यों में पत्र का प्रारूप तैयार करने की आवश्यकता पड़ती है।

प्रालेखन का अर्थ तथा परिभाषा

प्रालेखन का सामान्य अर्थ पत्र का प्रारूप तैयार करने की कला से है। चूँकि सरकारी (अर्द्ध-सरकारी) व्यक्तिगत। निजी प्रतिष्ठानों द्वारा भेजे जाने वाले पत्रों का एक निश्चित ढाँचा होता है। इस ढाँचे में पत्र लिखना ही पत्र का प्रारूप तैयार करना है। प्रारूप का दूसरा अर्थ ही पत्र का ढाँचा है। अतः प्रारूप-लेखन या प्रालेखन को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है—

"सरकार / अर्द्ध-सरकारी / निजी व्यावसायिक-प्रतिष्ठान से भेजे जाने वाले पत्र, विज्ञप्ति, सूचनाएँ, अनुस्मारक ज्ञापन, परिपत्र आदि के ढांचे को प्रारूप-लेखन कहते हैं। अधिकारियों के आदेश पर कार्यालय से जाने वाले पत्र इसी ढाँचे में तैयार किये जाते हैं।"

प्रालेखन-विधि

प्रालेखन की निश्चित विधि है। उसमें निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना पड़ता है—

(१) प्रेषक का नाम/पद-नाम और कार्यालय का पता।

(२) प्रेषिती (प्रापक) का नाम/पद नाम और कार्यालय का पता।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(३) पत्राङ्क और दिनांक ।

(४) विषय-निर्देश—संक्षेप में वाद-विषय का उल्लेख किया जाता है । यथा—'पद-सृजन के संबंध में' ।

(५) प्रकरण विषय का प्रतिपादन—यह प्रालेखन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग है । विषय का विवेचन इसी भाग में होता है । पत्र में विषय का तर्क-सम्मत प्रतिपादन इसी भाग में होता है । आवश्यकतानुसार विषय को उपविषय में विभाजित कर लिया जाता है । प्रत्येक उपविषय को पृथक् परिच्छेद (Paragraph) में लिखा जाता है ।

इस भाग का प्रारम्भ इस प्रकार किया जाता है—

(अ) आपके पत्राङ्क···दिनाङ्क···के सम्बन्ध में सूचित करना है या निवेदन करना है (वरिष्ठ अधिकारी के लिए)

(ख) आपके पत्र के संबंध में मुझे आपसे यह कहने का निर्देश हुआ है···

(ग) मुझे आपसे यह कहने का निर्देश हुआ है ।

(घ) मुझे आपसे निवेदन करने का निर्देश हुआ है ।

कभी-कभी परिच्छेद की संख्या भी डाली जाती है, यथा—१, २, ३, इत्यादि । कभी-कभी उपशीर्षक भी डाले जाते हैं । यहाँ यह ध्यान रखना चाहिए कि विदेशी भाषा के क्रमांक या उपशीर्षक नहीं लिखना चाहिए ।

(६) **निष्कर्ष**—प्रालेखन के अन्त में निष्कर्ष लिखा जाता है । यथा—'सारांश यह है' या निष्कर्ष यह है—···आदि ।

(७) **भाषा**—प्रालेखन की भाषा सरल, सुबोध तथा प्रवाहमय होनी चाहिए यह ध्यान रखना चाहिए—

(१) भाषा में क्लिष्टता न आने पाये ।

(२) मुहावरे, लोकोक्तियाँ तथा कहावतों का प्रयोग न हो ।

(३) अतिश्योक्ति तथा अन्योक्ति अलंकार का प्रयोग न हो ।

(४) विषय के प्रतिपादन के लिए तथ्य का सहारा लिया जाय ।

(५) हठ या दृढ़ोक्ति का प्रयोग न किया जाय ।

(६) अनावश्यक विशेषण नहीं लगाना चाहिए ।

(७) पुनरुक्ति, वक्रोक्ति का प्रयोग न हो ।

(८) वाक्य अधिक लम्बे-लम्बे न हों ।

(९) अलंकारों का प्रयोग न हो ।

(१०) भाषा में शिष्टता होनी चाहिए । विनयपूर्ण शब्दों का प्रयोग करना चाहिए । पर ध्यान रखना चाहिए कि विनय कहीं चाटुकारिता की सीमा के अन्दर तो नहीं है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उदाहरण—

प्रेषक

विद्याभूषण अवस्थी

उप-सचिव

उ० प्र० शासन, विधान भवन, लखनऊ।

सेवा में,

वीरेन्द्र कुमार मिश्र

जिला अधिकारी नैनीताल।

पत्राङ्क········· दिनांक············

प्रिय महोदय !

आपके पत्राङ्क·························दि०························के सन्दर्भ में यह निवेदन करता है···

अथवा

यह कहने का निर्देश हुआ है···

अथवा

आपको यह सूचित करना है······

विषय का तर्कसम्मत प्रतिपादन·······

निष्कर्ष······

स्वनिर्देश······यदि अधिकारी हों।

हस्ताक्षर

भवदीय, या भवनिष्ठ

आपका विश्वास-पात्र

या

विश्वास भाजन

पद-नाम तथा दिनांक

संलग्न सूची—यदि कोई पत्र साथ में संलग्न हो तो उसकी सूचना भी संलग्न सूची (Enclossure) में दी जानी चाहिए।

पृष्ठांकन—मूल पत्र की प्रतिलिपि यदि किसी अन्य व्यक्ति को दी जा रही है तो उसका उल्लेख अवश्य किया जाना चाहिए।

प्रतिलिपि—(१) गृह-सचिव, उ० प्र० शासन, लखनऊ।

(२) पुलिस अधीक्षक, नैनीताल

आदि-आदि···

हस्ताक्षर

पद-नाम, स्थान।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह स्मरण रखना है कि मूल पत्र पर पृष्ठांकन के ऊपर हस्ताक्षर होने चाहिए।

प्रतिलिपि के नीचे उन प्रतियों पर हस्ताक्षर किये जाते हैं जो प्रतिलिपि भेजने के लिए प्रयुक्त होती हैं।

उपसचिव
उ० प्र० शासन

पृष्ठांकन—(१) लाल बहादुर शास्त्री प्रशासनिक एकाडेमी, देहरादून
(२) पुलिस अधीक्षक, नैनीताल

ह० वीरेन्द्र मिश्र
५—१०—८०
उपसचिव
उ० प्र० शासन, लखनऊ

संक्षेप में सामान्य पत्र की रूपरेखा निम्नलिखित है—

(१) पत्र संख्या······
(२) प्रेषक का नाम और पता
(३) प्रेषिती का नाम, पद और पता
(४) पत्राङ्क (यदि ऊपर न हो)
(५) दिनांक
(६) विषय
(७) सन्दर्भोल्लेख
(८) विषय का तर्क-सम्मत प्रतिपादन
(९) स्वनिर्देश, हस्ताक्षर तथा दिनांक
(१०) संलग्नक
(११) पृष्ठाँकन
(१२) स्वनिर्देश तथा हस्ताक्षर और दिनांक

पृष्ठांकन वाली प्रतियों में संख्या ९ पर हस्ताक्षर न होकर संख्या १२ पर हस्ताक्षर किये जाते हैं।

टिप्पणी पर आधारित प्रलेखन के उदाहरण

टिप्पणी—पत्रबन्ध संख्या १२

सचिव, उद्योग विभाग,
केन्द्रीय सरकार नई दिल्ली

विषय—'मुरादाबाद तथा कानपुर में हुए साम्प्रदायिक दंगों के कारण उद्योग-क्षेत्र में क्षति की सूचना'।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय-प्रकरण—

सचिव, उद्योग विभाग केन्द्रीय सरकार ने उ० प्र० सरकार से सूचना माँगी है—'उ० प्र० के मुरादाबाद एवं कानपुर नगर में हुए साम्प्रदायिक दंगों के कारण उद्योग क्षेत्र में हुई आर्थिक क्षति का विवरण' इस विषय पर टिप्पणी की गई। सूचना एकत्रित करने के बाद उद्योग सचिव को पत्र लिखा गया जिसका प्रारूप निम्नलिखित है—

शासकीय-पत्र

उद्योग मंत्रालय
उत्तर प्रदेश सरकार

पत्राङ्क १०५/उ० वि०/७६-८०।

प्रेषक,
सचिव,
उद्योग मंत्रालय,
उत्तर प्रदेश सरकार लखनऊ।

सेवा में,
सचिव,
उद्योग मंत्रालय,
नई दिल्ली

दिनांक ५-१०-८०

विषय—'साम्प्रदायिक दंगों में हुई आर्थिक क्षति का विवरण'।

महोदय,

आपके पत्राङ्क १०३/सी० आर०/७६-८० दिनांक ५-७-८० के सन्दर्भ में मेरा निवेदन यह है कि यकायक २/६/८० को मुरादाबाद और कानपुर में साम्प्रदायिक दंगे प्रारम्भ हो गये। स्थिति अनियंत्रित हो गई। नगर में कर्फ्यू लगा दिया गया। सभी उद्योग इकाइयां बन्द हो गयीं। यह स्थिति ३२ दिन रही। पुनः स्थिति सामान्य हुई। उद्योग इकाइयां कार्य करने लगीं। बीच-बीच में स्थिति में तनाव आता रहा। इसका प्रभाव भी उद्योग-धन्धों पर पड़ा।

इन दंगों के कारण अब तक ८० लाख रुपये की क्षति हो चुकी है। प्रदेश के उद्योग क्षेत्रों के सर्वेक्षण से भी यही सिद्ध होता है।

आपका विश्वासपात्र
राजकुमार सारस्वत
उद्योग सचिव
उ० प्र० सरकार।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अर्द्ध-शासकीय पत्र संख्या २०६।७९

उ० प्र० सरकार
गृह मंत्रालय, लखनऊ
दि० ५-१०-७९

प्रिय श्री त्रिवेदी

आपके पत्र दिनांक ५-६-७९ के सन्दर्भ में आपको यह सूचित करना है कि आपके जनपद की शिक्षण संस्थाओं की अव्यवस्था की शासन विधिवत् सूचना चाहती है। आप यह जानते हैं कि शिक्षण संस्थाओं के तनाव समाज में अव्यवस्था फैला देते हैं।

आपको निर्देश दिया जाता है कि आप अपने जनपद की शिक्षण संस्थाओं की अव्यवस्था की स्थिति के कारणों की जाँच करायें तथा स्थिति में नियन्त्रण के लिए प्रभावी कदम उठायें।

आवश्यक सूचना शासन को अधिकतम १५-११-७९ तक मिल जानी चाहिए।

आपका सद्भावी
शिवशरण लाल निगम

सेवा में,
रमेश नारायण त्रिवेदी
जिला अधिकारी,
फर्रूखाबाद।

प्रालेखन के विविध प्रकार

जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है कि प्रशासनिक एवं व्यावहारिक पत्रों का एक निश्चित ढाँचा होता है। शासन की ओर से अनेक प्रकार के पत्र लिखे जाते हैं। प्रत्येक पत्र के लिखने की स्वरूप पृथक्-पृथक् होता है। प्रमुख पत्र निम्नलिखित हैं-

(१) शासकीय पत्र (Official Letter)
(२) अर्द्ध-शासकीय पत्र (Demi Official Letter या D. O. Letter)
(३) कार्यालय ज्ञापन (Office Memorandum)
(४) ज्ञापन (Memorandum)
(५) परिपत्र (Circular)
(६) अनुस्मारक (Reminder)
७) कार्यालय आदेश (Office Order)
(८) पृष्ठांकन (Endorsement)
(९) संकल्प (Resolution)
(१०) अधिसूचना (Notification)
(११) प्रेस विज्ञप्ति (Press Communique)
(१२) तार (Telegram)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(१३) द्रुतपत्र (Express Letter)
(१४) सूचना (Notice)
(१५) मितव्यय पत्र या कूटपत्र (Savingram)
(१६) रेडियोग्राम (Radiogram)

यहाँ पर प्रत्येक प्रकार के पत्रों के उदाहरण दिये जा रहे हैं। उदाहरणः पूर्ण रूप से कल्पना के आधार पर हैं।

१. शासकीय पत्र

प्रेषक,
सचिव,
शिक्षा मंत्रालय, केंन्द्रीय सरकार
नई दिल्ली

सेवा में,
सचिव, शिक्षा मंत्रालय
उ० प्र० शासन, विधान भवन
लखनऊ।

पत्रांक १०५/शि० वि०/७४ दिनाङ्क ३-३-७४।

विषय-'विश्व-विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में वेतन का अभिनवीकरण'।

महोदय,

मुझे आपसे यह कहने का निर्देश हुआ है कि विश्व-विद्यालय अनुदान आयोग (University Grant Commission) की वेतन सम्बन्धी संस्तुतियों को सरकार ने स्वीकार कर लिया है। नवीन वेतनक्रम निम्नलिखित प्रकार हैं—

प्रवक्ता—७००-४००—६००—४०—११००—५०-१३०० एसेसमेंट—७५— १६००।

रीडर—१२५०—५०—१३००—७५—१६००—१००—१८००

प्राचार्य—(१) १५००—१०० —२०००—१२५—२५००

प्राचार्य—(२) १२५०—१००—१८००

आचार्य—१५००—२५००

रीडर वेतन क्रम महाविद्यालयों में देय नहीं है। ये सभी वेतनमान १-१-१६७३ से देय है। नवीन एवं पुराने वेतनमान को अन्तर को पांच वर्ष तक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग वहन करेगा।

भवदीय
विद्याकान्त पाठक
सचिव, भारत सरकार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पृष्ठांनक—(१) अध्यक्ष—विश्व-विद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली।
(२) अध्यक्ष, अखिल भारतीय विश्वविद्यालय शिक्षक महासंघ नई दिल्ली–१७

भवदीय
सचिव भारत सरकार

शासकीय पत्र

पत्राङ्क २०७/सा० प्र०/१९८०

भारत सरकार
पालियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली

प्रेषक,

मनोरमा जोशी
उप-सचिव,
सामान्य प्रशासन,
गृह-मंत्रालय
भारत सरकार, नई दिल्ली।

सेवा में,

मुख्य सचिव,
उत्तर प्रदेश शासन,
विधान भवन लखनऊ।

दिनांक ५-५-८०।

विषय-'आगामी बुद्ध जयन्ती के सार्वजनिक अवकाश के सम्बन्ध में'।

महोदय,

मुझे आपसे यह कहने का निर्देश हुआ है कि केन्द्रीय सरकार के निर्णय के अनुसार इस वर्ष सम्पूर्ण राष्ट्र में आगामी बुद्ध जयन्ती के अवसर पर सार्वजनिक अवकाश किया जायेगा। आप अधीनस्थ समस्त कार्यालयों को समय से सूचित करने का कष्ट करें।

भवदीय
मनोरमा जोशी
उप सचिव।
सा० प्र०, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२. अर्द्ध-शासकीय पत्र

अर्द्ध-शासकीय पत्राङ्क २६०/७६
उत्तर प्रदेश शासन
विधान भवन लखनऊ।

प्रिय विजय कुमार जी

आपके पत्राङ्क १६१/आ० प०/८० के सन्दर्भ में मुझे आपसे यह कहने का निर्देश हुआ है कि कृपया नई आवासीय योजनाओं के नक्शे, सम्भावित व्यय आदि का विवरण पुनः प्रेषित किया जाय, जिस पर विभागीय अभियन्ता की भी संस्तुति हो तभी वित्त मंत्रालय अपनी स्वीकृति देगा।

समस्त पत्र १२-५-७८ तक इस कार्यालय में आ जाने चाहिए ताकि समय से कार्यवाही करना संभव हो सके।

सद्भावी
मुकेश हस्तिनापुरी

सेवा में,
विजय कुमार निगम
उप-सचिव,
आवास विकास परिषद्,
महात्मा गाँधी मार्ग, लखनऊ।

[विशेष—अर्द्ध-सरकारी पत्र विभिन्न सरकारी अधिकारियों के मध्य सरकारी निर्णय या नीति से सम्बन्धित सूचना देने हेतु लिखे जाते हैं। ये पत्र व्यक्तिगत नाम से भेजे जाते हैं। प्रारम्भ में पद आदि का उल्लेख नहीं होता। 'प्रिय' कहकर संबोधन किया जाता है। यथा 'प्रिय कमल पाण्डेय' आदि। स्वनिर्देश में 'सद्भावी' लिखा जाता है।]

एक उदाहरण और दृष्टव्य है—

अर्द्ध-शासकीय पत्र

अर्द्ध-शासकीय पत्र संख्या २६०/८०
प्रधान प्रबन्धक कार्यालय
राज्य परिवहन निगम,
उ० प्र०, लखनऊ।

प्रिय विमल जी,

मुझे आपसे यह कहने का निर्देश हुआ है कि आपके क्षेत्र में परिचालकों के चयन में हुई अव्यवस्था से सम्बन्धित अनेक पत्र इस कार्यालय में आये हैं। परिवहन मंत्री ने कहा है कि नियुक्ति से पूर्व इसकी जाँच करा ली जाय।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अतः इस सम्बन्ध में प्रधान प्रबन्धक का निर्णय यह है कि अग्रिम आदेश तक इस सूची से नियुक्तियाँ न की जायँ।

आपका, सद्भावी
विनोद कुमार अस्थाना
उप-प्रबन्धक,
उत्तर प्रदेश राज्य परिवहन
निगम, लखनऊ।

सेवा में,
अरुण प्रताप 'विमल'
क्षेत्रीय प्रबन्धक
उ० प्र० राज्य परिवहन निगम,
इटावा क्षेत्र।

३. कार्यालय ज्ञापन

कार्यालय ज्ञापन (Office-Memorendum) का प्रयोग सरकार के विभिन्न मन्त्रालयों के बीच होता है। यद्यपि यह सरकारी पत्र होता है पर इसका वाक्य रचना अन्य पुरुष में होती है। इसमें न तो कोई सम्बोधन होता है और न अन्त में हस्ताक्षर आदि होते हैं। केवल प्रेषक के हस्ताक्षर तथा पद-नाम होता है। प्रेषिती के पद-नाम का उल्लेख होता है।

उदाहरण-१

कार्यालय-ज्ञापन

विषय—'कार्यालय के स्थानान्तरण की सूचना'

अधोहस्ताक्षर कर्त्ता को यह आदेश मिला है कि समस्त सम्बन्धित मन्त्रालयों को सूचित कर दिया जाय कि शिक्षा मन्त्रालय के कार्यालय को नवीन भवन 'विधान भवन संख्या ७' में स्थानान्तरित कर दिया गया है। अतः सम्बन्धित पत्र आदि ५-३-८० से वहीं भेजे जायं।

कार्यालय की दूरभाष संख्या निम्नलिखित है—

सचिव—७३५०४, उप-सचिव ७३५६०,

कार्यालय ७३७४०

सेवा में
गृह मन्त्रालय

कोमल कान्त
उप सचिव
उ० प्र० शासन

प्रतिलिपि—

समस्त मन्त्रालयों को प्रेषित

(१)………….

(२)………….

(३)………….

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उदाहरण-२

कार्यालय ज्ञापन

नये उप-सचिव (वित्त विभाग) की सूचना—अधोहस्ताक्षरकर्त्ता को यह सूचित करने का निर्देश हुआ है कि वित्त विभाग में नये उप-सचिव के रूप में श्री जगन प्रसाद ओझा की नियुक्ति हुई है। अतः उनसे सम्बन्धित समस्त पत्रादि उनके पास भेजा जाय। उनकी दूरभाष सं० २७५०३ है।

राज बिहारी तिवारी
उप-सचिव
उ० प्र० शासन।

सेवा में,
गृह मन्त्रालय

प्रतिलिपि—

(१) शिक्षा मन्त्रालय
(२) विद्युत मन्त्रालय
(३) परिवहन मन्त्रालय
(४) नियोजन तथा ग्राम विकास मन्त्रालय
(५) राजस्व मन्त्रालय।

४. ज्ञापन

ज्ञापन का प्रयोग पत्रों की प्राप्ति, प्रार्थना पत्रों की सूचना देना, अधीनस्थ अधिकारियों को सूचना देने के लिए किया जाता है।

उदाहरण-१

ज्ञापन

पत्राङ्क ५२/२१/८०
शिक्षा मन्त्रालय
उ० प्र० शासन
दिनांक ५–१०–८०

विषय—'आशुलिपिक की नियुक्ति की सूचना'।

विजय कृष्ण तिवारी, मंगल देव निगम, नईमुद्दीन कुरेशी की नियुक्ति आशुलिपिक के पद पर निम्नलिखित शर्तों के अनुसार की गई है—

(१) पद स्थायी हैं।
(२) नियुक्ति दो वर्ष की परिवीक्षा पर की गई है।
(३) इस पद का वेतनक्रम ३३०-५६० है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

४. अन्य वे सभी शर्तें लागू मानी जायेंगी जो राज्य कर्मचारियों के लिए लागू की गई हैं।

उपरोक्त तीनों अभ्यर्थी शीघ्र कार्यभार ग्रहण कर लें।

अनिल 'भारती'
उप-सचिव
शिक्षा मन्त्रालय

सेवा में,

(१) श्री विजय कृष्ण तिवारी
विद्या निवास, रायबरेली

(२) श्री मंगल देव निगम
कृष्ण कुंज अलीगढ़

(३) श्री नईमुद्दीन कुरेशी
५, हजरतगंज, लखनऊ।

उदाहरण-१

पत्र बन्ध सं० २३/सा०/८०
विधान सभा सचिवालय
लखनऊ
दिनांक ५/११/८०

विधायकों का दौरा

सरकार के एक प्रस्ताव के अनुसार निम्नलिखित विधायकों को दंगा पीड़ित क्षेत्रों में १५/११/८०/ को दौरे पर जाने का अनुरोध है।

तदनुसार आपसे अनुरोध किया जाता है कि संलग्न पत्र में अपनी स्वीकृति भेजने का कष्ट करें।

राम चंद्र वर्मा
उप-सचिव

सेवा में,

(१) रामरूप साथी
सहारनपुर

(२) अभिलाष शुक्ला
देवरिया

(३) अरसाद हुसैन
तालबेहट

(४) रजिया हुसेन
कानपुर

(५) श्रीमती प्रतिभा त्यागी
बिजनौर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

५. परिपत्र (Circular)

परिपत्र के द्वारा सामूहिक रूप से सूचना प्रसारित की जाती है। इसमें किसी प्रकार का सम्बोधन नहीं किया जाता। नीचे परिपत्र जारी करने वाले के हस्ताक्षर होते हैं।

उदाहरण १

परिपत्र संख्या १

उड्डन मन्त्रालय
भारत सरकार

विषय—'क्रिकेट मैच देखने की सुविधा के सम्बन्ध में'।

सभी केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों को सूचित किया जाता है कि नवम्बर ८० में इंग्लैण्ड में होने वाली भारत इंग्लैण्ड क्रिकेट श्रृंखला को जो कर्मचारी/अधिकारी देखना चाहते हैं उन्हें १५०० रु० वापिसी टिकट हेतु मिलेगा।

जो व्यक्ति इस सुविधा से लाभ उठाना चाहते हैं वे अपने आवेदन पत्र अपने अधिकारी से अग्रसरित कराके २०/८/८० तक इस कार्यालय में प्रेषित कर दें।

भवदीय
सुखराम
अवर सचिव
उड्डयन तथा पर्यटन
मन्त्रालय
भारत सरकार

कभी-कभी परिपत्र का ढाँचा कार्यालय ज्ञापन जैसा भी बना दिया जाता है। यथा—

परिपत्र संख्या २

विश्व-विद्यालय अनुदान
आयोग
बहादुर शाह जफर मार्ग
नई दिल्ली,

सेवा में,
समस्त कुलपति
भारतीय विश्व-विद्यालय।

विषय—'प्राध्यापकों को विदेश में शोधकार्य की सुविधा के सम्बन्ध में'।

मुझे आपसे यह कहने का निर्देश हुआ है कि आपके विश्व-विद्यालय में जो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शिक्षक विदेश में शोध कार्य करने के इच्छुक हों वे अपने आवेदन पत्र संलग्न प्रपत्र के अनुसार टंकित प्रपत्र पर २५ दिसम्बर; ८० तक प्रेषित कर दें।

सभी आवेदन पत्र संस्था के प्राचार्य और कुलपति माध्यम से आने चाहिए।

जावेद हुसैन
उप सचिव
विश्व-विद्यालय अनुदान
आयोग, नई दिल्ली

६. अनुस्मारक

अनुस्मारक पत्रोत्तर में विलम्ब के लिए लिखा जाता है। यह मूल पत्र की प्रतिलिपि होता है।

अनुस्मारक की रूपरेखा

अनुस्मारक—१
पत्राङ्क २६/संबंधन/७६
कानपुर विश्व विद्यालय,
कानपुर

प्रेषक,
उपकुल सचिव
कानपुर विश्व-विद्यालय
कानपुर।
सेवा में,
प्राचार्य/सचिव
नेहरू कालेज छिबरामऊ

दिनांक ५/२/७६

विषय—'प्रवक्ताओं के अनुमोदन के सम्बन्ध में'।

महोदय,

इस कार्यालय में प्राप्त आपके पत्र दिनांक १५/१०/७८ के सन्दर्भ में यह सूचित किया जा चुका है कि प्रपत्र अपूर्ण है। आप शीघ्र समस्त वांच्छित पत्र प्रेषित करें।

यह भी सूचित करना है कि कुलपति के अंतिम निर्णय से पूर्व कार्यरत प्रवक्ताओं को सेवाओं से पृथक् न करें।

भवदीय
राम चरित
उपकुल सचिव

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

७. कार्यालय आदेश

कार्यालय आदेश किसी भी मंत्रालय/विभाग/संस्था में कार्यरत कर्मचारियों/अधिकारियों को कोई आदेश देने के लिए प्रयोग होता है ।

कार्यालय आदेश की भाषा प्रथम पुरुष में होती है । नीचे निर्गतकर्त्ता अधिकारी के हस्ताक्षर होते हैं । जिन व्यक्तियों के नाम आदेश दिया जाता है उनके नाम अन्त में बाईं ओर क्रमशः लिखे जाते हैं । कार्यालय आदेश का प्रारूप निम्न-लिखित है—

कार्यालय आदेश

शिक्षा निदेशालय
इलाहाबाद
दिनांक ५/२/८०

श्री अर्जुन सिंह अरोरा, जिला विद्यालय निरीक्षक बाराबंकी को उप-शिक्षा निदेशक (अर्थ) के पद पर स्थानापन्न रूप से प्रोन्नत किया जाता है । श्री अरोरा २/३/८० तक अपना कार्यभार ग्रहण कर लें ।

भवदीय
अभिलाष चंद्र पाठक
उप शिक्षा निदेशक
(सेवायें)

प्रतिलिपि—

(१) उप शिक्षा निदेशक
लखनऊ मण्डल ।

(२) उप-सचिव, शिक्षा मंत्रालय
उ० प्र० शासन ।

अभिलाष चंद्र पाठक
उप-शिक्षा निदेशक
(सेवायें)

उदाहरण-२

कार्यालय आदेश

कार्यालय, सचिव,
नेहरू कालेज छिबरामऊ
दिनांक ५/१०/८०

पत्रांक १०७।८०

श्री जगदीश नारायन त्रिपाठी को प्राध्यापक, अंग्रेजी विभाग के रूप में ७००)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१६०० वेतन क्रम में एक वर्ष की परिवीक्षा पर नियुक्त किया जाता है। उन्हें समय-समय पर राज्य सरकार द्वारा देय मँहगाई-भत्ता भी दिया जायेगा।

श्री त्रिपाठी एक सप्ताह में कार्यभार ग्रहण कर लें। यदि एक सप्ताह (१५/१०/८०) तक कार्यभार नहीं ग्रहण किया जाता तो यह समझा जायेगा कि श्री त्रिपाठी की इस पद पर कार्य करने की रुचि नहीं है।

ह० राजकिशोर दुबे
सचिव

प्रतिलिपि—

(१) कुल सचिव, कानपुर विश्वविद्यालय
(२) उप-शिक्षा निदेशक उच्च शिक्षा अर्थ—३ इलाहाबाद

८. पृष्ठांकन (Endorsement)

पृष्ठांकन का प्रयोग निम्नलिखित कार्यों के लिए किया जाता है—
(१) पत्र जब मूल रूप में वापिस किया जाता है।
(२) जब प्रतिलिपि प्रेषित की जाती है।
(३) पत्र निस्तारण के लिए दूसरे कार्यालय में भेजा जाता है।

उदाहरण-१

पृष्ठांकन

संलग्न पत्र कार्यवाही हेतु प्रेषित है।

प्रतिलिपि—
५०२/७८/

दिनांक ५/३/७८

(१) शिक्षा निदेशक उच्च शिक्षा, इलाहाबाद।
(२) अध्यक्ष प्रबंध समिति, नेहरू कालेज छिबरामऊ।
(३) श्री हरिश्चंद्र तिवारी, अध्यक्ष भूगोल विभाग, नेहरू कालेज छिबरामऊ।

रामकृष्ण
सहायक कुल सचिव
कानपुर वि० वि०

उदाहरण

पृष्ठांकन

मूल पत्र श्री विजय नारायण अग्निहोत्री को इस आशय से वापिस किया जाता है कि इस पत्र का संबंध इस कार्यालय से नहीं है।

अरविन्द त्रिपाठी
सचिव
कृषि तथा सहकारिता
मंत्रालय
उत्तर प्रदेश सरकार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

९. संकल्प

संकल्प (Resolution) का प्रयोग अधोलिखित कार्यों के लिए होता है—

(१) सरकार या संस्था की नीति में परिवर्तन के लिए।

(२) संस्था का नाम परिवर्तन के लिए।

(३) जांच समिति या वेतन आयोग आदि बनाने के लिए।

(४) संस्था की कार्यवाही के लिए।

उदाहरण

"वारेन हेस्टिग्ज महाविद्यालय लखनऊ की प्रबंध समिति की बैठक में यह निर्णय लिया गया कि इस महाविद्यालय का नाम सरदार भगतसिंह महाविद्यालय किया जाय क्योंकि 'वारेन हेस्टिग्ज महाविद्यालय, नाम दासता का प्रतीक है।"

समिति ने यह भी निर्णय लिया कि इस नाम की घोषणा समस्त प्रमुख पत्रों में प्रकाशित की जाय।

उदाहरण-२

उत्तर प्रदेश सरकार ने अपने राजपत्र (गजट) से प्रकाशित करने के लिए यह निर्णय लिया कि चूंकि चकबन्दी योजना प्रारम्भ में जिन परगनों में प्रारंभ की गई थी। वहाँ व्यवस्थित ढंग से नहीं हुई थी। अतः सरकार यह निर्णय लेती है— "उत्तर प्रदेश के जिन १२ परगनों में चकबन्दी योजना १९५७ में प्रथम बार प्रारंभ हुई थी। उनमें पुनः चकबन्दी योजना लागू की जायेगी। यह कार्य अक्टूबर १९८१ से प्रारंभ हो जायेगा। इस कार्य को व्यवस्थित ढंग से संपन्न कराने के लिए श्री हर स्वरूप शर्मा, आई० ए० एस० आयुक्त रुहेलखण्ड मण्डल भू० पू० चकबन्दी निदेशक उत्तर प्रदेश को प्रभारी बनाया जाता है।"

शिव मोहन शंखधर
मुख्य सचिव
उत्तर प्रदेश

१०. अधिसूचना

अधिसूचना का प्रयोग राजपत्र "(गजट) में सार्वजनिक महत्व के लिए किया जाता है। राष्ट्रपति या राज्यपाल चुनाव संबंधी अधिसूचना भी प्रसारित करते हैं। अधिसूचना का प्रयोग नवीन नीति संबंधी प्रसारण के लिए होता है। कभी-कभी नियुक्तियों, अवकाश आदि के लिए भी अधिसूचना जारी की जाती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उदाहरण-१

अधिसूचना

राज्यभवन, लखनऊ
दिनांक ५/६/८०

उत्तर प्रदेश जन अधिनियम के अन्तर्गत हुए विधान सभाओं के निर्वाचन में चुने हुए विधायक ११/६/८० को शपथ ग्रहण करेंगे।

(राजपत्र में प्रकाशित में प्रकाशनार्थ)

उदाहरण-२

अधिसूचना

राष्ट्रपति भवन
नई दिल्ली
५/११/८०

संख्या २३०/ राष्ट्रपति भारत सरकार ने केन्द्रीय रेल मन्त्री श्री कमलापति त्रिपाठी का त्याग पत्र दिनाङ्क ४/११/८० को स्वीकार कर लिया है तथा श्री केदार पाण्डेय अपने विभाग के साथ ही रेलवे मन्त्रालय का कार्य भी देखेंगे।

११. प्रेस विज्ञप्ति

समाचार पत्रों में प्रकाशन के लिए महत्वपूर्ण सूचना प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से दी जाती है। यह सूचना सरकार द्वारा लिये गये निर्णयों के विधिवत् प्रकाशन के लिए दी जाती है। सूचना निदेशालय द्वारा प्रेस विज्ञप्ति दी जाती है।

उदाहरण-१

प्रेस विज्ञप्ति

कार्यालय अधिशासी अभियन्ता
विद्युत विभाग आगरा नगर
संख्या ३१/ २–४२/८०
दिनांक ५/११/८०

जन सामान्य के सूचनार्थ प्रेस विज्ञप्ति की जाती है कि विद्युत् लाइन ठीक करने के लिए दि० ८/११/८० को नगर के पूर्वी भाग में विद्युत् सप्लाई बन्द रहेगी।

उदाहरण २

प्रेस विज्ञप्ति
उत्तर प्रदेश सरकार
सामान्य प्रशासन
दि० ५/११/८०

हीवेट पार्क का नाम परिवर्तन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उत्तर प्रदेश सरकार ने यह निर्णय लिया है कि हीवेट पार्क लखनऊ का नाम चन्द्र शेखर आजाद पार्क कर दिया जायगा। यह निर्णय १५/११/९० से लागू होगा।

चूंकि 'हीवेट' नाम विदेशी पराधीनता का सूचक है। भारत के स्वाधीन होने के बाद विदेशी पराधीनता सूचक नाम हटा देने चाहिये। सरकार का यह निर्णय इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि स्वर्गीय श्री चन्द्र शेखर आजाद की क्रान्तिकारी कर्मभूमि यह क्षेत्र रहा है।

सरकार ने यह भी निर्णय लिया है कि पार्क के मध्य में शहीदेआजम भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद तथा बेगम अजीमुल्ला खाँ की भव्य प्रतिमा भी प्रतिष्ठित की जायेगी।

ओम प्रकाश रजौरिया
मुख्य सचिव
उत्तर प्रदेश सरकार।

१२. प्रेस नोट

प्रेस विज्ञप्ति की भाँति प्रेस नोट भी उन विषयों के सम्बन्ध में प्रसारित किये जाते हैं जिन्हें सरकार या कोई वरिष्ठ अधिकारी जनसाधारण के सूचनार्थ समाचार-पत्र में प्रसारित करता है। प्रेस नोट की अपेक्षा प्रेस विज्ञप्ति अधिक महत्वपूर्ण होती है।

प्रेस नोट की रूपरेखा

प्रेस-नोट संख्या २३२

उत्तर प्रदेश के अल्पवेतन भोगी कर्मचारियों को चिकित्सा तथा शिक्षा की पारिवारिक सुविधा।

सरकार की विज्ञप्ति

उत्तर प्रदेश सरकार यह अनुभव करती है कि बढ़ती हुई मंहगाई में अल्प-वेतन भोगी कर्मचारी (जिनका प्रारम्भिक मूल वेतन ३००. रु० से कम है) शिक्षा तथा स्वास्थ्य की व्यवस्था नहीं कर सकते। अतः सरकार का निर्णय है कि उनके संरक्षितों को स्नातक स्तर तक की निशुल्क पुस्तकों के लिये ५०० रु० प्रतिवर्ष अनुदान तथा चिकित्सा की राजकीय चिकित्सालय में सुविधा प्राप्त होगी। यह सुविधा पति-पत्नी के अतिरिक्त तीन बच्चों तक ही उपलब्ध होगी।

राजेन्द्रसिंह पुरी
मुख्य सचिव
कृते
उत्तर प्रदेश शासन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१३. सरकारी विज्ञप्ति

उर्दू के सम्बन्ध में उत्तर प्रदेश सरकार की नीति स्पष्ट करते हुये एक प्रेस विज्ञप्ति।

उत्तर प्रदेश शासन
शासकीय विज्ञप्ति
संख्या २६५/एच०-एल० ३३/८०
दिनांक ५/१२/८०
उर्दू के सम्बन्ध में सरकार की नीति

उर्दू उत्तर भारत की महत्वपूर्ण भाषा है। प्रदेश के नागरिकों का बहुत बड़ा भाग उर्दू बोलता तथा पढ़ता है। राष्ट्र भाषा हिन्दी ने भी उर्दू के बहुत से शब्द तथा ध्वनियों को ग्रहण कर लिया है। इस दृष्टि से यह उचित है कि प्रदेश में उर्दू भाषा तथा साहित्य के उन्नयन के लिए सरकारी प्रयास हों।

इस कार्य की सफलता के लिए सरकार यह निर्णय लेती है—

(१) जूनियर हाई स्कूल स्तर तक उर्दू त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत पढ़ाई जाय।

(२) जिन संस्थाओं में उर्दू की सुविधा है वहाँ पुस्तकालय में पुस्तकों की व्यवस्था की जाय। इस कार्य के लिए सरकार अनुदान देगी।

(३) जो संस्थायें उर्दू शिक्षक की माँग करेंगी वहाँ उर्दू शिक्षक की व्यवस्था की जायेगी।

(४) उर्दू में प्रकाशित समाचार पत्रों को विज्ञापन की सुविधा दी जायेगी।

(५) उर्दू में लिखे प्रार्थना-पत्र स्वीकार कर लिये जायेंगे।

(६) प्रदेश की राजधानी में उर्दू अकादमी की स्थापना की जायेगी।

कृपा नारायण शुक्ला
मुख्य सचिव
कृते
उत्तर प्रदेश सरकार

१४. तार

तार नई वैज्ञानिक प्रणाली की उपहार है। तार द्वारा समाचार शीघ्र प्रेषित किये जाते हैं। सामान्य दशा में तार प्रेषित नहीं किये जाते।

फा०—३

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तार की रूपरेखा

उदाहरण १

"शान्ति व्यवस्था हेतु कठोरता का पालन करें"

मुख्य सचिव

जिला अधिकारी,

मुरादाबाद।

तार द्वारा न भेजा जाय।

(प्रेषक का नाम और पता)

कृपा शंकर शुक्ला, मुख्य सचिव उ० प्र० शासन, लखनऊ।

उदाहरण २

वीरेन्द्र कुमार पालीवाल

उप-निदेशक उद्योग

बलिया।

"अविलम्ब आओ।"

उद्योग सचिव

तार द्वारा न भेजा जाय।

(प्रेषक का नाम और पता)

रत्नशंकर अवस्थी, उद्योग सचिव उ० प्र० शासन, लखनऊ।

१५. द्रुत पत्र

(Express Letter)

सामान्य पत्रों की ही भाँति द्रुत पत्र लिखे जाते हैं। केवल डाक प्रसारण में वरीयता दी जाती है। द्रुत पत्र पर २० पैसे की अतिरिक्त डाक टिकट लगाई जाती थी। इनके प्रेषण और वितरण में वरीयता दी जाती थी। पर अब शासन ने द्रुतपत्र भेजने पर प्रतिबन्ध लगा दिया है।

द्रुत पत्र की रूपरेखा

द्रुत पत्र

प्रेषक,

राम औतार दीक्षित,
गृह सचिव
उ० प्र० शासन, लखनऊ

सेवा में,

जानकी प्रसाद गौतम
उप-महानिरीक्षक पुलिस,
बलिया।

पत्र संख्या २६६/८०

दिनांक ५/१०/८०

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय—'कार्यवाहक महानिरीक्षक के पद-भार को ग्रहण करने के सम्बन्ध में'।

महोदय,

महानिरीक्षक पुलिस उत्तर प्रदेश दो माह के अवकाश पर हैं। अतः पत्र प्राप्त करते ही आप पद भार ग्रहण करने लखनऊ प्रधान कार्यालय पर उपस्थित हों।

वीरेन्द्र कुमार मिश्रा
गृह सचिव
उ० प्र० शासन,
लखनऊ

१६. मितव्ययिता पत्र

ये पत्र तार का ही दूसरा रूप है। प्रायः विदेशों को मितव्ययिता पत्र या कूट पत्र भेजे जाते हैं। इनकी भाषा गुप्त होती है। कूट शब्दों द्वारा सन्देश प्रसारित किया जाता है। पहले ये पत्र समुद्री जहाज द्वारा भेजे जाते थे पर अब हवाई जहाज (डाक यान) द्वारा प्रेषित किये जाते हैं।

मितव्ययिता पत्र का प्रारूप

भारत सरकार
विदेश मन्त्रालय

सेवा में,

उच्चायुक्त,
इंग्लैण्ड
संख्या १२/८०

नई दिल्ली।

आप ब्रिटेन सरकार को यह सूचित कर दें कि पर-राष्ट्र मन्त्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी अस्वस्थ होने के कारण ब्रिटेन नहीं आ रहे हैं।

जोगराज सिंह
विदेश सचिव

१७. रेडियोग्राम

रेडियोग्राम वायरलेस द्वारा भेजा जाता है। विशेष परिस्थिति में रेडियोग्राम से सूचना भेजी जाती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रेडियोग्राम का प्रारूप

सेवा में,
जिला अधिकारी,
इटावा

प्रेषक,
उप-सचिव,
गृह विभाग, उ० प्र० शासन,
लखनऊ।

'ईद' के अवसर पर कहीं कोई साम्प्रदायिक दंगा न हो जाय। सावधानी बरतें।

राजपाल सिंह
उप-सचिव
उ० प्र० सरकार।

उदाहरण २

सेवा में;
पुलिस अधीक्षक
हमीर पुर

आप तुरन्त अलीगढ़ जाकर इसी पद पर कार्य-भार ग्रहण कर लें। देरी करना अनुशासनहीनता मानी जायगी। अपने कार्य-भार ज्येष्ठतम् उप-पुलिस अधीक्षक को दे दें।

विश्वजीत वर्मा
गृह सचिव
कृते
गृह मन्त्री, उ० प्र० शासन

अभ्यासार्थं प्रश्नावली

(१) प्रालेखन का अर्थ स्पष्ट करते हुये उसकी एक परिभाषा दीजिए।

(२) प्रालेखन विधि का विस्तार सहित वर्णन कीजिए।

(३) सरकारी पत्र का प्रारूप प्रस्तुत कीजिए।

(४) मुख्य सचिव उत्तर प्रदेश शासन द्वारा मुख्य सचिव मध्य प्रदेश शासन को एक सरकारी पत्र/शासकीय पत्र लिखिए जिसमें बुन्देलखण्ड क्षेत्र के विकास के लिए सामूहिक योजना का विचार व्यक्त किया गया हो।

(५) शिक्षा सचिव की ओर से शिक्षा निदेशक के लिए अर्द्ध-शासकीय पत्र लिखिये जिसमें प्रदेश में कार्यरत महाविद्यालय शिक्षकों की संख्या माँगी गई हो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(६) कार्यालय ज्ञापन का महत्व—तथा कार्य बताते हुए शिक्षा विभाग में नियुक्त नवीन सचिव की नियुक्ति पर कार्यालय ज्ञापन प्रस्तुत कीजिए।

(७) कार्यालय-आदेश का प्रारूप प्रस्तुत कीजिए।

(८) अनुस्मारक का प्रारूप प्रस्तुत कीजिए।

(९) परिपत्र की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए।

(१०) प्रेस नोट तथा प्रेस विज्ञप्ति का अन्तर बताते हुए दोनों का उदाहरण देकर प्रारूप प्रस्तुत करें।

(११) अधिसूचना का प्रारूप प्रस्तुत करें।

(१२) संस्कृत के विकास के लिए एक सरकारी विज्ञप्ति कीजिए।

(१३) ५ मई, १९८१ को होने वाले विधान परिषद के चुनाव की अधिसूचना ३१ मार्च को राज्यपाल उत्तर प्रदेश कार्यालय से जारी कीजिए।

(१४) प्रदेश के समस्त महाविद्यालयों में स्वतन्त्रता रजत-जयंती मनाने का आवेदन देने के लिए सचिवालय के शासनादेश का प्रारूप प्रस्तुत कीजिए।

(कानपुर वि० वि०, १९७३)

(१५) अगले रविवार को नगर में प्रातःकाल एवं सायंकाल पानी की सप्लाई में कमी की सूचना देने हेतु एक प्रेस विज्ञप्ति लिखिए। (कानपुर वि० वि०, १९७३)

(१६) केन्द्रीय सचिवालय के सामान्य प्रशासन विभाग की ओर से उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव के नाम आगामी बुद्ध जयन्ती के अवसर पर सार्वजनिक अवकाश घोषित करने के लिए शासकीय पत्र लिखिए। (कानपुर वि० वि०, १९७३)

(१७) उर्दू के संबंध में उत्तर प्रदेश सरकार की नीति स्पष्ट करते हुए एक शासकीय विज्ञप्ति लिखिये। (कानपुर वि० वि०, १९७४)

(१८) मानस-चतुश्शती वर्ष में प्रदेश के समस्त महाविद्यालयों में समय-समय पर मानस का महत्व प्रतिपादित करने वाले कार्यक्रम आयोजित करने हेतु उत्तर प्रदेश शासन के शासनादेश प्रारूप प्रस्तुत कीजिए। (कानपुर वि० वि०, १९७४)

(१९) प्रदेश के बिजली विभाग के कर्मचारियों की हड़ताल से होने वाली हानि का विवरण देते हुए प्रदेश के मुख्य मन्त्री की ओर से कर्मचारियों के संगठन के मुख्य सचिव से हड़ताल समाप्त करने और शान्त वातावरण में वार्त्ता का अनुरोध करते हुए अर्द्ध-शासकीय पत्र लिखिए। (कानपुर, वि० वि०, १९७४)

(२०) उत्तर प्रदेश शासन द्वारा विश्व-विद्यालय तथा सरकारी कालेज के शिक्षकों के लिए स्वीकृत नवीन वेतनमानों को प्रदेश में लागू करने के संबंध में सचिव शिक्षा विभाग उ० प्र० शासन की ओर से एक प्रेस-विज्ञप्ति कीजिए।

(कानपुर वि० वि०, १९७५)

(२१) विक्टोरिया कालेज आगरा के प्रबन्धक की ओर से कालेज का नाम बदल कर सरोजनी नायडू कालेज करने के संबंध में एक संकल्प-प्रस्तुत कीजिए।

(कानपुर वि० वि०, १९७५)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(२२) प्रालेख के आवश्यक तत्व क्या हैं और क्या-क्या वर्जित हैं ?

(२३) उत्तर प्रदेश शासन के स्वास्थ्य सचिव की ओर से समस्त जिलों के मुख्य चिकित्सा अधिकारी के नाम इस आशय का प्रालेखन प्रस्तुत कीजिए जिसमें परिवार नियोजन की प्रमुखता देने का निर्देश दिया गया हो।

(कानपुर वि० वि०, १९७६)

(२४) महाविद्यालयों में नव-नियुक्ति उपकुल सचिव के पद ग्रहण की सूचना सम्बन्धित अधिकारियों व महाविद्यालयों को देने हेतु कार्यालय ज्ञापन का प्रारूप प्रस्तुत कीजिए। (कानपुर वि० वि०, १९७७)

(२५) निम्नाँकित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणियाँ लिखें एवं उदाहरण भी दें—

(क) रेडियोग्राम, (ख) द्रुत-पत्र, (ग) सरकारी पत्र, (घ) ज्ञापन, (ङ) अधिसूचना, (च) परिवार के पत्र। (कानपुर वि० वि०, १९७८)

(२६) निम्नांकित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणियाँ लिखिये—

(क) आधिकारिक पत्राचार, (ख) संकल्प या प्रस्ताव, (ग) ज्ञापन, (घ) बधाई पत्र, (ङ) रेडियोग्राम, (च) आमन्त्रण पत्र। (कानपुर वि० वि०, १९७९)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[३] प्रतिवेदन

प्रतिवेदन शब्द का आशय आख्या प्रस्तुत करना है। अंग्रेजी में इसके लिए (Report) 'रिपोर्ट' शब्द का प्रयोग होता है। अंग्रेजी में Report संज्ञा और क्रिया दोनों ही अर्थों में प्रयुक्त होता है हिन्दी में भी दोनों ही अर्थों में प्रयुक्त होता है। रिपोर्ट शब्द के हिन्दी में कई अर्थ दिये गये हैं।

यथा—आख्या प्रस्तुत करना, विवरण प्रस्तुत करना, सूचना देना (Joining report), शिकायत करना, उपस्थित होना। प्रो० विराज तथा श्री गोपी नाथ श्रीवास्तव ने आख्या प्रस्तुत करना या विवरण देना या प्रतिवेदन 'रिपोर्ट' का हिन्दी रूपान्तर माना है पर श्री कामिल बुल्के ने हिन्दी, अंग्रेजी शब्द-कोष में निम्नलिखित अर्थ दिये हैं—

(१) (Official) रिपोर्ट या प्रतिवेदन प्रस्तुत करना,
(२) (Give an account) विवरण देना,
(३) (For press) सम्वाद लिखना या भेजना,
(४) (Inform) खबर या सूचना देना,
(५) (Complaint) शिकायत,
(६) उपस्थित हो जाना,
(७) (To Police) रिपोर्ट या रपट करना।

रिपोर्ट का आख्या अर्थ ही प्रतिवेदन के लिए प्रयुक्त होता है। प्रतिवेदन का प्रयोग शासकीय और अशासकीय दोनों ही विभागों में होता है। प्रतिवेदन की परिभाषा निम्नलिखित शब्दों में दी जा सकती है—

"प्रतिवेदन किसी आधिकारिक व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत की गई वह आख्या है जो सम्बन्धित विषय के बारे में एकत्र की गई सूचना, योजना, तथा यथा-स्थिति का चित्र प्रस्तुत करती हो। साथ ही विषय की सफलता के लिए अपने सुझाव देना भी प्रतिवेदन की सीमा के अन्तर्गत आता है।"

प्रतिवेदन का क्षेत्र—प्रतिवेदन के दो क्षेत्र हैं—

(१) **सरकारी**—(अ) पूर्ण शासकीय, (ब) अर्द्ध-शासकीय।
(२) **गैर-सरकारी**।

प्रतिवेदन महत्वपूर्ण एवं उत्तरदायी अधिकारी ही प्रस्तुत करते हैं। यथा बाढ़ से हुई क्षति के लिए जिला कृषि अधिकारी द्वारा दिया गया प्रतिवेदन, महाविद्यालय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के प्राचार्य द्वारा वार्षिकोत्सव पर प्रस्तुत प्रतिवेदन आदि। अशासकीय प्रतिष्ठानों में भी कार्य की प्रगति, भविष्य की योजना आदि से सम्बन्धित प्रतिवेदन प्रस्तुत किये जाते हैं। सरकारी विभागों में उच्च अधिकारी अपने अधीनस्थ अधिकारियों से कार्य विवरण तथा योजना से सम्बन्धित प्रतिवेदन माँग लेते हैं।

प्रतिवेदन कर्त्ता के गुण —

(१) **तथ्यों का अनुसन्धान**—जैसा कि ऊपर बताया गया है कि उच्च अधिकारी अपने अधीनस्थ अधिकारियों से महत्वपूर्ण विषयों पर आख्या या प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के लिए कहते हैं। इससे स्पष्ट है कि प्रतिवेदक में तथ्यों के अन्वेषण की क्षमता आवश्यक है। जिस विषय में प्रतिवेदन प्रस्तुत करना है, उससे सम्बन्धित तथ्यों का सही संकलन करना प्रतिवेदक के लिए आवश्यक है। जब तक तथ्यों का संकलन सत्यता एवं स्पष्टतापूर्वक नहीं किया जायगा तब तक सही निर्णय कर पाना सम्भव नहीं है। यदि जटिल समस्या से सम्बन्धित प्रतिवेदन प्रस्तुत करना है तो तथ्यों का अनुसन्धान एवं संकलन सावधानी से करना आवश्यक है।

(२) **निष्पक्ष दृष्टि**—प्रतिवेदक को तथ्य संकलन करते समय निष्पक्ष होना चाहिए। यदि प्रतिवेदक किसी पक्ष का समर्थन करेगा तो तथ्य संकलन में सत्यता नहीं होगी तथा परिणाम सही नहीं होंगे।

(३) **आंकड़े प्रस्तुत करना**—प्रतिवेदक को अपने पक्ष को प्रकट करने के लिए आवश्यक आँकड़े प्रस्तुत करना चाहिए तथा मानचित्र भी प्रस्तुत करना चाहिए।

(४) **लिखित रूप में प्रस्तुत करना**—प्रतिवेदन में परिस्थिति का आँकलन प्रस्तुत किया जाता है। इसके लिए आवश्यक है कि लिखित रूप में प्रस्तुत करने की क्षमता होना। प्रतिवेदन द्वारा ही पढ़ने वाला परिस्थिति के स्वरूप, घटनाक्रम का विवरण समझाने में सफल होता है।

प्रतिवेदन की विशेषताएँ

प्रतिवेदन में निम्नलिखित विशेषताएँ होना आवश्यक है—

(१) प्रतिवेदन में परिस्थिति का स्वरूप, घटनाक्रम, कार्य और योजना पर प्रकाश डालने की क्षमता होनी चाहिए।

(२) प्रतिवेदन तथ्य परक होना चाहिए।

(३) प्रतिवेदन की भाषा सरल तथा प्रवाहपूर्ण होनी चाहिए।

(४) वस्तु-स्थिति का यथा-तथ्य वर्णन होना आवश्यक है।

(५) समस्या के समाधान हेतु उचित सुझाव भी प्रतिवेदन में देना आवश्यक है।

(६) स्थान, तिथि एवं समय का सही विवरण होना चाहिए।

(७) प्रतिवेदन में गम्भीर विवेचन संक्षिप्त में होना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(८) तथ्यानुसंधान का सही निरूपण प्रतिवेदन की प्रमुख विशेषता है।

(९) आवश्यक आँकड़े, मानचित्र एवं रेखाचित्र का उल्लेख करना चाहिए।

(१०) समस्या का स्वरूप सही रूप में प्रस्तुत होना चाहिए।

(११) प्रतिवेदन में प्रतिवेदक की योग्यतानुसार उसकी सतर्कता का भी परिचय होना चाहिए।

(१२) प्रतिवेदन में आवश्यक बातें नहीं आनी चाहिए तथा आवश्यक तथ्य छिपाने भी नहीं चाहिए।

प्रतिवेदन लिखने की विधि

प्रतिवेदन लिखना साधारण कार्य नहीं है। इस कार्य हेतु गहन सूझ-बूझ और योग्यता की आवश्यकता है। अभ्यास प्रतिवेदन के लिए आवश्यक है। 'करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान' कहावत के अनुसार अभ्यास द्वारा प्रतिवेदन लिखने की कला का विकास किया जा सकता है। प्रतिवेदन लिखने के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया आवश्यक है—

(१) सर्वप्रथम प्रतिवेदन का शीर्षक देना चाहिए।

(२) विषय का तथ्यपरक वर्णन करना चाहिए।

(३) तथ्यों की संख्या के अनुसार परिच्छेदों में विभाजन करना चाहिए।

(४) समस्या का मूल स्वरूप प्रस्तुत करना चाहिए।

(५) समस्या के कारण देने चाहिए।

(६) समस्या के निदान हेतु सुझाव तथा समस्या हल करने के लिए संस्तुति देना चाहिए।

(७) भाषा सरल, सुबोध तथा प्रवाहपूर्ण होनी चाहिए। यह ध्यान रहे कि भाषा कहीं आलंकारिक तो नहीं हो रही है। आलंकारिक भाषा का प्रयोग करना प्रतिवेदन में उचित नहीं है।

(८) प्रतिवेदन के अन्त में प्रतिवेदन कर्त्ता अपने हस्ताक्षर, पद तथा दिनांक उल्लेख करें।

(९) यदि आवश्यक हो तो अन्य अधिकारियों को इसकी प्रतिलिपि दी जानी चाहिए।

उदाहरण १

'आवेदकों की बढ़ती हुई संख्या के अनुसार छात्रों के प्रवेश करने के सम्बन्ध में'।

सचिव, प्रबन्ध समिति राष्ट्रीय महाविद्यालय बल्देव के निर्देशानुसार मैंने महाविद्यालय की स्थिति, कुर्सी आदि व्यवस्था, कक्ष संख्या तथा प्राध्यापकों की संख्या को देखते हुए परिस्थिति का मूल्यांकन किया है। चूंकि महाविद्यालय ग्रामीण क्षेत्र में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्थित है, प्रवेश के लिए भारी संख्या में आवेदन पत्र प्राप्त हुए हैं। इससे पूर्व वर्षों में बी० ए० प्रथम वर्ष में छात्र संख्या पाँच सौ रह चुकी है। इस वर्ष छात्र संख्या कम निर्धारित करना उचित नहीं है। यह ठीक है कि कम छात्र होने पर भी प्राध्यापकों के वेतन पर प्रभाव नहीं पड़ेगा। राजकीय कोष से वेतन पूरा मिलेगा। पर राष्ट्र हित में प्राध्यापकों को अधिक श्रम करके शिक्षक धर्म का भी पालन करना चाहिए। समय-चक्र में परिवर्तन भी करना पड़ेगा।

मेरा अनुरोध है कि छात्र संख्या में वृद्धि की जाय। प्रवेश करते समय छात्रों की योग्यता, चरित्र, स्वास्थ्य एवं क्रीड़ा जगत् की उपलब्धियों को ध्यान में रखना चाहिए।

भवदीय

दिनांक २७-८-८० डॉ० विजय शंकर वधौतिया

संयोजक

प्रवेश समिति, कला संकाय

राष्ट्रीय महाविद्यालय बल्देव।

प्रतिवेदन

आगरा महाविद्यालय के प्रचार्य द्वारा दीक्षान्त समारोह में पढ़ा गया प्रतिवेदन।

यह महाविद्यालय महात्मा गांधी मार्ग पर स्थित है। १८२३ में पंडित गंगा-धर शास्त्री द्वारा पवित्र वृज भूमि में उच्च शिक्षा की व्यवस्था हेतु इस महाविद्यालय की स्थापना की थी। प्रारम्भ में यह संस्कृत विद्यालय था पर बाद में सभी विषयों की व्यवस्था की गई। वर्तमान समय में इस महाविद्यालय में कला, विज्ञान तथा विधि संकाय की अनुसंधान स्तर तक की शिक्षा व्यवस्था यहां है। कला संकाय में हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, भाषाविज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, भूगोल, सैन्य-विज्ञान, मनोविज्ञान, दर्शन तथा गणित, विज्ञान संकाय में भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित, जीव विज्ञान, सांख्यिकी तथा खगोल विज्ञान की स्नातकोत्तर स्तर तक की शिक्षा व्यवस्था है।

इस विद्यालय में १६५ व्याख्यान कक्ष तथा १७ प्रयोगशालायें हैं। इस विद्यालय में स्नातक स्तर तक छात्र तथा छात्राओं की शिक्षा व्यवस्था पृथक्-पृथक् है। कुल छात्र संख्या ८,००० है जिनमें २८६५ छात्रायें हैं।

खेल-कूद—क्रीड़ा का कार्य महाविद्यालय में व्यवस्थित है। प्रो० चंद्रिका मोहन सांडिल्य क्रीड़ा सचिव हैं। प्रेम मुरारी पाठक क्रीड़ा निदेशक हैं। खेलकूद का विशाल मैदान, स्टेडियम इस महाविद्यालय का गौरव है। महाविद्यालय की टीम विश्व-विद्यालय सर्वोत्तम है। गतवर्ष दो छात्रों ने राष्ट्रीय स्तर तक दौड़ तथा कुश्ती में पुरस्कार प्राप्त किये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनुशासन—महाविद्यालय के मुख्य अनुशासन अधिकारी (मुख्य नियन्ता) डा० रामगोपाल सिंह चौहान हैं। छात्रों को भी अनुशासन परिषद् में प्रतिनिधित्व मिलता है।

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्य—महाविद्यालय में वाद-विवाद तथा साहित्यिक कार्य डा० दयाशंकर शर्मा की देख-रेख में होता है। विश्व-विद्यालय की हिन्दी डिवेट तथा पन्ना लाल ट्राफी डिवेट में महाविद्यालय की टीम विजयी रही। व्यक्तिगत रूप से श्री मौकम सिंह चौहान को विश्व-विद्यालय में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। महाविद्यालय का सांस्कृतिक दल ग्वालियर, अजमेर तथा अलवर डॉ० राम स्वरूप त्रिपाठी 'राम' एवं कुमारी मंजुला गौतम के निर्देशन में गया तथा प्रथम स्थान प्राप्त किया। श्री प्रेमचंद्र शुक्ल, कुमारी आभा बहुगुणा एवं प्रमिला खण्डेलवाल को व्यक्तिगत पुरस्कार भी प्राप्त हुए।

पुस्तकालय एवं वाचनालय—महाविद्यालय का पुस्तकालय श्रेष्ठतम् है। मुख्य ग्रन्थालय में एक लाख पुस्तकें हैं। 'बुक बैंक' तथा स्वतः निर्गत योजना में ५०,००० पुस्तकें हैं। सभी विषयों के प्रमुख शोध पत्र, प्रमुख समाचार-पत्र यहाँ आते हैं। पुस्तकालय का कार्य सुयोग्य ग्रन्थालयी डॉ शत्रुघ्न मरिम त्रिपाठी के कुशल निर्देशन एवं कठिन परिश्रम का परिणाम है।

भावी योजनाएँ—अनुसंधान क्षेत्र में विकास, एम० फिल् की नियमित कक्षाएँ प्रारम्भ करने की योजना विचाराधीन है।

दिनांक ५-२-८० डॉ० सत्य नारायण दुबे
प्राचार्य

उदाहरण ३

'नेहरू महाविद्यालय छिबरामऊ के पुस्तकालय की स्थिति का प्रतिवेदन।'

नेहरू महाविद्यालय छिबरामऊ के पुस्तकालय का निरीक्षण करने के बाद स्थिति हुई। महाविद्यालय के पुस्तकालय में पुस्तकों की वास्तविक संख्या पंजिका में अंकित संख्या से कम थी। २२६५ पुस्तकें पुस्तकालय में प्राप्त नहीं हुईं। पुस्तकालयाध्यक्ष श्री कैलाश सिंह चौहान से पूछने से ज्ञात हुआ कि महाविद्यालय में उन्हें प्रारम्भ से ही ये पुस्तकें नहीं मिलीं। अनधिकृत रूप से ज्ञात हुआ कि संस्था के प्राचार्य द्वारा फर्जी पुस्तकों के नाम अंकित कर दिये गये तथा उनके मूल्य कैश-बुक में चढ़ा दिये गए।

विजय कुमार श्रीवास्तव
दिनांक ५-१२-७८ अध्यक्ष
जाँच समिति नेहरू कालेज,
छिबरामऊ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अभ्यासार्थ प्रश्न

(१) प्रतिवेदन की परिभाषा कीजिए और प्रतिवेदन की विशेषताएँ बताइये ?

(कानपुर वि० वि०, १६७५, ७६, ७७)

(२) अपने महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव पर प्राचार्य द्वारा पढ़ा गया प्रतिवेदन प्रस्तुत कीजिए ।

(कानपुर वि० वि० १६७१, ७६)

(३) वार्षिक परीक्षा में परीक्षा केन्द्र ११ (डी० एस० एन० कालेज, उन्नाव) के निरीक्षण हेतु नियुक्त किये गये उड़न दस्ते का प्रतिवेदन प्रस्तुत कीजिए ।

(४) प्रतिवेदन की परिभाषा, क्षेत्र तथा लिखने की विधि बताइये ।

(५) परिवहन आयुक्त द्वारा प्रदेश की परिवहन दशा पर एक प्रतिवेदन कीजिए ।

(६) जनपद फतेहपुर की शक्ति व्यवस्था पर पुलिस अक्षीक्षक का प्रतिवेदन प्रस्तुत कीजिए ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[४] पत्राचार

पत्र जीवन में आवश्यक होते हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में ही उसके संबंधी होते हैं। उसे अपने संबंधियों, व्यवहार वालों से सम्पर्क करना पड़ता है। सम्पर्क करने का माध्यम पत्र है। शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति हो जिसने जीवन में कभी न तो कोई पत्र लिखा हो या लिखवाया हो। आज तो जीवन में आवश्यक हो गये हैं। वास्तव में पत्रों द्वारा दो हृदयों का मिलन होता है। जब दो व्यक्ति एक-दूसरे से दूर रह रहे होते हैं तो पत्र ही मिलन सूत्र का कार्य करता है।

अच्छे पत्र की विशेषताएँ

पत्र लेखन एक कला है जो व्यक्ति इस कला में निष्णात होता है, वह अपने प्रिय व्यक्ति का हृदय जीतने में सक्षम होता है। कुछ पत्र तो ऐतिहासिक वन जाते हैं "पिता के पत्र पुत्री के नाम" (पंडित जवाहरलाल नेहरू के अपनी पुत्री इंदिर "इन्दू को लिखे गये पत्र), बंदी के पत्र (पंडित कमलापति त्रिपाठी द्वारा कारागार से अपने पुत्र लोकपति त्रिपाठी को लिखे गये पत्र) पत्र आज ऐतिहासिक रूप धारण कर सके हैं।

पत्र में अपने विचार सूक्ष्म रूप से व्यक्त किये जाते हैं, पर स्पष्ट अभिव्यक्ति अच्छे पत्र की विशेषता है। पत्र में निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं :—

(१) सरल सुबोध भाषा,
(२) विचारों की स्पष्टता,
(३) प्रभावपूर्ण शैली,
(४) संक्षिप्तता,
(५) स्वतः पूर्णता,
(६) प्रभावान्विति।

जैसा कि ऊपर लिखा गया है कि पत्र हृदय की अनुभूतियों को अभिव्यक्त करते हैं। अनुभूति सहज प्रकार से अभिव्यक्त होनी चाहिए। इसलिए भाषा सहज, सुबोधमय होनी चाहिए। कुछ व्यक्ति सामान्य पत्रों में भी पाण्डित्य का प्रदर्शन करते हैं यह उचित नहीं है। पारिवारिक पत्रों में सरलता तो आवश्यक ही है।

विचारों को स्पष्ट करने की कला ही बुद्धिमत्ता का लक्षण है। इसके साथ ही पत्र अपने में एक पूर्ण इकाई होता है। मनुष्य के विचार हृदय की भावनाओं की अभिव्यक्ति होते हैं। पत्र में इन्हें क्रमबद्ध ढंग से लिपिबद्ध किया जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पत्र की भाषा सरल तथा सुबोध होती है। पत्र की भाषा में क्लिष्टता आना अच्छा नहीं होता।

पत्रों के प्रकार

पत्रों के चार प्रकार होते हैं :—

(१) सामाजिक पत्र,

(२) व्यावसायिक पत्र,

(३) प्रशासनिक पत्र,

(४) ऐतिहासिक पत्र।

प्रशासनिक पत्र 'प्रालेखन' अध्याय में दिये गये हैं। व्यावसायिक पत्र पाठ्य-क्रम में नहीं है। सामाजिक पत्र ही पाठ्य-क्रम में है जो नीचे दिये जा रहे हैं। इनके तीन प्रकार हैं—

(१) पारिवारिक पत्र,

(२) व्यावहारिक पत्र,

(३) आधिकारिक पत्र।

पत्रों का निश्चित ढाँचा होता है। जो निम्नलिखित हैं—

स्थान का नाम
दिनांक

सम्बोधन

अभिवादन

कलेवर

हस्ताक्षर तथा सम्बन्ध

यथा

छिबरामऊ
दिनाङ्क २ अक्टूबर, १९८०

प्रिय पुत्र

सर्वदा प्रसन्न रहो।

(विवरण)

तुम्हारा पिता
कौशल किशोर चतुर्वेदी

इसी प्रकार कुछ पारिवारिक पत्रों के ढाँचे दिये जा रहे हैं—

सम्बन्ध	सम्बोधन	अभिवादन	अभिनिवेदन
पिता-पुत्र	प्रिय अजीत	सर्वदा प्रसन्न रहो या चिरायु रहो	तुम्हारा पिता
पुत्र-माता	प्रातः स्मरणीय माताजी	प्रणाम	आपका पुत्र
पुत्र-पिता	पूज्य पिता जी	"	"
मित्र-मित्र	प्रिय रामहेत	सस्नेह उर मिलन	तुम्हारा मित्र

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सम्बन्ध	सम्बोधन	अभिवादन	अभिनिवेदन
अग्रज-अनुज	प्रिय विनोद	सर्वदा प्रसन्न रहो	तुम्हारा भाई
पति-पत्नी	प्रिय कमले	शुभाशीष	तुम्हारा ही
प्रिय-प्रेयसि	प्रिय विमले	उर मिलन	रमेश अवस्थी
शिष्य आचार्य	प्रातः स्मरणीय गुरुवर	प्रणाम	आपका शिष्य हेमन्त
अनुज-अग्रज	पूज्य भैया	प्रणाम,	आपका नरेन्द्र

इसी आधार पर पारिवारिक तथा सामाजिक पत्र लिखे जाते हैं।

कुछ पत्रों के उदाहरण निम्नलिखित हैं :—

अग्रज का पत्र अनुज के नाम

कृष्ण-कुंज
शामली
दिनांक ५-१२-७८

प्रिय शिवरत्न !

सर्वदा प्रसन्न रहो।

तुम्हारा पत्र मिला। हृदय गद्गद् हो गया। तुम परिश्रम से पढ़ रहे हो। मन को सन्तोष हुआ। आचार्यों का आशीर्वाद तथा सहयोग तुम्हें मिल गया है—तुम्हारा जीवन धन्य है। मेरी कामना है कि जो विश्वास तुम्हें मिला है, उसके लिए तुम बन सको। इस अवस्था में जो ज्ञान अर्जन कर लोगे वही भविष्य का आधार बनेगा। यह भी स्मरण रखो 'विनयाविनयेन शोभत'। विनयी व्यक्ति ही ज्ञान की धार सँजोये रख सकता है।

मैं तुम्हारे व्यय के लिए ५०० रु० बैंक ड्राफ्ट भी भेज रहा हूँ। पत्र लिखते रहना। परिवार के सभी स्वस्थ हैं।

तुम्हारा भाई
रामजीत लबनिया

पिता का पत्र पुत्र के नाम

कानपुर
दिनांक ५-८-८०

प्रिय विजय !

सर्वदा प्रसन्न रहो।

तुम्हारा पत्र मिला। हृदय गद्गद् हो गया। तुम्हारा अध्ययन ठीक प्रकार चल रहा है—प्रसन्नता की बात है। छात्र के जीवन का स्वर्णिम समय है। छात्र-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जीवन ही मानव जीवन की आधार-शिला है। जिस प्रकार भवन की नींव मजबूत होगी उसी प्रकार भवन का स्वामित्व होगा इसी प्रकार मानव जीवन है जो व्यक्ति अपने छात्र-जीवन में अध्ययन नहीं कर पाता वह सफलता का जीवन जी भी नहीं सकता। तुम्हारा यह समय जीवन का स्वर्णिम अवसर है। मन लगाकर अध्ययन करो। विशेष बात यह है कि तुम यांत्रिकी-विज्ञान का अध्ययन कर रहे हो। तुम आगे चलकर एक अभियंता बनोगे। यदि इस समय अध्ययन नहीं कर सके तो आगे के जीवन में कार्य नहीं कर पाओगे।

कान्ता ससुराल चली गई है। रंजना का अध्ययन ठीक चल रहा है। मयंक और आलोक स्वस्थ हैं। तुम्हारी माता जी तुम्हें आशीर्वाद कहती हैं।

कोटिशः शुभकामनाओं के साथ

तुम्हारा पिता

चंद्रिका मोहन श्रीवास्तव

आर्यनगर, कानपुर।

सेवा में,

श्री विजय शंकर श्रीवास्तव

१२, दयानन्द छात्रावास

रुड़की विश्वविद्यालय

रुड़की।

माता का पत्र पुत्र के नाम

चन्द्रपुरी इटावा

दिनांक ५-८-७६

प्रिय ललितू !

सर्वदा प्रसन्न रहो।

यहाँ सभी प्रसन्न हैं, आशा है तुम भी स्वस्थ और सानन्द होंगे। जब से तुम यहाँ से गये हो अभी तक कोई पत्र नहीं लिखा। बड़ा कष्ट होता है। तुमसे चलते समय मैंने और तुम्हारे पिता जी ने यह भी कह दिया था कि पत्र लिख देना। कल ही तुम्हारे विद्यालय का छात्र प्रभात मिला था जिसने तुम्हारी कुशलता का संदेश दिया। हम सभी तुम्हारे उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं। मन लगाकर पढ़ो। जिस प्रकार तुम्हारी बहिन ने घर-परिवार का अध्ययन क्षेत्र में नाम बढ़ाया। तुमसे और भी अधिक आशायें हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तुम्हारे पिता तुम्हें आशीर्वाद कहते हैं। तुम्हारी बहिन तुम्हें प्रणाम कहते हैं। दीपावली पर अवश्य आना।

तुम्हारी माँ
शोभा अग्निहोत्री
७२, चंद्रपुरी,
इटावा

सेवा में,

श्री ललित कुमार अग्निहोत्री
एम० ए० (उत्तरार्द्ध)
अंग्रेजी विभाग,
राजा बलवन्तसिंह कालेज
आगरा–२

पुत्र का पत्र पिता के नाम

छिबरामऊ
दिनांक २-७-८०

पूज्य पिताजी,

सादर अभिवादन।

आपके आशीर्वाद से हम सभी स्वस्थ हैं। आशा है आप भी स्वस्थ होंगे। हम सबको आपकी और माताजी की बहुत याद आती है। हमारी इच्छा है कि आप और माताजी हमारे पास ही रहें। इस बार रक्षाबन्धन तथा श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी पर आप यहीं आ जायें तो बड़ा आनन्द आयेगा।

जीवन आपको बहुत याद करता है। प्रतिभा आपको और माताजी को प्रणाम कहती है।

आपका ही
सुरेश कुमार कुलश्रेष्ठ

सेवा में,

श्री हरेन्द्र कुमार कुलश्रेष्ठ
३२, स्टेशन रोड
कायमगंज
फर्रुखाबाद।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मित्र का पत्र

फतेहगढ़
दिनांक १२-३-७८

प्रिय प्रेमचंद

सप्रेम नमस्कार ।

तुम्हारा पत्र मिला । हृदय गद्-गद् हो गया । सारस्वत जी और रामकृष्ण जी का भी पत्र कल ही मिला था । वे दोनों सपरिवार कुशल पूर्वक हैं । राजकुमारी जी का स्थानान्तरण हो गया है । तुम्हारी प्रसन्नता का एक और समाचार यह है कि हमारे अभिन्न श्री खुशीराम 'जनेश' को पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त हो गई है ।

तुम इस बार इधर सपरिवार घूम जाइये । स्थान परिवर्तन भी हो जायेगा । बच्चे एक दूसरे से मिल सकेंगे । अपनी पत्नी को मेरा नमस्कार कहें ।

तुम्हारा अभिन्न
वीरेन्द्र उपाध्याय
२२, छावनी
फतेहगढ़

सेवा में,

श्री प्रेमचंद्र शुक्ल
निर्मल-कालोनी,
पुष्कर मार्ग अजमेर (राजस्थान)

मित्र को बधाई

कालपी
दिनांक २२-७-८०

प्रिय सुरेश,

हार्दिक बधाई ।

हम सभी को तुम्हारे पुत्र प्राप्ति पर बड़ी प्रसन्नता है । काफी समय प्रतीक्षा कर रहे थे । कल ही अजीत से इस शुभ समाचार से अवगत हुआ । समय मिलने पर स्वयं आकर तुम्हारी सहधर्मिणी को बधाई दूंगा ।

तुम्हारा ही अभिन्न
अब्दुल अजीज अंसारी
चौक-कालपी

सेवा में,

श्री सुरेश कुमार वर्मा
उप-नगर अधिकारी
उज्जैन (म० प्र०)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सखी का पत्र

उत्तर विजय नगर, आगरा
दिनांक २५-८-८०

प्रिय अजिता,

सस्नेह उर मिलन ।

तुम्हारा पत्र नहीं मिला । लगता है लखनऊ जाकर भूल गई । हम तुम्हें एक क्षण को नहीं भूलते । अजिता तुम्हें यह तो ज्ञात ही है कि मैं और तुम प्रारम्भ से ही साथ-साथ पढ़ी । प्राथमिक स्तर से लेकर स्नातक स्तर तक साथ पढ़े । संयोग की बात है, शादी भी एक ही स्थान पर हुई । आज तुम इतनी दूर चली गई हो । बहुत याद आती है । पत्र पाते ही उत्तर देना ।

लखनऊ बड़ा नगर है । आवासीय व्यवस्था करने में आपको बड़ी परेशानी हुई होगी—मैं अनुमान ही कर सकती हूँ । तुम नये स्थान पर सावधानी से रहना ।

जीजा जी को मेरा प्रणाम कहना । ये तुम्हें नमस्कार कह रहे हैं ।

तुम्हारी ही
प्रतिष्ठा वर्मा
उत्तर विजय नगर, आगरा

सेवा में,

श्रीमती अजिता 'चंचल'
द्वारा श्रीकृष्ण वल्लभ 'चंचल'
लोक निर्माण विभाग
अमीनाबाद, लखनऊ ।

शोक पत्र

सादाबाद
दिनांक ५-११-७६

प्रिय ब्रिजेन्द्र

कल मुझे तुम्हारे पूज्य पिता श्री आनन्द मोहन त्रिपाठी के असामयिक निधन का समाचार ज्ञात हुआ, मैं स्तब्ध रह गया । अभी पिछले सप्ताह ही मथुरा श्री सुरेश चन्द्र जी भार्गव एडवोकेट के आवास पर मेरी भेंट हुई थी । वे पूर्ण स्वस्थ थे । स्वास्थ्य सम्बन्धी भी मेरी उनसे बात हुई । हँस-हँस कर बात कर रहे थे ।

इस दुःख की बेला में हम सभी तुम्हारे साथ हैं । जिस प्रकार जीवन में उन्होंने यश अर्जित किया, तुम भी उन्हीं के मार्ग पर चल कर यश अर्जित करो । उनके बताये हुये मार्ग पर चलना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation,,Chandigarh

प्रभु तुम सभी को इस संकट की घड़ी में धैर्य प्रदान करें—मेरी प्रार्थना है। दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

तुम्हारा ही अपना
विनोद बिहारी अस्थाना
दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
सादाबाद

सेवा में,

श्री व्रिजेन्द्र मोहन त्रिपाठी

गुतहरा मथुरा

शोक प्रस्ताव

कुलक्षेत्र ब्राह्मण इण्टरमीडिएट कालेज महरारा (मथुरा) के प्रधानाचार्य, शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों एवं छात्रों की यह सभा अपने भूतपूर्व उप-प्रबन्धक श्री आनन्द मोहनजी त्रिपाठी, उप-ब्लाक प्रमुख सहपऊ के असामयिक निधन पर शोक व्यक्त करती है। परम प्रभु परमेश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

दिनांक ५-११-८०

समस्त विद्यालय परिवार
कुलक्षेत्र ब्राह्मण इण्टर कालेज,
महरारा (मथुरा)

सेवा में,

श्री अजित मोहन त्रिपाठी

श्री ब्रजेन्द्र मोंहन त्रिपाठी

आत्मज-स्व० श्री आबन्द मोहन त्रिपाठी

गुतहरा (मथुरा)

व्यावहारिक पत्र

व्यावहारिक पत्रों के अन्तर्गत वे सामाजिक पत्र आते हैं जो विभिन्न समारोहों से संबंधित होते हैं। अभिनन्दन पत्र, धन्यवाद पत्र भी इसी कोटि में आते हैं। कुछ उदाहरण यहाँ दिये जा रहे हैं ताकि छात्र पत्र लिखना सीख सकें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(१) निमंत्रण पत्र

(वैवाहिक)

प्रिय महोदय,

भेज रहे हैं नेह निमंत्रण प्रियवर तुम्हें बुलाने को।
हे मानस के राजहंस तुम भूल न जाना आने को ॥
यद्यपि समय है ग्रीष्म का पथ कष्ट भी होगा सही।
यदि यह विचारा आपने तो फिर कृपा ही क्या रही ॥

चिरंजीव प्रमोद कुमार पाण्डेय		सौ० का० विभा
आत्मज	ए	आत्मजा
स्व० निरंजन लाल पाण्डेय	व	डॉ० विद्याधर चतुर्वेदी
विजय नगर, कन्नौज	म्	हर्षनगर, कानपुर

के

शुभ परिणयोत्सव

मंगलमयी बेला में निम्न कार्यक्रमानुसार पधार कर अनुगृहीत करें।

उत्तरापेक्षी	विनीत
हर्ष कुमार, संजीव कुमार	कृष्ण बल्लभ पाण्डय
	विजय कान्त पाण्डेय

कार्यक्रम

दिनांक ५-५-७६ (सायं ५ बजे)	प्रीतिभोज
दिनांक ६-५-७६ (प्रातः ८ बजे)	बारात प्रस्थान
दिनांक ६-५-७६ (सायं ८ बजे)	परिणय
दिनांक ७-५-७६ (प्रातः ७ बजे)	विदाई

(२) निमंत्रण पत्र

(जन्मोत्सव)

प्रिय बन्धु,

मेरे पुत्र चि० नवीन (बच्चू) का जन्म-दिवस दिनांक ७-२-७६ को है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आप सायं ५ बजे जलपान समारोह में उपस्थित होकर कृतार्थ करें।

दिनांक २-२-७९

भवदीय
हरीश तिवारी
मीरा तिवारी
बुन्देलखण्ड कुटीर, बढ़पुर।

(३) निमंत्रण पत्र

प्रिय महोदय/महोदया

आपको आमंत्रित करते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है कि मेरे आवास पर दिनांक ५-११-७९ से सप्ताह-यज्ञ महोत्सव का आयोजन है। सपरिवार पधार कर कृतार्थ करें।

दिनांक २५/१०/७९

आपका ही
रामहित तोमर
छटीकटा
मथुरा

कार्यक्रम

प्रतिदिन

दिनांक ५-११-७९ (प्रातः ८ बजे—११ बजे) (सायं ३ बजे-५ बजे)	सप्ताह यज्ञ प्रारम्भ
दिनांक १०-११-७९	
दिनांक ११-११-७९ (प्रातः १० बजे)	यज्ञपूर्ण (पूर्णाहुति)
दिनांक ११-११-७९ (१२ बजे मध्याह्न)	प्रीतिभोज

(४) परिचय पत्र

आदरणीय शर्माजी,

पत्रवाहक राम शंकर जी मेरे अत्यन्त निकट हैं। इनका कार्य आपके कार्यालय से संबंधित है जिसे ये स्वयं समझा देंगे। इनका कार्य सम्पन्न करके मुझे कृतार्थ करें।

आपकही
वीरेन्द्रमिश्र।
प्रह्लाद चक (एटा)

सेवा में,

श्रीहर स्वरूप शर्मा
आयुक्त
रुहेलखण्ड, बरेली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(५) परिवाद-पत्र

(शिकायती पत्र)

सेवा में,

क्षेत्रीय प्रबंधक
राज्य परिवहन निगम
क्षेत्र कानपुर।

महोदय,

निवेदन यह है कि मैं आज दिनांक ३१-१०-८० को ११ बजे चुन्नीगंज डिपो की बस सं० U. T. D. ६५३२ से इटावा के लिए आ रहा था। मेरे पास टिकट सं० ३५३२ तथा आरक्षण टिकट U. P. J. १४३८ था। बस में आधे यात्री विना टिकट थे। मुझे बैठने के लिये स्थान नहीं मिला। विना टिकट यात्री बैठे हुए थे। परिचालक ने उन सभी का टिकट बनाया पर आरक्षण होते हुए भी मुझे स्थान नहीं मिला। मेरे अधिक अनुरोध करने पर मेरे साथ अभद्र व्यवहार किया गया।

आपसे अनुरोध है कि उक्त परिचालक के विरुद्ध कार्यवाही की जाय तथा कृत कार्यवाही से मुझे सूचित किया जाय।

दिनांक ३१-१०-८०

भवदीय
डॉ० इन्द्र मोहन भदौरिया
अध्यक्ष सैन्य विज्ञान विभाग
फिरोज गाँधी महाविद्यालय,
रायबरेली

राशन दुकान की व्यवस्था के सम्बन्ध में जिला अधिकारी को पत्र

सेवा में,

जिला अधिकारी
उन्नाव

पत्राङ्क

दिनांक ५-११-८०

विषय—'राशन की दुकान की अव्यवस्था के सम्बन्ध में'

महोदय

निवेदन यह है कृष्णा कालोनी की सरकारी सस्ते गल्ले

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की दुकान श्री अरसाद हुसैन के पास है। इस दुकान की अव्यवस्था के सम्बन्ध में मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ।

इस दुकान की व्यवस्था अत्यन्त खराब है जिसके कारण क्षेत्र के नागरिकों को कष्ट का सामना करना पड़ता है। आपसे अनुरोध है कि इस दुकान की अनियमितताओं की जाँच करें। कुछ अनियमितताओं की ओर ध्यान आकृष्ट कर रहा हूँ—

(१) दुकान खुलने का नियमित समय नहीं है।

(२) प्रावः दुकान पर लिख दिया जाता है—'माल लेने गये हैं।' 'स्टॉक में चीनी तथा मिट्टी का तेल नहीं है।'

(३) चीनी भीगी हुई मिलती है।

(४) दैनिक उपयोग की वस्तुएँ प्राय: उपलब्ध नहीं होतीं।

(५) चीनी और मिट्टी का तेल ब्लैक कर दिया जाता है।

(६) दुकान पर जाने पर दुर्व्यवहार किया जाता है। दुकानदार की भाषा अशिष्ट है। दुर्बल वर्ग के व्यक्तियों को गाली भी देता है।

(७) गेहूँ में कूड़ा होता है। चीनी भीगी हुई होती है। तौल में गड़बड़ की जाती है।

आप से अनुरोध है—

(१) दुकान का आकस्मिक निरीक्षण किया जाय।

(२) कोटा निरस्त किया जाय।

(३) ग्राहकों के राशन कार्डों की जाँच की जाय।

(४) दुकानंदार के रजिस्टर तथा अन्य कार्यवाही के अभिलेखों की जाँच की जाय।

आप जैसे योग्य एवं कर्मठ अधिकारी के होते हुए भी ग्रामीण जनता को न्याय नहीं मिल सका तो यह दुर्भाग्य की बात होगी।

प्रार्थी
मुहम्मद नईम खाँ
६५, कृष्णा कालोनी
लखनऊ मार्ग उन्नाव

(६) सम्पादक के नाम पत्र

सेवा में,

सम्पादक जी
दैनिक राष्ट्र धर्म, कानपुर

महोदय,

आपके लोक-प्रिय पत्र द्वारा कुलपति कानपुर वि० वि० का ध्यान आकृष्ट

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करना चाहता हूँ कि सितम्बर ८० में एम० ए० (पूर्वार्द्ध) की परीक्षाएँ सम्पन्न हुई थीं पर अभी तक परीक्षाफल घोषित नहीं हुआ है। छात्रों में असंतोष है। शीघ्र घोषित कराने की कृपा करें।

भवदीय

दिनांक ५-११-८०

रजनीकान्त शुक्ला
ब्रज किशोर सिंह
आर० पी० कालेज कमालगंज

सेवा में,

सम्पादक जी

दैनिक जागरण, कानपुर

आपके लोक-प्रिय पत्र द्वारा मैं प्रभानरी नगरपालिका कन्नौज का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ। नगर में अत्यन्त गन्दगी है। गन्दा कूड़ा तथा मैला स्थान-स्थान पर फैला हुआ रहता है। गन्दगी से बीमारियां होने का भय है। शीघ्र सफाई की व्यवस्था करने का कष्ट करें।

हम हैं
वीरेन्द्र कुमार गंगवार
विजय मोहन गुप्ता
भूरी सिंह यादव
मुहल्ला पठकाना कन्नौज

(७) खोई हुई वस्तु की सूचना

जन-साधारण के लिए सूचनार्थ निवेदन यह है कि मेरा एक थैला जिसमें मेरे प्रमाण-पत्र थे। यह थैला कन्नौज चौराहे से लेकर सरायमीरा बस स्टेशन के मध्य कहीं गिर पड़ा है। जिस किसी सज्जन को मिले वह निम्न पते पर पहुँचाने की कृपा करें। मार्ग व्यय के अतिरिक्त ५१ रुपये पुरस्कार स्वरूप प्रदान किये जायेंगे।

भवदीय
वीरेन्द्र मोहन त्रिपाठी

पता

३२/११ मकरन्द नगर, कन्नौज

(६) वैवाहिक विज्ञापन

(वधू चाहिए)

"खरे कायस्थ परिवार के लिए एक सौम्य बधू की आवश्यकता है। लड़का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एम० टैक० की उच्च उपाधि प्राप्त राजकीय सेवारत राजपत्रित अधिकारी है। कन्या कम से कम स्नातक हो। दहेज का बन्धन नहीं।

पोस्ट बाक्स ५५, दैनिक
अमर उजाला, आगरा

(वर चाहिए)

एम० ए०, बी० एड० महिला प्रवक्ता, रंग गोरा देखने में अत्यन्त सुन्दर वैश्य अग्रवाल (बीसा) कन्या हेतु सजातीय सेवारत वर चाहिए। दहेज की कामना रखने वाले आवेदन न करें।

पोस्ट बाक्स संख्या ३६, छिबरामऊ

(७) गुमशुदा की तलाश

मेरा छोटा भाई नाम विजय कान्त शुक्ला उम्र १६ वर्ष, रंग सांवला, ऊँचाई ५ फीट, चेहरे पर चेचक के दाग, काले रंग का पैंट, सफेद बुशशर्ट पहने हुए है। उसके कानपुर उन्नाव, लखनऊ, फतेहपुर में पाये जाने की सम्भावना है। पहुँचाने वाले या सूचना देने वाले सज्जन को मार्ग व्यय के अतिरिक्त ५०० रुपये प्रदान किये जायेंगे।

शिव ओंकार बजाज
फतेहपुर सीकरी आगरा

गुमशुदा के लिए पत्र

प्रिय हरीश,

तुम व्यर्थ ही परेशान होकर घर से चले गये हो। तुम्हारे घर में सभी परेशान हैं। मीरा और अशोक ने तो उस दिन से खाना नहीं खाया है। तुम शीघ्र चले आओ। तुमसे कोई कुछ नहीं कहेगा। आवश्यक हो तो सूचना दो ताकि कोई तुम्हें लेने आ सके। 'हानि, लाभ, जीवन, मरण, यश, अपयश विधि हाथ।' हो गया—उसकी चिन्ता न करो।

तुम्हारा ही
विद्या कान्त त्रिपाठी
रश्मि बाग उरई

(८) आवश्यकता है

समाचार पत्रों के माध्यम से योग्य व्यक्तियों के चयन के लिए विज्ञापन किया जाता है। राजकीय, अराजकीय सभी प्रकार के प्रतिष्ठानों के लिए विज्ञापन दिये जाते हैं। कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१. आवश्यकता है—

कोटि ३२

(१) **सहायक स्टेशन मास्टर**—५० पद

वेतन-क्रम—२३०-५०० रु०

आयु—१८-२५ वर्ष

योग्यता—मैट्रीकुलेशन ४०% अंक अनुसूचित जाति के लिए अंकों का प्रतिबंध नहीं।

आवेदन निर्धारित पत्र पर किया जायेगा। निर्धारित आवेदन पत्र किसी भी प्रमुख रेलवे स्टेशन से प्राप्त किया जा सकता है। पूर्णरूप से भरे हुए आवेदन पत्र १५ मार्च, ८० तक सचिव, रेलवे सेवा आयोग, १६ सरदार पटेल मार्ग इलाहाबाद में प्राप्त किय जायेंगे। चुने हुए अभ्यर्थियों को लिखित परीक्षा के लिए बुलाया जायेगा। किसी भी प्रकार का मार्ग व्यय देय नहीं होगा। अनुसूचित वर्ग के अभ्यर्थियों को द्वितीय श्रेणी का रेलवे पास दिया जायेगा।

आरक्षण—१५% अनुसूचित, ३% आदिवासी आदि, २% स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के आश्रित।

आरक्षित वर्गों में से योग्य अभ्यर्थी उपलब्ध नहीं हुए तो सामान्य अभ्यर्थियों से चुन लिए जायेंगे।

विशेष—किसी भी प्रकार की सिफारिश कराने वाले अभ्यर्थियों के आवेदन पत्र निरस्त कर दिये जायेंगे।

२. आवश्यकता है—

राजीव कैमिकल वर्क्स, इलाहाबाद।

(१) **फोरमैन**—२ पद; १ पद अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित।

वेतन-क्रम—४५०—६०० रु०।

योग्यता—मैकेनिकल इन्जीनियरिंग में डिग्री अथवा तीन वर्षीय डिप्लोमा तथा २ वर्ष का किसी प्रतिष्ठान का अनुभव।

आयु—३५ वर्ष से अधिक नहीं।

साक्षात्कार—१५ जुलाई, ८० को अपने समस्त प्रमाण पत्रों सहित प्रशासक राजीव कैमिकल वर्क्स में उपस्थित हों।

३. आवश्यकता है—

रूप किशोर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बैरनी (एटा)

(१) **सहायक अध्यापक**—(एल० टी० वेतन क्रम) २ पद

योग्यता—स्नातक (हिन्दी, संस्कृत, गणित, भूगोल) में कम से कम दो विषयों के साथ-साथ एल० टी०, बी० एड० / अनुभवी व्यक्ति को वरीयता दी जायेगी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आवेदन-पत्र—निर्धारित आवेदन पत्र उ० प्र० के किसी जिला विद्यालय निरीक्षक के कार्यालय से प्राप्त किये जा सकते हैं। पूर्ण रूप से भरे हुए आवेदन पत्र की एक प्रति जिला विद्यालय निरीक्षक एटा तथा एक प्रति प्रबन्धक, रूप किशोर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैरनी (एटा) के पास १५ मई, ८० तक पहुँच जाना चाहिए। देर से प्राप्त आवेदन-पत्रों पर विचार करना सम्भव नहीं होगा।

४. आवश्यकता है—

किशोरी रमण डिग्री कालेज, मथुरा

महाविद्यालय में निम्नलिखित प्रवक्ताओं की आवश्यकता है—

१. हिन्दी, राजनीति विज्ञान, भूगोल, शिक्षाशास्त्र-प्रत्येक विषय में एक पद।

वेतन क्रम—७००-४०—९००-४०—११००-५०—१३००

एसेसमेंट—१००-१६००।

अर्हताएँ—(क) लगातार अच्छी शैक्षिक उपलब्धि तथा सम्बद्ध विषय में ५४% से अधिक अंकों सहित स्नातकोत्तर उपाधि। लगातार अच्छी शैक्षिक उपलब्धि का आशय हाई स्कूल से स्नातक स्तर तक औसत ४८% अंक। किसी एक परीक्षा में तृतीय श्रेणी मान्य है।

(ख) सम्बन्धित विषय में एम० फिल् या पी-एच० डी० अथवा स्वतन्त्र अनुसंधान कार्य या प्रकाशित कार्य जिससे अभ्यर्थी की शोध योग्यता प्रदर्शित होती है।

प्रतिबन्ध यह है कि ऊपर खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट अर्हता वाला कोई अभ्यर्थी उपलब्ध न होने पर महाविद्यालय का प्रबन्ध तंत्र चयन समिति की संस्तुति पर 'क' खण्ड की योग्यता के व्यक्ति को इस प्रतिबन्ध के साथ चयन कर लेगा कि वह पाँच वर्ष के अंदर 'ख' खण्ड की अर्हता प्राप्त कर लेगा। यदि वह ऐसी योग्यता पाने में असमर्थ रहता है तो वेतन वृद्धि पाने का अधिकारी तब तक नहीं होगा जब तक ऐसी योग्यता न प्राप्त कर ले।

प्रवक्ता पद स्थायी है। इन पदों पर एक वर्ष की परिवीक्षा पर नियुक्ति की जायेगा। इस नियुक्ति का बने रहना कुलपति के अनुमोदन पर निर्भर करता है। यदि कुलपति अनुमोदन नहीं करते तो नियुक्ति निरस्त मानी जायेगी। प्रत्याशी को वेतन के अतिरिक्त शासन से समय-समय पर प्राप्त मँहगाई तथा भत्ते भी देय होंगे।

विज्ञापन तिथि से २१ दिनों के अन्तर्गत ही निर्धारित प्रपत्र पर आवेदन किये जा सकते हैं। आवेदन पत्र १० रुपये धनादेश या पोस्टल आर्डर से भेजने पर प्राप्त हो सकते हैं। देर से प्राप्त आवेदन पत्र पर विचार करना सम्भव नहीं होगा।

सचिव, प्रबन्ध समिति

किशोरी रमन डिग्री कालेज मथुरा।

नीलाम सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि पी० एस० एम० डिग्री कालेज

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कन्नौज कैंटीन का ठेका नीलामी बोली द्वारा दिनांक ११-८-८० को महाविद्यालय प्रांगण में २ बजे अपरान्ह दिया जायेगा। सबसे अधिक बोली बोलने वाले व्यक्ति को ठेका दिया जायेगा। अध्यक्ष प्रबन्ध समिति को यह अधिकार भी दिया जाता है कि किसी भी व्यक्ति को नीलाम देने से मना कर दे।

कुल बोली का चौथाई धन उसी दिन जमा करना होगा।

डॉ० विजय तिवारी
प्राचार्य

निविदा सूचना

निविदायें दो प्रकार की होती हैं—

(१) निविदा (२) अल्पकालीन निविदा सूचना। उदाहरण निम्नलिखित हैं—

शुगर मिल हरदोई

निविदा सूचना

समस्त अनुभवी ठेकेदारों को सूचित किया जाता है कि आगामी सन् १९८०-८१ हेतु विभिन्न गन्ना क्रय केन्द्रों से गन्ना ट्रकों पर लादने हेतु एतद्द्वारा मुहरबन्द निविदायें आमंत्रित की जाती हैं। निविदायें निर्धारित आवेदन पत्र ही स्वीकार की जायेंगी जो कार्यालय से १० रु० नगद या बैंक-ड्राफ्ट देकर २-१०-८० तक प्राप्त किया जा सकता है। मुहरबन्द निविदा ३-१०-८० अपरान्ह ४ बजे टेण्डरकर्त्ताओं के समक्ष खोली जायेगी। अधिशासी निदेशक को यह अधिकार होगा कि वह बिना कारण बताये निविदा निरस्त कर सकता है।

विद्या शंकर जौहरी
अधिशासी निदेशक

अल्पकालीन निविदा सूचना

छिबरामऊ-आवास विकास परिषद

आवास विकास परिषद् छिबरामऊ नगर में आवासीय भूखण्डों के विकास हेतु दिनांक ८-१२-८० तक मुहरबन्द निविदा आमंत्रित करती है। सभी निविदा ९-१२-८० को २ बजे अपरान्ह डाक बंगले में खोली जायेगी। अग्रिम धनराशि टेण्डर खुलने से पूर्व जमा करनी पड़ेगी। बिना अग्रिम धनराशि के निविदायें स्वीकार करना सम्भव न होगा। निविदायें खुलने से ९० दिन तक वैध होगी।

कार्य का विवरण निम्नलिखित है—

कार्य का नाम	अनुमानित लागत	अग्रिम धनराशि	कार्य पूर्ण होने का समय
(१) सड़क निर्माण का कार्य	३७०४०० रुपये	७००० रु०	१२० दिन
(२) पार्कों के निर्माण का कार्य	५०,००० ,,	१५०० ,,	६० दिन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कार्य का नाम	अनुमानित लागत	अग्रिम धनराशि	कार्य पूर्ण होने का समय
(३) ५० भूखण्डों का निर्माण	५०,००० रुपये	१००० रुपये	५० दिन
(४) ४६ मध्यम आय वर्ग के भवनों का निर्माण	२८,५७,४५० ,,	५७५० ,,	६० दिन
(५) १२ मध्यम आय वर्ग भवनों का निर्माण	१०,००,५० ,,	२१६५ ,,	६० दिन
(६) ८४ अल्प आय वर्ग के भवनों का निर्माण	१०,०४५,०० ,,	२,०१०० ,,	२७० दिन
(७) २०६ दुर्बल आय वर्ग के भवनों का निर्माण	११,६७,१६६ ,,	२३,३५० ,,	२७० दिन

अनिल कुमार केसरवानी
सचिव
आवास विकास परिषद्, छिबरामऊ

प्रमाण-पत्र खोने की सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा हाई स्कूल १९६२ अनुक्रमाङ्क ५७९३२ तथा इण्टर मीडिएट १९७४, अनुक्रमाङ्क १४५७३ वास्तव में खो गये हैं।

वीरीसिंह बघेले
पुत्र वंशीलाल बघेले
नगला किला, बाई पास रोड
शिकोहाबाद जनपद मैनपुरी

'चुनाव समाचार'

आगरा कालेज हिन्दी परिषद् का चुनाव सर्व-सम्मत से निम्नलिखित प्रकार सम्पन्न हुआ :—

(१) डॉ० भगवत्स्वरूप मिश्र (पदेन), अध्यक्ष
(२) वीरेन्द्र कुमार टण्डन, उपाध्यक्ष
(३) राजवीर सिंह त्यागी, सचिव
(४) कु० सुधा अवस्थी, संयुक्त सचिव
(५) कु० रंजना घोषदस्तीदार, कोषाध्यक्ष
(६) कु० पुष्पा उपाध्याय, लेखा परीक्षक

प्रिय सम्पादक जी,

मैं आपके सम्मानित पत्र में आज दिनांक ५-१०-८० को सम्पन्न हुए निर्वाचन की सूचना प्रकाशित कराना चाहता हूँ। प्रकाशित करने की कृपा करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिनांक ५-१०-८० को भारतीय जनता पार्टी मण्डल सहपऊ का चुनाव जिला मंत्री श्री राजाराम मौर्य की अध्यक्षता में निम्नलिखित प्रकार सम्पन्न हुआ—

(१) श्री गंगा सिंह शर्मा	अध्यक्ष
(२) श्री परशादी लाल वर्मा	उपाध्यक्ष
(३) श्री रघुवीर सिंह पचौरी	उपाध्यक्ष
(४) श्री वीर पाल सिंह	महामन्त्री
(५) श्री केशव देव शर्मा	मन्त्री
(६) श्री प्रहलाद सिंह बघेल	मन्त्री
(७) श्री शैलेन्द्र पाठक	कोषाध्यक्ष

१४ अन्य कार्यकारिणी के सदस्य चुने गये।

शिव कुमार शास्त्री
निर्वाचन अधिकारी

आधिकारिक पत्र

पत्रों का एक प्रकार ऐसा भी है जिसमें अधिकारियों को आवेदन पत्र आदि लिखे जाते हैं, इन्हें आधिकारिक-पत्र कहा जाता है। कुछ उदाहरण यहाँ दिये जा रहे हैं—

(अ) आवेदन-पत्र
(अवकाश हेतु)

सेवा में,

प्राचार्य

नेहरू कालेज छिबरामऊ

महोदय,

निवेदन यह है कि अचानक अस्वस्थ हो जाने के कारण आज मैं महाविद्यालय आने में असमर्थ हूँ। कृपया तीन दिन का दिनाङ्क ५-३-८० से ८-३-८० तक चिकित्सा अवकाश प्रदान करने का कष्ट करें। आभारी रहूँगा।

आपका विश्वासपात्र

दिनाङ्क ५-३-८०

आदित्य नाथ यादव
प्रवक्ता रसायन विभग

सेवा में,

कुल सचिव

कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर।

महोदय,

निवेदन यह है कि कल मेरे पुत्र का जन्मोत्सव है। इस कारण कार्यालय आने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में असमर्थ हूँ। आपसे अनुरोध है कल दिनाङ्क ४-३-८० का एक दिवस का आकस्मिक अवकाश स्वीकृत करने का कष्ट करें। आभारी रहूँगा।

आपका विश्वास-भाजन
विनोद टेंटीवाल
दिनाङ्क ३-३-८० कार्यालय अधीक्षक
(सामान्य प्रशासन)
कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर।

(ब) आवेदन पत्र नियुक्ति हेतु

सेवा में
प्रबंधक,
गणेश पेपर मिल, होशियारपुर।

महोदय,

विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि आपके अधीनस्थ मिल में एक तकनीकी सहायक (टेक्निकल असिस्टेंट) की आवश्यकता है। उक्त पद के लिए मैं भी अपना आवेदन-पत्र आपकी सेवा में भेज रहा हूँ। मेरी योग्यताएँ एवं अनुभव निम्नलिखित हैं—

परीक्षा	वर्ष	श्रेणी	विशेष योग्यता
हाईस्कूल	१९७५	प्रथम	गणित
इण्टरमीडिएट	१९७७	द्वितीय	भौतिक विज्ञान
डिप्लोमा मैकेनिकल इन्जीनियरिंग	१९८०	द्वितीय	×

अनुभव—मैंने प्रकाश कैमिकल वर्क्स न्रेवर में तकनीकी पर्यवेक्षक (टेक्निकल सुपरवाइजर) के पद पर विगत २ जुलाई ८० से कार्य किया है।

आपको विश्वास दिलाता हूँ कि अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार आपको अपने कार्य से संतुष्ट रखूंगा। आशा है सेवा करने का अवसर प्रदान करने की कृपा करेंगे।

भवदीय
दिनाङ्क ५-१०-८० विपिन बिहारी दुबे
२२, मालती मार्ग, छिबरामऊ

आवेदन-पत्र—२

सेवा में,
प्राचार्य,
दीन दयाल उपाध्याय महाविद्यालय, जलेसर (एटा)

महोदय,

दैनिक अमर उजाला दिनाङ्क ५-५-८० में प्रकाशित 'भौतिकी विभाग प्रवक्ता पद हेतु मैं अपना आवेदन-पत्र आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ। मेरी योग्यतायें निम्नलिखित हैं—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परीक्षा	वर्ष	श्रेणी	विषय
हाई स्कूल	१९७३	प्रथम	हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, भूगोल
इण्टरमीडिएट	१९७५	,,	हिन्दी, अंग्रेजी, गणित भौ० वि०, रसायन वि
बी० एस-सी०	१९७७	द्वितीय	भौ० वि०, रसा० वि०, गणित
एम० एस-सी०	१९७९	प्रथम	भौतिक विज्ञान

जुलाई ७९ से मैं भौतिक विज्ञान विषय में डा० प्रयाग चन्द्र अग्रवाल, आगरा कालेज आगरा के निर्देशन में अनुसंधान कार्य कर रहा हूँ तथा तीन शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं।

आपसे अनुरोध है कि सेवा करने का अवसर प्रदान करें।

आपका विश्वास भाजन
दिनाङ्क ११-५-८० विजय कृष्ण तिवारी
३२, माधवी कुंज
मैरिस रोड, अलीगढ़

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

१. अंग्रेजी प्रवक्ता पद हेतु एक पत्र सचिव महात्मा गाँधी डिग्री कालेज उन्नाव को लिखिये।

२. दो दिन के चिकित्सा अवकाश हेतु प्रशासक नगर महापालिका इलाहाबाद के लिए एक पत्र लिखिये।

३. पत्राचार कला पर प्रकाश डालिए तथा अपने मित्र को एक पत्र लिख कर पत्राचार कला की विशेषताएँ बताइये। (कानपुर वि० वि०, १९७६)

४ पत्राचार के महत्व को स्पष्ट करते हुए परिभाषा दीजिए एवं एक अच्छे पत्र की विशेषताएँ बताइये। (कानपुर वि० वि०, १९७८)

५. 'पत्राचार एक विशिष्ट कला है।' विवेचना करते हुए पत्र के विभिन्न अंगों का वर्णन कीजिए। (कानपुर वि० वि०, १९७९)

६. अपनी सहेली के लिए पत्र लिखिये जिसमें मथुरा नगर के ऐतिहासिक, एवं धार्मिक स्थलों की चर्चा हो।

७. अपने मुहल्ले की दुर्व्यवस्था की शिकायत जिलाधिकारी को कीजिए। सुधार के सुझाव भी दीजिए। (कानपुर वि० वि०, १९७४)

८. अपने भाई माधव मोहन के विवाह के लिए एक वैवाहिक विज्ञापन प्रस्तुत कीजिए। इस विज्ञापन को किसी समाचार-पत्र प्रकाशन हेतु सम्पादक के लिए पत्र भी लिखिये। (कानपुर वि० वि०, १९७४)

९. पत्राचार कला पर प्रकाश डालिए और अपने किसी मित्र को पत्र लिखकर पत्राचार की विशेषताएँ बताइये। (कानपुर वि० वि०, १९७५)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पारिभाषिक शब्दावली

(क) प्रशासनिक शब्दावली
(ख) व्यावहारिक शब्दावली

प्रशासनिक शब्दावली

(A)

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Abdonment	एबंडनमेंट	परित्याग
Abridge	एब्राइज	न्यूनन
Abreviation	एब्रिवियेशन	संक्षिप्त
Abatement of the suit	एबेटमेंट ऑफ दी स्यूट	वाद की समाप्ति
Abolition of the post	एबोलीशन ऑफ दी पोस्ट	पद की समाप्ति
Abrogation	एब्रोगेशन	उल्लंघन करना
Absolute	एब्सोल्यूट	निरपेक्ष
Abstruct	एब्सट्रक्ट	सार
Absurd	एब्सर्ड	सारहीन
Abadant	एबडंट	प्रचुर
Abrogate	एब्रोगेट	निराकरण
Access	एक्सेस	प्रवेश
Accrue	एक्रू	प्रापण
Accrued	एक्रूड	उपार्जित, प्राप्ति
Accusation	एक्यूजेशन	अभियोग
Accused	एक्यूज्ड	अभियुक्त
Acquisition	एक्यूजीशन	अर्जन
Act	एक्ट	अधिनियम
Adoptation	एडोप्टेशन	अनुकूलन
Acadamic	एकेडेमिक	शास्त्रीय, विद्या-विषयक
Academy	एकेडेमी	विद्या परिषद्
Accede	एक्सीड	सम्मिलन, अभिवर्द्धन
Acceleration	एक्सीलरेशन	वेग वृद्धि
Acceptance	एक्सेप्टेंस	स्वीकृति

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक	शब्द उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Accessory	एसेसरी	सहायक वस्तु, उपसाधन
Accomodate	एकोमोडेट	स्थान देना, समायोजित करना, अनुकूल बनाना
Accomodation	एकोमोडेशन	स्थान, आराम की चीजें
Accompanied by	एकम्पनीड बाई	सहित
Accomplish	एकोम्पलिश	सम्पन्न करना
Accountant, General	एकाउन्टेन्ट जनरल	महालेखाकार
Accrual increament	एक्रअल इन्क्रीमेंट	संभूत वेतन वृद्धि
Acknowledgement due	एक्नोलेजमेंट ड्यू	अभिस्वीकृति, पत्र, पावती
Acknowledge of liability	एक्नोलेज मेंट आफ लाइबिलिटी	दायित्व स्वीकरण
Acquire	एक्वायर	अधिग्रहण
Acquaintance	एक्यूटेंस	परिचय
Acquittal	एक्यूटल	दोषमुक्ति
Act of misconduct	एक्ट आफ मिसकंडक्ट	दुराचरण
Acting incumbant	एक्टिंग इनकमबेंट	कार्यवाहक पदाधिकारी
Additional Secretary	एडीशनल सेक्रेट्री	अतिरिक्त सचिव
Additions and Alterations	एडीशन्स एन्ड अल्ट्रेशंस	संशोधन एवं परिवर्द्धन
Addressee	एड्रेसी	प्रेषिती
Adduce	एड्यूस	उपस्थित करना
Ad-hoc	एड-हॉक	तदर्थ
Ad-interim	एड-इंटरिम	अंतरिम
Adjourned Sine-die	एडजोर्नड साइन-डाई	अनिश्चित काल के लिए स्थगित
Adhesion	एडेशन	चिपकना
Adjudication	एडजुडीकेशन	न्यायिक निर्णय
Administration	एडमिनिस्ट्रेशन	प्रशासन
Administrator	एडमिनिस्ट्रेटर	प्रशासक
Adoption	एडाप्सन	गोद ग्रहण करना (दत्तक ग्रहण)
Adult Franchise	एडुल्ट फ्रेन्चाइज	प्रौढ़ मताधिकार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Advance	एडवान्स	अग्रिम पेशगी
Advantage	एडवान्टेज	लाभ
Adversary	एडवरसरी	प्रतिद्वन्द्वी
Adverse	एडवर्स	विपरीत
Adverting To	एडवर्टिंग टू	ध्यान देना
Advertisement	एडवरटाइजमेंट	विज्ञापन
Advise	एडवाइज	सूचना, मंत्रणा, परामर्श
Advise of credit Transfer	एडवाइज ऑफ क्रेडिट ट्रान्सफर	नामे संक्रम सूचना
Advise of debit Transfer	एडवाइज ऑफ़ डेबिट ट्रान्सफर	जमा संक्रम सूचना
Advisory committee	एडवाइजरी कमेटी	परामर्शदात्री समिति
Advocate	एडवोकेट	अधिवक्ता
Advocate general	एडवोकेट जनरल	महाधिवक्ता
Ariel	एरियल	हवाई
Aerodrome	एरोड्रोम	हवाई जहाज
Affair	अफेयर	कार्य
Affidavit	एफीडेविट	शपथ-पत्र
Affiliation	एफीलिएशन	सम्बद्धता
Affirm	एफर्म	पक्का करके कहना, दृढ़ प्रतिज्ञ
Affix	एफिक्स	जोड़ना
Affray	एफ्रे	दंगा
Afforesaid	एफोरसेड	उपर्युक्त
Agenda	एजेन्डा	कार्यावली
Aggregate	एग्रीगेट	योग, सम्पूर्ण
Aggressor	अग्रेसर	आक्रामक, अणु वर्षक
Aggrieved	एग्रीव्ड	पीड़ित
Agitation	एजीटेशन	आन्दोलन करना
Agreement	एग्रीमेंट	नियम पत्र, संविदा, परिपणन
Aided	एडेड	सहायता प्राप्त
Aide-de-camp	एड-डी-केम्प	परिधिस्थ
Alias	एलियास	उपनाम
Alienation	एलिनेशन	स्वत्वार्पण करना, हस्तान्तरण करना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Alimony	एलिमनी	भार्याभूति
Allegation	एलीगेशन	आरोप
Allegiance	एलिगियन्स	निष्ठा, राजनिष्ठा
Alliance	एलियन्स	संधि, मेल
Allied	एलाइड	सम्वद्ध, सजातीय
Allocation	एलोकेशन	विभाजन
Allot	एलाट	निर्दिष्ट करना
Allow	एलाउ	अनुज्ञा
Allowance	एलाउन्स	भत्ता
Allusive	एल्यूसिव	संकेत भाषी
Alter	आल्टर	बदलना
Amalgamation	एमलगमेशन	एकीकरण
Ambiguous	अम्बिजियस	संदिग्ध, अस्पष्ट, द्वयर्थक
Amend	एमेन्ड	संशोधन करना
Amenities	एमिनटीज	सुविधायें
Ammunition	एम्यूनीशन	गोला-बारूद
Amplification	एम्पलीफिकेशन	विस्तार
Anochronism	एनाक्रोनिज्म	काल-व्यतिक्रम
Anecestral	एनेसेस्ट्रल	पैतृक
Annexed	एनेक्सड	नत्थी किया हुआ
Annexure	एनेक्सर	नत्थी
Annuity	एन्युटी	वार्पिकी
Annuity bond	एन्युटी बोंड	वार्षिक वृत्ति, प्रतिज्ञा-पत्र
Annulling	एन्यूलिंग	अभिशून्यन
Anomalous	एनोमलस	नियम विरुद्ध
Anonymous	एनोनमस	नामरहित, अनाम, गुमनाम
Antecedent	एन्टीशीडेट	पूर्ववर्ती
Antecipated	एन्टीसिपेडेट	प्रत्याशित
Ante-corruption	एन्टीकरप्सन	भ्रष्टाचार निरोधक
Antiquity	एन्टीक्युटी	प्राचीन काल
Anti-septic	एन्टीसेप्टिक	पूतिनाशक, कीड़े मारने संबंधी।
Apathy	एपेथी	उदासीनता
Apex	एपेक्स	सिरा, शिखर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Apparent	एपेरेन्ट	प्रत्यक्ष
Appelliant	एपीलेन्ट	अपील करने वाला
Appearance	एपीरेन्स	उपस्थिति
Appended	एपेंडेड	अनुलग्न
Apprehended	एप्रीहेन्डेड	सचिन्त बन्धन
Appendix	एपेण्डिक्स	परिशिष्ट
Applicant	एप्लीकेन्ट	प्रार्थी
Appointment	एपाइन्टमेंट	नियुक्ति
Approval	एप्रूवल	अनुमोदन
Apprentice	एप्रेंटिस	प्रशिक्षणार्थी
Appropriation	एप्रोप्रियेशन	पर्यादान
Approver	एप्रोवर	राजसाक्षी, गवाह
Approximate	एप्रोक्सीमेट	लगभग, सन्निकट, अप्रसन्न
Apron	एप्रोन	उपपरिधान, चोंगा
Arbitration	आरबीट्रेशन	पंचनिर्णय
Arbitrator	आरबीर्ट्रेटर	पंच
Arboriculture	आरबोरीकलचर	वृक्षारोपण विधा
Archaeological	आरकियोलोजिकल	पुरातत्व
Architect	आरचीटेक्ट	स्थपति, वास्तुविद्
Arch-way	आर्क-वे	छत्ता
Arena	एरेना	अखाड़ा, तमाशाघर
Argument	आर्गूमेंट	तर्क, वितर्क
Armament	आर्मामेंट	शस्त्र-सज्जित
Armourer	आर्मरर	आयुध-निर्माता
Armoury	अर्मरी	शस्त्रागार
Article	आर्टिकल	अनुच्छेद
Arrows	एरोज	सूजा
Arson	आरसन	गृहदाह
Art-gallerry	आर्ट-गैलरी	कलादीर्घा
Artificial	आर्टीफिशियल	कृत्रिम
Assent	एसेन्ट	स्वीकृति
Assessment	एसेसमेंट	कर-निर्धारण
Assignment	एसाइनमेंट	अभिहस्तांकन
Assets	एसेट्स	सम्पत्ति पावना
Auditor	ऑडीटर	लेखा परीक्षक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Arrears	एरियर्स	बकाया
Assembly	एसेम्बली	सभा
Association	एसोसियेशन	संघ परिषद्
Assumption	एजुम्पसन	मानी हुई बातें, कल्पना
Assurance	एश्योरेन्स	आश्वासन
Athletic	एथलेटिक	खेलकूद
Atrandum	एटरेन्डम	बेसिर पैर
Attached estate	अटेच्‌ड एस्टेट	कुर्की की गयी
Attachment	अटैचमेंट	सम्पत्ति
Attandant	एटेन्डेंट	परिचारक
Attitude	एटीट्यूड	भाववृत्ति
Auditoriam	ऑडीटोरियम	सभा-भवन
Authentic	आथेंटिक	प्रामाणिक, विश्वसनीय
Authority	अथोरिटी	प्राधिकारी
Avail	अवेल	लाभ उठाना, काम में लाना
Avenue	एवेन्यू	पहुँच, मार्ग
Average	एवरेज	माध्य, औसत
Aviation	एवियेशन	उड्डयन सम्बन्धी
Avoid	एवाइड	टालना
Axis	एक्सिस	धुरी, अक्ष
Axles	एक्सिलस	धुरे,
Attorney	एटार्नी	न्यायवादी
Attorney general	एटार्नी जनरल	महान्यायवादी (महान्यायविद्)
Autonomous	ऑटोनोमस	स्वायत्त
At-par	एट-पार	सममूल्य
Attested	अटेस्टेड	प्रमाणित

(B)

Back-ground	बैक ग्राउन्ड	पृष्ठभूमि
Basic	वेसिक	बुनियादी, मौलिक
Bail	बेल	जमानत
Bailment	बेलमेंट	निक्षेपण
Bad-character	बेड-करेक्टर	दुश्चरित्र
Balance	बेलेन्स	बाकी, संतुलन
Ballot-Box	बैलट-बॉक्स	मतदान पेटिका
Ballot Paper	बैलट-पेपर	मतपत्र
Balled amunition	बैलड एम्यूनीशन	गोली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Balstrade	बालस्ट्रेड	कटघरा
Bankrupt	बैंक्रप्ट	दिवालिया
Bearor	बीयरर	वाहक
Bar-at law	बार-एट-लॉ	विधिवक्ता, बैरिस्टर
Barge	बार्ज	नाव (बोझा ढ़ोने वाली)
Barrage	बैरेज	बाँध
Base-line	बेसलाइन	आधार रेखा
Beat of the drum	बीट ऑफ दी ड्रम	ड्रम पीटना
Behalf	बिहाफ	तदर्थ
Bastard	बास्टर्ड	कपूत, खोटा
Batten	बैटन	न्यायदंड
Bench	बेंच	न्याय-सभा, अधिकरण
Bend	बेंड	मोड़
Benefit of doubt	बेनीफिट ऑफ डाउट	संदेह का लाभ
Benefit	बेनीफिट	उपकार,
Bequest	बिक्वेस्ट	रिक्थ, संकल्प, वसीयत
Bia	बिया	बीज
Bia	बियास	पक्षपात, एकांगी
Biesnial	बाइनिअल	द्विवार्षिक
Bifircation	बाइफरकेशन	दो भागों में विभक्त करना
Bill	बिल	विधेयक
Bill of exchange	बिल ऑफ एक्चेंज	हुंडी
Bilateral	बाइलैटरल	द्विपक्षीय
Breach of desci-pline	ब्रीच ऑफ डिसीप्लेन	अनुशासन तोड़ना
Breach of law	ब्रीच ऑफ लॉ	कानून तोड़ना
Breach of trust	ब्रीच ऑफ ट्रस्ट	विश्वास भंग करना
Budget	बजट	आय-व्यय पत्रक
Bonafide	बोनाफाइड	प्रामाणिक, सद्भावपूर्ण
Bond of indemnity	बोंड ऑफ इन्डेमनिटी	प्रतिपूरक बांड
Breach of contract	ब्रीच ऑफ कान्ट्रैक्ट	संविद्भंग
Broadcast	ब्रोडकास्ट	प्रसारण करना
Bullet	बुलट	गोली
Bureau	ब्यूरो	कार्यपीठ
Bye-laws	बाइ-लॉज	उपनियम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Bye-order	बाई-आर्डर	आज्ञा से
Bye-product	बाइ-प्रोडक्ट	उपोत्पाद
By return of post	बाइ रिटर्न आफ पोस्ट	लौटती डाक से
By virture of	बाइ वरच्यू ऑफ	से
Below-par-Value	बिलो-पार-वैल्यू	अवमूल्यन

(C)

Cabinet	केबिनेट	मंत्रि-मंडल
Cable	केबिल	संदाम
Cadre	केडर	मूल रचना, संवर्ग
Calamity	कैलेमिटी	आपदा
Calculator	कैलकुलेटर	गणक
Calender year	कैलेंडर ईयर	पत्रीवर्ष
Calibre	कैलीबर	शक्ति, क्षमता, छिद्रव्यास
Cambro	केम्ब्रो	कमानदार उभार
Call-book	कॉल-बुक	मुलाकातियों का रजिस्टर
Call Account	कॉल-एकाउन्ट	स्पष्टीकरण माँगना
Calling attention	कालिंग अटेन्शन	ध्यानाकर्षण
Call-in question	कॉल-इन क्वश्चन	आपत्ति करना
Candidature	केंडीडेचर	प्रत्याशित (उम्मीदवारी)
Campaign	कैम्पेन	आन्दोलन
Camp-equipment	कैम्प-इक्विपमेंट	निवेश सज्जा
Concellation deed	केंसिलेशन डीड	निरसन पत्र, विलोपन पत्र
Candid	कैनडिड	निष्कपट, खरा
Caning	केनिंग	बेंत लगाना
Canking	केंकिंग	जोड
Canopy	कैनोपी	वितान
Cantonment	कैन्टूनमेंट	छावनी
Cavnass	कैनवास	परामर्श करना
Capable	कैपेबिल	समर्थ
Capital-value	कैपिटल-वैल्यू	पूँजी-मूल्य
Cash	कैश	रोकड़
Casual	कैज्युअल	आकस्मिक
Casuality	कैज्युलटी	आकस्मिक दुर्घटना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Catalogue	केटलॉग़	सूची
Casuality ward	कैज्युलटी वार्ड	हताहत कक्ष
Cause of effect	कॉस आफ इफेक्ट	कारण और कार्य
Category	कैटेगरी	वर्ग
Cause of action	काज आफ एक्सन	वाद-कारण
Caveat	केवीट	उज्रदारी
Cease	सीज	समाप्ति
Cease fire	सीज-फायर	युद्ध-विराम
Ceiling	सीलिंग	अन्दर की छत
Celebration	सेलिब्रेशन	समारोह
Census	सेंसस	जनगणना
Chancelor	चांसलर	कुलाधिपति
Century	सेंचुरी	शतक
Central Area	सेंट्रल एरिया	केन्द्रीय क्षेत्र
Central Government	सेन्ट्रल गवर्नमेंट	केन्द्रीय सरकार
Censure	सेंसर	निन्दा
Censore	सेंसर	दोष वेचक
Chalan	चालान	चालान
Challenge	चेलेंज	चुनौती .
Channel	चैनल	रास्ता
Chaos	चाओज	अव्यवस्था
Charitable	चैरिटेबिल	धर्मार्थ
Cheque	चैक	चैक
Chief	चीफ	प्रमुख
Chronology	क्रोनोलॉजी	काल निर्णय शास्त्र
Circumstance	सरकमस्टेंस	परिस्थिति
Circulate	सरकुलेट	घुमाना
Citation	साइटेशन	दृष्टान्त, समन
Citizen	सिटीजन	नागरिक
Civil Court	सिविल कोर्ट	दीवानी न्यायालय
Claim	क्लेम	दावा
Claimant	क्लेमेंट	दावेदार
Classified	क्लासीफाइड़	वर्गीकृत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Clause	क्लेज	उपधारा, उपवाक्य
Closure	क्लोजर	विवादान्तक प्रस्ताव
Collaboration	कोलोबोरेशन	सहयोग
Collecton	कलक्टर	समाहर्त्ता, जिलाधिकारी
Code of Civil Procedure	कोड आफ सिविल प्रोसीजर	व्यवहार निधि संग्रह
Code-word	कोड-वर्ड	संकेत शब्द
Codicil	कोडीसाइल	रिक्थ पत्र-पूरक
Coallition	कोलीशन	संयुक्त
Comments	कमेंट्स	टीका-टिप्पणी
Cognate	कॉगनेट	सगोत्र
Collapse	कोलेप्स	अवसाद, संकोच,
Colleague	कुलीग	सहयोगी
Collation	कोलेशन	परीक्षण
Collide	कोलाइड	टकराना
Commandant	कमान्डेंट	समादेशक
Commencement	कमेंसमेंट	प्रारम्भ
Commission	कमीशन	आयोग
Commissioner	कमिश्नर	आयुक्त
Committal	कमिटल	सुपुर्दगी, सेसन को समर्पण
Communal riots	कम्यूनल रायट्स	साम्प्रदायिक दंगे
Communicate	कम्यूनीकेट	पत्र-व्यवहार करना
Communique	कम्यूनीक्यू	विज्ञप्ति
Commutation	कम्यूटेशन	परिवर्तन, लघुकरण, रूपान्तरण,
Compass	कम्पास	कुतुबनुमा
Compensation	कम्पेन्सेसन	क्षतिपूर्ति
Compensatory	कम्पेन्सेट्री	प्रतिकर
Complementary	कम्पलीमेन्ट्री	पूरक
Compliance	कम्पलाइन्स	आज्ञापालन, अनुवर्त्तन
Comprehensive	कम्प्रीहेन्सिव	व्यापक
Computation	कम्प्यूटेशन	गणना
Compulsory	कम्पलसरी	अनिवार्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Conceal	कन्सील	छिपाना
Concern	कन्सर्न	सम्बद्ध, व्यापारिक संस्था
Concession	कन्सेसन	सुविधा
Conditional	कन्डीशनल	सशर्त
Concrete work	कोन्क्रीट वर्क	कंक्रीट का कार्य, मजबूत-कार्य।
Condemn	कन्डेम	निन्दा
Confederacy	कन्फेड्रेसी	राजसंधि, प्रसंधि
Confer	कन्फर	प्रदान करना
Conference	कन्फ्रेन्स	सम्मेलन
Confess	कन्फेस	अपराध स्वीकार करना
Confedential	कॉनफीडेन्शियल	गोपनीय
Confirm	कनफर्म	पुष्टि करना
Confiscate	कनफिस्केट	जब्त करना
Confusion	कनफ्यूजन	अस्त-व्यस्तता, क्रय भंग, स्पष्ट ज्ञान न होना
Conjecture	कनजंक्चर	अनुमान
Consent	कन्सेंट	स्वीकृति
Consequence	कन्सीक्वेंस	परिणाम
Consign	कनसाइन।	सौंपना।
Consolidate	कन्सोलिडेट	जमाया हुआ, एकीकृत
Conspiracy	कान्सपिरेसी	षड्यन्त्र
Constituencies	कान्स्टीट्वेंसी	निर्वाचन क्षेत्र
Confirmation	करफरमेशन	स्थायी करना
Conflict	कांफ्लिक्ट	संघर्ष, द्वन्द्व
Consensus of opinion	कनसेंसस ऑफ ओपीनियन	आम राय
Consult	कन्सल्ट	परामर्श करना
Contact	कान्टेक्ट	सम्पर्क करना
Contemporary	कन्टेंम्परेरी	समकालीन
Contemplated	कन्टेंम्पलेटेड	सोचा हुआ
Contempt	कन्टेम्पट	मानहानि
Contents	कन्टेंट्स	विषय-सूची, अन्तर्लेख

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Context	कान्टेक्स्ट	प्रसंग
Contiguity	कन्टीग्युटी	समीपता
Contiguous	कन्टीग्युअस	समीपस्थ
Contingency	कंटिन्जेंसी	संभावना, संभावित-व्यय
Contradict	कन्ट्राडिक्ट	विरोधी बात कहना
Contrast	कन्ट्रास्ट	व्यतिरेक
Contravene	कन्ट्रावीन	भंग करना
Contribution	कन्ट्रीब्यूशन	योगदान
Controversial	कन्ट्रोवरसियल	विवाद
Convenor	कनवीनर	संयोजक
Conveniance	कन्वीनियेंस	सुविधा
Conveyance	कन्वेयेंस	सम्पत्ति हस्तान्तरण
Conveyance allowance	कन्वेयेंस एलाउंस	सवारी भत्ता
Convict	कनविक्ट	सजा
Coordination	कॉर्डीनेशन	समन्वय
Copy forwarded to	कापी फारवरडेड टू	प्रतिलिपि प्रेषित
Copyright	कापीरॉइट	प्रकाशन संबंधी सर्वाधिकार
Co-respondant	को-रेस्पोन्डेंट	सह-उत्तरदायी
Corporation	कारपोरेशन	निगम
Correction	करेक्शन	संशोधन
Correspondence	करेसपोंडेंस	पत्र-व्यवहार
Corrigenda	कोरेगेन्डा	शुद्धि-पत्र
Corroborate	कोरोबोरेट	समर्थन करना
Corruption	करप्सन	भ्रष्टाचार
Counter-Affidavit	काउंटर-एफीडेविट	प्रति-शपथ-पत्र
Counter-feit	काउंटर-फीट	कूट, जाली
Counter-foil	काउटर फॉयल	प्रतिपर्ण
Counter-signed	काउंटर-साइन्ड	प्रतिहस्ताक्षर करना
Convenant	कन्वीनेंट	संविदा
Credentials	क्रेडेंसियल्स	मुख्तारनामा
Credit	क्रेडिट	साख
Criminal	क्रिमिनल	अपराधी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Criminal Investigation Department (C. I. D.)	क्रिमिनल इनवेस्टीगेशन डिपार्टमेंट	गुप्तचर विभाग
Crisis	क्राइसिस	संकट
Custodian	कस्टोडिअन	संरक्षक
(D)		
Dearness allowance	डीयरनेश एलाउन्स	मँहगाई भत्ता
Damage	डेमेज	क्षति
Debar	डिबार	वंचित करना
Debate	डिबेट	वाद-विवाद
Days of grace	डेज आफ ग्रेस	अनुग्रह दिन
Day-to-day administration	डे-टू-डे एडमिनिस्ट्रेशन	दैनन्दिन प्रशासन
De-centralisation	डि-सेंट्रेलाइजेशन	विकेन्द्रीयकरण
Debt	डेब्ट	ऋण
Declaration form	डेक्लेरेशन फार्म	वक्तव्य पत्र
De-fecto	डि-फेक्टो	वस्तुतः
Decision on a point of Law	डिसीजन ऑन एं प्वाइंट आफ लॉ	विधि प्रश्न पर निर्णय
Defamation	डिफेमेशन	मानहानि
Decree	डिक्री	न्याय-पत्र
Decree-nishi	डिक्री निशी	सशर्त न्याय-पत्र
Deduct	डिडक्ट	कम करना
Deduction	डिडक्सन	कटौतियाँ
Deed of agreement	डीड ऑफ इग्रीमेंट	इकरारनामा
Deed of lease	डीड आफ लीज	पट्टा
Default	डिफौल्ट	दोष, अपराध
Defence	डिफेंस	सुरक्षा
Defendant	डिफेंडेंट	प्रतिवादी
Defficiency	डिफीसियेंसी	कमी होना
Deficit grant	डेफीसिट ग्रान्ट	घटी पूरक अनुदान
Defraud	डिफ्रॉड	हक मारना
Degeneration	डिगनिरेशन	अधःपतन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
De-jure	डि-जुरे	विचारानुकूल
Deligation	डेलीगेशन	शिष्ट मंडल, प्रतिनिधि मण्डल
Delete	डिलेट	अपमार्जित करना, मिटाना
Deliberate	डिलीब्रेट	विचारपूर्वक
Delinquent	डिलीक्वेंट	अपराधी
Demand	डिमांड	माँग
Demarcation	डिमार्केशन	मेड़बन्दी
Demi-Official (D. O.)	डेमी-आफीशियल	अर्द्ध-सरकारी
Demoted person	डेमोटेड परसन	पदावनत व्यक्ति
Demised	डिमाइज्ड	पट्टे पर भूमि देना
Demonstration	डिमॉन्स्ट्रेशन	प्रदर्शन
Denomination	डेनोमीनेशन	निष्पादन से अस्वीकृति
Departmental inquary	डिपार्टमेंटल इनक्वायरी	विभागीय जांच
Depreesed class	डिप्रेस्ड क्लास	दलित वर्ग
Deputation	डेपूटेशन	प्रतिनिधि मंडल
Depletion	डिप्लीशन	रिक्तता
Deportation	डिपार्टेशन	देश-निर्वासन
Deprecate	डिप्रीकेट	विपरीत प्रार्थना करना
Depreciation	डिप्रीसिएशन	अवमूल्यन करना
Deprive	डिप्राइव	वंचित करना
Dereliment	डिरेलीमेंट	पटरी से उतर जाना
Derelict	डिरेलिक्ट	परित्याग, धार बदलने से नदी द्वारा व्यक्त भूमि
Dereliction	डिरेलिक्सन	प्रमाद
Derogatory	डेरोगेटरी	अंशतः निष्प्रभावकारी
Descendant	डेससेंन्डेंट	वंशधर, संतति
Designation	डेजिग्नेशन	पद
Despatcher	डिस्पेचर	संप्रेषक
Destination	डेस्टीनेशन	गन्तव्य स्थान
Detached	डिटेच्ड	प्रथक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Detact	डिटेक्ट	पता लगाना, जाँच करना
Detention	डिटेंन्स	अवरोधन
Deterioration	डिटोरियेशन	अवनति
Determination	डिटरियोरेशन	संकल्प, निर्णय
Deterrent disciplinary action	डिटरेंट डिसीप्लनरी एक्सन	भयातरोधक अनुशासनात्मक कार्यवाही
Devaluation of Currency	डिवेलुएशन ऑफ करेंसी	मुद्रा का अवमूल्यन
Diagnosis	डाइग्नोसिस	निदान
Dictum	डिक्टम	सिद्धांत, विधि, नियम
Diplomacy	डिप्लोमैसी	कूटनीति
Diplomatic relations	डिप्लोमैटिक रिलेशन्स	राजनैतिक सम्बन्ध
Dignity	डिग्निटी	सम्मान
Director	डाइरेक्टर	संचालक, निर्देशक
Discharge from Service	डिस्चार्ज फ्रॉम सर्विस	सेवा से मुक्ति
Diploma	डिप्लोमा,	उपाधि, प्रमाण-पत्र
Disbursement	डिसब्रर्समेंट	वितरण
Disciplinary	डिस्पलीनरी	अनुशासनात्मक
Discrepency	डिस्क्रेपेंसी	कमी, असंगति, अंतर
Discretion	डिस्क्रेशन	विवेक
Disguise	डिसगाइस	छद्मवेश
Dislocation	डिस्लोकेशन	हड्डी हटना, स्थान से हटना
Dismissal	डिसमिसल	पदमुक्त, सेवा से हटाना
Disposal	डिस्पोजल	विक्रय, अधिकार
Disposition	डिस्पोजीशन	प्रकृति, अभिरुचि
Dispute	डिस्प्यूट	विवाद
Discent	डिसेंट	विमति, असहमति
Distemper	डिस्टेम्पर	चिड़चिड़ाहट
Distinguish	डिस्टिंग्युअस	पहचानना, भेद करना
Distraint	डिस्ट्रेन्ट	कुड़की
Dividend	डिवाइडेंड	लाभांश, बोनस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Document	डाकूमेंट	साक्ष्य
Domicili	डोमीसाइल	स्थायी निवास
Draft	ड्राफ्ट	प्रारूप
Dispassionate opinion	डिस्पैस्नेट ओपीनियन	निष्पक्ष राय
Doubt	डाउट	संदेह
Dowery	डाउरी	दहेज
Dower-debet	डाउर डेंट	स्त्रीधन, मेहर
Dual	ड्यूयल	दुहरा
Due	ड्यू	देय, प्राप्य
Dues	ड्यूज	दातव्य
Due-notice	ड्यू नोटिस	नियमित सूचना
Duli approved	ड्यूली एप्रोव्ड	विधिवत् स्वीकृत
Duplicate	डुप्लीकेट	द्वितीय, दुहरी
Durability	ड्यूरेबिल्टी	चिर स्थायी
Duration	ड्यूरेशन	कालावधि
Duty free	ड्यूटी फ्री	करमुक्त
Dynamic	डायनेमिक	गतिशील क्रान्तिकारी
Dying declaration	डाइंग डेक्लेरेशन	मरणासन्न कथन
(E)		
Edition	ऐडीसन	संस्करण
Editor	एडीटर	सम्पादक
Education	एजूकेशन	शिक्षा
Efficiency	इफीसिएन्सी	दक्षता
Efficiency Bar	इफीसिएन्सी बार	दक्षतारोक
Effluent	इफ्लूइंट	बहता हुआ
Egress	इग्रेस	निकास
Election	इलेक्शन	निर्वाचन
Elegance	एलीजेंस	सुन्दरता
Elevation	एलीवेशन	ऊँचाई
Eligible	इलीजीबिल	पात्र, योग्य
Eliminate	इलीमीनेट	दूर करना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Ellipse	इलिप्स	दीर्घवृत्त
Eloquent	इलोक्वेंट	वाग्मी, वाग्मितामय
Elucidate	इल्यूसीडेट	विशदीकरण
Embarkation	एम्बारकेशन	कदम रखना, प्रारम्भ करना
Emergency	इमरजेंसी	आपात् काल
Employer	एम्प्लायर	नियोजक
Eminent	इमीनेंट	प्रमुख
Emolument	इमोलूमेंट	परिलाभ
Emphasis	एम्फेसिस	जोर
Enactment	इनेक्टमेंट	अधिनियम
Encashment	एन्कैशमेंट	भुनाना
Enclosure	एन्क्लोजर	संलग्न
Encroachment	इन्क्रोचमेंट	अधिकार में लेना, भूमि पर कब्जा कर लेना
Endorsement	एन्डोर्समेंट	पृष्ठांकन
Endowment	एन्डाउमेंट	प्रतिभूति
Enforcement	एन्फोर्समेंट	क्रियान्वयन करना
Enrolment	एन्रोलमेंट	नामाङ्कन संख्या
Entangle	एन्टेंगल	फंसाना
Enterprise	एन्टरप्राइज	व्यवसाय
Envelope	एन्वैलप	लिफाफा
Epidemic	एपीडेमिक	महामारी
Equation	इक्वेसन	समीकरण
Equivalent	एक्विवेलेंट	समान
Equipment	इक्विपमेंट	मंत्र, सामान
Eradicate	इरेडीकेट	निर्मूल करना
Erosion	इरोजन	कटाव
Error	इरर	त्रुटि
Escape	एस्केप	बचना
Espouse	एस्पाउस	पत्नी
Eastablished	एस्टेब्लिस्ड	स्थापित, प्रतिष्ठित
Estate	एस्टेट	संपदा, भू-सम्पत्ति, रियासत
Estate duty	एस्टेट ड्यूटी	सम्पत्ति कर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Estimate	एस्टीमेट	आकलन, आगणन
Estoppel	एस्टोपल	प्रतिरोध
Etiquatte	एटीकेट	सभ्यता, शिष्टाचार
Evacuee property	एवेक्यू प्रापर्टी	निष्क्रान्त सम्पत्ति
Evalution	एवेल्यूशन	मूल्यांकन
Evasion	एवेशन	टालना
Eviction	इविक्सन	निष्कासन
Evidence	इविडेंस	साक्ष्य, गवाही
Evident	इवीडेंट	स्पष्ट
Even distribution	इविन डिस्ट्रीब्यूशन	समवितरण
Evolution	एवोलूसन	उद्‌विकास
Exaggeration	एक्सागरेशन	अतिशयोक्ति
Exchange	एक्सचेन्ज	विनमय
Exceed	एक्सीड	अधिक होना
Excellency	एक्सीलेंसी	महामहिम
Excellent	एक्सीलेंट	उत्तम
Exception	एक्सेप्सन	अपवाद
Exchequer	एक्सचेकर	राजकोष
Excise	एक्ससाइज	आबकारी, चुंगी
Exemption	एक्जेम्पशन	विमुक्ति, छूट
Exclusively	एक्सक्लूजिवली	केवल
Execute	एक्जीक्यूट	निष्पादन करना, तामील करना
Executive	एक्जीक्यूटिव	अधिशासी
Ex-gratia	एक्स-ग्रेसिया	अनुग्रह धन
Ex-gratia Payment	एक्स-ग्रेसिया पेमेंट	अनुग्रह धन प्रदान करना
Exhaust	एक्सहॉस्ट	खाली कर देना
Exihibition	एक्जीबीशन	प्रदर्शिनी
Ex-officio	एक्स-आफीसियो	पदेन
Exoncrate	एक्जानरेट	दोष युक्त करना
Ex-pairty	एक्स-पार्टी	इकतरफा, एकपक्षीय
Expert	एक्सपर्ट	विशेषज्ञ
Expulsion	एक्सपलशन	निष्कासन
Extention	एक्सटेंशन	वृद्धि, बढ़ावा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Extensive	एक्सटेंसिव	विस्तृत
Extent	एक्सटेंट	विस्तार, हद, सीमा
External	एक्सटरनल	बाहरी
Explanation	एक्सप्लेनेशन	व्याख्या, स्पष्टीकरण
Export	एक्सपोर्ट	निर्यात
Expediate	एक्सपीडिएट	शीघ्र निपटाना
Exploitation	एक्सप्लाइटेशन	शोषण
External affair	एक्सटरनल अफेयर	परराष्ट्र मामले
Extra-ordinary	एक्ट्रा आर्डीनरी	आसाधारण
Extreme	एक्सट्रीम	अत्यधिक, अन्तिम चरम
Eye-ward	आई वार्ड	अक्षि-कक्ष
Eye-witness	आई-विटनेस	आँखों देखा, चश्मदीद

(F)

Fabric	फेब्रिक	वस्त्र बनाना
Fabricate	फेब्रीकेट	मामला गढ़ना, जाल बनाना
Face-value ticket	फेस-वैल्यू टिकट	अंकित मूल्य टिकट
Facility	फैसीलिटी	सुविधा
Facsimile	फैसीमाइल	अनुलिपि
Factor	फैक्टर	गुणनखण्ड
Factory	फैक्ट्री	कर्मशाला
Faculty	फैकल्टी	संकाय
Fallacy	फैलेसी	भ्रान्ति
Fallacious-Argument	फैलेसस आर्गूमेंट	भ्रामक तर्क
Famine code	फैमाइन कोड	दुर्भिक्ष संहिता
False-charge	फाल्स चार्ज	मिथ्या आरोप
Family Planning	फैमिली प्लानिंग	परिवार नियोजन
Fatigue duty	फटीग ड्यूटी	दलेल
Favour	फेवर	पक्ष, अनुकूल
Favour of Acknowledge	फेवर आफ एक्नोलेज	प्राप्ति स्वीकार
Fedral	फेडरल	संघीय
Fedration	फेडरेशन	महासंघ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक	शब्द उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Feudalism	फ्यूडालिज्म	सामन्तशाही
Feeder	फीडर	पोषक
Fellowship	फैलोशिप	पारषद्यता
Fenestra	फेनेस्ट्रा	गवाक्ष, झरोखा
Fertilizer	फर्टिलाइजर	खाद
Fiduciary	फाइडुसियरी	न्यास सम्बन्धी
Fidelity Bond	फायडीलिटी बाण्ड	निष्ठा का अनुभव
File a suit	फायल ए स्यूट	मुकद्दमा दायर करना
Finance	फाइनेंस	वित्त
Finances	फायनेंसेस	वित्तीय स्थिति
Fitness certificate	फिटनेस सर्टीफिकेट	स्वस्थता प्रमाण-पत्र
Firm-determination	फर्म डिटरमिनेशन	दृढ़-निश्चय
First aid	फर्स्ट एड	प्राथमिक चिकित्सा
Fiscal	फिस्कल	राजस्व संबंधी
Fixtures	फिक्सचर्स	स्थावर द्रव्य
Floatation	फ्लोटेशन	आरम्भ करना
Fluctuate	फलक्चुएट	उतार-चढ़ाव
Focus	फोकस	नाभि
Folio	फोलिओ	पर्ण
Forest research institute	फॉरेस्ट रिसर्च इन्स्टीट्यूट	वन अनुसंधान विभाग
Foreign exchange	फारेन एक्सचेंज	विदेशी मुद्रा
Forgery	फोरजरी	धोखाधड़ी
Fraud	फ्राड	जालसाज़ी
Forbid	फॉरबिड	निषेध करना
Forego	फारगो	त्यागना
Fore noon	फार नून	पूर्वाह्न
Forfeit	फोरफीट	अपहृत करना
Formalties	फार्मलटीज	औपचारिकताएँ
Formation	फार्मेशन	रचना, बनावट
Fort night	फोर्ट नाइट	पाक्षिक
Forum	फोरम	मंच
Fraction	फ्रेक्शन	भिन्न

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक-शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Fracture	फ्रेक्चर	अस्थि भंग
Franchise	फ्रेन्चाइज	मताधिकार
Fraudulent	फ्राडीलेण्ट	धोखे का, कपटी
Freight	फ्रीट	भाड़ा
Frequency	फ्रीक्वेंसी	बारंबारता
Fret work	फ्रेट वर्क	जालीदार कार्य
Fringe	फ्रिंग	किनारा
Fugitive	फ्यूजीटिव	पलायित, पलायन करने वाला
Frontis piece	फ्रोंटिश पीस	मुखचित्र
Function	फन्कसन	कार्य
Fundamental	फंडामेटल	मौलिक
Funeral	फ्यूनरल	चिता सम्बन्धी
Furnish	फर्निश	परिष्कृत करना
Futile	फ्यूटाइल	व्यर्थ

(G)

Gazette	गजट	राजपत्रित
Gallantry award	गैलेन्ट्री अवार्ड	शौर्य पुरस्कार
Gallary	गैलरी	दीर्घा
General Manager	जनरल मैनेजर	प्रधान प्रबंधक
Genuine	जिन्यून	विशुद्ध, सत्य, वास्तविक
Generator	जेनरेटर	जनित्र
Geologist	ज्योलोजिस्ट	भूगर्भशास्त्री
Germination	जर्मीनेशन	अंकुरित होना
Gist	गिस्ट	सार, निष्कर्ष
Glossary	ग्लोजरी	शब्दावली, शब्दकोष
Goods	गुड्स	माल
Governance	गवर्नेंस	शासन
Governor	गवर्नर	राज्यपाल
Government House	गवर्नमेंट हाउस	राज भवन
Grade	ग्रेड	कोटि
Grading	ग्रेडिंग	कोटिकरण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Gradual	ग्रेजुअल	आनुक्रमिक
Grant	ग्रान्ट	अनुदान
Gratuity	ग्रेचुअटी	अनुग्रह धन
Grateful	ग्रेटफुल	कृतज्ञ
Grid	ग्रिड	जाल
Grace-period	ग्रेस-पीरियड	अनुग्रह अवधि
Guard of Honour	गार्ड ऑफ आनर	सैन्याभिवादन
Gravity	ग्रेविटी	गुरुत्व
Gross income	ग्रॉस इनकम	सकल आय
Ground of apeal	ग्राउन्ड ऑफ अपील	प्रार्थना के आधार
Guarantee	गारन्टी	प्रत्याभूत
Guardian	गारजियन	संरक्षक

(H)

Halting allowance	हाल्टिंग एलाउन्स	विराम भत्ता
Head of department	हैड ऑफ डिपार्टमेंट	विभागाध्यक्ष
Head quarter	हैड क्वार्टर	मुख्यालय
Heir	हेयर	उत्तराधिकारी
Hereditary	हेरीडिटरी	पैतृक, वंशानुक्रमिक
Highway	हाइवे	राजमार्ग
Hill allowance	हिल एलाउन्स	पहाड़ी भत्ता
Hoard	होर्ड	संचय करना
Hollow	होलो	खोखला
Homage	होमेज	श्रद्धांजलि
Homicide	होमीसाइड	नर-हत्या
Honorarium	ओनोरेरियम	मानदेय
Honorary	आनोरेरी	अवैतनिक
Hood	हुड	छतरी, छत्र
Hotch-Potch	हौच-पौच	अव्यवस्थित, मिश्रण
Hygiene	हाइजिन	स्वास्थ्य विज्ञान
Hypothecate	हाइपोथीकेट	बन्धक रखना
Hypothesis	हाइपोथीसिस	परिकल्पना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
(I)		
I am directed to	आई एम डाइरेक्टेड टू	मुझे निर्देश हुआ है
Indian Administrative Service (I.A.S.)	इंडियन एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस	भारतीय प्रशासनिक सेवा
Indian Civil Service (I.C.S.)	इंडियन सिविल सर्विस	भारतीय जनपद सेवा
Identification	आइडेंटीफिकेशन	पहचान, परिचय, अभिज्ञान
Identity	आइडेंनटिटी	पहचान, शिनाख्त
Illegal	इल्लीगल	अवैध
Illegal Gratification	इल्लीगल ग्रेटीफिकेशन	उप प्रदान, रिश्वत
Illegible	इलेजीबिल	अपठनीय
Ibid	आइबिड	उपरोक्त
Immense	इमेन्स	अपरिमित
Incidence	इन्सीडेंस	आपात
Immovable Property	इममूवेबिल प्रापर्टी	अचल सम्पत्ति
Impeachment	इम्पीचमेंट	अभियोग, सजा
Implicite	इम्पलीसाइट	उपलक्षित्र
Impotence	इम्पोटेंस	नपुंसकता
Impartial	इम्पार्सियल	निष्पक्ष
In anticipation	इन एन्टीसिपेसन	की प्राप्त्याशा में
In augural	इन औगरल	प्रतिष्ठापनिक
In capable	इन कैपेबुल	अयोग्य, अक्षम
Inclined	इन क्लाइन्ड	झुका हुआ
Inconsistant	इन कन्सिस्टेंट	असंगत
Incorporate	इन कारपोरेट	निगमन करना
Increament	इनक्रीमेंट	वेतन वृद्धि
Incumbant	इन्कम्बेंट	पद धारक
Indefeasible	इनडेफीसियेबुल	अक्षम
Indemnity Bond	इन्डैमनिटी बान्ड	क्षतिपूरक प्रतिज्ञा-पत्र
Index	इनडेक्स	अनुक्रमणिका
Indication	इन्डीकेशन	संकेत, लक्षण
Indigenous	इंडिजीनिअस	देशी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Indiscriminate	इनडिसक्रिमिनेट	अविवेकपूर्ण
Individual	इनडिवीजुअल	व्यक्तिगत
Indolence	इन्डोलेंस	सुस्ती, आलस्य
Induce	इन्ड्यूस	प्रेरित करना
Indulge	इन्डल्ज	आदत डालना
Inefficiency	इनइफीसियेंसी	कार्य-कुशलता की कमी
Infant	इन्फेंट	शिशु
Infanticide	इन्फैन्टीसाइड	शिशु हत्या
Infentile Leish-maniasis	इन्फैन्टाइल लीशमैनयासिस	बच्चों का कालाजार (रोग)
Infantry	इन्फैन्ट्री	पैदल सेना
Infaction	इन्फैक्सन	संक्रमण रोग
Inferior	इन्फीरियर	अवर
Infestation	इन्फेस्टेशन	उपद्रव बाधा
Infirmity	इन्फरमिटी	कमजोरी, असमर्थता
Inflation	इन्फलेशन	मुद्रा-स्फीति
Inflict	इन्फ्लिक्ट	आमद करना, लगाना
Infringe	इन्फ्रिग	भंग करना
Ingredient	इन्ग्रेजियन्ट	घटक
Ingress	इन्ग्रेस	प्रवेश
Initial	इनीसियल	प्रारम्भिक
Inheritance	इन्हेरीटैन्स	रिक्थ, पैतृक
Injunction	इन्जंक्शन	निषेधाज्ञा
Injury	इन्जुरी	चोट, क्षति
In lieu of	इन लियू आफ	बदले में, के स्थान पर
Inmate	इनमेट	आवासी
Inoculation	इनओकूलेशन	टीका लगाना
Inquest	इन्क्वैस्ट	अदालती तहकीकात, अप-मृत्यु निवारण
Installation	इन्स्टालेशन	प्रतिष्ठापन, आरोपण
Instalment	इन्स्टालमेंट	किस्त
Instigate	इन्स्टीगेट	भड़काना
Insurance	इन्श्यूरेंस	बीमा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Intact	इन्टैक्ट	अक्षुण्ण
Intigrity	इन्टीग्रिटी	सत्यनिष्ठा
Intend	इन्टेंड	अभिप्राय रखना
Inadmissible claim	इनएडमिसीबिल क्लेम	अमान्य दावा
Incamera	इन कैमरा	गुप्त बैठक
Incidental charges	इन्सीडेन्टल चार्जेज	प्रासंगिक प्रभाग
Incompetent hand	इन्कॉम्पीटेंट हैंड	अक्षम कर्मचारी
Indian custom tariff	इंडियन कस्टम टैरिफ	भारतीय सीमा शुल्क
Indian Educational service	इंडियन एजूकेशनल सर्विस	भारतीय शिक्षा सेवा
Interim	इन्टरिम	अंतरिम
Interlineation	इन्टरलाइनेशन	पंक्तियों के बीच लिखना, निष्पादित होने के उपरान्त किसी लेख पत्र में किसी बात का लिखना
Interlocutory	इन्टर लोकेट्री	मध्यवर्ती
Internal security	इनटरनल सिक्योरिटी	आन्तरिक सुरक्षा
Inter national	इन्टर नेशनल	अन्तर्राष्ट्रीय
Inter pellation	इन्टर पैलेशन	प्रश्नोत्तर
Interpolation	इन्टरपोलेशन	आन्तरगणन
Interpret	इन्टरप्रेट	व्याख्या करना
Interrupt	इन्टरप्ट	रोकना, बाधा डालना
Intervener	इन्टरवीनर	हस्तक्षेपकर्त्ता
Intestate	इन्टैस्टेट	बिना वसीयत किये मृत्यु होना
Intimate	इन्टीमेट	जिगरी
Intimation	इन्टीमेशन	सूचना
Intimidation	इन्टीमिडीशन	तर्जना, भय दिखाना
Intoxicating drug	इन्टोक्सीकेटिंग ड्रग	मादक द्रव्य
Intramural	इन्ट्रामूरल	जेल के अंदर
Intrigue	इन्ट्रीग्यू	षड्यन्त्र, कूट युक्ति
Intrusion	इन्ट्रजन	अनाधिकार प्रवेश
Invalid	इनवैलिड	अवैध, अशक्त,
Inventory	इन्वैन्ट्री	सूची फेहरिस्त
Inverse	इनवर्स	उल्टा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Investigation	इन्वेस्टीगेसन	अनुसंधान
Investment	इन्वेस्टमेंट	विनियोग, लागत
Invidious	इन्वीडस	द्वेष जनक
Isolation	आइसोलेशन	अलग रखना
Issue	इश्यू	विवेचनीय प्रश्न, विवाद का-प्रश्न, निर्गम
Irrelevent	इर्रेलेवेंट	विसंगत

(J)

Job work	जॉब-वर्क	फुटकर कार्य
Joining date	जौइनिंग डेट	कार्य ग्रहण दिनाङ्क
Jerk	जर्क	झटका
Joint	जौइन्ट	संयुक्त, जोड़, गाँठ,
Journal	जरनल	पत्रिका
Judge	जज	न्यायाधीश
Judicature	ज्यूडीकेचर	न्यायाधिकरण
Judicial	जुडीशियल	न्यायिक
Judicial proceedings	जुडीसियल प्रोसीडिंग्स	न्यायिक कार्यवाही
Judiciary	जुडीसियरी	न्यायपालिका
Junction	जंक्शन	संगम
Jurisdiction	ज्यूरिसडिक्सन	अधिकार-क्षेत्र
Jurisprudence	ज्यूरिसप्रूडेंस	व्यवहार शास्त्र
Jury	ज्यूरी	सभासद, न्याधिकरण के सदस्य
Justice	जस्टिस	न्याय-अधिकारी
Justifi	जस्टीफाई	निर्दोष सिद्ध करना
Junenile	जुवेनाइल	किशोर
Junenile offence	जुवेनाइल ऑफेन्स	अल्पव्यस्क अपराधी
Jubilee	जुबली	जयन्ती

(K)

Key	की	कुन्जी
Kidnap	किडनेप	अपहरण करना
Kept pending	कैप्ट पेंडिंग	निलम्बित किया गया
Key Board	की बोर्ड	कुन्जी पटल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Key point	की पौइन्ट	निर्णय बिन्दु
King's post	किंग्स पोस्ट	खड़ा खम्भा
(L)		
Laboratory	लैबोरेट्री	प्रयोगशाला, प्रसाधन घर
Labour	लेबर	श्रमिक
Land Acquisition	लैंड एक्यूजीशन	भू-अधिग्रहण
Lack of descipline	लैक ऑफ डिसीप्लेन	अनुशासन का अभाव
Land record manual	लैंड रिकार्ड मैन्युअल	भू-अभिलेख सार संग्रह
Laps	लैप्स	दोष, रुपये का सरकार को लौट जाना
Larder	लारडर	खाद्य-सामग्री
Latent ambiguity	लेटेन्ट एम्बिग्युटी	गुप्त संदिग्धता
Latitude	लेटीट्यूड	अक्षांश
Law ful	लॉ फुल	विधि सम्मत
Land mark	लैंड मार्क	सीमा चिह्न
Leader of the house	लीडर आफ दी हाउस	सदन का नेता (मुख्य मंत्री या प्रधान मंत्री)
League of Nations	लीग ऑफ नेशन्स	राष्ट्रसंघ
Legal offairs	लीगल अफेयर्स	वैधानिक कार्य
Legal advisor	लीगल एडवाइजर	विधि सलाहकार
Legislature	लेजिसलेचर	विधान मंडल
Legitmate claim	लेजिटमेट क्लेम	वैध दावा
Letter of authority	लैटर आफ अथौरिटी	अधिकार पत्र
Leakage	लीकेज	टपकना, रहस्य का प्रकट होना
Leape year	लीप ईयर	लोंद का वर्ष
Lease	लीज	पट्टा
Ledger	लेजर	खाता
Leftist	लेफ्टिस्ट	वामपंथी
Legacy	लीगेसी	रिक्थ पत्र
Legal advisor	लीगल एडवाइजर	वैधानिक सलाहकार
Legal ground	लीगल ग्राउन्ड	वैधानिक कारण या आधार
Law and order	लॉ एन्ड आर्डर	कानून और व्यवस्था
Letter of credit	लेटर ऑफ क्रेडिट	शाख पत्र

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Littor of Licence	लैटर आफ लाइसेंस	अनुज्ञप्ति पत्र
Levy	लेवी	समाहरण
Lex fori	लैक्स फोरी	स्थानीय विधान
Lex Loci	लैक्स लॉकी	स्थानीय विधान
Liabilities	लाइबिलिटीज	देयधन, दायित्व
Liable	लाइबिल	उत्तरदायी
Libel	लिबेल	अपमान लेख
Liberal rain	लाइबेरल रेन	व्यापक वर्षा
Lierary	लाइब्रेरी	पुस्तकालय
Librarian	लाइब्रेरियन	पुस्तकालयाध्यक्ष
Limitation	लिमिटेशन	सीमा, अवधि
Litigation	लिटिगेशन	मुकद्दमेंबाजी
Livelihood	लिवलीहुड	जीविका
Lineal descent	लाइनियल डेस्सेंट	वंशानुक्रमिक उत्तरधिकार
Liquidation	लिर्िवडेशन	निस्तारण, चुकौता
Literature	लिटरेचर	साहित्य
Litigent	लिटीजेंट	विवादी
Loby	लॉबी	सभाकक्ष,गुट
Local self government	लोकल सेल्फ गवर्नमेंट	स्वायत्त शासन
Location	लोकेशन	अवस्थिति, स्थान-निरूपण
Lubricte	लुब्रीकेट	चिकनाई देना, तेल देना
Lunatic	ल्यूनेटिक	विक्षिप्त, उन्मत्त
Luxury	लक्जरी	विलास

(M)

Magazine	मेग्जीन	शस्त्रागार
Magazines	मेग्जीनस	पत्रिकाएँ
Magnetic needle	मेग्नेटिक नीडिल	चुम्बकीय सुई
Magistrate	मजिस्ट्रेट	न्यायाधीश
Magnitude	मैग्नीट्यूड	परिमाण
Maintain	मेन्टेन	रख-रखाव करना
Maintenance	मेन्टीनेंस	अनुपालन
Majority	मेजोरिटी	बहुसंख्या, यस्कत०

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Malafide	मेलाफाइड	दुर्भाव से
Mandate	मैन्डेट	आज्ञा, आदेश
Manifesto	मैनीफैस्टो	घोषणापत्र
Manual Labour	मैन्युल लेबर	शारीरिक श्रम
Mandatory	मैन्डेटरी	आदेशात्मक
Martial Law	मार्शल लॉ	सैनिक कानून
Mask	मास्क	मुखावरण
Manipulation	मैनीपुलेशन	हेर-फेर
Manuscript	मैनिसिक्रिप्ट	पाण्डुलिपि
Maternity Leave	मैटरनिटी लीव	प्रसूति छुट्टी
Matron	मैट्रन	उपचार निरीक्षिका
Mature	मैच्योर	परिपक्व
Measurment	मैजरमेंट	नापतौल, परिमाण
Maximum	मैक्जीमम	अधिकतम
M. B. B. S	एम० वी० वी० एस०	चिकित्सा एवं शल्य स्नातक
Meagre	मीगरे	अल्प
Mayar	मेयर	महापौर
Mechanical	मैकेनीकल	यांत्रिक
Machanics	मैकेनिक्स	यंत्र-शास्त्र
Medical Board	मैडीकल बोर्ड	चिकित्सा परिषद
Medical certificate	मैडीकल सर्टीफिकेट	चिकित्सा प्रमाणपत्र
Medical licentiate	मैडीकल लाइसेंसियेट	चिकित्सा सानुज्ञ
Mercy Petition	मर्सी पिटीशन	दया-याचिका
Memorandum	मेमोरेन्डम	ज्ञापन
Memo of Cost	मैमो ऑफ कॉस्ट	व्यय का स्मरण पत्र
Mensuration	मेंशुरेशन	क्षेत्रमिति
Mental defect	मैटल डिफेक्ट.	मानसिक रोक
Merger	मर्जर	विलयन
Mental aberation	मेंटल एबरेशन	सिर फिर जाना
Merit	मेरिट	योग्यता, क्षमता
Microscope	माइक्रोस्क्रोप	अणुवीक्षण यंत्र
Migration Certificate	माइग्रेशन सर्टीफिकेट	विश्व-विद्यालय छोड़ने का प्रमाण पत्र
Minerals	मिनरल्स	खनिज

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Miniature	मीनिएचर	लघुचित्र
Ministerial	मिनिस्ट्रीयल	लेखक वर्गीय, लिपिक वर्ग
Misleading Statement	मिसलीडिंग स्टेटमेंट	भ्रामक बलव्य
Minutes book	मिनट्स बुक	कार्यवाही रजिस्टर
Misappropriation	मिसएप्रोप्रियेशन	दुरुपयोग
Misbehaviour	मिसबिहेवियर	अविनय
Miscellaneous	मिससेलेनियस	विविध-प्रकीर्ण
Misconduct	मिसकंडक्ट	दुराचरण
Military prisoner	मिलिट्री प्रिजनर	सैनिक कैदी
Mitigation	मिटीगेशन	कम करना
M. L. A.	एम० एल० ए०	सदस्य विधान सभा
Moderate	मोडेरेट	साधारण, मंदीकरण
Modulus	मोडूलस	माप
Moisture	मोश्चर	नमी, आर्द्रता
Monetary	मोनेटरी	आर्थिक
Monopoly	मोनोपाली	एकाधिकार
Momentum	मोमेंटम	झोंक, उसी क्षण
Mortgage	मोर्टगेज	बंधक
Mortuary	मोरच्यूरी	शव ग्रह
Mould	मोल्ड	साँचा
Motion	मोशन	प्रस्ताव
Movement	मोवमेंट	आन्दोलन, गति, चाल
Movable property	मोवेबुल प्रोपर्टी	चल सम्पत्ति
Municipal Board	म्युनिसिपिल बोर्ड	नगरपालिका
Museum	म्यूजियम	अजायबघर
Musket	मस्केट	बंदूक
Mutation	म्यूटेशन	दाखिल-खारिज
Mutiny	म्यूटिनी	बलवा, दंगा, विद्रोह
Mutual testament	म्यूच्युअल टेस्टामेंट	पारस्परिक इच्छा-पत्र

(N)

N. B.	एन० बी०	विशेष सूचना
Narraw scape	नैरो एस्केप	बाल-बाल बचना
National Security	नेशनल सिक्यौरिटी	राष्ट्रीय सुरक्षा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
National economy	नेशनल इकॉनोमी	राष्ट्रीय मितव्ययिता
Nationalization	नेशनलाइजेशन	राष्ट्रीयकरण
National anthom	नेशनल एन्थम	राष्ट्रीय गीत
National debt	नेशनल डेट	राष्ट्रीय ऋण
Native	नेटिव	मूल निवासी
Navigation	नेवीगेशन	पोत सम्बन्धी
Nature	नेचर	नैसर्गिक
Neglect	नेग्लेक्ट	उपेक्षा
Negligence	नेग्लीजेंस	अनभिज्ञता, उपेक्षा, प्रमाद, लापरवाही
Negotiable	नीगोसियेबिल	क्रय-विक्रय योग्य
Nominal	नोमिनल	नाम-मात्र
Notary	नोटेरी	लेख्य प्रमाण अधिकारी
Narth east frontier agency	नार्थ ईस्ट फ्रोंटियर एजेन्सी	उत्तर पूर्व सीमान्त
Nepotism	नेपोटिज्म	भाई-भतीजावाद
Notification	नोटीफिकेशन	विज्ञप्ति, अधिसूचना
Notice of discharge	नोटिस ऑफ डिस्चार्ज	बर्खास्तगी की सूचना
Note of dissent	नोट ऑफ डिसेंट	असहमति का लेख
Note of protest	नोट ऑफ प्रोटेस्ट	प्रतिवाद टिप्पणी
Null and void	नल एण्ड वाइड	व्यर्थ निष्प्रभाव
Nullify	न्यूलीफाई	निष्प्रभाव करना
Numerical	न्यूमेरिकल	संख्यात्मक
Numerous	न्यूमरस	बहुत से
Nuncupative will	ननक्यूपेटिव विल	मौखिक वसीयत

(O)

Oath	ओथ	शपथ
Oath of allegiance	ओथ ऑफ एलीगियेन्स	राज्य-निष्ठा की शपथ
Obligation	ऑथलीगेशन	कृतज्ञता
Oblique	आब्लिक	तिर्यक्
Obscene	आब्सीन	अश्लील
Occupancy	आक्यूपैन्सी	भोगाधिकार, भू-मुक्ति
Occupant	आक्यूपेंट	उपभोक्ता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Occupation	आक्यूपैशन	व्यवसाय
Occur	अकर	घटित होना
Occcurrance	अकरस	घटना
Octroi	आक्ट्राई	चुंगी
Odd	औड	विषम
Office	ऑफिस	अपराध
Office memo	आफिस मीमो	कार्यालय स्मृति पत्र
Office memorandam	आफिस मैमोरेंडम	कार्यालय ज्ञापन
Office bearer	आफिस बीयरर	पदाधिकारी
Official	आफिसियल	कार्यालयी, आधिकारिक
Officiate	आफीसियेट	स्थानापन्न
Omit	ऑमिट	छोड़ना, भूलना
Onus	आनिस	भार, दायित्व
Operation table	आपरेशन टेबिल	शल्यकर्म पटल
Operative	ऑपरेटिव	सप्रभाव
Opinion	आपोनियन	मत, राय
Opportunity	अपारच्यूनिटी	अवसर
Opposition Party	आपोजीशन पार्टी	विरोधी दल
Option	आप्सन	विकल्प
Oral	ओरल	मौखिक
Optional	आप्सनल	ऐच्छिक
Obligarchy	ओबलिगार्सी	अल्पमत द्वारा शासन
Operation	आपरेशन	संचालन
On probation	ऑन प्रोबेशन	परीक्षण काल पर
Orbit	आरबिट	कक्ष
Orchard	आंरचार्ड	फलों का बाग
Ordinance	आर्डिनेंस	अध्यादेश, शस्यागार
Organizer	आर्गनाइजर	संयोजक, आयोजक
Out of date	आउट ऑफ डेट	समय निकल गया
Organs	ऑर्गन्स	अंग, इन्द्रिय
Oriental	ओरियन्टल	पूर्ववर्ती
Orientation	ओरियन्टेशन	स्थिति निर्धारण
Origin	ओरिजन	मूल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Original	ओरीजनल	मौलिक
Ornamental	ओरनमिटल	आभूषण, सजावट
Orphan	ओरफन	शरणार्थी, अनाथ
Orphanages	ओरफनाज	अनाथालय
Ostansible	ओस्टेंसीबिल	प्रत्यक्ष, प्रकट, कृत्रिम
Out law	आउट लॉ	अपराधी
Out post	आउट पोस्ट	चौकी
Out rage	आउट रेज	अत्याचार
Out door	आउट डोर	बाहरी
Out standing	आउट स्टैंडिग	उत्कृष्ट
Outturn	आउटर्न	निकासी
Oval	ओवल	वर्तुलाकार जीव
Overbid	ओवरबिड	अधिक मूल्य लगाना
Over crowding	ओवर क्राउडिंग	अधिक भीड़
Overseas	ओवरसीज	समुद्र पार
Over draw	ओवर ड्रा	प्राप्य से अधिक
Overstimate	ओवर एस्टीमेंट	निकालना
Overhauling	ओवर हालिंग	अधिक आँकना, काया पलट करना
Over head charges	ओवर हैड चार्जेज	अतिरिक्त प्रभार
Over rule	ओवर रूल	प्रत्यादेश करना
Oversear	ओवरसीयर	अवर-निरीक्षक
Oversight	ओवरसाइट	भूल
Oyerwriting	ओवर-राइटिंग	अक्षरों पर लिखना
Owe	ओ	आभारी होना
Ownership	ओनरशिप	स्वामित्व

(P)

Panal	पैनल	नामिका, तालिका
Parity	पैरिटी	समानता
Panal Code	पैनल कोड	दण्ड विधान
Panal of experts	पैनल ऑफ एक्सपर्टस	विशेषज्ञों का दल
Paper weight	पेपर-वेट	पत्र-भार
Parabola	पैराबोला	परवलय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक-शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Paragraph	पैराग्राफ	परिच्छेद
Paraphrases	पैराफ्रेज	टीका, अन्वय
Parasite	पैरासाइट	परजीवी
Parole	पैरोल	वचन
Partial	पारसियल	आंशिक
Partiality	पारसियलिटी	भेदभाव
Patron	पैट्रन	संरक्षक
Passport	पासपोर्ट	परिपत्र
Pathology	पैथोलोर्जा	रोग शास्त्र
Paucity	पौसिटी	अल्पता, कमी
Pending	पेंडिंग	विचाराधीन
People's verdict	पीपुल्स वरडिक्ट	जन-निर्णय
Petition	पिटीशन	याचिका
Penetration	पैनेट्रेशन	भेदन
Panalogy	पैनालॉजी	भेदशास्त्र
Pension	पेंशन	निवृत्त-वेतन
Plantiff	प्लैनटिफ	बादी
Per capita income	पर कैपिटा इनकम	प्रति व्यक्ति आय
Parennial	पैरेनिअल	निरन्तर, बारहमासी
Planning Commission	प्लानिंग कमीशन	योजना आयोग
Policy of non-aliegnment	पालिसी आफ नॉन एलाइनमेंट	निरपेक्षता
Political agent	पॉलिटिकल एजेन्ट	राजनैतिक प्रतिनिधि
Perpetuate	परपेचुएट	कायम रखना, निरन्तर
Personality	परसनलिटी	व्यक्तित्व
Persuade	परस्युएड	प्रेरित करना
Polling	पोलिंग	मतदान
Posthumous	पोस्थोमस	मरणोपरान्त
Pleader	प्लीडर	अभिभापक
Postponed	पोस्टपोन्ड	स्थगित
Postscript	पोस्टस्क्रिप्ट	अनुलेख
Power of attorney	पावर आफ एटार्नी	अभिकर्त्ता पत्र
Power of authority	पावर आफ अथोरिटी	प्रतिनिधि पत्र

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Predecessor	प्रिडिशैजर	पूर्वाधिकारी
Preamble	प्रीयम्बिल	प्रस्तावना
Privileges	प्रिविलेग्ज	विशेषाधिकार
Preclude	प्रीक्लूड	रोकना
Precedent	प्रीसीडेंट	पूर्व दृष्टान्त
Precinct	प्रीसिन्क्ट	सीमा
Prima-facie	प्राइमा फैसी	प्रत्यक्ष
Prefix	प्रीफिक्स	प्रत्यय
Prejudice	प्रेजूडाइस	पक्षपात
Prejudicial	प्रीजूडिसियल	पक्षपातपूर्ण, प्रतिकूल
Preliminary	प्रीलिमिनरी	प्रारम्भिक
Prescription	प्रेसक्रिप्सन	नुस्खा, अगदनिदेश
Presume	प्रिज्यूम	अनुमान करना
Probationer	प्रोबेशनर	परीक्ष्यमात्र
Proclamation	प्रोक्लेमेशन	उद्घोषणा
Profession	प्रोफेशन	व्यवसाय
Professor	प्रोफेसर	प्राध्यापक, आचार्य, विश्वविद्यालय के शिक्षक
Profeciency	प्रोफिसियेंसी	प्रवीणता
Pro-forma-defendant	प्रो-फार्मा-डिफाइडेंट	गौड़ प्रतिवादी
Promotion	प्रोमोशन	उन्नति
Proprietor	प्रोपराइटर	स्वामित्व
Propulsion charges	प्रोपलसन चार्ज	चालन व्यय
Prosecution	प्रोसीक्यूशन	अभियोग पक्ष
Prostitution	प्रोस्टीट्यूशन	वेश्यावृत्ति
Protection	प्रोटेक्शन	सुरक्षा
Provident fund	प्रोवीडेंट फंड	पूर्वोपायी कोष
Provision	प्रोविजन	उपलब्ध, आदेश
Proviso	प्रोविसो	प्रतिबन्धात्मक, वाक्य-खंड
Proxy	प्रोक्सी	प्रतिहस्त
Publicity	पब्लिसिटी	प्रचार
Public service commission	पब्लिक सर्विश कमीशन	जन सेवा आयोग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिमाषिक शब्दावली
Punitive	प्यूनिटिव	दण्डात्मक
Purveiw	परव्यू	अधिकार सीमा
Putrafection	प्यूट्रेफेक्शन	कूपन
Prosecution wittness	प्रोसीक्यूशन विटनेश	अभियोग साक्षी

(Q)

Qwadrennial	क्वाड्रेनियल	चतुर्वर्षीय
Qwa-duplicate in	क्वा-डुप्लीकेट इन	चार प्रतियों में
Qualified	क्वालीफाइड	योग्य, अधिकारी
Quash	क्वैश	रद्द करना, निष्प्रभाव करना
Quashi-judicial	क्वाशी जुडीसियल	अर्द्ध-न्यासिक
Query	क्वेरी	पुष्टि
Questionnaire	क्वेश्चनेयर	प्रश्नावली
Quinquennial	क्विकिनेनियल	पंचवार्षिक
Quorum	कोरम	कार्यवाह संख्या

(R)

R. R. (Railway receipt)	रेलवे रिसीट	बिल्टी
Randum	रेन्डम	अव्यवस्था
Rank and file	रेन्क एन्ड फाइल	साधारण सैनिक वर्ग
Rationalization	रेशनैलाइजेशन	वैज्ञानिक पुनर्गठन
Reciprocal	रेसीप्रोकल	परस्पर
Rearmament	रीअर्मामेंट	पुनः शस्त्रीकरण
Re-assessment	री-एसेसमेंट	पुनः कर-निर्धारण
Recognition	रिकागनीशन	स्वीकृति
Recommendation	रिकमन्डेशन	संस्तुति
Reconcile	रिकन्साइल	मैत्रीकरण
Red-Tapism	रैड-टैपिज्म	लाल फीताशाही
Recruitment	रिक्रूटमेंट	भर्ती
Recurring	रिकरिंग	आवर्ती
Registration	रजिस्ट्रेशन	पंजीकरण
Regulation	रेगुलेशन	नियम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Requisition farm	रिक्यूजीशन फार्म	माँग प्रपत्र
Reconci lation	रिकन्सीलेशन	समाधान
Reinstatement	रीन्स्टेटमेंट	बहाली
Redemption	रिडेम्पशन	विमोचन
Reccuring grant	रिकरिंग ग्रान्ट	आवर्ती अनुदान
Rejoinder	रिजॉइन्डर	प्रत्युत्तर
Reminder	रिमाइंडर	स्मरण पत्र
Remuneration	रिम्यूनरेशन	पारिश्रमिक
Renewal	रिन्यूवल	नवीनीकरण
Regret	रिगरेट	खेद व्यक्त करना
Regulator	रेगुलेटर	नियामक
Relax	रिलेक्श	शिथिलीकरण
Research	रिसर्च	अनुसंधान
Relevant	रिलेवेंट	प्रासंगिक
Relinquish	रिलेंक्विश	त्याग देना
Remand	रिमान्ड	मुकद्दमों की वापसी
Reminder	रिमाइन्डर	अनुस्मारक
Remittancc	रिमटेंस	धन भेजना
Republic	रिपब्लिक	जनतन्त्र
Requisite	रिक्वजिट	आवश्यक वस्तु
Requisition	रिक्वीजीशन	अभियाचन
Reservation	रिजर्वेशन	आरक्षण
Resolution	रेजूलेशन	प्रस्ताव
Resources	रिसोरस्सेस	साधन
Respondent	रेस्पोंडेंट	प्रतिवादी
Resume	रिज्यूम	मान लेना, प्रतिग्रहण करना
Retardation	रिटारडेशन	वेग क्षय
Retrenchment	रिट्रेंचमेंट	छँटनी
Retrograde	रिट्रोग्रेड	उल्टा, वक्र
Revenue	रेवन्यू	राजस्व
Revert	रिबर्ट	पदावनति
Reverse	रिवर्स	विपरीत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Revision	रिवीजन	संशोधन
Revival	रिवाइवल	पुनर्जीवन
Regidity	रिजडिटी	दृढ़ता
Review	रिव्यू	समीक्षा
Regorous imprisonment	रिगरस इम्प्रजनमेंट	कठोर कारावास

(S)

Sabotage	सेबोटेज	तोड़-फोड़
Safe-guard	सेफ-गार्ड	सुरक्षा
Safe-custody	सेफ-कस्टडी	सुरक्षित संरक्षण
Sale-deed	सेल-डीड	विक्रय-पत्र
Sanction	सेन्कशन	स्वीकृत
Sanatorium	सेनेटोरियम	स्वास्थ्य संस्थान
Sanctuary	सेंचुअरी	पवित्र स्थान
Scheduled	सिड्यूल्ड	अनुसूचित
Scheduled caste	सिड्यूल्ड-कास्ट	अनुसूचित जाति
Sanitary	सेनिटरी	स्वच्छता सम्बन्धी
Scaffold	स्केफोल्ड	फांसी का तख्ता
Scarcity	स्केयरसिटी	कमी, दुर्भिक्ष
Scrutiny	स्क्रूटिनी	छँटाई
Screen	स्क्रीन	पर्दा
Script	स्क्रिप्ट	लिपि
Sculpture	स्कल्पचर	मूर्तिकर्म
Secret	सीकरेट	रहस्य, गुप्त, गोपनीय
Secretariat	सेक्रेटेरियट	सचिवालय
Security	सीक्योरिटी	सुरक्षा
Secular	सेक्यूलर	धर्म निरपेक्ष
Sedition	सेडीशन	राजद्रोह
Segment	सेगमेंट	कटा हुआ भाग
Seniority	सीनियरटी	वरिष्ठता
Sentence of lieu of fine	सेंटेंस ऑफ लियू ऑफ फाइन	अर्थदण्ड के बदले कारावास दण्ड

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द उच्चारण		हिन्दी-पारिभाषक शब्दावली
Sentence of death	सेंटेंस आफ डैथ	प्राणदण्ड
Sequence	सीक्वेंस	अनुक्रम
Session	सेसन	सत्र
Serpentine	सरपेंटाइन	सर्पीली, टेढ़ी-मेढ़ी
Service roll	सर्विस रोल	सेवावर्ति
Sine die	साइन डाइ	अनिश्चितकालीन
Smuggling	स्मगलिंग	तस्करी
Settlement	सैटिलमेंट	व्यवस्था
Shallow	स्वैलो	उथला-छिछला
Smultaneous	सिमुलटेनियस	एक साथ, एककालीन
Simplton	सिम्पलटन	मूर्ख
Solicitor general	सोलीसाइटर जनरल	महाधिवक्ता
Skirting	स्करटिंग	नीचे का किनारा
Slaughter house	स्लोटर हाउस	बूचड़खाना
Slogan	स्लोगन	नारे
Social Service	सोसल सर्विस	समाज सेवा
Starred question	स्टार्ड क्वेश्चयन	तारांङ्कित प्रश्न
Statutory rule	स्टेच्यूटरी रूल	संवैधानिक नियम
Sponsor	स्पोंसर	सरक्षक, धर्मपिता
Squad	स्क्वैड	दस्ता, टुकड़ी
Squared paper	स्क्वेयर्ड पेपर	वर्गाङ्कित-पत्र
Squeeze	स्क्वीज	निचोड़ना
Stipulation	स्टिपुलेशन	अनुबन्ध
Structure	स्ट्रक्चर	संरचना
Subject to confirmation	सब्जैक्ट टू कनफरमेशन	सम्पुष्टि होने पर
Sub-ordinate	सबआर्डीनेट	अधीनस्थ
Substantive	सबस्टेंटिव	मौलिक
Superintendent	सुपरिंटेंडेंट	अधीक्षक
Suplimentary budget	सप्लीमेंट्री बजट	अनुपूरक बजट
Surcharge	सरचार्ज	अधिभार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Surity	स्यौरिटी	निश्चय
Suspend	सस्पेंड	निलम्बन
Staff	स्टाफ	कर्मचारीगण
Staggering	स्टेगरिंग	विस्मयकारी
Stationary	स्टेशनरी	लेखन सामग्री
Status	स्टेटस	पदवी, हैसियत
Statutory	स्टेच्यूटरी	वैधानिक
Stencil	स्टेंसिल	निक्रन्त
Stenographer	स्टेनोग्राफर	आशुलिपिक
Sterile	स्टेराइल	जीवाणु रहित, पुंसत्वहीन
Statistics	स्टेटिस्टिक्स	सांख्यिकी
Stipulation	स्टीपुलेशन	प्रतिबन्ध
Stirrup	स्ट्रिप	रकाब
Straight	स्ट्रेट	सीधा
Strain	स्ट्रेन	आतान
Strange	स्ट्रेन्ज	अद्भुत
Subscription	सब्सक्रिप्शन	चंदा, योगदान
Subrogation	सब्रोगेशन	प्रतिस्थापन
Summon	समन	आह्वान पत्र
Surveillance	सरवेलेन्स	निगरानी
Suspense account	ससपेंस एकाउन्ट	उचन्त खाता
Symbol	सिम्बल	प्रतीक, चिह्न
(T)		
Table	टेबिल	तालिका, मेज
Tamber with the evidence	टेम्बर विद दी इविडेंस	साक्ष्य को बिगाड़ना
Tangent	टेंजेन्ट	स्पर्शरेखा
Tuberculosis (T. B.)	ट्यूबरक्युलोसिस	क्षयरोग
Technical	टेक्नीकल	प्रावैधिक
Temporary	टैम्परेरी	अस्थायी
Tender	टेण्डर	निविदा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी-पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Tender notice	टेण्डर नोटिस	निविदा सूचना
Terminal leave	टर्मिनल लीव	स्थानान्तरण अवकाश
Terminology	टर्मिनोलोजी	पारिभाषिक शब्दावली
Tenancy	टैनेन्सी	कब्जा, आराजी
Tenant	टैनेन्ट	किरायेदार, आसामी
Terminate	टर्मिनेट	समाप्त करना
Tenure	टैन्योर	कार्यकाल
Terms	टर्मस	शर्तें
Time limit	टाइम् लिमिट्	समय सीमा
Topic	टॉपिक	विषय
Tour	टूर	दौरा
Testamentary	टैस्टामेंटरी	इच्छापत्र सम्बन्धी
Testimony	टैस्टीमनी	साक्ष्य
Thorax	थोरेक्स	वक्षस्थल
Tourism	टूरिज्म	पर्यटन
Traffic	ट्रैफिक	यातायात
Transfer	ट्रान्सफर	स्थानान्तरण
Transhipment process	ट्रान्सपमेंट प्रोसेस	यातान्तरण प्रक्रिया
Transmission	ट्रांसमिसन	पहुँचाने का कार्य
Treasury officer	ट्रेजरी आफीसर	कोषाधिकारी
Tribunal	ट्रिब्यूनल	न्यायाधिकरण
Trust	ट्रस्ट	न्यास
Traction	ट्रेक्शन	खिचाव
Tracing	ट्रेसिंग	अनुरेखन करना
Tranee	ट्रेनी	प्रशिक्षणार्थी
Tranquillity	ट्रेंक्वलिटी	शान्ति
Transcription	ट्रान्सक्रिप्शन	प्रतिलेखन
Transit	ट्रान्जिट	संक्रमण
Treason	ट्रीजन	राजद्रोह
Trench	ट्रेन्च	खाई
Traverse	ट्रावर्स	रोक, प्रतिबन्ध
Treasurer	ट्रेजरर	कोषाध्यक्ष

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली
(U)		
Ulterior	अल्टीरियर	अव्यक्त, दूरतर
Ultimate	अल्टीमेट	अन्तिम
Ultravoilet Treatment	अल्ट्रावाइलट ट्रीटमेंट	पारजम्बुरश्मि चिकित्सा
Unanimous	यूनेनीमस	सर्वसम्मत
Unclassified	अनक्लासीफाइड	अवर्गीकृत
Unconfirmed	अनकनफर्मड	अपुष्ट
Uncontested	अनकन्टेस्टेड	निर्विरोध
Undertaking	अण्डरटेकिंग	अर्द्ध सरकारी, उपक्रम
Under go	अन्डर गो	भुगतना
Under mentioned	अंडरमेंशन्ड	निम्नलिखित
Under secretary	अंडर सेक्रेट्री	अवर सचिव
Undue	अनड्यू	अनुचित
Up-to-day	अप-टू-डेट	अद्यतन
Union public service commission	यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन	संघ लोक सेवा आयोग
Urban area	अरबन एरिया	नगरीय क्षेत्र
Unification	यूनिफिकेशन	एकरूपता
Unique	यूनिक	अपूर्व
(V)		
Vacency	वेकेन्सी	रिक्त स्थान
Vacation	वैकेशन	दीर्घावकाश
Vehicle	व्हकिल	सवारी
Vague	वेग	अस्पष्ट
Vaccination	वैक्सीनेशन	टीका
Vaccum	वैक्यूम	रिक्त
Valid	वैलिड	वैध
Validity	वैलिडिटी	वैधता
Vapour	वेपर	वाष्प
Variation	वैरियेशन	विभेद

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली
Vice-chancellor	वाइस चांसलर	कुलपति
Voilation of rules	वायलेसन ऑफ रूल्स	नियमोल्लंघन
Vocation	वोकेशन	व्यवसाय
Void	वॉइड	शून्य
Verdict	वरडिक्ट	निर्णय
	(W)	
Warning	वार्निंग	चेतावनी
Waterways	वाटरवेज	जलपथ
Wage	वेज	मजदूरी
Warrant	व्रारन्ट	अधिपत्र
Ways and means	वेज एण्ड मीन्स	उपाय तथा साधन
Working committee	वर्किंग कमेटी	कार्य समिति
Write off	राइट ऑफ	बट्टे खाना डालना
Wireless	वायरलैस	बेतार का तार
Wittness	विटनेश	गवाह साक्षी
Writ	रिट	आदेश पत्र
	(X)	
X-Ray	एक्स-रे	क्ष-किरण
	(Y)	
Yearly	ईयरली	वार्षिक
Yield	यील्ड	उपज
	(Z)	
Zone	जोन	क्षेत्र, अंचल
Zonal	जोनल	क्षेत्रीय
Zeal	जील	उत्साह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

व्यावहारिक शब्दावली

अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली
Abrupt fall in prices	एब्रप्ट फाल इन प्राइसेज	मूल्यों का एकदम गिरना
Accommodation Bill	एकोमोडेशन विल	संस्तुतिपूर्ण विल
Acquitance roll	एक्यूटेंस रोल	वेतन चिट्ठा
Acquisition of land	एक्यूजीशन ऑफ लेंड	भूमिकाअधिग्रहण
Acute shortage	एक्यूट शौरटेज	अत्यन्त कमी
Accountant general	एकाउन्टेंट जनरल	महालेखाकार
Adoptation	एडोप्टेशन	रूपान्तर
Agenda	एजेन्डा	विचारणीय विषय
Appropriation	एप्रोप्रियेशन	विनियोजन
Arrival and departure	एरावाल एण्ड डिपार्चर	आगमन तथा प्रस्थान
Assesed value	एसेस्ड वैल्यू	निर्धारित मूल्य
At all	एट ऑल	बिल्कुल
At par	एट पार	सममूल्य पर
Audo visual	ओडो विजुअल	दृश्य-श्रव्य
Attendence register	अटेंडेंस रजिस्टर	उपस्थित पंजिका
Audit objection	ऑडिट ऑब्जेक्सन	लेखा निरीक्षण आपत्तियाँ
Balance sheet	बैलेंस सीट	लेखा वितरण
Bank guarantee	बैंक गारन्टी	बैंक की जमानत का आश्वासन
Bankrupt	वेक्रप्ट	दिवालिया
Bar	बार	रोक
Barter	बार्टर	वस्तु विनिमय
Bargaining	बारगेनिंग	सौदा वार्त्ता
Bibiliography	बिब्लिओग्राफी	संदर्भ, ग्रंथ सूची
Blue print	ब्लू प्रिंट	नीली छाप
Bogus voucher	बोगस वाउचर	जाली प्रमाण-पत्र
Bonafide	बोनाफाइड	वास्तविक
Book of refrence	बुक ऑफ रिफरेंस	सन्दर्भ ग्रन्थ
Bountry	बाउन्ट्री	अधिक सहायता
Breach of contact	ब्रीच ऑफ कॉन्टेक्ट	समझौता भंग होना
Breach of discipline	ब्रीच ऑफ डिसीप्लेन	अनुशासन भंग करना
Broad out look	ब्रोड आउट लुक	विशाल दृष्टिकोण
Business premises	बिजनेस प्रिमजेस	कारबार का स्थान
Bonus	बोनस	लाभांश

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली
Breach of trust	ब्रीच ऑफ ट्रस्ट	विश्वासघात
Broad Cast	ब्रोड कास्ट	प्रसारण
Budget deficit	बजट डेसिफिट	घाटे का बजट
By returning of Post	बाई रिटर्निंग ऑफ पोस्ट	लौटती डाक से
Cancellation	कैन्सिलेशन	निरस्तीकरण
Cash in hand	कैश इन हेंड	हाथ रोकड़
Cash memo	कैशमीमो	नकद पर्चा
Chamber of commerce	चैम्बर ऑफ कॉमर्स	व्यापार मण्डल
Certificate of posting	सर्टीफिकेट ऑफ पोस्टिग	पत्र डालने का प्रमाण पत्र
Contingent charge	कन्टिग चार्ज	आकस्मिक व्यय
Child welfare fund	चाइल्ड वैल्फेयर फन्ड	बाल कल्याण कोष
Circular letter	सरक्यूलर लैटर	परिपत्र
Communication	कम्यूनीकेशन	संचार
Contact	कान्टैक्ट	संविदा
Contravetion	कन्ट्रावेंशन	उल्लंघन
Coordination	कॉर्डीनेशन	तालमेल
Custodian	कस्टोडियन	अभिरक्षक
Custom	कस्टम	सीमा शुल्क
Depreciated value	डिप्रेसिएटेड वैल्यू	ह्रासत मूल्य
Earliest opportunity	अरलीयस्ट अपोरच्यूनिटी	शीघ्रतम अवसर
Eligibility certificate	इलेजीबिलिटी सर्टीफिकेट	पात्रता प्रमाणपत्र
Embargo	एम्बारगो	पोत अधिरोह
Embassy	एम्बैसी	दूतावास
Embracing situation	एम्ब्रेसिंग सिचुएशन	आकुलता भरी स्थिति
Endorsement	एन्डोर्समेंट	पृष्ठांकन
Entertainment tax	एन्टरटेनमेंट टैक्स	मनोरंजन कर
Execution of contract	एक्जीक्यूसन ऑफ कानट्रैक्ट	ठेका निष्पादन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द	उच्चारण	हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली
Floor prioe	फ्लोर प्राइस	निम्नतम् मूल्य
Free compitition	फ्री कम्पटीशन	अबाध प्रतियोगिता
Farwarded and recommended	फारवर्डेड एन्ड रिकमेंडेड	संस्तुति सहित अग्रसारित
Graduate	ग्रेजुएट	स्नातक
Insurance premium	इन्श्योरेंस प्रीमियम	बीमे की किस्त
Land revenue	लेंड रेवेन्यू	मालगुजारी
Length of service	लेंग्थ ऑफ सर्विस	सेवा काल की अवधि
Liquidation of debt	लिक्विडेशन ऑफ डेट	ऋण का समापन
Literacy	लिट्रेसी	साक्षरता
Managing director	मैनेजिंग डाइरेक्टर	प्रबंध निदेशक
Misapropriation of money	मिस एप्रोप्रियेशन ऑफ मनी	धन का दुरुपयोग
Modification	मोडीफिकेशन	संशोधन
Pledge	प्लैज	वन्धक
Scandal	स्कैन्डल	परिवाद
Semi-final	सैमी-फाइनल	पूर्णता से पहिले
Slump	स्लम्प	मन्दी
Solvent	सोल्वेंट	गैर दिवालिया
Souvenir	सोविनियर	स्मारिका
Supervisor	सुपरवाइजर	पर्यवेक्षक
Transmission	ट्रान्समिशन	प्रसारण
Trevelling allowance	ट्रेविलिंग एलाउन्स	यात्रा भत्ता
Unexpected	अनएक्सपेक्टेड	अप्रत्याशित
University grant commission	यूनिवर्सिटी, ग्रान्ट कमीशन	विश्व-विद्यालय अनुदान आयोग
Valid	वैलिड	वैध
Verified	वैरीफाइड	सत्यापित
Vigilence	विजिलेंस	सतर्कता
Voluntary	वालंटियेरी	स्वैच्छिक
Walk out	वाक आउट	सभा त्याग
Warning	वार्निंग	चेतावनी
Wear and tear	वीयर एंड टीयर	टूट फूट
Zero hour	जीरो आवर	निर्धारित क्षण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

(१) निम्नलिखित अंग्रेजी शब्दों में से पाँच के हिन्दी रूपान्तर लिखिए—

Acquitance roll, Charge-Sheet, Contingency fund, Attested Duty free, Ex-officio, Gazetted officer, Bill of encharge, Incompetant hand, Pay value.

(कानपुर वि० वि०, १९६९)

(२) निम्नलिखित शब्दों में से पाँच के हिन्दी रूपान्तर लिखिए—

(i) Time-limit. (ii) Public works department. (iii) Medical enamination. (iv) Casual Leave. (v) Fair price. (vi) Headquarters. (vii) Declaration form. (viii) Adult franchise. (ix) Immovable property (x) True copy.

(कानपुर वि० वि०, १९७०)

(३) निम्नलिखित अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी रूपान्तर लिखिये—

Designation, Academic, Gazetted, Acknowledgement, Bill, Census, Demotion, Draft, Faculty, Homeminister.

(कानपुर वि० वि०, १९७१)

(४) निम्नलिखित अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी रूपान्तर लिखिये—

Academic, Qualification, Adhoc, Committee, Deficit budget, Age limit, Labour, Lock out, Pasport, Percapita, Herb, Grabitation, Libra, Magretic, Barter, Bonus, Banksupt, Diecount.

(कानपुर वि० वि०, १९७२)

(५) किन्हीं पाँच शब्दों के हिन्दी रूपान्तर लिखिए—

Account, Judiciary, Acquire, Adhoc, Deficit budget cease fine, Contingency fund, Pending, Demi-official letter, Interview.Indian High commissioner, Recurring, Superintendent, Surety, union public service commission.

(कानपुर वि० वि०, १९७३)

(६) निम्नांकित अंग्रेजी शब्दों में से किन्हीं पाँच के हिन्दी रूपान्तर लिखिए—

To give priorty, Decade, Decentralisation, Ex-official Gazetted, Honosary, Jurisdiction, Oath of Secracy Report, True copy.

(कानपुर वि० वि०, १९७४)

(७) (क) निम्नांकित अंग्रेजी शब्दों में से केवल चार शब्दों के हिन्दी रूपान्तर लिखिये—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(i) Disobedience, (ii) Academic, (iii) Celebration, (iv) Epidemic, (v) Hereditary, (vi) Predecessor, (vii) Ibid, (viii) Posthumous.

(ख) निम्नलिखित अंग्रेजी पदों में से केवल चार के हिन्दी रूपान्तर लिखिए—

(1) Administrative approval, (2) Breach of confidence, (3) Circuit House, (4) Discretionary power, (5) Enrolement number, (6) Factory Inspector, (7) Halting allowance, (8) Length of service,

(कानपुर वि० वि०, १९७५)

(८) (अ) निम्नांकित अंग्रेजी शब्दों में से केवल पाँच शब्दों के हिन्दी शब्द लिखिए—

(1) Autonomous, (2) Arbitrator, (3) Bibliography, (4) Cheque, (5) Condidate, (6) Emoluments, (7) Heir, (8) Invoice, (9) Notification, (10) Memorandum,

(ब) निम्नांकित अंग्रेजी पदों के किन्हीं पाँच शब्दों के हिन्दी रूपान्तर लिखिए—

(1) Acting incumbent, (2) By-law, (3) Closing balance, (4) Copy right, (5) Gazette notification, (6) Habitual offender, (7) Honorary post, (8) Socialistic pattern, (9) Passport. (10) Tabulated statement.

(कानपुर वि० वि०, १९७६)

(स) निम्नलिखित शब्द युग्मों में से पाँच युग्मों का हिन्दी रूपान्तर लिखिए—

(1) Affiliation—Association.
(2) Admitted—Adopted.
(3) Adjustment—Coordination.
(4) Custodian—Trustee.
(5) Council—Counsel.
(6) Executive—Execution.
(7) Extract—gift.
(8) Implementation—Enforcement.
(9) Legal—Valid.
(10) Statement—Statesman.

(कानपुर वि० वि०, १९७६

(९) निम्नलिखित अंग्रेजी शब्दों में से किन्हीं पाँच के हिन्दी रूपान्तर लिखिए—

(क) Red tapism, Dissent, Faculty, Regulation, Polling, Transmission, Vigilence, Native.

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(ख) निम्नलिखित पदों में से किन्हीं चार शब्दों के हिन्दी रूपान्तर लिखिए—

Supplementary, Budget current 'price, Dailfy wages, Adult franchise, Public works department, Breach of confidence, High Commissionor, Recurring Deposit.

(कानपुर वि० वि०, १९७७)

(१०) निम्नांकित अंग्रेजी शब्दों में से किन्हीं छः के हिन्दी रूपान्तर लिखिए—

(क) Spelling, Reot, Vibration, Homage, Immodiate, Speciman, Celebration, Juridiction, Recurring, Zone, Yard.

(ख) निम्नलिखित शब्दों में से चार के हिन्दी रूपान्तर लिखिए—

Dayscholar, Deputy director of education, Counter foil, Flood relief work, Public works department, Caution money, Development scheme.

(कानपुर वि० वि०, १९७८)

(११) निम्नलिखित अंग्रेजी शब्दों में से छः के हिन्दी रूपान्तर लिखिए—

(क) Autograph, Audit, Entry, Employees, Parity ordinance, Notification, Nation, Migrate, Literary, Incidental.

(ख) किन्हीं चार पदों के हिन्दी अनुवाद लिखिए—

Book ward class, Breech of confidence, Anticorruption officer, Co operative movement, Minister of Agriculture and village development, Monthlydues, Executive Council.

(कानपुर वि० वि०, १९७९)

(१२) निम्नांकित में से किन्हीं छः शब्दों के हिन्दी रूपान्तर दीजिए—

(i) Dictation.
(ii) Finance.
(iii) Gazette.
(iv) Custody.
(v) Oath.
(vi) Liability.
(vii) Joint.
(viii) Relevant.
(ix) Original.
(x) Oral.
(xi) Union.

(१३) निम्नांकित में से किन्हीं चार पदों के हिन्दी रूपान्तर दीजिए—

(i) Call to account.
(ii) Beyond reach.
(iii) Benefit of doubt.
(iv) Commondatory letter.
(v) Critical situation.
(vi) Express delivery.
(vii) I beg to report.

———

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नाटक तथा साहित्य की अन्य विधायें

नाटकीय कला मानव जीवन में आने वाले उन क्षणों के समान है, जिनके अवसान में सारी प्रकृति रंग उठती है। सारा का सारा वातावरण एक अद्भुत रंग में रंगा दिखाई पड़ता है। सभी प्राणी एक अवर्णनीय उल्लास में बंधे कार्य करते हैं। पेड़, पत्ते, पशु, पक्षी, कीट, पतंग सभी ईश्वरीय प्रेरणा से प्रेरित किसी चमत्कृत भाव-भूमि पर आनन्दमयी क्रीड़ा का अभिनय करते दिखलाई पड़ते हैं। जिस स्थिति का वर्णन करने में सूर और कबीर भी शब्दहीन हो जाते हैं। वह स्थिति जिस समय अन्त:मंच पर प्रकट होती है तो शरीर का तार-तार उत्साह से भर जाता है। रोम-रोम प्रफुल्लित हो उठता है। हर काम में अत्यधिक आनन्द प्रतीत होता है। हर श्वास चन्दन की सुगन्ध बिखेरती प्रतीत होती है। जीवन धन्य हो जाता है। अपने मुखमंडल में तेजोदीप्त, ओजमयी किरणें प्रकट होने लगती हैं। अभाव और दुःख, चिन्ता और व्याधियाँ, आकाश-कुसुम की भाँति विलुप्त हो जाती हैं। यह स्थिति जिस मनुष्य के जीवन में आ जाती है, वही इसका अनुभव कर सकता है।

नाट्य-प्रस्तुति भी इसी प्रकार के सुख की प्रदाता है। उसका दर्शक अपनी साधारण बाह्य वृत्तियों को एक विशिष्ट रंग में रंजित होता पाने लगता है। तब वह आनन्द सागर में निमज्जित हो जाता है। साहित्य की भाँति ही नाटक को भी समाज का दर्पण कहा जा सकता है। इसका चौखटा विशिष्ट नाट्य कला द्वारा मढ़ा हुआ है। यह चौखटा नाटककार के अन्त:पक्ष के दैवी आनन्द के पराग-अणुओं से निर्मित होता है। इसीलिए नाट्य-दर्पण पर पड़ने वाला प्राकृतिक बिम्ब और अधिक रंजित हो उठता है। वह अपनापन भूल जाता है अपनपौआपन ही विसर्यों की स्थिति में निमज्जित हो जाता है। जीवन के विशेष क्षणों की स्थिति भले ही अवर्णनीय हो, पर नाटक में वह अदृश्य नहीं है। इसी सन्दर्भ में नाटक को ब्रह्मानन्द सहोदर, पंचमवेदादि कहा जाता है। नाट्य-शैली की जहाँ यह विशेषता नहीं है, वहीं इसकी कुछ कठिनाइयां भी हैं। नाट्य-शैली में लेखक पूर्णतया पात्रों के अधीन होता है। उसके पात्र जिधर जाते है भाग्यविधाता की भाँति वह उधर ही लगा रहता है। इसके अतिरिक्त उसे रगमंच और दर्शकों को भी देखता रहता है। वह इनको झटककर नहीं बढ़ सकता है। काव्य एवं कथा-शैली से तुलना करने पर नाट्य शैली का स्वरूप पूर्णतया स्पष्ट हो जाता है। काव्य एवं कथा शैलियों में लेखक अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व स्वतन्त्र रूप से व्यक्त कर सकता है, पर नाटककार अपने में ही पूर्ण नहीं है। वह दर्शकों के मस्तिष्क को सोचना और अभिनेयता के मुँह से बोलता उसके संवाद दर्शक और अभिनेयता के लिए नहीं चलते हैं किन्तु रंगमंच की सीमाएँ, जो कि भौतिक है, रंग, प्रकाश, प्रभात

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा सज्जाकार और सभी उपादान, जो नाटक को मंच पर सफल बनाने में आवश्यक रहते हैं, को भी समाहित करना पड़ता है। बर्नार्ड शॉ मानते हैं, कि नाटकीय नियम उन पर भौतिक मंच की सीमाओं और आकस्मिक घटनाओं तथा व्यवस्थापकों द्वारा लादे गये हैं।

नाटककार पर दूसरा बंधन अभिनेयता का भी है। वह अपनी कृति में किसी ऐसे तत्व की सृष्टि नहीं कर सकता जो अभिनेयन हो। उसे रंगमंच की सुविधाओं का ध्यान रखकर ही सर्वदा रचना करनी होती है। इसी सन्दर्भ में नाटककार का दायित्व कवि और कथाकार के दायित्व की अपेक्षा अधिक कठिन और जिम्मेदारी का है। वह चित्रकला के रंग और रेखाओं की तरह कथा-शिल्प के शब्दों की तरह, काव्य के भावों की तरह नाटक में कथा का प्रकाश एक स्थान पर बैठे हुए दर्शकों के समक्ष एक निश्चित समय में करता है। दर्शक का मूल्य यहाँ सर्वोपरि है, उसके अभाव में नाटक की सफलता के बारे में सोचा ही जा सकता है। नाटक में भी कथा रहती है, पर उपन्यास की कथा से इसमें अन्तर रहता है। उपन्यास की कथा स्वयं लेखक द्वारा बतलाई जाती है। जिसमें समय तथा स्थानादि की सीमाओं का प्रतिबंध नहीं रहता है। उपन्यास का पाठक एक ही बैठक में समस्त वस्तु आस्वादित करने के लिए प्रतिबद्ध नहीं है, जिस आस्वाद बिन्दु पर वह अपना अभियान छोड़ता है। दूसरे दिन भी वहीं से प्रारम्भ कर सकता है। पर नाटककार के दर्शक के साथ वह सुविधा नहीं है। उसे एक ही बैठक में सम्पूर्ण नाटक का आस्वाद लेना ही पड़ता है। यदि वह आस्वाद में अरुचि का अनुभव करता है और एक बार भाग निकलता है तो उसे लौटाया भी नहीं जा सकता है। नाटक की कथा दर्शक के समक्ष उद्घाटित होती है, जिसके लिए पूर्व तैयारी की आवश्यकता होती है।

कवि या कथाकार इसीलिए अपने व्यापार को सर्व-सुलभ समझते हैं कि उनके व्यापार के आस्वाद के लिए किसी विशेष तैयारी की आवश्यकता नहीं होती है। उन्हें उन तमाम प्रयासों को जुटाने का ध्रुव प्रयास नहीं करना पड़ता है, जिनके अभाव में एक नाट्य लेखक अपनी बात उपस्थित ही नहीं कर पाता है। समय की सीमाओं से मुक्त कवि चार पंक्तियों से लेकर सात खण्डों तक का महाकाव्य रच सकता है। नाटककार के दर्शक हाड़-मांस के बने होते हैं जो एक बैठक में बिना ताजगी प्राप्त किये, अधिक समय तक नहीं बैठ सकते हैं। उसके पात्रों का अभिनय करने वाले भी हाड़-मांस के पुतले हैं वे थकते हैं, भूख प्यास से पीड़ित होते हैं और आराम करने की अपेक्षा रखते हैं। इस मानवीय आकृतियों पर आधारित नाटककार कभी भी खुल कर खेलने में असमर्थ रहता है। नाटक का प्रदर्शन एक बार प्रारम्भ होने पर रोका नहीं जा सकता है। इसलिए उसका एक-एक शब्द, एक-एक प्रभाव कमान से निकले हुए तीर के समान होता है जो पुनः वापस नहीं लौटता है। पाठक पुनः लौटकर कविता या कहानी का आस्वाद लेता है। बल्कि पुनः-पुनः समझकर पढ़ने में ही उसका मर्म स्पष्ट होता है, पर नाटक में न तो अभिनेयता किए हुए अभिनय द्वारा छोड़े

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हुए प्रभाव को पुनः अनुभव करा सकता है और न दर्शक ही उसे दुबारा ग्रहण कर सकता है। वह कथाकार की तरह स्थिति का वर्णन कर दर्शक के भागते मन को बाँध भी नहीं सकता है। मोहक चित्रण के सम्मोहन से कथाकार या कवि अपने पाठक को भुलावा दे सकता है। पर नाटक का दर्शक बहुत सजग एवं आलोचक होकर बैठता है। उसे मोहक दर्शन के जाल में भुलाया नहीं जा सकता हैं। नाटककार का संकेत भर करता है जिसे प्रस्तुत करने का दायित्व प्रस्तुतकर्त्ता का रहता है।

नाटक एक सम्मिलित कला है, जिसमें लेखक से लेकर कार्यकर्त्ता और दर्शकों तक का सहयोग अपेक्षित रहता है। इन समस्त जिम्मेदार व्यक्तियों के सम्मिलित प्रयास से ही नाटक अपना सम्पूर्ण प्रभाव उत्पन्न कर पाने में समर्थ होता है। इस कारण नाटककार का दायित्व एवं संदिग्ध अवश्य है, पर प्रभाव की दृष्टि से वह मानव समाज की सबसे अधिक सेवा कर सकता है और इसीलिए वह अधिक सम्मानित होता है। नाटककार की इस सफलता के आगे ही कथाकार एवं उपन्यासकार घुटने टेक जाते हैं। उत्थान, पतन और अन्य सामाजिक परिवर्तनों में नाटक का आशातीत योगदान रहता है। कम समय में ही नाटक जिस प्रभाव की छाप समाज पर छोड़ता है और जितनी वह स्थाई होती है उतनी स्थाई प्रभाव की छाप अन्य साहित्यिक विधाएँ नहीं छोड़ सकती हैं। आज का सारा का सारा वातावरण ही नाटक के प्रभाव से डूबता-उतराता प्रतीत होता है। यदि चलचित्र अपने में उदात्त तत्व को भी अपना लेता तो समाज का भावी निर्माण अभी तक हो गया होता।

नाट्य-शैली की विशेषताएँ

कथा काव्यादि के सन्दर्भ में नाट्य शैली पर विचार करने के बाद भी उसकी कुछ अन्य विशेषताएँ भी विचारणीय हैं।

युगों से काव्य जनरुचि का कण्ठहार बना रहा है। काव्य के चरित्र, जो समाज में आदर्श और मर्यादाएँ स्थापित करने वाले होते हैं, यदि स्वरूप धारण कर जनता के समक्ष उपस्थित हो ही जायं जो जनता पर इसका बहुत प्रभाव पड़ता है। नाटक में काव्य के सभी गुण तो रहते ही हैं, यह अवलोकन का गुण विशिष्ट रहता है। नाटक, त्रैलोक्य के भावों का अनुकरण होता है। समस्त ज्ञान, शिल्प, विद्या, कला, योग और कर्मादि नाटक मे विद्यमान रहते हैं। नाटक में दृश्यात्व लोक अथवा युग छाया रहती है। यह छाया वास्तविकता से भिन्न रहती है। वास्तविक संसार की गति देखकर अप्रसन्नता होती है। नाट्य कृति के मंथन होने पर जीवन की कुरूपताएँ भी आनन्द की सृष्टि करने वाली बन जाती हैं। यह आनन्दानुभूति नाटक में काव्य होने के कारण ही सम्भव होती है। यह अवस्थानुकृति या दृश्यत्व ही नाटक है। इसके अभाव में नाटक की कल्पना ही असम्भव है। दशरूपक में धनंजय 'अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्' इसी बात की पुष्टि कर रहे हैं। एक अन्य स्थान पर वह इसी स्थापना पर बल देते हुए कहते हैं। 'रूपेदृश्येतमोचते' मंच पर अभिनीत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होने के कारण ही नाटक को दृश्य कहा जाता है। मन्च पर प्रस्तुत होने की क्षमता वाला होने से वह चक्षु ग्राहत्य है और इसी सन्दर्भ में नाटक-रूपक से भिन्न है।

नाट्य शैली की यह मुख्य विशेषताएँ हैं और इनके कारण ही नाटक साहित्य की सभी विधाओं में मुख्य शैली है। प्रभाव की दृष्टि से भी नाटकीय शैली का प्रकाशन किया जा चुका है, पर आज के युग में साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा नाटक कम लिखे जाते हैं। नाटककारों की भरमार दिखलाई नहीं पड़ती है, कवि, कथाकार, उपन्यास के लेखक जितने हैं उनके दशमांश भी नाटककार नहीं हैं। यह तो रहा इसका कृत्रिम पक्ष पर चलचित्र के प्रभाव के कारण नाटक के दर्शकों की संख्या कम नहीं है। यदि किसी अच्छे नाटक का मन्थन होता है तो दर्शकों की अपार भीड़ मन्च पर देखी जाती है और साहित्य की सभी विधाओं को यहाँ नीचा देखना पड़ता है। हिन्दी के पास रंग-मंच का अभाव है। इस कारण भी नाटकों की संरचना का अभाव है। यदि प्रत्येक शहर में एक रंग-मंच तैयार कर दिया जाय और नाटकों का मंथन नियमित रूप से होता रहे तो नाटक लेखकों की संख्या में बढ़ोत्तरी हो सकती है।

नाट्य लेखन का अभिनय से सम्बन्ध है। हिन्दी के पास ऐसे नाटक जो अभिनय हों, रंग-मंच पर उचित रूप से खेले जा सकें, दर्शक को झकझोर सकें, उनके मनोरंजन की पूर्ति करने के साथ ही उनकी प्रवृत्ति को उच्च दिशा दे सकें। खास तौर से मध्यवर्गीय स्तर को उठाने वाले नाटक जो चौराहों और फुटपाथों का जीवन व्यक्त करते हैं, कम ही है। महज लिखने के लिये नाटक लिखना अच्छा नहीं। समसामयिक जीवन की अभिव्यक्ति नाटक में होनी चाहिये। गिरते युग के दीवारों की जड़ नाटक के द्वारा मजबूत होनी चाहिए।

यह अभी जैसा स्पष्ट किया जा चुका है, रंगमंच की कठिनाइयों के कारण ही हो रहा है। आज पैसे की कमी के कारण हम रंगमंच पर अच्छे-अच्छे दृश्य प्रस्तुत नहीं कर सकते हैं। सड़कों के किनारे के घने वृक्ष, उनकी छाया, पत्तियाँ, और ऐसे दृश्य, जिनका रंगमंच पर दर्शन कठिन है, अभिनेयता अपने भावों और अंग संचालन से अभिव्यक्त करे। रंगमंच की विधा का सुलभीकरण हो जाने पर नाटक की संभावनाएँ बढ़ती हैं तथा समसामयिक जीवन भी उसमें व्यक्त होकर पुष्ट हो सकता है।

साहित्य की अन्य विधाओं में जन-जीवन की मध्यवर्गीय झांकियां अधिक सुन्दरता से प्रकट होती हैं। नाटक का क्षेत्र भी इस प्रकार रंगमंच की सीमाएँ विस्तृत होने पर इसके लिए अपनी सेवाएँ प्रस्तुत कर सकता है। नाटक और साहित्य का पिता पुत्र सा सम्बन्ध है। नाटक ही साहित्य की वह कला है जिसमें साहित्य अपने सभी गुणों का एक साथ प्रकाशन कर सकता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नाटक की उत्पत्ति

आज तक अनेकों मत इस जिज्ञासा की परिश्रान्ति के लिये दिये जा चुके हैं। दिये गये मतों में से कोई मत मनुष्य की स्वाभाविक भावनाओं से उत्पन्न क्रियाओं पर आधारित नहीं है। यह कहना कि, देवों के अनुरोध पर रंजनार्थ ब्रह्मा ने पंचम वेद नाट्य की उत्पत्ति की और ब्रह्मा ने भरत मुनि से इसे प्रचारित करने का आदेश दिया, अधिक मनोवैज्ञानिक नहीं है। मनोरंजनार्थ मानव अनुकरण मूलक कुछ ऐसी-ऐसी आवृत्ति चाहता था जिससे पूर्व क्रियाओं का संग्रह उसकी अपनी सीमाओं के अन्तर्गत आबद्ध हो जाय तथा जो नाटक की प्रारम्भिक उत्पत्ति स्थिति को स्पष्ट करने में समर्थ हो।

छोटे बालकों में दूसरों की क्रियाओं को तद्वत प्रदर्शित करने की प्रकृति-प्रदत्त आदत होती है। बालकों के अभिभावक इन्हीं चेष्टाओं को देखकर प्रसन्न होते हैं। हम आप भी दूसरों की बातों को उसी प्रकार रखना चाहते हैं। हमारे एक साथी पं० सुमित्रानन्दन पन्त की बातों को उनकी भाषण पद्धति, भाव-भंगिमाओं को तदनुरूप रखकर हम लोगों का यथेष्ट मनोरंजन करते हैं। पन्त जी की बात करते समय अथवा अपनी स्थापना जमाते समय वह अपने अपने हाथों को विशेष परिवेश में घुमाते हैं तथा खड़े रह कर भी पैरों में एक विशेष गति बनाये रखते हैं तथा स्वरोधारण नाक की सहायता से करते हैं। पन्त जी की यह सभी मुद्राएँ मेरे उन मित्र द्वारा उपस्थित की जाने पर अधिक विनोदशील हो जाती हैं।

अन्धकार में बालक आपको हो शब्द उच्चरित कर डरवाने का प्रयास करता है। यह बात इसका उदाहरण है कि अनुकरण प्रारम्भिक वृत्ति है। यहाँ मनोरंजन की भावना प्रधान है। पूर्व पुरुषों के चरित्रों से समाज को एक दिशा प्राप्त होती है। अब उन्हें हम जीवित रखना चाहते हैं। उनके चरित्रगत आचरणों को जीवित रखने का माध्यम नाटक ही है। नाटक में भूत सदैव जीवित रहता है। नाटकों की उत्पत्ति आनन्द के लिये हुई है। इनके मूल में अनुकरण मूलक प्रवृत्ति है। अपनी इसी प्रवृत्ति को अभिव्यक्ति प्रदान करता हुआ नाटक सदैव अमर रहेगा।

हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास

१९वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हिन्दी गद्य का विकास एक उल्लेखनीय घटना है। इस काल का साहित्यकार कला की उपासना के लिये साहित्य सृजन नहीं कर रहा था, साहित्य के माध्यम से समाज में चेतना उत्पन्न करना उसे अभिप्रेत था। इसी कारण भारतेन्दु युगीन लेखकों ने हिन्दी गद्य की सर्वाधिक प्रभावशाली विद्या नाटक की सर्वप्रथम संरचना की। नाटक एक साथ अभिनीत होने पर हजारों लोगों को प्रभावित कर सकता है। रामलीला, कृष्णलीला तथा पारसी कम्पनियों का अमिट प्रभाव भारतेन्दु व उनके साथी पत्रकार देख रहे थे। इसलिए नाटक लिखे ही नहीं, अपितु मंच पर अभिनीत किये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सन् १७०० ई० में रीवां नरेश शिव सिंह जू ने 'आनन्द रघुनन्दन' नाटक लिखा। गद्य-पद्यमय ब्रज भाषा का यह नाटक हिन्दी का प्रथम मूल नाटक माना जाता है। सन् १८५९ ई० में भारतेन्दु के पिता गोपाल चन्द ने 'नहुष' नाटक लिखा। हरिश्चन्द्र इसे हिन्दी का प्रथम नाटक मानते हैं। सन् १८६१ ई० में राजा लक्ष्मण सिंह ने 'शाकुन्तलम्' का हिन्दी अनुवाद किया, जो अत्यधिक लोकप्रिय रहा। बँगला के प्रभाव को लेते हुए पुनः अनुवाद करने तथा मूल नाटक लिखने की परम्परा ही चल पड़ी। इसका सम्पूर्ण श्रेय युगनेता भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र को है, जिन्होंने छोटी-सी अवस्था में ही बंगाल की यात्रा से इतना लाभ कमाया कि हिन्दी साहित्य में एक साहित्यिक क्रांति ला दी।

भारतेन्दु युग—हिन्दी नाटक साहित्य का प्रथम चरण इसी युग में पाया जाता है। नाटक की दृष्टि से खरी उतरने वाली रचना के जन्मदाता हरिश्चन्द्र ही हैं। भारतेन्दु जी ने मौलिक तथा अनूदित दोनों प्रकार के नाटक लिखे हैं। 'विद्या-सुन्दर' उनका सर्वप्रथम बंगला से अनूदित हिन्दी नाटक है। 'वैदिकी हिंसा-हिंसा न भवति' उनका मूल नाटक है। इसके अतिरिक्त 'सत्य हरिश्चन्द्र', 'नील देवी', 'भारत दुर्दशा', 'अंधेर नगरी', 'विषस्यविषमौषधम्', 'सती प्रताप' तथा 'प्रेम योगिनी', भारतेन्दु के मूल नाटक हैं और अनूदित नाटकों में 'मुद्राराक्षस', 'धनंजयविजय', 'रत्नावली नाटिका, कर्पूर मंजरी', 'भारत-जननी', पाखण्ड विडम्बना तथा 'दुर्लभ बन्धु' आदि हैं। भारतेन्दु जी ने हिन्दी में मूल नाटक लिखने का श्रीगणेश किया। वह मध्यम मार्ग पसन्द करते थे। उन्होंने राजा शिव प्रसाद, सितारे हिन्द, तथा लक्ष्मण सिंह दोनों के बीच भाषा की हुई खींचतान का अन्त किया और आगे के लिखने वालों को एक मार्ग दिया। इसी प्रकार उन्होंने अंग्रेजी नाटक साहित्य की कलात्मक अभिव्यक्ति को भी ग्रहण किया तथा संस्कृत नाट्य साहित्य कला सम्बन्धी मान्यताओं को भी अपनाकर दोनों के मध्य सामंजस्य स्थापित कर नाट्य विद्या स्थापित की। इसी प्रकार सामाजिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, सभी प्रकार के नाटक उन्होंने लिखे और हिन्दी नाटक साहित्य को विकसित किया। उन्होंने समाज में बाह्याडम्बरों के कारण फैली भ्रांतियों को भी दूर किया। साथ ही समाज में नव-चेतना का संचार किया। भारतेन्दु सही अर्थ में एक उच्चकोटि के देश भक्त थे और साहित्य के माध्यम से समाज में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह की भावना उत्पन्न कर रहे थे। उन्होंने इसके लिए नाटकों को लिखना तथा उनका मंचन करना उचित समझा। इस प्रकार नाटक का शुभारम्भ ही सामाजिक क्रान्ति से हुआ है। उनके समकालीन नाटककारों में प्रतापनारायण ने 'भारत-दुर्दशा' तथा 'कलि कौतुक', नाटक बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' ने 'भारत सौभाग्य' लाला श्री निवासदास 'रणधीर', 'प्रेम मोहिनी', 'तप्तासंवरण' तथा 'संयोगिता स्वयंवर', नाटक लिखे।

राधाकृष्णदास ने 'दुखिनी बाला', 'पद्मावती' तथा 'महाराणा प्रताप' नाटक लिखे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अम्बिकादत्त व्यास ने 'ललित' और खंग बहादुरलाल ने 'भारत ललन' नाटक लिखा। इनके अतिरिक्त अनेक अन्य लेखकों ने अंग्रेजी, संस्कृत, बंगला तथा मराठी से अनुवाद कर हिन्दी नाटक साहित्य का भंडार भरा। भारतेन्दु तथा उनके सहयोगियों का इस क्षेत्र में विशेष योगदान है। डॉ० बच्चन सिंह ने ठीक ही लिखा है। "नाट्य कला के विकास की दृष्टि से भारतेन्दु मण्डल द्वारा प्रस्तुत तथा इस मण्डल के बाहर के लेखकों द्वारा लिखित नाटकों का विशेष महत्व है। ये समस्त नाटककार भारतेन्दु द्वारा निर्मित राजमार्ग का अनुसरण करते हुये अग्रसर हो रहे थे। बहुत से नाटक-कारों से तो ठीक-ठीक अनुसरण भी नहीं हो सकता।

डॉ० बच्चन ने यह बात सत्य रूप में उद्घाटित की है, पर भारतेन्दु युग नाटक का प्रारम्भिक युग है। उस कालीन लेखकों के नाटकों में जयशंकर प्रसाद तथा डॉ० रामकुमार वर्मा के नाटकों से तुलना करना ठीक नहीं होगा। उस काल में नाट्यकला का विकास नहीं हुआ। पर इतनी रचनाएँ की गयीं, हिन्दी नाटक साहित्य का अपना एक स्थान बन गया।

दृश्यों की कलात्मक अवतारणा, सम्पादकों का साहित्य संक्षिप्त तथा चरित्रोद् घाटक रूप, कथावस्तु का गठन और रंगमंच की साहित्यिक सुरुचि को ध्यान में रखकर इस युग में नाटक नहीं लिखे गये हैं, पर उनमें संस्कृत नाटकों की तरह प्रस्ता-वना भी नहीं रही। उसकी उपेक्षा की जाने लगी। इसके स्थान पर कौतूहल और जिज्ञासा का विकास हुआ। स्वगत कथन के स्थान पर आकाश भाषित तथा नाटकों में गीतों का प्रयोग हुआ नाटकों को संस्कृत नाटकों के आधार पर पाँच-सात अंकों में विभाजित करना आवश्यक नहीं रह गया। संस्कृत नाटकों में वर्जित आचरणों का प्रयोग भी इन लोगों ने पाश्चात्य नाटकों के आधार पर किया। विषय-वस्तु में ही परि-वर्तन नहीं हुआ, बल्कि सुखान्तर के स्थान पर दुःखान्तर नाटक भी लिखे जाने लगे। पात्रों का चुनाव वास्तविक समाज में होने लगा। कल्पना का जोश समाप्त हो गया और इस युग में नाटक वास्तविक रूप में उतर आया।

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के बाद हिन्दी साहित्य के पास कोई नेता नाटककार नहीं रहा। जयशंकर प्रसाद जैसा सफल नाटककार भारतेन्दु के बाद दस वर्षों बाद आया। यह दस वर्ष हिन्दी नाटक के विकास में कुछ भी योग नहीं दे सके। पारसी रंगमंच जनरुचि को भद्दा बनाकर धनोपार्जन करना ही अपना ध्येय बनाये हुये थे। अन्य कोई प्राणवान् नाटककार था ही नहीं जो जनता का ध्यान स्वस्थता की ओर आकृष्ट करने में समर्थ होता। १९०५ ई० से सन् १९१५ ई० तक का दस वर्षों का समय सन्धि काल का है जो भारतेन्दु और जयशंकर प्रसाद के समयों को मिलता है। मनोरंजनात्मक साहित्य तथा अनूदित नाट्य साहित्य ही इस युग में विशेष लिखा गया। 'चन्द्रगुप्त', 'दुर्गावती', 'कुरुवन दहन' आदि कुछ नाटक बदरी नारायण भट्ट ने, तथा नेत्रोन्मीलन मिश्र बन्धुओं ने लिखा। भट्ट के 'चुङ्गी के उम्मीदवार' प्रहसन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अधिक प्रसिद्ध हुआ। टेक्नीक का थोड़ा विकास इस काल में हुआ। अधिकतर अनूदित नाटक ही लिखे गये। अत: कलात्मक दृष्टि से विकास नहीं हो पाया।

जयशंकर प्रसाद युग (१९१५ ई० से १९३४ ई०)—भारतीय गौरव के दिनों के इतिहास में सांस्कृतिक चेतना के अनुसंधाता 'प्रसाद' का नाटक जगत में आगमन एक युगान्तरकारी घटना है। हिन्दी नाटक की लड़खड़ाती हुई नाव को एक कुशल मल्लाह प्राप्त हो गया जिससे वह उर्मिल वीचियों पर अठखेलियाँ करती हुई द्रुतगति से प्रवाहित हो चली। 'प्रसाद' जी का आविर्भाव राष्ट्रीय चेतना के समय हुआ। राजनीतिज्ञ तथा साहित्यिज्ञ सभी का दायित्व सोये भारत को जगाने का था। भारत के प्राचीन गौरव का इतिहास भारत में मुगलों के आगमन से पूर्व के इतिहास में ही खोजा जा सकता था। मौर्य, गुप्त, तथा उसी के आस पास के अन्य प्रभावशाली भारतीय शासकों के चारित्रिक साहस का उद्घाटन कर वर्तमान को प्रेरक बनाकर उज्जवल भविष्य की कल्पना इन साहित्यकारों ने की। 'प्रसाद' जी ने इतिहास का गम्भीर अध्ययन किया और उसमें से चरित्र के मोती निकाले जिनकी ज्योति से परतंत्रता के अन्धकार में डूबा भारत पुन: प्रकाशित हो उठा। 'प्रसाद जी से पूर्व नारियों का साहित्य में बहुत ही गिरा हुआ स्थान था वे मनोरंजन का साधन थीं। नारी शक्ति स्वरूप है और पुरुष की अर्धांगिनी है। 'प्रसाद' के पूर्व तक नारी की शक्ति पुरुष को अप्राप्य थी। उन्होंने नारी को शक्ति, धैर्य, और ममत्व की देवी चित्रित कर पुरुष को सौभाग्यशाली बना दिया। उन्होंने अपने नाटकों में युग-सन्देश दिया। उनके नाटक सांस्कृतिक व दार्शनिक बोझ से दबे हुये मालूम पड़ते हैं। साहित्यिक दृष्टि से प्रसाद ने हिन्दी साहित्य को चरम सीमा तक पहुँचा दिया है। भाषा, शैली, चरित्र-चित्रण, मानसिक तथा प्रस्तावना नाटक का विस्तार आदि का 'प्रसाद' जी ने बहिष्कार किया और रस के स्थान पर मनोविज्ञान का प्रयोग किया। रगमंच पर युद्ध, हत्या आदि जो संस्कृत नाटक में वर्जित थे, मंच पर प्रदर्शित किये जाने लगे। तथा सम्वाद छोटे और प्रभावशाली हो गये। कथा प्रधान नाटकों के स्थान पर चरित्र प्रधान नाटक लिखे जाने लगे।

प्रमुख नाटक—'एक घूंट', 'राजश्री', 'सज्जन', 'प्रायश्चित', 'कल्याणी परिणय', 'विशाख,' 'अज्ञातशत्रु,' 'कामना', 'स्कन्द गुप्त', 'जनमेजय का नागयज्ञ', 'चन्द्रगुप्त' तथा 'ध्रुवस्वामिनी' आदि उनके प्रसिद्ध नाटक हैं।

उनके समकालीन लेखकों ने सामाजिक तथा पौराणिक नाटक भी लिखे हैं। यथार्थवादी धारा में भी अनेक नाटक लिखे गये तथा प्रतीकवादी नाटकों का भी सृजन हुआ। 'प्रसाद' जी तथा उनके समकालीन नाटकों में काव्य और कल्पना, इतिहास और राष्ट्रीयता, तथा प्राचीन और अर्वाचीन अपूर्व समन्वय परिलक्षित होता है। उनके साथ ही डॉ० रामकुमार वर्मा, हरिकृष्ण प्रेमी, सेठ गोविन्द दास, उदय शंकर भट्ट, गोविन्द बल्लभ पन्त, जगन्नाथ प्रसाद, 'मिलिन्द' पाण्डेय, बेचन शर्मा 'उग्र', लक्ष्मी नारायण मिश्र आदि ने प्रगतिवादी भावधारा में भौतिक नाटक लिखे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'प्रसाद' के समकालीन नाटकों में मौलिकता के दर्शन होते हैं। इस काल के नाटकों पर पाश्चात्य शैली का विशेष प्रभाव परिलक्षित होता है। अंक तथा दृश्यों का विभाजन पाश्चात्य नाटकों के आधार पर ही है। इनमें कथन संक्षिप्त तथा स्वाभाविक है। मंच के लिखे गये इस युग के नाटकों में अभिनय पारसी रंगमंच से पृथक् विशुद्ध है।

प्रसाद के बाद हिन्दो नाटक और अधिक सूक्ष्म तथा मनोवैज्ञानिक हो गया। समस्याओं का उद्घाटन तथा मानसिक उलझनें इन नाटकों की कथावस्तु का ताना बाना बुनने लगीं। इन नाटकों पर गाल्सवर्दी, इसन, तथा बर्नाड शॉ का प्रभाव पड़ा है। समस्यामूलक नाटकों का प्रारम्भ लक्ष्मी नारायण मिश्र से माना जाता है। इनके नाटकों में आदर्श भावना के स्थान पर बौद्धिक यथार्थ प्रकट हुआ है। व्यक्ति की अपनी समस्याएँ, उसकी मानसिक उलझनें, अन्तर्द्वन्द्व असन्तोष, भूख वासना, आदि का उद्घाटन मिश्र जी के नाटकों में पाया जाता है। नारी प्रेम विवाह उसके अच्छे या बुरे परिणाम को लेकर हुई हाय-हाय का वर्णन इनके नाटकों में है, 'राक्षस का 'मदिरा सिन्दूर की होली', 'आधी रात', इत्यादि इनके नाटक हैं। उदय शंकर भट्ट का 'कमला', पृथ्वी नाथ शर्मा का 'संधि', 'अपराधी' तथा 'दुविधा' नाटक भी समस्या प्रधान हैं।

पौराणिक नाटकों का सृजन अत्यधिक प्रारम्भिक काल से होने लगा था, इस समय तक चलता रहा। भट्ट जी का 'अम्बा', 'सगर विजय', उग्र का 'गंगा का बेटा' 'प्रेमी' का 'पाताल विजय' पौराणिक नाटक है। इस युग का नाटककार भक्ति रस का दीवाना नहीं था। उसने पौराणिक कथानकों का चयन अवश्य किया; पर उनमें उसने आधुनिक समस्याओं का ही निदान खोजा। ऐतिहासिक नाटकों का कलात्मक शुभारम्भ जयशंकर 'प्रसाद' ने किया था। उसका सही स्वरूप डॉ० रामकुमार वर्मा के काल में निखर सका।

डॉ० रामकुमार वर्मा युग—साहित्यिक रंगमंचीय नाटक लिखने में राम कुमार वर्मा युग प्रवर्त्तक नाटककार हैं। पाश्चात्य नाट्य शिला से प्रभावित भारतीय वातावरण के नाटक लिखने वालों में आप अग्रणी हैं। उनके नाटकों में रंगमंच का गुण विशेष रूप से रहता है। उनके नाटकों के मंचन एक भौतिक वातावरण की सृष्टि करते हैं। उनके पात्र आदर्श संस्कृति के पालक हैं। पर वे यथार्थ जीवन से भी पृथक् नहीं हैं। डॉ० वर्मा के नाटकों में उनके भाव पात्रों के साथ संचरित होते हैं। उनके भावों में चंचलता, तीव्रता, तथा कार्य व्यवहार को उदघाटित करने की क्षमता रखता है।

कथानक का प्रभाव तथा चरित्रों का विकास उनके नाटकों में सन्तुलित रहता है। उनके नाटकों की सफलता का कारण उनकी प्रभावपूर्ण नाटकीय शैली को है। उनकी शैली में रोचकता, प्रभावोत्पादकता के साथ ही पात्रों को मनोवैज्ञानिक स्तर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पर विकसित करने की क्षमता भी है। चरित्र-चित्रण स्वाभाविक तथा वातावरण के अनुकूल होता है। भाषा पात्रों के मनोभावों के अनुसार है।

उनके नाटकों की सफलता, जिज्ञासा एवं कुतूहल में भी रहती है। वह परिस्थिति एवं बातचीत के द्वारा घटना में कुतूहल की सृष्टि करते हैं। उनके पात्रों का अन्तर्द्वन्द्व भी इसी अवसर पर उभरता है। बाह्य एवं आन्तरिक संघर्ष चित्रित करने वाले वह कुशल कलाकार हैं। उनके नाटकों पर रामचरन महेन्द्र के विचार इस प्रकार हैं—"उनके सभी नाटकों का रंगमंच पर सफलतापूर्वक अभिनय हो सकता है। डॉ० वर्मा की सारगर्भिता प्रभावपूर्ण शैली पाठक एवं दर्शक दोनों को प्रभावित करने की क्षमता रखती है। इतिहास, कल्पना और काव्य गुणों के सम्मिश्रण से बने ये नाटक बड़े ही रोचक एवं प्रभावोत्पादक हैं। तत्कालीन सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर पात्रों के चरित्रों में जो मनोवैज्ञानिक पुट दिया है। वह इन नाटकों को स्थान प्रदान करने में बहुत बड़ा हाथ बन गया है।"

उनके नाटक अभिनेय हैं, यह सभी स्वीकार करते हैं। उनकी इस सफलता में भाषा का बहुत बड़ा योगदान है। उनकी भाषा की सफलता पर महेन्द्र जी ने लिखा है—"अभिनय के दृष्टिकोण से अपने पात्रों के मुख से उनकी भाषा नहीं छीनी है, वरन् अत्यन्त स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत की है। जो पात्र जिस वातावरण में श्वास लेता है, उसी वातावरण के अनुरूप भाषा, मनोविज्ञान, आचार व्यवहार, संघर्ष इत्यादि की व्यंजना की है। ये कल्पना के व्योम में विहार की अपेक्षा वास्तविकता का क्षेत्र नाटकों में आवश्यक समझते हैं। रंगमंच तथा उसकी आवश्यकताओं का ध्यान उन्हें सदैव रहता है। कुछ नाटकों में उन्होंने अपने रंगमंच का चित्र भी प्रदान किया है।

डॉ० वर्मा के नाटक भारतीय संस्कृति के शक्तिशाली अंग हैं। भारतीय संस्कृति तथा मानव मनोविज्ञान की अभिव्यक्ति उनमें होती हैं। उनके नाटकों में संगीत का प्रयोग नाटकीय मोड़ उपस्थित करने के लिये कथावस्तु के विकास में सहायक बनकर प्रस्तुत हुआ है। जीवन की स्वाभाविकता से परिपूर्ण उनके नाटक हिन्दी नाट्य साहित्य की निधि हैं।

नाट्य कृतियाँ—डॉ० वर्मा ने 'जौहर की ज्योति', 'विजय पर्व', 'कला और कृपाण', 'नाना फड़नवीस', 'महाराणा प्रताप', 'अशोक का शोक', 'सारंग स्वर' तथा 'जया आदित्य' ऐतिहासिक नाटक तथा पृथ्वी का स्वर्ग, सामाजिक नाटक लिखा है। इस प्रकार बड़ नाटकों के अतिरिक्त उन्होंने सौ से भी अधिक एकांकी लिखे हैं। आप प्रतिभाशाली जीवन्त कलाकार हैं। आपकी लेखनी अभी प्रौढ़ है। डॉ० वर्मा के पीछे हिन्दी एकांकी लेखन की परम्परा चल निकली उनके नाटकों से प्रभावित होकर न केवल हिन्दी में हिन्देत्तर भाषाओं में भी एकांकी तथा नाटक लिखे गये हैं। अतः वह एक युग-प्रवर्तक नाटककार हैं जिनकी लेखनी से हिन्दी नाटक साहित्य को अभी बहुत आशा है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

डॉ० वर्मा का एकांकी 'बादल की मृत्यु' १६३० ई० में प्रकाशित हुआ था। इसी के आस-पास "भुवनेश्वर का कारवाँ" प्रकाशित हुआ। डॉ० वर्मा की मौलिक नाटकीय विधा ने एकांकी की विधा का प्रतिनिधित्व किया।' 'पृथ्वीराज की आँखें', 'रेशमी टाई', 'चारु मित्रा' आदि एकांकी संग्रहों एकांकियों से प्रेरित होकर हिन्दी में एकांकी की सशक्त विद्या चल निकली। उपेन्द्र नाथ "अश्क" का 'देवताओं की छाया में', जगदीश चन्द्र माथुर का 'भोर का तारा' प्रकाशित हुआ। इसी धारा में सद्गुरु शरण अवस्थी उग्र तथा भगवती चरण वर्मा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

गीति नाट्य लिखने की विधा तो प्राचीन है पर उसका नवीन रूप सुमित्रानन्दन पन्त के 'शिखर और शिल्प' ज्योत्सना धर्मवीर भारती के अन्धा युग में मिलता है। रेडियो नाटक लिखने में डॉ० रामकुमार वर्मा, उदय शंकर भट्ट, उपेन्द्र नाथ 'अश्क' तथा विष्णु प्रभाकर आदि नाटककार प्रमुख हैं। इसी प्रकार प्रतीकात्मक नाटक 'दृष्टि की खोज', 'बाज-कबूतर', लक्ष्मीनारायण दास का 'सुन्दरदास', 'सूखा-सरोवर' तथा धर्मवीर भारती का नील झील तथा गिरिजा कुमार माथुर का 'पृथ्वी-कल्प' है।

गीति नाट्य, भाव नाट्य आवेश संगीत रूपक एक पात्रीय तथा लघु नाटक आदि नयी-नयी विविधताएँ इस क्षेत्र में खुलती जा रही हैं।

भारतेन्दु काल से आज तक नाट्य की शिल्पगत स्थिति देखकर आश्चर्य होता है कि नाटक के क्षेत्र में हिन्दी साहित्य इन पिछले सौ वर्षों में बहुत सीमा तक ऊँचा उठ गया है। चित्रपट स्वयं नाटकीय परिवेश में सिमटता जा रहा है। चित्रपट ने शिल्प के प्रयोग जहाँ नाटकों को चुनौती दी है, वहीं प्रभावित भी कम नहीं है। नाटक के क्षेत्र में प्रतिदिन नये प्रयोग होते जा रहे हैं। फिर भी प्रसाद, वर्मा, या हरि कृष्ण प्रेमी, जैसे कोई नया नाटककार अभी उभर नहीं पाया है। मोहन राकेश असमय में ही कालजनी बन गये। नाटकों के प्रति जनता के बढ़ते हुये प्रेम को देखकर हिन्दी नाट्य साहित्य के उज्जवल भविष्य का आभास होता है। शीघ्र ही किसी बड़े नये नाटककार के उभरने की पूर्ण सम्भावना है।

नाटक के मूलभूत तत्व

नाटक के तत्वों पर भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों ने अलग-अलग विचार व्यक्त किये हैं। नाट्यशास्त्र में आचार्य भरत ने जिन तत्वों का विवेचन किया है, भारतीय नाट्य शास्त्र के लिए वही मान्य हुए हैं और संस्कृत के नाटकों में उनका पूर्ण-रूपेण परिपालन भी किया गया है। पाश्चात्य नाट्य शास्त्र में अरस्तू द्वारा प्रतिपादित तत्वों को महत्व दिया गया है।

भारतीय दृष्टि—'वस्तु नेता रसस्तेषांभेदक।' भारतीय विद्वान वस्तु, नेता, रस, नाटक के तीन तत्व मानते हैं। इनके भेदोपभेदों पर विचार करते हुए अपने आचार्यों ने अभिनय तथा वृत्ति पर भी नाटकीय तत्वों के अन्तर्गत विचार किया है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कथावस्तु—नाटक की कथा को कथावस्तु कहते हैं, जिसका उद्घाटन नाटककार अपनी लेखनी से करता है। इसके अनेक भेद किये गये हैं। प्रमुख भेद इस प्रकार हैं।

अधिकाधिक कथावस्तु—यह नाटक की मूल कथा होती है तथा नाटक के प्रमुख पात्रों से सम्बद्ध रहती है। यह नाटक के प्रारम्भ से अन्त तक चलती है।

प्रासंगिक कथावस्तु—प्रसंगवश आकर मूल कथावस्तु को विकास में सहयोग देकर बीच में ही समाप्त हो जाने वाली कथावस्तु प्रासंगिक कथावस्तु कहलाती है। शाकुन्तलम् में दुष्यन्त और शकुन्तला की कथा मुख्य है जबकि दुर्वासा इत्यादि से सम्बन्धित कथा प्रासंगिक है। शकुन्तला की विदाई पर उपस्थित कथा प्रासंगिक है। इस प्रकार प्रासंगिक कथावस्तु के भी दो भेद हैं। दुर्वासा की कथा प्रकरी प्रासंगिक है और विदाई की पताका प्रासंगिक है। कथावस्तु के आधार को इसके भेद किये गये हैं—(१) प्रख्यात, (२) उत्पाद्य, (३) मिश्र। प्रख्यात कथावस्तु किसी जनश्रुति पर आधारित है। उत्पाद्य वह है जो नाटककार की कल्पना के आधार पर पल्लवित होती है। मिश्र कथावस्तु ऐतिहासिक होती है जिसमें नाटककार कलात्मक पुट भी देते हैं।

कार्य अवस्थाएँ, अर्थ प्रकृतियाँ, तथा सन्धियाँ भी कथावस्तु को विभाजित और स्पष्ट करती हैं। इनकी संख्या पाँच-पाँच हैं—

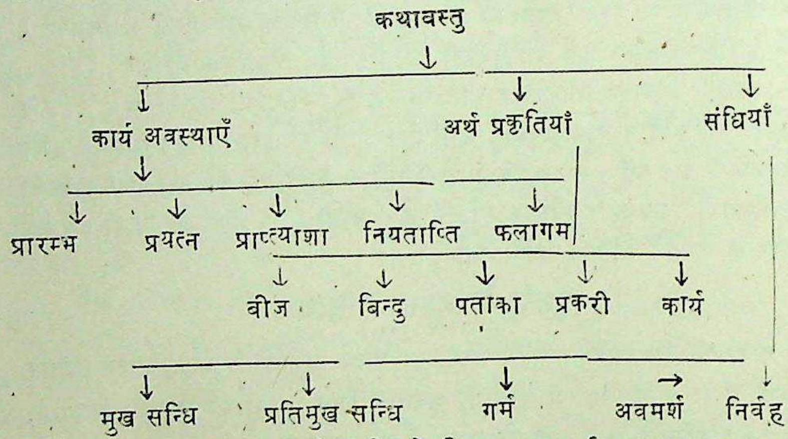

(१) **प्रारम्भ**—फल की प्राप्ति के लिए नायक की उत्सुकता का पता चलता है तथा उसकी इच्छा का भी आभास प्रारम्भ में ही चल जाता है।

(२) **प्रयत्न**—नायक-नायिका जिस प्रकार के फल को प्राप्त करना चाहते हैं उसके लिए प्रयत्न करना प्रारम्भ कर देते हैं। नायक की ओर का प्रयत्न तथा प्रतिनायक से संघर्ष आदि प्रयत्न के अन्तर्गत आते हैं।

(३) **प्राप्त्याशा**—मुख्य रूप से नाटक में फल की प्राप्ति ही उद्देश्य रहता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अतः फल-प्राप्ति की आशा को प्राप्त्याशा कहा जाता है। नायक की अपेक्षा सफलता को प्राप्त करने वाला खलनायक इस बिन्दु से अवनति को प्राप्त होने लगता है। नायक की विघ्न बाधाएँ समाप्त होने लगती हैं। अपने लक्ष्य-प्राप्ति की सम्भावना उसे बढ़ जाती है।

(४) नियताप्ति — लक्ष्य स्पष्ट हो जाता है। नायक को फल प्राप्ति की आशा पूर्णरूपेण हो जाती है। फल-प्राप्ति का निश्चय नायक को हो जाता है।

(५) फलागम—प्रतिनायक की हार पर नायक को लक्ष्य की सिद्धि प्राप्त हो जाती है। फल की प्राप्ति हो जाती है। नाटक में अनेक प्रकार की स्थितियों का समावेश रहता है। अनेक चमत्कारपूर्ण अंश जो नाटक को फल की ओर अग्रसर करने में सहयोग प्रदान करते हैं। अर्थ-प्रकृतियाँ कहलाती हैं। अर्थ-प्रकृतियाँ भी कार्य अवस्थाओं की भाँति पाँच भागों में विभक्त रहती हैं—

(१) बीज—बीज, वृक्ष, और फल, फूल की सभावनाएं अपने में छिपाये रहता है। अवस्था के भेद प्रारम्भ की भाँति बीज भी अपने में फल की सम्भावना छिपाये रहता है। बीज प्रारम्भ है।

(२) बिन्दु—कथावस्तु का कार्य व्यापार-बिन्दु अर्थ प्रकृति के सम्पर्क से और भी विस्तार को प्राप्त होना है। तेल की बूंद पानी पर पड़ने से फैल जाती है। उसी प्रकार कथावस्तु का कोई अंग फैलकर विस्तार को प्राप्त होता है।

(३) पताका—यह सहायक है, जो मूलकथा के साथ प्रारम्भ होने से अन्त तक चली जाती है।

(४) प्रकरी—यह सहायक कथा से प्रारम्भ होकर कहीं मध्य में ही समाप्त हो जाती है। प्रासंगिक कथा प्रकरी है।

(५) कार्य—कार्य और अवस्था के फल में अभेद है। सन्धियाँ कार्य-अवस्था तथा अर्थ प्रकृतियों का मेल कराती हैं। पाँच अवस्थाओं तथा पाँच अर्थ प्रकृतियों का मेल कराने वाली सन्धियाँ भी पाँच हैं—

(१) मुख सन्धि —मुख सन्धि में प्रारम्भ में नाटक कार्य-अवस्था तथा बीज नामक अर्थ-प्रकृति का मेल होता है।

(२) प्रतिमुख सन्धि—बिन्दु और प्रयत्न के मेल को प्रतिमुख सन्धि कहते हैं। प्रतिमुख सन्धि के बीज कुछ प्रत्यक्ष रूप से कुछ अप्रत्यक्ष रूप से विकसित होते हैं।

(३) गर्भ सन्धि —पताका और प्राप्त्याशा का योग गर्भ सन्धि में होता है। गर्भ में जिस प्रकार बच्चा छिपा रहता है, उसी प्रकार गर्भ में फल छिपा रहता है।

(४) अवमर्श सन्धि—नियताप्ति और प्रकरी का मेल अवमर्श कहलाता है।

(५) निर्वहण सन्धि—कार्य और फलागम का मेल निर्वहण सन्धि में रहता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कार्य-अवस्थाओं, अर्थ-प्रकृतियों तथा सन्धियों के अतिरिक्त कथावस्तु की कुछ अवस्थाएँ रंग मंच की दृष्टि से भी पायी जाती हैं। कथावस्तु को रंग-मंच की दृष्टि से दृश्य और सूच्य दो भागों में बांटा जाता है। रंग-मंच पर जिस कथावस्तु का प्रदर्शन किया जा सके उसे दृश्य कथावस्तु कहते हैं तथा पात्र जिस कथावस्तु को दर्शकों के समक्ष प्रदर्शित न कर सके, पात्र सूचना दें उस कथावस्तु को सूच्य कहते हैं—

अर्थोपक्षेपक—सूच्य कथावस्तु को प्रकट करने के तरीकों को अर्थोपक्षेपक कहते हैं। यह पाँच प्रकार के होते हैं—

(१) **विष्कम्भक**—अप्रसिद्ध दो पात्रों के द्वारा पहले हो जाने वाली अथवा बाद में होने वाली घटनाओं की सूचना विष्कम्भक में रहती है।

(२) **चूलिका**—जब सूचना पर्दे के पीछे से दी जाती है तो उसे चूलिका सूचना कहते हैं।

(३) **अंकास्य**—अंक के अन्त में निगमन करने वाले पात्रों द्वारा अगले अंक के लिए जो सूचना दी जाती है उसे अकास्य सूचना कहते हैं।

(४) **अंकावतार**—जब पहले अंक की कथा को ही आगे चलाया जाता है तथा पात्रों को नहीं बदला जाता है तो अंकावतार सूचना होती है।

(५) **प्रवेशक**—इसमें प्रवेशक द्वारा घटनाओं की सूचना प्रदान की जाती है।

उपर्युक्त तत्वों की अपेक्षा नाटक में नायक और नायिकाओं के भेद भी किए जाते हैं। नाट्य शास्त्र में नायक को विनीत, मधुर, त्यागी, दक्ष, प्रियम्वद, लौकिक, शुचि, चतुर, युवा, बुद्धिमान, उत्साही, कलाप्रिय, प्रज्ञावान्, शूर, तेजस्वी, दृढ़, शास्त्रज्ञ और धार्मिक होना चाहिए। नाटक का फल नेता को ही प्राप्त होता है। नेता शब्द भी 'नी' धातु से बना है। जिसका अर्थ ले जाने से रहताहै। नायक धीरोदात्त धीर ललित, धीर प्रशान्त तथा धीरोद्धत चार प्रकार के होते हैं। अनुकूल, दक्षिण, धृष्टत तथा शठ चार भेद नायक के और किये जाते हैं। धनञ्जय के अनुसार नायिकाएँ स्वकीया, परकीया, और सामान्य होती हैं। नाट्य शास्त्र में दिव्या, नृपतिनी, कुलस्त्री और गणिका चार प्रकार की होती हैं।

इसके अतिरिक्त विदूषक तथा प्रति नायक भी पात्रों के अन्तर्गत मुख्य हैं।

नाटक में अभिनय तथा अभिनेयता

अभिनय तथा अभिनेयता का अन्तर स्पष्ट करने पर अभिनय स्वयं ही स्पष्ट हो जायगा। अभिनय नाटक में एक लक्ष्यात्मकता बनाये रखने का प्रयास है। दृश्यान्त में अभिनय इतना संवेदनशील होना चाहिए कि आगामी अंक में होने वाले अभिनय में दर्शक अपने को खपा सकें। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि वृथा हाथ पैर मारना अभिनय नहीं है। शान्त, स्थिर रहकर भी अच्छा प्रभाव दिया जा सकता है। इसका

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अभिप्राय अभिनय में क्रियाशीलता का विरोध नहीं है वही तो नाटक में क्रियाशीलता बनाये रखती है जो नाटककार अपने नाटक में जितनी अधिक क्रियाशीलता भरता है वह उतना सफल माना जाता है ।

अभिनेयता में नाटक के वे सभी तत्व समाहित हो जाते हैं, जिनसे नाटक अच्छी रीति से अभिनीत हो सके । इसमें नाटकीयता और रंग-मंच विज्ञान भी सम्मिलित हो जाता है । अभिनय, अभिनेयता का एक अंग मात्र है । अभिनय के अभाव में अभिनेयता अधूरी अवश्य रहेगी, पर अभिनय अकेला अभिनेयता की मांगों को पूरा नहीं कर सकता है । अभिनय नाटक मे एकात्मक क्रियाशीलता भरता है तो अभिनेयता नाटक को अभिप्रायः पूर्ण सफलता प्रदान करती है ।

अभिनय के चार अंग माने जाते हैं—

(१) **आंगिक**—शरीर द्वारा सम्पन्न होने वाले अभिनय को आंगिक अभिनय कहते हैं । इसके भी शरीरज, मुखज तथा चेष्टाकृत तीन भेद किये जाते हैं । शारीरिक अभिनय पर नाट्य शास्त्र में लम्बी सूची दी गयी है । सिर को हिलाने की अनेक विधियाँ और उनका प्रभाव वर्णित हैं ।

(२) **वाचिक**—वाणी द्वारा आंगिक अभिनय को स्पष्ट करने को वाचिक अभिनय कहते हैं । स्वर शास्त्र, व्याकरण शास्त्र तथा छन्द शास्त्र का ज्ञान भी इसके अन्तर्गत भरतमुनि ने आवश्यक बताया है ।

(३) **आहार्य**—रूप, सज्जा, वेश-भूषा तथा आभूषण आदि का विस्तृत ज्ञान नाट्य शास्त्र में इस अभिनय के अन्तर्गत कराया गया है । आयु, रुचि तथा अन्य आधारों पर इस अभिनय का वर्णन किया गया है ।

(४) **सात्विक अभिनय**—भावाभिव्यक्ति जब भावों द्वारा की जाती है तो उस प्रदर्शन को सात्विक अभिनय कहते हैं ।

वृत्ति—नाटक में नायक तथा नायिका के विशेष व्यापार को वृत्ति कहा जाता है । नाटक में इनका बड़ा महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है । इन्हें नाटक में माताएँ भी कहा जाता है । ये चार हैं—

(१) **कौशिकी**—गायन प्रधान, अत्यधिक कोमल इस वृत्ति की उत्पत्ति सामवेद से मानी जाती है । शृंगार तथा हास्य रस से इसका सम्बन्ध है ।

(२) **सात्विकी**—शौर्य, दान, तथा दया आदि से सम्बन्धित यह वृत्ति आनन्द बढ़ाने वाली होती है । यजुर्वेद, उत्पादिनी, यह वृत्ति अद्भुत, रौद्र, तथा वीर रस से उत्पन्न होती है ।

(३) **आरभटी**—अथर्ववेद से प्रसूता यह वृत्ति, क्रोध, संघर्ष, इन्द्रजाल, तथा भयादि से प्रारम्भ होती है ।

(४) **भारती**—ऋग्वेद से इसकी उत्पत्ति मानी जाती है । इसमें स्त्री पात्र वर्जित है । अद्भुत तथा करुण रस से इसका सम्बन्ध है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भारतीय दृष्टि से उपर्युक्त नाट्य तथा नाटक में वांछनीय हैं। आधुनिक युगीन नाटक पाश्चात्य नाट्य शास्त्र तथा नाटकीय तत्वों से अत्यधिक प्रभावित हैं। अतः पाश्चात्य नाट्य कला तत्वों का ज्ञान भी अत्यधिक आवश्यक है। सम्पूर्ण नाटकीय तत्वों का ज्ञान तभी पूरा हो सकता है।

पाश्चात्य नाट्य तत्वों का सृजक अरस्तू है। अरस्तू द्वारा स्थापित तत्व भी बाद को परिवर्तित हुए। उसने नाट्य कला के अधोलिखित ६ तत्व माने हैं।

(१) वस्तु, (२) चरित्र-चित्रण, (३) देश काल, (४) वातावरण, (५) उद्देश्य, (६) शैली।

वस्तु—अरस्तू इसी को सबसे बड़ा नाट्य तत्व स्वीकार करता है। उसके विचार से चरित्र-चित्रण के अभाव में नाटक का सृजन सम्भव भी है। पर वस्तु के अभाव में नाटक का सृजन नहीं किया जा सकता है।

पाश्चात्य नाट्य शास्त्रीय नाट्य का विकास संघर्ष में देखते हैं। यह संघर्ष नायक तथा प्रतिनायक में होता है अथवा नाटक में परिव्याप्त दो परिस्थितियों के बीच होता है। हडसन के अनुसार कथावस्तु का विकास कुछ इस प्रकार होगा—

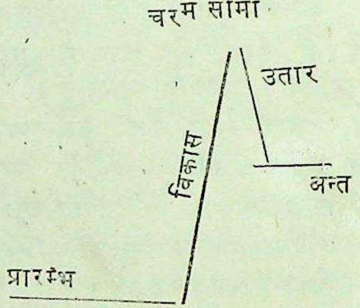

प्रारम्भ में नाटक किन्हीं संघर्ष मयी स्थितियों में पैदा होता है। विकास में यह संघर्ष अधिक विकास को प्राप्त करता है। तथा विरोधी घटनाओं की वृद्धि होती है। चरमसीमा पर दोनों ओर का संघर्ष चरम बिन्दु पर पहुँच जाता है। उतार में एक पक्ष विजयी होने लगता है और अन्त में विरोध या संघर्ष समाप्त हो जाता है। और एक पक्ष विजयी हो जाता है। ट्रेजडी या कामेडी पाश्चात्य नाटक का अन्तिम तत्व है। भारतीय फलागम की भाँति ही यह है। फलागम सर्वदा सुखान्त ही होता है। जबकि यहाँ दुखान्त भी हो सकता है। कथावस्तु के अन्तर्गत ही संकलनत्रय का मूल्य भी स्वीकार किया गया है। अरस्तू ने इस पर भी विशेष बल दिया है। यह तत्व तीन हैं।

(१) स्थल की एकता—इस स्थापना से नाटक की वस्तु एक ही स्थान की घटनाओं को वर्णन करने वाली मानी जाने लगी। यूनानी नाटकों में परिवर्तन नहीं होता है। अतः यह चल जाता था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(२) **काल की एकता**—समय की एकता का अभिप्राय है कि नाटक में जितने समय का अभिनय हो उतने ही समय की वस्तु रखी जाय। अरस्तू ने एक दिन-रात (चौबीस-घन्टे) की कथा को नाटक में रखने की बात कही थी। बाद में फ्रान्सीसी नाटककारों ने यह समय तीन घन्टे ही कर दिया।

(३) **कार्य की एकता**—मूल कथा ही नाटकों में रहे प्रासंगिक कथाओं को स्थान न दिया जाय। इब्सन आदि आधुनिक नाटककारों ने इस नियम का पूर्ण उल्लंघन कर दिया और नाटक को खुला विकास पाने दिया।

(४) **चरित्र चित्रण**—हडसन के मत से चरित्र-चित्रण नाटक का मूल तत्व है। वह इसे महत्वपूर्ण तथा चिरन्तन तत्व मानता है। उसके अनुसार पात्रों का चरित्र तीन रीतियों से उद्घाटित होता है—

(१) स्वयं पात्र अपने चरित्र का उद्घाटन करता है।

(२) दूसरे पात्र चरित्रों पर प्रकाश डालते हैं।

(३) घटनाओं द्वारा चरित्र पर प्रकाश पड़ता है।

चरित्र-चित्रण सूक्ष्म-स्थल अथवा आन्तरिक तथा बाह्य दो रूपों में होता है। आन्तरिक चित्रण में पात्र के गुणों का अथवा स्वभाव का चित्रण होता है। बाह्य में रंगरूप वस्त्र अथवा अवस्था पर ध्यान रहता है। चरित्र-चित्रण आदर्श तथा यथार्थ दो रूपों में भी वर्णित होता है। पात्र एक से भी रहते हैं तथा नाटकीय कथावस्तु के साथ बदलते भी रहते हैं। पात्र यथार्थ स्वाभाविक सजीव और मनोवैज्ञानिक होंगे तो दर्शक उनके साथ सहज ही तादात्म्य स्थापित कर लेंगे और उनके पात्र रो सकेंगे, हँस सकेंगे, उन्हें अपना बना सकेंगे। इस प्रकार चरित्र-चित्रण का नाटक में विशेष महत्व है।

(३) **कथोपकथन**—नाटक में कथन का महत्वपूर्ण स्थान है। यही वह तत्व है जिस पर चढ़कर नाटक निरन्तर चढ़ता है। पात्रों का चरित्र-चित्रण, कथानक का विकास एवं उद्घाटन नाटक के उद्देश्य की स्पष्टता आदि सभी के लिए नाटक में कथोपकथन महत्वपूर्ण होते हैं। कथन संक्षिप्त, सजीव और स्वाभाविक रहें और दर्शक में कुतूहल तथा जिज्ञासा जगा सकें वही अच्छे होते हैं। देशकाल आदि से सम्बन्ध रखते हुए वे पात्रों का चरित्र उद्घाटित कर सकें। देशकाल वातावरण का विधान नाटक में महत्वपूर्ण होता है। इसके अनुसार ही नाटक का सम्पूर्ण चित्रण किया जाता है। यदि वातावरण ऐतिहासिक काल का है तो उसी के अनुसार वस्त्र, स्वरूप आदि पात्रों को दिये जायेंगे।

नाटक का आज अपना एक उद्देश्य भी रहता है। भारतीय नाटककार पहले रस की सृष्टि करना अपना उद्देश्य मानते थे, पर पाश्चात्य प्रभाव से यह स्थिति बदल गयी और अब नाटककार नाटक में अपना विचार, दृष्टिकोण, दर्शन, मान्यताएँ रखता है। नाटककार प्रारम्भ से ही अपना उद्देश्य लेकर चलता है और अन्त में उसी की पूर्ति करता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शैली का सम्बन्ध नाटक के कथोपकथनों की भाषा से रहता है। शैली दर्शकों को आकर्षित करने वाली होनी चाहिए। आधुनिक नाटकों में भारतीय और पाश्चात्य दोनों नाटकों के तत्वों का समावेश हो गया है। इस मेल-मिलाप का प्रारम्भ भारतेन्दु जी से ही प्रारम्भ हो गया था। जयशंकर प्रसाद ने तो वह सब कुछ छोड़ दिया, जो उन्हें मात्र लादा हुआ प्रतीत हुआ। उन्होंने प्राचीन भारतीय नाटकों से चले आ रहे नान्दी, स्वागत, मंगलाचरण आदि को निकाल दिया। इस प्रकार नयी दिशा में नाटक नये रूप में प्रकट हुए हैं।

एकांकी विधा का स्वरूप—एकांकी नाटक में केवल एक अंक रहता है। उसमें सीमित पात्रों द्वारा जीवन की एकरूपता चित्रित की जाती है। कथावस्तु के अनावश्यक प्रसंगों का बहिष्कार किया जाता है।

परिचय—एकांकी में चरित्र-चित्रण की रूपरेखा तीव्र तथा संक्षिप्त रहती है। कुतूहल की सृष्टि आरम्भ में हो जाती है। व्यंजनात्मक अभिव्यक्ति द्वारा प्रभाव उत्पन्न किया जाता है। एकांकीकार अपना ध्यान चरम-सीमा में केन्द्रित करता है। एकांकी की गति क्षिप्र होती है। इस क्षिप्रता में बीती हुई घटनाएँ चुम्बक की तरह हृदय को आकर्षित करती हैं। डा० रामकुमार वर्मा के शब्दों में एकांकी का रूप इस प्रकार है—

"मेरे सामने एकांकी नाटक की भावना वैसी ही है जैसे एक तितली फूल पर बैठ कर उड़ जाय, फिर घटना में गति की फनी भूत तरंगें आती हैं जो कुतूहल में खिचकर चरम सीमा में परिणित हो जाती है। चरम-सीमा के बाद ही एकांकी की समाप्ति हो जानी चाहिए नहीं तो समस्त कथानक फीका पड़ जाता है। चरम सीमा के बाद घटना का विस्तार वैसा ही अरुचिकर है जैसा प्रेयसी से बातें करने के बाद आटे-दाल का हिसाब करना।"

एकांकी नाटक का उद्देश्य प्रभाव उत्पन्न करना है।

उसके लिए एकांकी लेखक किन्हीं विशिष्ट नियमों का पालन करता है। एकांकी की कथावस्तु का प्रारम्भ संघर्ष से होता है। इसमें बाह्य आडम्बर, कृत्तिमता, स्वगत कथनों तथा पद्य इत्यादि के लिए कोई स्थान नहीं है। यथार्थ चित्रण पर इस विधा में विशेष बल दिया जाता है। एकांकियों के प्रयोग में शब्द मितव्ययिता, संक्षिप्तता तथा निर्देशन कुशलता को अपनाने से जीवन की विशालता तथा गम्भीरता का संकेत अभिप्रेत है। कहना न होगा कि एकांकी विधा एक ऐसा आकर्षण बिन्दु है। जिसमें सम्पूर्ण जीवन अपनी सफलताओं तथा विफलताओं का दिग्दर्शन करा सकता है। यहाँ एकांकी के शिल्प पर संक्षिप्त विचार करना आवश्यक है।

एकांकी शिल्प पर संक्षिप्त प्रकाश डालिए—

कथावस्तु—नाटक में जीवन का संवेदनशील रूप प्रस्तुत किया जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हमारे जीवन में घटनाओं का चारों ओर अविराम प्रवाह है। जिनमें अन्तर्व्यापी सत्य का अत्यन्त रहस्यमय संकेत रहता है। इन्हीं घटनाओं से संजग नाटककार अपनी व्यंजना शक्ति द्वारा कथानक का चयन करता है। वह अपने जीवन के अनुभवों में ही उन घटनाओं के अन्तर्गत कुतूहल तथा स्वाभाविकता का संचयन कर देता है। उसे कथावस्तु के लिए बाहर जाने की आवश्यकता नहीं होती। वह संघर्ष की सृष्टि अपनी विवेचना द्वारा करता है। जिससे नाटक में जिज्ञासा उत्पन्न होती है। इसी से नाटक उन घटनाओं का संयोजन करता है, जिनमें विरोध की तेजस्विनी शक्तियाँ रहती हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि जीवन की वास्तविकता जिसमें आकर्षण ही नाटक की आधारशिला होती है।

इस कथावस्तु को आरोह तथा अवरोह के दृष्टिकोण से प्राचीन नाटकों में इस प्रकार रखा गया है—

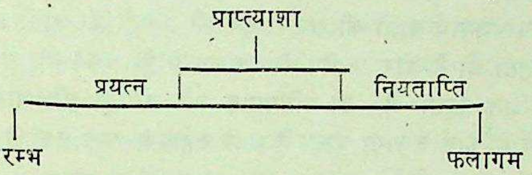

यह भारतीय दृष्टि है जिसमें दुःखान्त को कोई स्थान नहीं है। यहाँ प्रतिनायक नायक के मार्ग में बाधा ही डाल सकता है अन्ततः उसे नायक से पराजित होना ही है। पश्चिमी नाटक में घटनाओं की परिणिति सुखान्त तथा दुःखान्त दोनों ओर हो सकती है। यहाँ घटनाओं का घात-प्रतिघात ही अधिक होता है।

एकांकी की कथावस्तु नाटक की कथावस्तु से भिन्न होती है। एकांकी के पास समिति समय एवं स्थान है। जिसमें उसे नाटक की विस्तृत घटनाओं की व्यंजना उपस्थित करनी है। अतः एकांकी का प्रारम्भ तब होता है, जब आधी से अधिक घटना समाप्त हो जाती है। यही कारण है कि एकांकी की कथावस्तु में प्रारम्भ से ही कुतूहल की अपरिमित शक्ति संचित रहती है। कथानक तीव्रता से अग्रसर होता है तथा एक-२ घटना में ही घनीभूत हो जाता है। बीती घटनाओं की व्यंजना चुम्बक की भाँति संवेदना को आकर्षित करती हैं। एक-२ भाव-भंगिमा में वर्षों की घटनाएँ स्पष्ट होती हैं। सम्पूर्ण जीव एक घटना में ही उभर जाता है। इस प्रकार के घटना प्रदर्शन में चरम सीमा विद्युत गति से चमक उठती है। उत्सुकता की आग लगते ही घटना की आग फुहार की तरह उठती है और चरम बिन्दु पर एक निश्चित ऊँचाई पाकर समाप्त हो जाती है। एकांकी में चरम सीमा के बाद कुछ भी कहना प्रभावहीन हो जाता है। आधुनिक शिल्प के अनुसार एकांकी का रेखाचित्र कुछ इस प्रकार होगा :—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

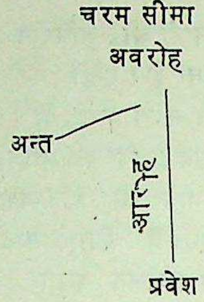

- **पात्र**—चरित्र-चित्रण के बाह्य अथवा आन्तरिक संघर्ष में ही नाटक का स्वरूप विकसित होता है। नाटक का संघर्ष पात्रों पर आधारित होता है। प्रधान पात्र को उभारने के लिए मध्यम पात्रों की सृष्टि की जाती है जो कथावस्तु से सम्बद्ध रहते हैं।

एकांकी में पात्रों की संख्या सीमित रहती है। प्रत्येक पात्र का अपना महत्व होता है। मनोरंजनार्थ पात्रों की सर्जना एकांकी में नहीं की जाती। नायक के साथ प्रतिनायक रहता भी है और नहीं भी रह सकता है। कथानक में जब वाह्य संघर्ष उभारना उपेक्षित रहता है, तो प्रतिनायक की कल्पना की जाती है। अन्यथा सहायक पात्रों से कार्य चलाया जाता है। ये सहायक पात्र एकांकी नीचे लिखे चार प्रकार के माने जाते हैं—(१) उत्तेजक, (२) माध्यम, (३) सूचक, (४) प्रभाव व्यंजक। उत्तेजक पात्र वे हैं जो कथा के विकास को उत्तेजना देते हैं। मध्यम पात्र मुख्य पात्र के मनोगत भावों को या तो स्वयं प्रकट करते हैं या प्रकट कराने में सहयोग देते हैं। सूचक या सहायक पात्र एकांकी में या तो रहस्योद्घाटन करते हैं अथवा प्रत्यक्ष विषयों को सूचना द्वारा प्रकट करते हैं। प्रभाव व्यंजक सहायक पात्र वे हैं, जो कहीं रहस्य संकेत अथवा भूमिका की भाँति कथावस्तु में यत्र-तत्र व्याप्त रहते हैं।

पात्रों की सृष्टि यथार्थपरक होती है। पात्रों को इसी धरती के व्यक्ति होना चाहिए। असाधारण गुणों से युक्त पात्रों से अभिप्राय: अमानवीय टाइप पात्रों से हैं। पात्रों में दर्शकों को आकर्षित करने की क्षमता हो। वे मनोवैज्ञानिक आधार से ही परिचालित हों। एकांकी में पात्रों की संख्या कथावस्तु की आवश्यकता के अनुरूप ही हो। पात्र योजना इस भांति बहुत ही मनोवैज्ञानिक तथा यथातथ्य परक होनी चाहिए।

सम्वाद—पात्रों के स्वभाव तथा मनोवेगों को जानने के लिए एकांकी में सम्वाद रखे जाते हैं। सम्वाद एकांकी के आवश्यक तत्वों में हैं। सुन्दर और आकर्षक सम्वाद एकांकी की सरस अभिव्यक्ति करते हैं। नाटकीय परिस्थिति एवं वातावरण की सृष्टि के लिए भी सम्वाद व कथोपकथन की आवश्यकता होती है। एकांकी में नाटकीय तत्वों की सम्पूर्ण शक्ति कथोपकथनों में केन्द्रीयभूत रहती है। यही एकांकी की आत्मा है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एकांकी के सम्वाद संक्षिप्त तथा आकर्षक होते हैं। उनमें उल्लास तथा सजीवता रहती है। पात्रों की स्थिति के अनुकूल सम्वादों में पर्याप्त प्रभाव उत्पन्न होता है। कथोपकथन में एक भी शब्द अनावश्यक न हो। एक भी वाक्य अधिक न हो तथा पात्र वही कहें जिसे न कहने से कथानक का विकास असम्भव होता हो। अतः सम्वादों में निम्न विशेषताएँ डॉ० रामकुमार वर्मा ने अपनी पुस्तक एकांकी कला में रखी हैं।

(१) एकांकी में कथोपकथन संक्षिप्त हों उनमें अनावश्यक शब्दों और वाक्यों की भरमार न हो।

(२) कथोपकथन मर्मस्पर्शी, वाग्वैदग्ध्यपूर्ण हों। इससे एकांकी में सजीवता का संचार होता है।

(३) कथन में चरित्र की चारित्रिकता को प्रकट करने की पूर्ण शक्ति होनी चाहिए।

(४) कथोपकथन एकांकी के कथा सूत्र को विकसित करने वाले हों।

(५) उनमें निम्न कोटि का वाद-विवाद हो। यदि विवाद अपेक्षित हो तो वह कलात्मक अवश्य रहे।

(६) व्याख्यान, उपदेश तथा लम्बी वाक्यावली से कथोपकथन मुक्त रहें!

(७) स्वगत का प्रयोग आज अस्वाभाविक, अनावश्यक तथा अवांछनीय है। स्वगत का प्रयोग यदि अपेक्षित हो तो वह अस्वाभाविक न रहे।

(८) कथोपकथन रसानुभूति में बाधक रहते हैं।

(९) कथोपकथन पात्रों के भावों को प्रकट करने में सक्षम हों।

इस प्रकार एकांकी में कथोपकथन का स्थान तथा महत्व स्पष्ट है।

नाटकीय संकेत—अभिनेयता उभारने में नाटकीय संकेतों का विशेष योगदान रहता है। प्रसाद के पश्चात् के नाटककारों में नाटकीय संकेत देने की प्रथा चली। रंग-संकेतों की ओर ध्यान देने वाले नाटककारों में डॉ० रामकुमार वर्मा, सेठ गोविन्द दास, लक्ष्मी नरायण मिश्र तथा भुवनेश्वर प्रसाद प्रमुख हैं। अब तो सभी नाटककार इन संकेतों का प्रयोग करते हैं। नाटकीय संकेतों से अभिनेताओं तथा प्रस्तुत कर्ताओं से विशेष सहायता मिलती है। रंग-संकेतों से रंग-मंच की व्यवस्था भी होती है। इससे मंच पर एकांकी की आवश्यक सामग्री तथा दृश्य एवं वातावरण का ज्ञान हो जाता है।

रंग संकेतों से अभिनय में सहायता प्राप्त होती है। पात्रों के हाव-भाव, वेश-भूषा, उठने-बैठने तथा चलने की रीति उनकी भाव भंगी आदि का उल्लेख रंग संकेतों में रहता है। पात्रों की प्रकृति तथा रूप सज्जा एवं शारीरिक स्थिति का भी ज्ञान उनसे प्राप्त होता है। कथावस्तु के दुरूह एवं विस्तृत स्थलों को रंग संकेतों द्वारा स्पष्ट किया जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इनसे एकांकी में प्रवाह तथा सजीवता आती है। कथोपकथनों द्वारा जिन तत्वों का स्पष्टीकरण एकांकी में नहीं हो पाता है। उनका स्पष्टीकरण रंग संकेतों द्वारा किया जाता है।

आवश्यक तत्व—एकांकी नाटकों की टेकनीक अंग्रेजी नाटकों की देन कही गयी है। डॉ० एस० पी० खत्री, अमरनाथ गुप्त, तथा डॉ० नगेन्द्र के मत से यह बात स्पष्ट है। एकांकी की विधा इस प्रकार पाश्चात्य नाट्य विधा पर आधारित एक स्वतन्त्र विधा है। एकांकी को स्वतन्त्र विधा न मानते हुए चन्द्रगुप्त विद्यालकार का मत है—एकांकी को कहानी का लघु संस्करण मात्र मानना उचित है। उन्होने एकांकी को बहुत सरल विधा माना है। इनके मत से एकांकी साधारण वार्तचीत स्तर की विधा है, जिससे मनोरंजन होता है। श्री सद्गुरुशरण अवस्थी एकांकी की विधा का स्वतन्त्र अस्तित्व मानते हैं। डॉ० रामकुमार वर्मा का मत इस प्रकार है। —एकांकी नाटक में अन्य प्रकार के नाटकों से विशेषता होती है। उसमें एक ही घटना होती है और वह घटना नाटकीय कौशल से ही कुतूहल का संचय करते हुए चरम सीमा तक पहुँचती है। इसमें कोई अप्रधान प्रसंग नहीं रहता। एक-२ वाक्य और एक-२ शब्द प्राण की तरह आवश्यक रहते हैं। पात्र चार या पाँच ही होते हैं। जिनका सम्बन्ध नाटक की घटना से रहता है। यहाँ केवल मनोरंजन के लिए आवश्यक पात्र की आवश्यकता नहीं। प्रत्येक व्यक्ति की रूप रेखा पत्थर पर खिची रेखा की भाँति स्पष्ट और गहरी होती है। विस्तार के अभाव में प्रत्येक घटना कली की भाँति खिलकर पुष्प की भाँति विकसित हो उठती है। उसमें लता के समान फैलने की उच्छृंखलता नहीं।

निष्कर्ष—इन सभी विद्वानों के मतों का परीक्षण कर यह माना जा सकता है कि एकांकी में एक ही घटना होती है। वह घटना कुतूहल का संचय करती हुई चरम सीमा पर पहुँचती है। उसमें गौण प्रसंगों के लिए स्थान नहीं होता है। पात्रों की संख्या सीमित तथा सुसम्बद्ध रखी जाती है। घटनाओं में अनुपात रहता है जो विकसित होकर अन्तर्द्वन्द्व की अवतारणा करता है। चरम बिन्दु के पश्चात् एकांकी का अन्त हो जाता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि एकांकी की विधा की अपनी स्वतंत्र टेकनीक है। वह स्वतंत्र रूप से साहित्य का अंग है। यह भी स्पष्ट है कि एकांकी की विधा ही आधुनिक जीवन को अभिव्यक्ति प्रदान करने में समर्थ है।

एकांकी के शिल्प पर तथा उसके स्वरूप पर विचार करने के पश्चात् उसका अध्ययन सहज बन जाता है।

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

प्रश्न १—साहित्य की अन्य विधाओं से नाट्य-शैली की भिन्नता सिद्ध कीजिये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रश्न २—नाट्य-शैली की विशेषता साहित्य की अन्य विधाओं से किस प्रकार भिन्न हैं ?

प्रश्न ३—एकांकी शिल्प पर संक्षिप्त प्रकाश डालिये ?

प्रश्न ४—नाटक में अभिनय तथा अभिनेयता में अन्तर स्पष्ट कीजिये ?

प्रश्न ५—हिन्दी नाटक : उद्‌भव और विकास पर एक संक्षिप्त लेख लिखिये ।

प्रश्न ६—नाटक की उत्पत्ति पर अपने विचार प्रकट कीजिये ?

जय आदित्य नाटक का कथासार

प्रथम अंक—जय आदित्य नाटक के प्रथम अंक का पर्दा खुलते ही नाटक की नायिका अपने पिता महाराज प्रभाकर वर्धन के प्रासाद के बाहरी कक्ष में नृत्य करती हुई प्रदर्शित है । कक्ष की रूपरेखा तथा वस्तु सज्जा से नाटककार नृत्यमयी वातावरण की सृष्टि करता है । चौदह वर्षीया राजकुमारी राजश्री को भी नाटककार पूर्ण रूप से सुसज्जित वेश में प्रस्तुत किया है । उनके मुख पर हल्की मुसकान, केशों में पुष्प-हार, मस्तक पर केसर की पत्रावली, बड़े-बड़े नेत्रों में अंजन, ओठों पर सुराग रंजन, चिबुक पर कस्तूरी विन्दु कानों में शिरीष कलिकाएँ, कंठ में रत्नहार, कटि किंकणी, पैरों में नूपुर । नील चीनांशुक की कंचुकी, शृङ्गार रस के मात्र स्थाई भाव की भाँति वक्षस्थल जिसमें संचारियों का योग नहीं है । बैगनी रंग का उत्तरीय और हरित-अधोवस्त्र, पैरों में जावक । इस रंग संकेत द्वारा नाटककार आगामी कथा का अभास देता है । शृङ्गार रस की प्रतिमूर्ति राजश्री विवाह योग्य होने जा रही है । उसमें रूप सज्जा का भाव आ गया है । यही आगामी घटना राजश्री का विवाह है । नाटककार ने पूर्ण मनोवैज्ञानिक परिवेश में कथावस्तु का उद्‌घाटन किया है ।

नृत्य में गान की समाप्ति पर ही राजश्री की अन्त रंग सखी मेनका मंच पर प्रविष्ट होती है । ढोड़ी राग की चर्चा करते हुए दोनों सखियाँ शृङ्गारिक वार्ता में तल्लीन हो जाती हैं । राजश्री की विरसता और मेनका की उद्दीपक वार्ता में ही कन्नौज के राजकुमार ग्रह वर्मा के साथ राजश्री के संबंध की सूचना प्राप्त होती है । जो बाद में सत्य घटना बन जाती है । इस प्रकार कथावस्तु का पूर्वाभास देकर नाटककार नाटकीय वातावरण की सृष्टि करता चलता है । दृश्य में घटना परिवर्तन की दृष्टि से नाटकीय वातावरण प्रस्तुत करने हेतु नाटककार ने इस शृङ्गारिक प्रसंग में एक बाधा उपस्थित कर दी और नृत्य कथा के बाहर बाईं ओर से एक तीर जमीन पर गिरा । तीर की नोंक पर मालवाधिपति कुमार देव गुप्त का राजश्री के नाम प्रेम-पत्र बँधा हुआ प्राप्त होता है । जिसमें देव गुप्त राजश्री से प्रणय-निवेदन के साथ साथ प्रेम स्वीकार न करने पर धमकी भी देता है । इसी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समय हर्ष का प्रवेश होता है। हर्ष अपनी प्रिय बहिन का दुलार करते हैं, पर उसका क्रोधित मुख देखकर चिन्तित हो उठते हैं। समाचार जानकर वह पूर्ण कौशल से कार्यारम्भ कर देते हैं। वह मानव के दो अन्य कुमार, जो हर्ष के पास ही रहते हैं, माधव गुप्त और कुमार गुप्त जो मेनका द्वारा बुलवा लेते हैं। इसी बीच राजश्री से बातचीत करके हर्ष यह निर्णय ले लेते हैं कि देव गुप्त प्राचीर के बाहर ही कहीं छिपा खड़ा है। हर्ष द्वारा देव गुप्त के दुस्साहस का उचित प्रतिकार करने का आश्वासन देने पर राजश्री अपने भाई पर अभिमान प्रकट करती है। हर्ष के होनहार भविष्य की सूचना इससे ही मिल जाती है। राजश्री भी कहती है -- "मुझे ऐसे भाई पर अभिमान है।" मेनका द्वारा देव गुप्त के भाइयों के द्वार पर आने की सूचना पाकर हर्ष राजश्री से भीतर जाने को कहते हैं तथा देव गुप्त का भेजा हुआ पत्र पढ़ते हैं—"मैं आपके पिता से विवाह का निवेदन करूँगा। यदि उन्होंने स्वीकार नहीं किया तो मैं आपका बलपूर्वक अपहरण करूँगा। (स्वगत) देवगुप्त को सम्भवतः यह ज्ञात नहीं है कि राजश्री के हरण के स्थान पर स्वयं उसके प्राणों का हरण होगा मेरी बहन राजश्री का अपमान……।" इससे देवगुप्त एवं हर्ष दोनों के चरित्रों पर प्रकाश पड़ता है। माधव गुप्त और कुमार गुप्त से बातचीत के मध्य भी हर्ष के कुशल प्रशासक होने का गुण प्रकट होता है। दोनों को विदाकर हर्ष देवगुप्त और उसके भाइयों को चरित्रों की तुलना करता हुआ जो सम्वाद कहते हैं उससे हर्ष के चरित्र का एक प्रमुख पहलू उद्घाटित होता हैं। वह टहलते हुए कहते हैं—"भाइयों के कर्त्तव्य के कृपाण पर स्नेह का आवरण है। जिस राज्य के नवयुवक अपना कर्तव्य नहीं पहचानते वे अपने साथ अपने राज्य को भी नष्ट कर देते हैं।" इसी समय सेनापति सिंहनाद हर्ष को मालवा से आया हुआ पत्र देते हैं। जिसमें देवगुरु के पिता ने अपने पुत्र के दण्ड की स्वयं व्यवस्था कर दी है। इस अंक में हर्ष और देवगुप्त का वार्त्तालाप नाटकीय शिल्प को उठाने वाला है। नायक और प्रतिनायक दोनों अपने पूर्ण स्वरूप में हैं। अतः परस्पर विरोधी होने से उनका वार्त्तालाप मुखर हो गया है? हर्ष बहिन के अपमान से क्रोधित होकर भी गुप्त पत्र के अनुरोध से कर्त्तव्य में बँधा है। देवगुप्त एकाकी प्रेम में अन्धा होकर जो कार्य कर बैठा है, उससे बच निकलने की स्वाभिमानी कोशिश करता है जो उसे अहंकार के कगार पर खड़ा कर देती है। आज्ञा बिना दूसरे राज्य की सीमा में घुसने वाले को दस्यु या चोर बताकर हर्ष दण्ड की बात उठाते हैं। देवगुप्त राजाज्ञा के सहारे दण्ड देने की बात स्वीकार कर उसका उत्तर देने की बात कहता है। हर्ष अपनी बहिन के आंसुओं की संख्या के बराबर देवगुप्त के शरीर से रक्त की बूंदें गिराने की बात कहता है तो देवगुप्त उन्हें युद्ध भूमि में गिराने का निमंत्रण देता है—"ये रक्त की बूंदें यदि रणभूमि में गिरें तो मैं अपने को धन्य समझूंगा।" इस पर हर्ष का उत्तर भी नाटकीय है—"तुमने स्वयं अपना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कार्यक्षेत्र रणभूमि नहीं रंगभूमि चुना है। तुम रणभूमि के योग्य भी नहीं रह गये।" मालवाधिपति महासेन ने गुप्त पत्र में देवगुप्त को मालवा से निष्कासित कर थानेश्वर से भी निष्कासित करने की जिज्ञासा प्रकट की है। इस पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता हुआ देवगुप्त अपना अपमान कर देता हैं। हर्ष उसको चेतावनी देते हुए कहते हैं—"जो पुत्र पिता के सम्मान की रक्षा नहीं कर सकता, वह पशु से भी हीन है।" इस प्रकार प्रथम अंक के अन्त में महासेन की इच्छानुसार हर्ष देव गुप्त को अपनी राज्य की सीमा के बाहर भेज देते हैं। सेनापति सिंहनाद के साथ देवगुप्त गर्व से चलता हुआ जाता है जिससे उसके चरित्र का अहंकारी गुण ही प्रकट होता है। इस पर हर्ष अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करते हुए कहते हैं— "अहंकार जीवन को उसी प्रकार नष्ट कर देता है जैसे भूकम्प का एक ही झटका बड़े से बड़े महल को धराशायी कर देता है।

द्वितीय अंक—प्रथम अंक के दो वर्ष बाद ६०५ ई० में द्वितीय अंक का पर्दा कन्नौज के राजा गृह वर्मा के महल में उठता है। गृह वर्मा और उनकी धर्म पत्नी राज्यश्री के मध्य शृङ्गारिक वार्त्तालाप चल रहा है। राज्यश्री के शृङ्गार के लिए नाटककार ने यहाँ भी विस्तृत रंग संकेत दिये हैं। अब वह विवाहित है। अपने कक्ष में बैठ कर वीणा वादन करती है जिसकी प्रशंसा गृहवर्मा करते हैं और वार्त्तालाप के लिए अवसर प्राप्त हो जाता है। इस अंक में गत दो वर्षों की घटनाओं की सूचना प्राप्त होती है। वैवाहिक सूचना के साथ ही गृहवर्मा के सम्बाद से राज्यश्री के सौंदर्यमय व्यक्तितत्व का तथा राज्यश्री के सम्वाद से गृह वर्मा के पौरुषपूर्ण व्यक्तित्व का उद्घाटन होता है। गृहवर्मा राज्यश्री के रूप की प्रशंसा करते हुए कहते हैं।

"तुम सामान्य राजकुमारी हो ? यदि संसार के समस्त पुष्पों की शोभा इन्द्रधनुष में गूंथ दी जाय तो वह सम्भवतः तुम्हारे चरणों की छाया के समान होगी।" दूसरी ओर राज्यश्री के मानस पर गृहवर्मा की छवि इस प्रकार है—

"जय-जयकार तो आपका हो रहा होगा। आपका बल, विक्रम, सौन्दर्य और चरित्र तो चारों दिशाओं का शृङ्गार बन गया है।" वार्त्ता के दौरान शृंगार में राजनीति घुस आती है। गृहवर्मा गौड़ वंशीय शशांक तथा मालवा के गुप्त वंशीय देव गुप्त के बीच हुई मैत्री की बात करते हैं। इस पर राज्यश्री देव गुप्त के साथ विवाह के पूर्व हुई प्रेम पत्र की घटना बताकर कथा सूत्र जोड़ देती है। थानेश्वर के महाराजा प्रभाकर वर्द्धन के निधन से इन दोनों की शक्ति और भी बढ़ गयी है और दोनों कन्नौज पर आक्रमण करने की योजना बनाते हैं। इस वार्तालाप के चलते ही सेनापति सूचना देते हैं—"राजनीति ने कूट-नीति का रूप ले लिया है महाराजा थानेश्वर नरेश श्री प्रभाकर वर्द्धन की मृत्यु की सूचना जैसे ही शत्रु राज्यों को मिली वैसे ही मालवा के देवगुप्त और गौड़ वंश के शशांक ने हमें निर्बल समझकर हम पर आक्रमण कर दिया। उन दोनों की सम्मिलित सेना हमारे कन्नौज राज्य की सीमा पर है।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस अचानक आक्रमण से सेनापति एवं ग्रहवर्मा कुछ चिन्तित प्रतीत होते हैं। नाटककार कथावस्तु का पूर्वाभास देता है। ग्रहवर्मा अवसर की गुरुता समझकर युद्ध हेतु तत्काल तत्पर हो जाते हैं। राज्यश्री अपने प्रियतम को युद्ध विदा देती हुई कहती है—"जाइए, स्वामी रणचन्डी आपके शस्त्रों में शासन ग्रहण करें और आपकी विजयश्री राज्यश्री की भाँति आपका अनुगमन करें।" गृहवर्मा के जाने की दिशा में देखती है। अपने मन का आवेग कम करने हेतु वह कान्यकुब्ज वंश की कीर्ति का गान सुनती है। यह आवेग उसके मायके की घटनाओं से और भी बढ़ा हुआ है। पिता की मृत्यु के बाद दोनों भाई राज्य से विमुख हो गये हैं। बड़े राज्यवर्द्धन राज्यपाठ छोड़कर संन्यास ग्रहण करना चाहते हैं। बड़े भाई के बिना हर्ष भी रहना नहीं चाहते हैं और इस प्रकार वहाँ का राज्य राम वन-गमन पर हुए अयोध्या के राज्य-सा हो गया है। कुन्तल को वह यहाँ की परिस्थिति बताकर वह विदा करती है और अपनी माँ का उत्तरीय पूजा घर में सजाती है। इसी बीच नेपथ्य भयंकर अट्टहास से गूँज उठता है। सम्पूर्ण वातावरण चीख पुकारों से भर उठता हैं। कामांध देवगुप्त प्रकट होकर राज्यश्री के सम्मुख प्रणय निवेदन करता है। देवगुप्त के सेनापति मुक्तिभद्र से अपने पति की हृदय-हत्या की सूचना पाकर राज्यश्री अपना कर्त्तव्य निर्धारित कर लेती है। देवगुप्त की चेष्टाओं से ऊबकर राज्यश्री दन्तिका से उस पर प्रहार करती है। मुक्तिभद्र उसका हाथ पकड़ लेता है जिसके कारण वह अचेत होकर गिर जाती है और द्वितीय अंक के अंत में देवगुप्त राज्यश्री को जेल यातना देने की आज्ञा देता है ताकि वह समर्पण कर सके।

तृतीय अंक—तृतीय अंक में जल्दी-जल्दी घटित होने वाली तृतीय अंक विन्ध्याटवी के दिवाकर मित्र के आश्रम में उद्घटित होता है। उनके शिष्य सुबन्धु एवं तारक द्वारा पूर्वी भाग में भीषण आग लगने की सूचना प्राप्त होती है। इस आग को बुझाने तथा नीड़ों में बैठे पक्षियों को बचाने में आचार्य दिवाकर मिश्र रात भर व्यस्त रहते हैं। इससे नाटककार महर्षियों के जीव, दया, प्रिय व्यक्तित्व पर प्रकाश डालता है। सुबन्धु तारक को बतलाता है—

"वे ऊषाकाल में आये। उन्होंने कहा कि वे रात भर चारों शिष्यों के साथ अग्निहोम का भाग रोकते रहे और अग्नि शून्य दिशा से जीव-जन्तुओं को भागने की सुविधा देते रहे।" अपने इस कष्ट को आचार्य मित्र अपना जीवन यश मानते हैं। इस वार्त्ता के बीच ही नाटककार एक नाटकीय मोड़ प्रस्तुत करता है। शिप्रानाम्नी पैरों से घायल एक स्त्री कृपाणी लिये हुए प्रकट होती है। उसके वस्त्रों में रक्त के धब्बे हैं। इस अवस्था में कोई आश्रम की तपोभूमि में प्रवेश नहीं कर सकता है अतः वह घबड़ाई हुई है पर उसकी बात सुनकर दोनों शिष्य उसे सान्त्वना देते हैं। उक्त स्त्री प्रेषित पतिका है। उसने अपने घर में डाकू को घायल किया है जिसकी सूचना देने वह अटवी-सामन्त व्याघ्रकेतु को देने जा रही है। इस वार्त्ता के बाद उक्त स्त्री एक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भिक्षु के साथ जो उसे वहाँ लाया था चली जाती है। यह घटना राज्यश्री की स्थिति का पूर्वाभास है। इससे दर्शक आगामी स्थिति को सहन करने हेतु तैयार हो जाते हैं। स्त्री के जाने के उपरांत ही एक सैनिक प्रवेश करता है। वह सम्राट हर्ष का सेवक है जो कन्नौज से मुक्त हुई राज्यश्री की खोज में इधर ही आ गया है। वार्त्तालाप से उस स्त्री के राज्यश्री होने का पूर्ण आभास हो जाता है—

तारक—"उसके हाथ में कृपाणी थी। उसके वस्त्र रक्त से भीग गये थे।

सैनिक—उसके पैरों में चोट लगी थी ?

तारक—हाँ, उसके पैरों में चोट लगी थी।

सैनिक—तब तो वह महादेवी ही होगी। लौह श्रृंखला से कटने जाने पर उनके पैर अवश्य क्षत-विक्षत हो गये होंगे।

इस घटना के बाद सैनिक शीघ्रता से चला जाता है और शिष्य आचार्य से हर्ष के आगमन तथा राज्यश्री के इधर आने की घटना का वर्णन करते हैं। आचार्य कन्नौज नरेश ग्रहवर्मा को अपना बाल्य बन्धु बताते हैं। वह राष्ट्र में हुए समस्त परिवर्तनों पर भी अपनी जानकारी प्रकट करते हैं। इसी बीच पास ही शंख ध्वनित होती है। महाराज हर्षवर्द्धन माधव गुप्त के साथ प्रवेश करते हैं। यहाँ राष्ट्र के शासक और आचार्य एक साथ उपस्थित हैं। नाटककार ने बड़े ही कौशल से दोनों की मान रक्षा करते हुए भारतीय संस्कृति की गरिमा स्थापित की है।

हर्ष—आचार्य दिवाकर मित्र को हर्ष का प्रणाम।

दिवाकर—कल्याण हो राजन् ! कल्याण हो ! मेरे आसन को सुशोभित करें।

हर्ष—भन्ते ! समस्त पृथ्वी को जीतने पर भी जिस सिंहासन पर हर्ष आसीन होगा, वह सिंहासन भी आपके सिंहासन से नीचा ही होगा। आचार्य का आसन श्रद्धा का केन्द्र है। उस पर बैठ कर हर्ष लांछित नहीं होगा। मेरे लिये तो पृथ्वी का आसन ही ऊँचा आसन है।

दिवाकर—राजन् ! आप वीरों में श्रेष्ठ हैं। पुरुष सिंह हैं आपके लिये तो गुणियों का हृदय ही आसन है।

श्रद्धा और स्नेह शरीर धारण कर आश्रम के वातावरण को सुशोभित करते हैं। नाटक में इस स्थल के परिसम्वाद बहुत ही उच्चकोटि के हैं। इसी बीच वह भिक्षु तथा शिप्रा पुनः वापस आते हैं और राज्यश्री द्वारा चिता बनाकर जलने की सूचना देते हैं। हर्ष विह्वल होकर उस ओर दौड़ते हैं। शिप्रा उन्हें आश्वासन देती है कि राज्यश्री को सखियाँ आचार्य के आने तक उन्हें अग्नि प्रवेश नहीं करने देंगी। इस प्रकार हर्ष के गमन के साथ ही तृतीय अंक समाप्त होता है।

चतुर्थ अंक—द्वितीय अंक के एक वर्ष बाद का है। अर्थात् ग्रहवर्मा की हत्या और राज्यवर्द्धन की मृत्यु के उपरान्त राज्यश्री एक वर्ष तक जेल यातना भोगकर कुलपुत्र द्वारा मुक्त कर दी गई है। जो विन्ध्याटवी की ओर भाग कर आयी है। राज्यश्री चिता पर चढ़ने का उपक्रम करती है तभी हर्ष पहुँच जाते हैं और राज्यश्री इस हर्ष-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दुःख मिश्रित आल्हाद की सम्भाल न सकने के कारण बेहोश हो जाती है। आचार्य दिवाकर मित्र के पहुँचने तक वह होश में लौटती हैं और एक पतिव्रता नारी के समान पति के बिना जीवित नहीं रहना चाहती है—"भाई हर्ष मैं कहाँ जाऊँ? पति-हीना नारी की संसार में कौन-सी गति है? मैं प्रार्थना करती हूँ कि मुझे अपने पथ से विचलित न करो। मुझे धर्म संकट में डालो।" हर्ष के निवेदन पर आचार्य दिवाकर मित्र धर्म की व्याख्या करते हुए कहते हैं—"पुत्रि। पति-स्मृति, पति-प्रेम से अधिक पवित्र है। पति का विरह पति के मिलने से अधिक शक्तिशाली है। तुम पति की स्मृति से जीवन को पवित्र बनाओ।"

इस ज्ञान से राज्यश्री काषाय धारण कर जीवित रहने की बात स्वीकार करती है और नाटक दुःखान्त होते-होते सुखान्त हो जाता है।

जयादित्य नाटक में भारतीय एवं पाश्चात्य नाट्य-शिल्प

भारतीय एवं पाश्चात्य नाट्य-शिल्प की विस्तृत जानकारी नाटकीय तत्वों के अन्तर्गत दी जा चुकी है। उत्तर की सम्पूर्ति के लिये उसका ज्ञान आवश्यक है। भारतीय दृष्टि से नाटक के तीन तत्व ही उसका शिल्प है। वस्तु, नेता, एवं रस। पाश्चात्य नाट्य शास्त्री नाटकीय शिल्प के अन्तर्गत ६ तत्व, वस्तु चरित्र-चित्रण, देश काल, वातावरण, उद्देश्य तथा शैली मानते हैं। डॉ० वर्मा ने उक्त सभी तत्वों का नाट्य-शिल्प में मंजुल समन्वय किया है, जिससे उन्हें पृथक् नहीं किया जा सकता है। वे एक दूसरे से घुल मिल गये हैं।

कथावस्तु की महत्ता दोनों ही देशों के विद्वान् स्वीकार करते हैं। डॉ० वर्मा ने भारतीय संस्कृति के आधार पर उसका चयन किया है तो कौतूहल, संघर्ष एवं चरमसीमा के द्वारा विकास कर उन्होंने उसे पाश्चात्य नाट्यवस्तु के निकट पहुँचा दिया है। जीवन की यथार्थता पर आधारित आदर्श का पालन करते हुए वह कथा-वस्तु का विकास वाह्य तथा आन्तरिक संघर्ष द्वारा करते हैं जिसमें कौतूहल एवं जिज्ञासा के लिए पर्याप्त अवसर प्राप्त हो जाता है। नाटक के प्रारम्भ में ही देव गुप्त द्वारा बान की नोंक पर प्रेम पत्र बाँधकर राज्यश्री के पास पहुँचाना तथा हर्ष द्वारा उसे देश के बाहर निकलवा देना जिज्ञासा उत्पन्न करता है कि क्या देव गुप्त भविष्य में कुछ नहीं करेगा। इसी प्रकार तृतीय अंक में शिप्रा का आगमन राज्यश्री के लिये कौतूहल बन जाता है। उसे देखने वाला और न देखने वाला दोनों भ्रम में पड़ जाते हैं। हर्ष तो विह्वल हो उठते हैं। इस प्रकार कथावस्तु में नाटककार डॉ० रामकुमार वर्मा ने भारतीय और पाश्चात्य नाट्यशिल्प का सुन्दर संयोगीकरण किया है।

भारतीय नाट्यशिल्प का नेता ही पाश्चात्य नाट्यशिल्प में चरित्र चित्रण है। भारतीय नाटक में नेता ही प्रधान होता था। जिसको केन्द्र बिन्दु मानकर नाटक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घूमता रहता था। पाश्चात्य नाट्य शिल्प में यह एकरूपता बिखर गयी, और पात्रों मे बँट गयी। अतः चरित्र-चित्रण पर बल दिया जाने लगा। डॉ० वर्मा ने हर्ष के महिमामहिम व्यक्तित्व को उद्घाटित करने के लिए ही नाटक लिखा है। नेता का उपयोग भरपूर है तथा उन्होंने मनोविज्ञान के आधार पर चरित्र-चित्रण भी किया है। पाश्चात्य नाट्यशिल्प में चरित्र-चित्रण का तत्व मनोविज्ञान को विशेष महत्व देता है। डॉ० वर्मा के सभी पात्र मनोविज्ञान की कोटि में खरे उतरते हैं। वह चरित्र-चित्रण में संस्कारों पर विशेष बल देते हैं। उनके विचार से संस्कार जन्म से तथा प्रभाव से दोनों प्रकार बनते हैं। जन्मजात सँस्कार अधिक स्थाई होते हैं। इसे नाटक में विभिन्न कोटि के पात्र अपने-अपने संस्कारों के मनोविज्ञान में बँधे हैं। इस दृष्टि से दोनों देशों के नाट्य शिल्प का समन्वय है।

भारतीय दृष्टि से तीसरा तत्व रस है। रस आनन्द को कहते हैं। आनन्द, दुःख पूर्ण प्रसंग में भी उससे बार-बार जुड़ने की जो अनुभूति है अथवा संतोष की अवधारणा है उसी को कहते हैं। इस नाटक में श्रृङ्गार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, वीभत्स सभी प्रकार की स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। नाटक के प्रारम्भिक तथा द्वितीय अंक के प्रारम्भ में श्रृङ्गार अर्थात् दिवाकर मित्र के शिष्यों की उपस्थिति में हास्य, राज्यश्री तथा हर्ष द्वारा अपने दुर्भाग्य के चित्र में करुण, देवगुप्त द्वारा राज्यश्री को कामविभूत होकर दबोचने में रौद्र तथा वीभत्स एवं राज्यश्री एवं हर्ष द्वारा उत्साह प्रदर्शन में वीर रस का वातावरण प्रस्तुत किया गया है। इन सभी प्रसंगों में दर्शक को आनन्द ही प्राप्त होता है। अतः नाटक में इसकी स्थिति से इन्कार नहीं किया जा सकता है। देश, काल, वातावरण, उद्देश्य एवं शैली का उपयोग भी डॉ० वर्मा ने उचित प्रकार किया है। इन सभी तत्वों पर अत्यन्त पर्याप्त सामग्री दी गयी है जो इस प्रश्न के उत्तर हेतु सहयोगी बन सकती है।

इस प्रकार नाटकीय तत्वों में कथावस्तु में रोचकता, प्रवाह, गति, जिज्ञासा तथा वृत्ति अनिवार्यता होती है जो प्रारम्भ, प्रयत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति, और फलागम की संज्ञा से जानी जाती है। जयादित्य नाटक में कथावस्तु की ये पाँचों अवस्थाएँ हैं। जयादित्य नाटक के चरित्र-चित्रण, कथोपकथन तथा स्वगत भाषण द्वारा उद्घाटित होते हैं। डा० वर्मा अपने को तटस्थ रख कर कथोपकथनों द्वारा चरित्रों का उद्घाटन करते हैं। जय आदित्य नाटक का कथानक लगभग तीन वर्षों में थानेश्वर, कन्नौज, तथा विन्ध्याटवी तक फैली है। इससे प्रतीत होता है कि देश-काल और वातावरण का पालन नाटककार ने नहीं किया है। कार्य की एकता स्थान तथा समय की एकता एवं उसके अनुकूल वातावरण का चित्रण करना ही देश, काल का प्रयोग है। जया आदित्य में हर्षकालीन वातावरण चित्रित है तथा संकलनत्रय का भी प्रयोग हुआ है। इसकी आत्मा शैली के शरीर में रहती है। नाटकीय शैली की परख रंग मचीय सफलता पर आधारित होती है। जयादित्य नाटक रंगमंचीय सफलता की दृष्टि से सफल है अतः शैली की दृष्टि से भी उसे सफल कहा जा सकता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है। अतः सभी भारतीय तथा पाश्चात्य नाट्य तत्वों का समन्वय तथा प्रयोग इस नाटक में किया गया है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि पाश्चात्य नाट्य शिल्प के सभी ६ तत्वों का समावेश जयादित्य नाटक में हुआ है। पाश्चात्य नाट्य शिल्प का उपयोग करते हुए भी डॉ० वर्मा ने भारतीय संस्कृति का दमन कहीं नहीं छोड़ा है। उनके पात्रों के चरित्रों का विकास इसी पृष्ठभूमि से हुआ है। भाषा-भाव तथा कार्य सभी दृष्टियों से कथानक का विकास भारतीय रीति-नीतिवत् हुआ है। अतः यह कहना उचित प्रतीत होता है कि उन्होंने भारतीय पादप को पाश्चात्य नाट्यशिल्प के थाले में रोप दिया है। भारतीय वस्तु के सभी रूपों का पाश्चात्य शिल्प में जैसे सुन्दर विकास डॉ० वर्मा ने किया है वैसा हिन्दी के बड़े नाटककारों द्वारा ही सम्भव हुआ है। दोनों के नाटकीय तत्वों के तुलनात्मक अध्ययन से यह बात सहज ही सिद्ध हो जाती है।

इस नाटक की कथावस्तु ऐतिहासिक है। इतिहास शुष्क होता है, जो मात्र तिथिओं तथा घटनाओं का उल्लेख करता है। उसके द्वारा ऐतिहासिक चरित्र के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता है। नाटककार इतिहास की ठठरियों में रक्त माँस भरता है। पर इसके लिए उसे काल विशेष के इतिहास का अध्ययन करना बहुत जरूरी होता है। जब तक कोई नाटककार उस काल का इतिहास नहीं जानता है जिसका वह नाटक लिख रहा है तब तक वह कल्पना में देश, काल और वातावरण का सही चित्रण नहीं कर सकता।

जय आदित्य का कथानक ऐतिहासिक है। नाटककार के शब्दों में—"इस महान् चरित्र पर नाटक की रचना की गयी। पात्रों के चरित्र-चित्रण में तत्कालीन परिस्थितियों की प्रतिक्रिया में जो मनोविज्ञान अंकुरित हुआ है उसका विकास पात्र विशेष के संस्कारों से पोषित हुआ है। घटनाओं का संघर्ष कुतूहल को जन्म देता है, जिससे नाटक की प्रगति में स्वाभाविक गतिशीलता देखी जा सकती है।

हर्ष के ऐतिहासिक व्यक्तित्व के अतिरिक्त इस नाटक में और अनेक पात्र ऐतिहासिक हैं। हर्ष के पिता पूष्यभूति वंश के प्रतापी व शक्तिशाली सम्राट थे। प्रभाकर वर्द्धन ने 'परमभट्टारक' तथा 'महाराजाधिराज' की उपाधियाँ भी धारण की थीं। सूर्य देव की उपासना से उन्हें तीन सन्तानें प्राप्त हुईं। राजवर्धन तथा पुत्री राज्यश्री। हर्ष के लिये राजज्योतिषी तारक ने घोषणा की थी—"मान्धाता के समय से लेकर अब तक चक्रवर्ती राजा के जन्म के लिये उपयुक्त ऐसे शुभयोग में सम्पूर्ण संसार में कोई दूसरा व्यक्ति उत्पन्न नहीं हुआ है।" इतिहास में इसकी पुष्टि भी होती है। प्रभाकर वर्धन ने अपनी पुत्री राज्यवर्धन को उन्होंने हूणों को पराजित करने के लिये भेजा और स्वयं मृत्यु को प्राप्त हुआ। राज्यवर्धन हूणों को पराजित कर लौटे तो पिता की मृत्यु से राज्यविमुख हो गये, पर तभी बहनोई ग्रहवर्मा की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हत्या मालवा के देवगुप्त और गौड़ राजा शशांक द्वारा किये जाने का समाचार पाकर राज्यवर्द्धन उधर बढ़े, पर शशांक की चाल में फंसकर मारे गये। राज्यश्री कन्नौज की कारागार से विन्ध्याटवी में भाग गयी। अकेले बचे श्री हर्ष ने अपनी बहिन को बचाया तथा बहनोई व भाई के हत्यारों का बध करके ४२ वर्षों तक शासन किया। नाटक में उक्त चार पात्रों के अतिरिक्त देवगुप्त, ग्रहवर्मा, दिवाकर मित्र, तथा तारक ऐतिहासिक पात्र हैं। इतिहास की इन घटनाओं में काल्पनिक विनियोग बड़े ही कौशल से किया गया है।

ग्रहवर्मा से राज्यश्री के विवाह और देवगुप्त के ग्रहवर्मा से शशांक के साथ हुए युद्ध की घटनाओं को नाटककार ने कल्पना द्वारा मिला दिया है राज्यश्री द्वारा नृत्य और मेनका से शृङ्गारिक बातचीत विवाह की ऐतिहासिक घटना का काल्पनिक घटना का काल्पनिक विनियोग है। यदि इस काल्पनिक पूर्व नियोजन का आयोजन को हटा दिया जाय तो नाटक में उक्त ऐतिहासिक घटना सूखे पत्ते सी झर पड़ेगी। इसी प्रकार देवगुप्त और शशांक द्वारा कन्नौज पर चढ़ाई का औचित्य क्या है। शशांक से कन्नौज की शत्रुता है, पर मालव से थानेश्वर की मित्रता है अतः कन्नौज से भी मित्रता होनी चाहिए। मालव से कन्नौज की शत्रुता का कारण है राज्यश्री। इस कल्पना को प्रामाणिकता प्रदान करने हेतु नाटककार ने विवाह के पूर्व ही प्रेमपत्र भेजकर राज्यश्री से प्रणय निवेदन करने का अवसर प्रदान कर उच्च घटना का सुन्दर समन्वय किया है। यह प्रस्तुतीकरण मणि-कांचनवत् है। इतनी ही घटनाएँ प्रथम अंक में चरित्र चित्रण के लिये पर्याप्त अवसर प्रदान करती हैं। इससे ही आगे की कथावस्तु भी उत्पन्न बनी रहती है। मालवाधिपति द्वारा अपने पुत्र देवगुप्त का राज्य से निष्कासन तथा थानेश्वर से भी वैसी ही कल्पना करना काल्पनिक विनियोग है। नाटक ने इस प्रकार की सभी घटनाओं का तालमेल बैठाने का अवसर प्राप्त किया है। मालव कुमार के थानेश्वर आने की घटना की ऐतिहासिकता को नाटककार ने कल्पना द्वारा नाटकीय मोड़ दिया है। देवगुप्त के चरित्र से उसके भाई माधव और कुमार गुप्त की तुलना कराकर भी नाटकीयता को पर्याप्त अवकाश ही दिया गया है।

द्वितीय अंक में ऐतिहासिक घटना ग्रह वर्मा की पराजय है। राज्यश्री को बन्दी बनाकर कारागार में डालना भी ऐतिहासिक है। इन घटनाओं को 'कल्पना के रक्त-मांस से बड़े ही कौशल से सजाया गया है। ग्रह वर्मा के चरित्र की रक्षा करने हेतु नाटककार ने देवगुप्त को कूटनीतिज्ञ बनाया जिससे उसने छिप कर युद्ध में जाते हुए ग्रह वर्मा की हत्या करा दी। झाड़ियों वाला सम्पूर्ण प्रसंग काल्पनिक है, पर ऐतिहासिकता की रक्षा करता है। ग्रहवर्मा के युद्ध में जाने पर कन्नौज के राजग्रह में राजश्री की कार्यावली सभी काल्पनिक हैं। वह अपने पति के चित्र के सम्मुख खड़ी होकर —"प्राणनाथ ! बासन्ती दिवस की सन्ध्या भी नहीं हो पायी और

फा०—१०

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चिन्ताओं के मेघ आकाश में फिर आये। आप युद्ध क्षेत्र में चले गये। वहाँ आप अपनी ऐसी युद्ध कला दिखलाएँ कि भविष्य में शत्रु कभी सिर न उठा पाये।" राज्यश्री का शंका से भरना, मेनका द्वारा ढाँढस बँधाना, हर्ष के दूत का आना, माता यशोमति का उत्तरीय देना, चारणों से वंश गरिमा सुनना, ग्रह वर्मा के पराजय पर देवगुप्त और उसके सेनापति मुक्तिभद्र के साथ राज्यश्री का दन्तिका से युद्ध मूर्च्छा तथा अन्य इसी प्रकार की अनेक घटनाएँ काल्पनिक हैं। इतिहास में इनके लिये अवकाश ही नहीं होता है। इस प्रकार इस नाटक में कल्पना के वस्त्र में लिपटी इतिहास की सूखी लकड़ी शोभा को प्राप्त हो रही है।

तृतीय तथा चतुर्थ अंक में दिवाकर मित्र के आश्रम में हर्ष द्वारा राज्यश्री को प्राप्त करना ही ऐतिहासिक घटना है। इन अंकों को अग्निकांड, शिष्यों की वार्ता, शिप्रा की घटना तथा आसन ग्रहण करते समय भारतीय संस्कृति के नियोजन द्वारा सजाया गया है। इस प्रकार नाटककार ने देश काल, पात्र का ध्यान रखते हुए इतिहास को कल्पना के साथ घुला मिलाकर प्रस्तुत किया है। भारतीय और पाश्चात्य नाट्य शिल्प के विधिवत् संयोग से नवीन नाट्य तत्वों का उद्घाटन भी हुआ है। अतः नाटक में नाटककार डॉ० वर्मा की नाट्यकला एक नवीन रूप में प्रस्तुत हुई है।

जयादित्य नाटक में अभिनेयता तथा नामकरण

'जयादित्य' नाटक के नामकरण के सम्बन्ध में नाटककार ने भूमिकाओं में अपना मत इस प्रकार प्रकट किया है—

"आदित्य की उपासना से ही वर्धन वंश का विकास हुआ तथा आदित्य पर अधिक आस्था रखने के फलस्वरूप ही हर्षवर्धन ने कठिन कार्य सम्पादित किये। इसलिये नाटक का नाम जयादित्य रखा गया है।"

यह नाटक डॉ० वर्मा के एकांकी राज्यश्री का पल्लवन है। अतः नाटक प्रधान होकर भी नाटक में नायिका राज्यश्री का प्रभाव बना हुआ है और वह नाटक की प्रधान पात्र है। उसकी प्रधानता के कारण नाटक नायिका प्रधानवना भी कहा जा सकता है। पात्र तथा उद्देश्य को देखते हुए नाटक का नाम उचित प्रतीत नहीं होता है। भावना की दृष्टि से यह भले ही उचित माना जाय। बुद्धि इस शीर्षक को ग्रहण कर पचा पाने में समर्थ नहीं हो पाती है पर कल्पना की दृष्टि से सही है। यह नाटक ही इतिहास और कल्पना का मंजुल समन्वय है अतः शीर्षक की दृष्टि भी इस प्रकार उचित प्रतीत होती है। आदित्य के उपासकों के लिये अग्नि दाहक नहीं माँ की गोद के समान शीतल प्रतीत होती है। इसीलिये इस वंश की स्त्रियाँ अग्निदाह को अपना सौभाग्य मानती हैं। यशोमति ने पति की मृत्यु के पूर्व ही अग्नि प्रवेश किया तथा राज्यश्री पति की मृत्यु के उपरान्त अग्नि प्रवेश हेतु तत्पर है। हर्ष कहते भी हैं—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"आचार्य ! मेरे सभी प्रिय स्वजन संसार छोड़ चुके हैं। एकमात्र छोटी बहन राज्यश्री ही बची है। मुझे आशंका है कि पति की मत्यु हो जाने के कारण कहीं वह भी अपने को अग्नि में समर्पित न कर दे। उसके सामने अपनी जननी का आदर्श है जिसने अपने पति के आसन्न वियोग ही में अपने प्राणों की आहुति दे दी थी।"

प्रथम अंक में माता यशोमति अग्नि प्रवेश करती हैं। द्वितीय अंक में राज्यश्री भगवान जय आदित्य से अपने भाइयों की तथा पति के कुशल की कामना करती है। तृतीय तथा चतुर्थ अंक में हर्ष भी भगवान आदित्य से ही अपनी छोटी बहिन की रक्षा की कामना करता है तथा शीघ्रता से वहाँ पहुँच कर उसकी रक्षा करना चाहता है—"भगवान आदित्य मुझे किरणों की गति प्रदान करें। मैं वायुवेग से जाऊँ।" इस प्रकार आदित्य के तेज से प्रकाशित सम्पूर्ण कथावस्तु तथा उन्हीं के प्रभाव से प्रभावित सभी प्रमुख पात्र नाटक के शीर्षक की उपयोगिता सिद्ध करते हैं।

नाटक की कथावस्तु राज्यश्री के आस-पास घूमती प्रतीत होती है। पर उसका अवसान हर्ष के राज्यारोहण में होता है। जिसे अपने कुल देवता का बड़ा भरोसा है। उसका व्यक्तित्व भी आदित्य के समान चमकता है। अतः 'जय आदित्य' नाटक का शीर्षक उपयुक्त है।

अभिनय नाटक का प्रधान तत्व है। रंगमंच की सफलता के बिना नाटक की परिकल्पना नहीं की जा सकती है। भारतीय नाट्य शास्त्रों में उसे 'रूपारूपस्त-रूपकम्' एवं अवस्थानुकृति नाट्यम् कहा गया है। नाटक दृश्य काव्य है। ग्रन्थ काव्य से उसकी पृथकता करने वाला तत्व अभिनय ही है। अभिनेय होने के कारण नाटक का सम्बन्ध अभिनेता अथवा नट से रहता है। नट पर आधारित होने के कारण ही उसे नाटक कहा जाता है। अभिनय का प्रारम्भ अनुकरण से हुआ है। इसीलिये दशरूपककार ने इसे 'भावानुकृति नाट्यम्' कहा है।

भरतमुनि के मत से 'अभि' उपसर्गपूर्वक 'णी' धातु का अर्थ है सामने ले आना। इस प्रकार अभिनय का अर्थ है नाटक के प्रयोग में (शाखा, अंग, उपांग के सहित) नाटक के पूरे मान को प्रेक्षक के सामने ले आना। अभिनेता आंगिक वाचिक (शब्द) आहार्थ (वस्त्र एवँ रूप सज्जा) तथा सात्विक (भावात्मक) चार प्रकार के अभिनयों द्वारा नाटक के तात्पर्य को प्रेक्षक के सामने पहुँचाता है। इस प्रकार नाटक की सफलता मे दर्शकों का बहुत बड़ा हाथ है। वह नाटक का एक आवश्यक तत्व बन गया है। इस प्रकार रंगमंच की सीमाओं को देखते हुए अभिनेय नाटक में निम्न बातें होनी चाहिए—

(१) उचित आकार—हाड़ मांस के बड़े अभिनेताओं द्वारा खेला जाने वाला नाटक हाड़-मास के दर्शकों द्वारा देखा जाता है। अतः उसकी अपनी सीमाएँ रहती हैं। जय आदित्य नाटक में चार अंक ही दृश्य है। जिनका विस्तार तीन स्थानों में है, पर दृश्य सज्जा सरल है जिसे आसानी से सजाया जा सकता है सम्पूर्ण नाटक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दो-ढाई घण्टे में अभिनीत हो सकता है। एक बैठक में दर्शक इतने समय तक बैठ सकते हैं।

(२) **वस्तु संगठन**—अभिनेय नाटक के लिये संगठित कथावस्तु नितान्त आवश्यकता है। कथावस्तु के संगठन के लिये नाटककार घटनाओं का चयन केन्द्र-बिन्दुओं के माध्यम से करता है। जिससे पात्र के पूर्व जीवन का स्पष्टीकरण होता है। अतः अभिनेय नाटक में कथावस्तु का सम्पूर्ण भाग पूर्ण, पुष्ट, सोद्देश्य और नाटकीयता से सोद्देश्य रखा जाता है।

जय आदित्य नाटक में कथावस्तु तीन स्थानों तथा तीन वर्षों में फैली हुई हैं। इतने विस्तृत परिवेश में फैली होने पर भी कथावस्तु में संगठन है। कथावस्तु में घटनाओं फा विकास बहुत ही स्वाभाविक रूप से हुआ है। अतः इस दृष्टि से नाटक अभिनेय है।

(३) **कथानक के प्रकार**—कथानक का नाटक ऐतिहासिक, सामाजिक तथा पौराणिक तीन प्रकार का हो सकता है। ऐतिहासिक कथानका में उत्थान तथा पतन की स्थितियाँ अधिक रहती हैं। इससे अभिनेयता का विकास होता हैं। जय आदित्य एक ऐतिहासिक नाटक है! अतः उसे अभिनेयता की सुविधा है।

(४) **दृश्य विधान**—दृश्य विधान ऐसा होना चाहिए कि उसका संयोजन किया जा सके। दृश्यों का आकार क्रमशः होना चाहिए। उनमें रंग-मंच की वही साम्रग्री संयोजित रहे जिसके संयोजन से नाटक सफलतापूर्वक मंचित हो सके। असम्भव दृश्यों की कल्पना अभिनेय नाटक में रहे। इस प्रकार समुचित दृश्य विधान वस्तु नाटक रंगमंच के लिए उपयुक्त होता है। जय आदित्य नाटक के तीन अंक ही दृश्य हैं। उनमें अभिनेयता के लिये उचित अवसर है।

(५) **पात्रों की वक्तृता**—प्रेक्ष्यनाटक के पात्र संश्लिष्ट एवं भावव्यंजक में भाषा में तीर की भाँति चुभने वाले छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करते हैं। स्वगत कथन आकाश भासित तथा जनान्तिक का प्रयोग अब नाटक से अस्वाभाविक मानकर बहिष्कृत कर दिया गया है। नाटक में सम्वाद विधान स्वाभाविक रहे जिससे अभिनेयता को अभिनय के लिये पर्याप्त अवसर प्राप्त हो सके। जय आदित्य के सम्वाद उक्त गुणों से भरपूर है। जिनमें कथावस्तु को नाटकीय विकास देने के अलावा चरित्रो-द्घाटन करने की भी क्षमता है। उदाहरण के लिये प्रथम अंक में राज्यश्री और मेनका तथा तृतीय अंक में आचार्य दिवाकर मिश्र तथा हर्ष के बीच हुई वार्ता को लिया जा सकता है।

(६) **रंग निर्देश**—नाटक मे रंग निर्देश रंगमंच पर वातावरण तथा दृश्य सजाने के लिये ही होते हैं। इस प्रकार निर्देशों द्वारा देशकाल तथा स्थिति का पता प्रस्तुतकर्ता की मिलता है। इन रंग निर्देशों से ही नाटककार पात्रों का परिचय रूपाकार तथा आयु एवं वस्त्र सज्जा का आभास देता है। पात्रों के स्वाभाविक विषयों में भी बहुत बार संकेत कर दिया जाता है। अभिनय के सभी रूपों का निर्देश भी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इन्हीं के द्वारा होता है। इस नाटक में राज्यश्री का स्वरूप वर्णन प्रत्यक्ष तथा द्वितीय दोनों अंकों में विस्तार से दिया गया है, जो उसके स्वभाव तथा स्थिति को उभरता है। डॉ० वर्मा स्वयं एक अभिनेता रहे हैं। उन्होंने अनेकों नाटकों को निर्देशित भी किया है। अतः उनके नाटकों में अभिनेयता को उभारने वाले रंग निर्देशों का अभाव नहीं है। उनके रंग निर्देश नाटकीयता की दृष्टि से उपयुक्त है।

इस प्रकार सीमा, दृश्यांकन, स्वाभाविकता (देश काल) सम्वाद विधान संगीत, गीत तथा वातावरण, उद्देश्य तथा नाटकीयता सभी दृष्टियों से यह नाटक अभिनेय है। तृतीय तथा चतुर्थ अंकों को एक करके वार्त्ता कुछ हद तक कम भी किया जा सकता है। इससे नाटक में कसाव ही बढ़ेगा। इस प्रकार अभिनेयता की दृष्टि से जय आदित्य नाटक उपयुक्त ही कहा जायगा।

अभिनेय नाटक चरित्र का उद्घाटन करते हैं। चरित्र पात्रों को कहते हैं। पात्रों की संख्या यदि अधिक होती तो अभिनेय नाटक दर्शकों पर अपना उद्देश्य प्रकट प्रकट करने में असफल रहेगा। इस नाटक में लगभग १५ पुरुष पात्र तथा ४ स्त्री पात्र हैं। इनमें पुरुष पात्रों में हर्षवर्धन, देवगुप्त, ग्रहवर्मा, दिवाकर मित्र तथा महिल पात्रों में राज्यश्री ही प्रधान है। जिनके चरित्रों का उद्घाटन करने हेतु ही अन्या पात्रों को रखा गया है।

हर्षवर्धन—हर्ष का चरित्र इस नाटक में प्रेरणास्रोत है। वह नायक के साथ ही एक आदर्श पुरुष भी है। हर्ष का पुरुषत्व ही नाटक की सफलता का सम्बल है। मतभेद के बावजूद भी हर्ष का जन्म इतिहासकार ५८५ से ५९० ई० के बीच मानते हैं। वह किशोरावस्था (१६ या १७ वर्ष) में ही सिंहासनारूढ़ हो गये उनका राज्य उनकी आन्तरिक और शक्ति की कड़ी परीक्षा है। एक ओर परिवार के सभी सम्बल टूट रहे हैं दूसरी ओर शत्रु अपना सिर उठा रहे हैं। हर्ष को भग्न हृदय होकर भी कठिन सक्रिय भूमिका निभानी है। वह इस परीक्षा में खरे उतरते हैं और अपने पुष्यभूत वंश की गरिमा के अनुरूप ही स्वस्थ मर्यादाएँ स्थापित करते हैं। उनका व्यक्तित्व राजकुमार और सम्राट दो भागों में विभाजित है। उसके दोनों रूप बहुत आकर्षक हैं। उक्त दोनों रूपों में उनके व्यक्तित्व में निम्न गुण प्रधान है—

(१) वंश-मर्यादा रक्षक (२) सात्विक वीरता (३) मान रक्षक (४) कूटनीतिज्ञ (५) स्नहिल हृदय (६) भारतीय संस्कृति के पोषक (७) कुशल प्रशासक (८) त्याग (९) स्थिति प्रज्ञ (१०) कृतज्ञता।

वंश मर्यादा का गुण उनके व्यक्तित्व में प्रथम अंक के प्रारम्भ में ही प्रकट हो जाता है। वह अपनी अनुजा राज्यलक्ष्मी को पुकारते हुए उसकी नृत्यशाला में प्रविष्ट होते हैं। राज्य लक्ष्मी का क्रोधित चेहरा देखकर तथा कारण से वंश की मर्यादा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भंग होते देखकर उनका स्वहज रूप बदल जाता है और तमतमा उठते है— "अपमान ? किसने अपमान किया है हर्षवर्धन के रहते किसका इतना साहस हो सकता है कि वह उसकी बहिन राज्यश्री का अपमान करे" कोई भी वांशिम इसी प्रकार का विचार प्रकट करेगा। हर्ष के स्वभाव में अपनी वंश मर्यादा के प्रति उच्च आदर का भाव है। वह पीर हैं उनकी वीरता में द्वेष नहीं है। द्वेष नहीं है। द्वेष भाव से परे रहकर शुद्ध सात्विक वीरता का प्रदर्शन हर्ष में मिलता है। देवगुप्त के दर्पीले वाक्य सुनकर वह संयत है। उनके अधिकार में सभी कुछ हैं जो दर्पीले देवगुप्त का सिर तोड़ सकती है, पर वह संयम से काम लेते हैं तथा उचित व्यवहार कर अपनी मर्यादित शक्ति का परिचय देते हैं। इसी वीरता के बल पर हर्ष ने अपने शत्रुओं को पराजित किया तथा अपना गौरवमय शासन स्थापित किया। डा० वर्मा ने नाटक की भूमिका में लिखा है "इस महान् देश के इतिहास में हर्षवर्धन का व्यक्तित्व अद्धितीय है। विपत्तयों की घटाएँ जब चारों ओर से गर्जन करती हैं तब इस महान् सम्राट का साहस विद्युत की भाँति तड़प उठता है। उसका कृपाण विद्युत वेग सा शत्रुओं पर गिरता है और उनका हृदय विदीर्ण कर देता है। शत्रु राज्यों से चारों ओर से घिरे रहने पर उसने अपनी अकेली शक्ति से सबको पराजित कर समस्त उत्तरी भारत में अपना राज्य स्थापित किया और ४२ वर्षों तक ऐसा प्रतापी शासन किया कि किसी भी विरोधी शक्ति को सिर उठाने का साहस नहीं हुआ।"

मान रक्षक का गुण देवगुप्त के पिता महासेन की इच्छा की पूर्ति द्वारा वह करते हैं। वह मालवाधिपति महासेन द्वारा देवगुप्त के दण्ड का निर्देश पाकर अपनी ओर से कोई दण्ड नहीं देते और महासेन के मान को रक्षा करते हैं। अपनी बहिन राज्यश्री के मान की रक्षा तो वह जीवन भर करते रहते हैं। उनको कूटनीतिज्ञता का परिचय माधव गुप्त कुमारगुप्त से देवगुप्त के अपराध का पता लगाने तथा उसके दण्ड का निर्णय कराने से ही लगता है। वह अपनी कूटनीति के सहारे ही देवगुप्त को उसके भाइयों के द्वारा ही अपमानित कराते हैं। इस प्रकार विरोधी शक्ति से ही विरोधी शक्ति का मूलोच्छेदन कराने में वह सिद्ध हस्त प्रतीत होता है।

हर्ष का अपने परिवार पर अपार स्नेह है। वह मात्र बची बहिन के प्रति इस हद तक स्नेहतन्तु में बँधे हैं कि शत्रु को दण्ड देने की दुर्दर्शनीय लालसा को भी दबा देते हैं तथा विन्ध्याटवी में बहिन की खोज करने निकल पड़ते हैं। वह आचार्य दिवाकर मित्र से कहते हैं—

"आचार्य मेरे सभी स्वजन संसार छोड़ चुके हैं एकमात्र बहिन राज्यश्री ही बची है। मुझे आंशका है कि पति की मृत्यु हो जाने के कारण कही वह भी अपने को अग्नि में समर्पित न कर दे।" दिवाकर मित्र से हुई उनकी प्रारम्भिक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वार्ता उन्हें भारतीय संस्कृति का महान पोषक बनाती है। वह अपने विजयी सिंहासन को भी आचार्य के सिंहासन से छोटा बताते हैं। इस प्रकार जमीन पर ही बैठकर अपनी महानता को प्रकट करते हैं। कुशल प्रशासक का गुण तो उनके शासन काल की सफलता से ही प्रकट होता है पिता और बड़े भाई की मृत्यु और बहनोई की हत्या के तत्काल बाद वह थानेश्वर और कन्नौज दोनों राज्यों के कर्मचारियों को कुशलता से सम्भाल लेते हैं। सभी उच्च व छोटे कर्मचारी हर्ष में आस्था प्रकट करते हैं तथा उसकी सफलता ही अपना धर्म मानते हैं।

त्याग ही हर्ष की महानता है। वह विरोधियों को दण्ड देकर काषाय ग्रहण करने में अपनी बहिन का साथ देने को तैयार है। वह इस वचन की पूर्ति अपने सफलतम् शासन कार्य में करते भी हैं। अपनी स्थिति प्रज्ञता से वह एक ओर अपने वैभव के गर्व से विरत होते हैं तो दूसरी प्रत्युत्पन्नता से स्थिति पर काबू पाते हैं। स्थिति का सही निरीक्षण कर उसका हल खोजने में उनका कोई शानी नहीं हैं वह अपने में सफल व्यक्ति इसलिए भी है कि किसी के द्वारा कृत उपकारों का बदला देना वह जानते हैं। शिप्रा द्वारा बहिन राज्यश्री की प्राणरक्षा में सहायता देने के कारण वह उसे राज्यश्री की अंगरक्षिका नियुक्त कर देते हैं। हर्ष में मानवता के सभी गुण हैं। वह मानवीय गुणों से भरे—"सम्राट हर्षवर्धन में मानवता के सभी गुण आभूषणों की भाँति सुसज्जित थे। सम्राट हर्ष शक्तिशाली, पराक्रमी और साहसी तो थे ही, वे स्वयं कवि थे, विद्वान थे और दानवीर कर्ण की भाँति मुक्तहस्त से स्वर्णदान भी कर सकते थे।" हर्ष के बारे डॉ० राधाकुमुद मुकर्जी ने लिखा है "हर्ष के चरित्र में समुद्रगुप्त और अशोक दोनों के गुणों का समन्वय है। समुद्रगुप्त की भाँति विभिन्न दिशाओं में विजय प्राप्त करके उन्होंने सम्राट का पद प्राप्त किया तथा देश की ऐतिहासिक एकता को पुनः स्थापित किया। उसके उपरांत युद्ध को सदैव के लिये तिलांजलि देकर अशोक की भांति अपनी सम्पूर्ण शक्ति को शान्ति के कार्यों में लगाया और देश की भौतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति में योग देकर उसने संस्कृति, व्यक्तित्व तथा महानता को विकसित किया।"

राज्यश्री—नाटक की प्रधान स्त्री पात्र राज्यश्री सम्राट् हर्ष की सही रूप में बहिन है। वह हर्ष की भाँति ही कुलाभिमानी, कुलपुत्री, कुलवधू, कलाप्रिय, सरलादपिकसेर, भारतीय नारी सहज तथा मानिनी है। राज्यश्री का चरित्र भी हर्ष की भाँति दो भागों में बंटा है। विवाह के पूर्व और विवाह के बाद उसके व्यक्तित्व के दोनों पहलू आकर्षक है। एक से एक बढ़कर उसके व्यक्तित्व के दोनों रूप भारतीय ललनाओं के लिये आदर्श है। देवगुप्त द्वारा प्रणय निवेदन किये जाने पर वह आहत सर्पिणी की भांति फुफकार उठती है। अपने कुलशील की मर्यादा का ध्यान रखने वाली गर्व पूर्व ललनाओं का यह आचरण उचित ही है। वह मेनका से कहती है—"देवगुप्त! देवगुप्त का यह साहस? क्या उसने पुष्यभूति वंश की राजकुमारी को विलासिनी समझा है? यदि मेरी या पिता की स्वीकृति उसे प्राप्त

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नहीं हुई तो वह मेरा हरण करेगा ? (दाँत पीसकर) नीच·········नार की ।'' राज्यश्री के चरित्र में मर्यादा की रेखा खिंची है। वह अपने पिता तथा पति दोनों-दोनों परिवारों में उस रेखा का उल्लंघन नहीं करती है। यही विशेषता उसके चरित्र की प्रमुख विशेषता है। वह मर्यादाओं से बँधी हुई एक भारतीय नारी के गुणों से विभूषित है। जिसका आचरण कुल का सम्मान रखने में समर्थ है। अपने पिता तथा बड़े भाइयों की मर्यादा के अनुरूप कार्य करने से वह कुलपुत्री है तथा पति गृह में पतिकुल के अनुकूल आचरण कर वह कुलवधू है'। पति की हत्या के उपरान्त उसकी मर्यादा पर वही धूमकेतु पुनः उदय होता है, जो पिता के घर उदय हुआ था। इस बार भाई या अन्य कोई उसका रक्षक भी नहीं है। अपनी रक्षा उसे स्वयं करनी होती है। सब प्रकार के लोभ लालच से ऊपर उठकर वह शत्रु का प्रतिकार करके अपने को कुलवधू सिद्ध कर देती हैं।

राज्यश्री को संगीत, नृत्य, गायन, वादन का ज्ञान है। राग-रागिनियों के परिचय, स्वरमात्रा के ज्ञान तथा स्थितियों में भी मेनका को समझाती है। इससे स्पष्ट है कि वह संगीत के प्रति विशेष रुचि रखती है। पति के घर में रहकर भी वह अपने एकान्त को संगीत से ही भरती है—मेनका से वह कहती है —''क्यों री ? यह तेरा मालकोश राग है ? औड़व जाति के राग 'रे', 'रे' और 'द' भी जोड़ देती है। जैसे इन्द्र के साथ दो अप्सराएँ यह मालकोश नहीं है। मालकोश की भार्या ठोढ़ी है।'' संगीत में रुचि रखने वाली फूल-सी राजकुमारी, जो प्रथम अंक में अपनी सखी में बातें करते समय एक कोमलांगी नारी है। उसके आचरण एवं रुचि से ऐसा प्रतीत होता है कि वह कठोर स्थिति में मुरझा जायगी पर द्वितीय अंक में अपनी इज्जत पर हमला करने वाले के प्रति वह वज्र से कठोर बन जाती है। इसका बीजांकुर तो प्रथम अंक में देवगुप्त के पत्र से ही हुआ है। द्वितीय अंक में जब देवगुप्त उसके सम्मान को चोट पहुँचाता है तो वह अपने पति की हत्या की बात सुनकर भी वह हतप्रभ नहीं होती और दन्तिका से शत्रु पर प्रहार करती हैं। मूच्छित न होने पर वह बराबर प्रतिकार रत रहती है। संगीत के सुरों के साथ खेलने वाली रमणी का यह आचरण देखकर दर्शक रोमांचित हो उठता है। देवगुप्त के लम्पट आचरण से क्षुब्ध राज्यश्री का रूप देखिये—''चुप रह दुष्ट ! यदि एक शब्द भी आगे कहा तो यह (दन्तिका निकालकर) दन्तिका तेरे शरीर को काट देगी।''

राज्यश्री में एक भारतीय नारी की सभी विशेषताएँ पायी जाती हैं। उसमें पुत्री तथा पत्नी के दो रूप हैं। भारतीय नारी का गरिममय रूप मातृत्व के लिये अवकाश प्राप्त नहीं हुआ है। यद्यपि इसके लिये भी उसके व्यक्तित्व का गुण भी हिल्लोरें ले रहा है। संकट के समय, जब कि देवगुप्त ने सम्पूर्ण महल पर अधिकार कर लिया है, वह गायन के लिये एकत्र चारणों की सुरक्षा का ध्यान रखती है। अपने आश्रितों के प्रति सहज आचरण मातृत्व गुण के प्रति आस्था प्रकट करता है। भारतीय नारी पिता, पति तथा पुत्र रूपी पुरुष के सहारे अपनी जीवन नौका खेती है,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पर इन सहारों के टूट जाने पर लता के समान धरती पर गिर कर भी अपनी पकड़ मजबूत बनाये रखती है और सहारे वाले पेड़ की स्मृति में शेष जीवन व्यतीत कर देती है। राज्यश्री इस दृष्टिकोण से भी खरी उतरती है।

भारतीय नारी में कुल-शील, मर्यादा, प्रिय भाषण, सरलता पोषण, स्वभावमान तथा शुद्धाचरण के अलावा पिता, भाई तथा पतिपरायण होने का महान गुण होता है। वह एक पुरुष को छोड़ कर किसी अन्य पुरुष की आँख उठाकर नहीं देखती है। राज्यश्री के व्यक्तित्व में उक्त सभी गुण आभूषणों की भांति सुशोभित है। वह इन गुणों से मंडित है। पतिव्रता होना भारतीय नारी का सर्वोच्च गुण है। देवगुप्त द्वारा वह प्रेमभरी बातें कहने पर कहती है कि—"लंपट देवगुप्त ! एक पतिव्रता नारी के सामने तुझे यह शब्द कहते लज्जा नहीं आती ?" वह अपने पति की मृत्यु पर इस संसार में जीवित नहीं रहना चाहती हैं। चिता बनाकर अग्नि प्रवेश के लिये तत्पर है पर भाई की प्राणरक्षा की बात सामने आने पर वह एक कर्त्तव्य परायण नारी की भाँति पति की स्मृति को संजोकर जीवित रहना चाहती है। इस प्रकार राज्यश्री में भारतीय नारी के सभी गुण हैं। वह विदुषी तथा भारतीय नारी भी है। अन्तिम अंक में आचार्य दिवाकर मित्र द्वारा भाई के लिये जीवित रहने का प्रस्ताव रखने पर वह हल खोज लेती है जिससे उसकी पति आत्मा की सन्तुष्ट होगी तब भाई भी जीवित रह सकेगा। वह आचार्य से कहती है—"शोक का परित्याग करूँ ? तब मुझे काषाय-ग्रहण की आज्ञा प्रदान कीजिये।

इस प्रकार अपने आचरण से वह पारिवारिक खुशी वापस ला देती है।

आचार्य दिवाकर मित्र—आचार्य दिवाकर मित्र का चरित्र इस नाटक में अंकों में चित्रित हुआ है। वह एक त्यागी संत है जो कि आश्रम बनाकर विन्ध्याटवी में रहकर शिष्यों को शिक्षा प्रदान करते हैं। उनके व्यक्तित्व में जीव दया, समाज सेवी, आचार्य राष्ट्रप्रिय तथा मानवप्रिय सभी गुण विद्यमान हैं जिनके द्वारा कोई भी एक आदर्श मानव बन सकता है वह राजा न होकर भी राजाओं से बड़े हैं। तृतीय अंक में स्वयं हर्ष अपने सिंहासन से आचार्य का सिंहासन बड़ा मानता है। वह शिष्यों के श्रद्धा भोजन हैं। अपने आचार्य पद के द्वारा वह शिष्यों को सन्तुष्ट करके यह गुण संजोते हैं। जीव दया तो उनका स्वभाव है। रात भर पक्षियों को उड़ाना तथा अग्नि से उनकी रक्षा करने में वह अपने विश्राम तक का ख्याल नहीं रखते हैं।

शिप्रा अपने न्याय के लिये व्याघ्रकेतु के पास जाने पर भी आचार्य राजा के क्षेत्र में दखल नही देते हैं। हर्ष में एक महान शासक के लक्षण देखकर तथा उसके द्वारा राष्ट्र की ख्याति बाहर तक फैलने की बात जानकर ही वह राज्यश्री के पास स्वयं जाकर उसे चिता से उठा लाते हैं। उन्हें एक जीवन को बचाने की बड़ी चिन्ता है। इसीलिये वह राज्श्री का सन्ताप हर लेते हैं।

आचार्य विशुद्ध महात्मा है तथा भूत, भविष्य, वर्तमान को जानने वाले

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

त्रिकालज्ञ हैं। वह सभी की चिन्ता रखते हैं। सन्तप्त आत्माओं को सन्तोष प्रदान करना तथा भावी व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र का निर्माण करने की चिन्ता से सेवारत आचार्य का व्यक्तित्व बहुत गरिमामय है।

देवगुप्त—इस नाटक में प्रतिनायक हैं। उसके व्यक्तित्व के गुण प्रथम अंक से ही प्रकट होने लगते हैं। वह प्रेमी बनते-बनते एक कामातुर लम्पट वीर बनते-बनते एक अहंकारी, कूटनीतिज्ञ तथा एक राजनीतिज्ञ बनते-बनते कूटनीतिज्ञ तथा एक अच्छा मानव बनते-बनते दर्पी, घमंडी, दुर्विनीत, दुराचारी, षड्यन्त्र मार्गी तथा कुचक्री बन जाता है। अपनी इच्छा की पूर्ति में सफल होने के लये उसमें उत्साह, साहस, साधन जुटाने की सामर्थ्य तेज, बल, विक्रम तथा बुद्धि है पर मर्यादा, धैर्य स्वाभिमान तथा युद्ध पौरुष न होने से उसके उक्त गुण-अवगुणों में परिवर्तित हो गये और वह अपने अभिमांन में विफल रहा।

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

(१) जय आदित्य नाटक का कथासार लिखिये?

(२) "जय आदित्य नाटक में भारतीय एवं पाश्चात्य नाट्य आलोक शिल्प का मंजुल समन्वय हुआ है" सिद्ध कीजिये?

(३) नाटकीय तत्वों के आधार पर जय आदित्य नाटक की आलोचना कीजियें?

(४) इतिहास की ठठरियों में कल्पना का रक्तमाँस भरने में नाटककार डॉ० रामकुमार वर्मा एक कुशल शिल्पी हैं। युक्ति संगत परीक्षा कीजिये?

(५) जय आदित्य नाटक में चरित्र-चित्रण की विशेषता रहती है इस कसौटी पर जय आदित्य नाटक को परखिये?

(६) अभिनय की दृष्टि से जय आदित्य नाटक की आलोचना कीजिये?

(७) 'जय आदित्य' नाटक के शीर्षक को सार्थक बताते हुए सिद्ध कीजिये कि वह अभिनेय है।

(८) नाटककार नाटक अथवा एकांकी में अपनी ओर से कोष्ठकों के उदाहरण सहित विवेचन कीजिये।

(९) नाटक अथवा एकांकी में नाटककार सुन्दर कथोपकथन की योजना करता है अपनी पठित पुस्तक से उदाहरण देते हुए इस कथन की व्याख्या कीजिये।

(१०) सोदाहरण सिद्ध कीजिए कि "जय आदित्य की नायिका राज्यश्री एक आदर्श भारतीय नारी है।"

———

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जनकवि जगनिक

जनकवि जगनिक की कथावस्तु

पहला अंक

प्रथम दृश्य—प्रथम अंक के प्रथम दृश्य का पर्दा महोबे के राज प्रासाद के सिंहद्वार में खुलता है। बाहर स्त्री, पुरुष, बालक, वृद्ध, लोगों का जनसमूह एकत्र है। सभी के मुखों पर चिन्ता तथा भय के चिह्न दिखलायी पड़ रहे हैं। बड़े कोलाहल के मध्य "हमारी रक्षा होनी चाहिए" का शोर उमड़ता है। शोर सुनकर प्रहरीगण लौह-कपाट बन्द करता है और राजपुरुष भीड़ को सम्बोधित करता है। भीड़ दिल्ली नरेश पृथ्वीराज चौहान की विशालवाहिनी द्वारा महोबा घेर लेने से चिन्तित है। एक कारण यह भी है कि सिरसागढ़ी के रक्षक मलखान को पृथ्वीराज चौहान के सैनिकों ने छल से मार दिया है अतः एक बहुत बड़ा अवरोध समाप्त हो गया है।

महोबे के राजा परमार्दि देव (परमाल) ने निरपराध बना फरवीर आल्हा तथा ऊदल को देश से निष्कासित कर दिया है। मलखान की रक्षा में सैनिक न देना तथा आल्हा ऊदल को देश निकाल देने की घटनाएँ महोबे की जनता को आरक्षित किये हुए हैं। सभी को अपने इन तीन वीरों पर पूरा-पूरा भरोसा है। अतः उनके अभाव में जनता अपनी जान-माल के संरक्षण में उपस्थित हुई है। राजपुरुष से भीड़ नहीं सँभलती देखकर जनकवि जगनिक अपनी हृदय द्रावक-वाणी में भीड़ को सम्बोधित करता है तथा महारानी मल्हना देवी की ओर से आल्हा ऊदल को वापस बुलाने का आश्वासन देता है। वह यह भी वादा करता है कि आवश्यकता पड़ने पर वह स्वयं कन्नौज जायगा और रुष्ट बनाकर वीरों को मनाकर ले आयगा। सभी जनता महारानी का जय-जयकार करते हुए अपने-अपने घर चली जाती है।

दूसरा दृश्य—महोबे के अन्तःपुर में महारानी मल्हना देवी के अन्तः प्रकोष्ठ में खुलता है। महारानी अत्यन्त शोकाभिभूत हथेली पर अपना मुख रखे बैठी हैं, उनके निकट उनके तीनों पुत्र ब्रह्माजीत, रणजीत, तथा कर्णजीत बैठे हैं। जगनिक उन लोगों की चिन्ता का सारा भार अपने ऊपर ले लेता है। कुमार कर्णजीत की सूचना के अनुसार कैलाश गढ़ी पर भी रात्रि में पृथ्वीराज के सैनिकों ने धावा बोल दिया और उसे विजित कर लिया। मलखान के बाद रखलाखन की सिंह की क्षति महोबे को और भी आरक्षित बना देती हैं। ऐसी परिस्थिति में मल्हना आल्हा-ऊदल को स्मरण करती है और जगनिक उन्हें मनाकर वापस लाने का प्रयत्न करने का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आश्वासन देते हैं। इस बीच पन्द्रह दिन का युद्ध विराम अस्थायी तौर पर मिलने का मल्हना का प्रस्ताव लेकर जगनिक पृथ्वीराज के खेमें में जाने को भी तैयार होते हैं।

तृतीय दृश्य—महोबे से लगभग बीस कोस दूर खडौत नामक स्थान बेतवा के किनारे महाराजा पृथ्वीराज की विशाल वाहिनी पड़ी है। जनकवि वहाँ पहुँचता है तथा दिल्ली पति के राजदरबारी कवि चन्दवरदायी से मिलते हैं। दोनों के बीच सच्चे काव्य एवं काव्यकार को लेकर अच्छी बहस होती हैं। जगनिक सम्पूर्ण देश की रक्षा के लिये चन्द्र का ध्यानाकर्षण करता है, जिसके लिये पिथौरा की शक्ति बचाकर रखनी चाहिए। चन्द्र जगनिक से परम सन्तुष्ट होते हैं और पृथ्वीराज की ओर से १५ दिन का अस्थायी युद्ध-विराम स्वीकार कर लेते हैं। हैं तथा आश्वासन भी देते हैं कि वह पृथ्वीराज को जगनिक के सम्पूर्ण रुष्ट को रक्षण के विचार बता देतें।

चौथा दृश्य—पृथ्वीराज के शिविर में ही खुलता हैं। वह प्रभात बेला में शिकार पर जाने के लिये तत्पर है तभी उरई नरेश माहिल प्रवेश करके अभिवादन करते हैं। माहिल जगनिक के मार्ग में बाधा डालने के प्रस्ताव को लेकर आये हैं ताकि कन्नौज जाकर जयचन्द को आल्हा-ऊदल को मुक्त करने से मना कर सकें। पृथ्वीराज आश्वासन देने हैं; पर माहिल के जाने पर चन्द्र से हल करने पर खेद प्रकट करते हैं। वह चामुंडराय द्वारा हलपूर्वक मलखान के बध किये जाने पर दुःखी है। इस प्रकार पहला अंक समाप्त होता है।

दूसरा अंक

पहला दृश्य—दृश्य कुड़हरी के राजा गंगाधर के सुसज्जित कक्ष में खुलता है। राजा अपनी रानी शशी रेखा देवी से वार्तालाप में व्यस्त हैं। रानी चाहती है कि राजा उरई-नरेश के कुचक्र में न फँसे। उरई-नरेश माहिल ने जनकवि को कुड़हरि में उलझाकर रखने की योजना बनाई है। समाचार के अनुसार जगनिक कुड़हरि में तनिक विश्राम कर आगे बढ़ जाते हैं और गंगाधर के निमन्त्रण को विनयपूर्वक अस्वीकार कर देते हैं।

दूसरा दृश्य—कन्नौज के निकट राजगिरी में खुलता है। गढ़ी की बाहरी बैठक में आल्हा ऊदल, ईदल तथा जगनिक बैठे हैं। मलखान की हत्या की बात सुनकर आल्हा महोबे न जाने का निर्णय और दृढ़ कर लेते हैं। निर्णय पूर्णरूपेण न हो जाय अतः ईदल जगनिक के विश्राम की बात उठाकर अवकाश प्रदान कराते हैं।

तीसरा दृश्य—तीसरा दृश्य भी राजगिरी का ही है। जगनिक आल्हा-ऊदल की माँ देवल देवी से वार्ता करता है। बात-चीत में आल्हा की पत्नी सुलक्षणा भी सहयोग देती है। दोनों स्त्रियाँ महोवा जाने के पक्ष में हैं। आल्हा कन्नौज नरेश के दरवार में गये हुए हैं। यह जानकर देवल देवी पूजा पर बैठ जाती हैं तथा आल्हा के वापस आने पर मिलने को कहती हैं। आल्हा वापस आकर माँ से मिलते हैं; पर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महोबा जाने का तर्क स्वीकार नहीं करते तभी जगनिक बाहर से अपनी अमर रचना आल्हा के अंश गाते हैं। अंशों में महोवे की धरती और प्रकृति का चित्रण है, जिसे सुनकर सभी भाव-विभोर हो जाते हैं। आल्हा महोवे जाने को तैयार हो जाते हैं। पर जयचन्द की आज्ञा मिलने में संदेह प्रकट करते हैं।

चौथा दृश्य—कन्नौज के सभा भवन में पर्दा खुलता है और आल्हा जयचन्द के सम्मुख हैं। जयचन्द उरई-नरेश के समझाने से आल्हा से क़न्नौज प्रवास के खर्च का हिसाब माँगते हैं। आल्हा-ऊदल इस पर खेद प्रकट करते हैं। पर जयचन्द दृढ़ है। लक्ष्मण चन्द (लाखन) के उद्योग से जयचन्द दोनों बना फकीरों को जाने की अनुमति तो देते ही हैं। लक्ष्मण जयचन्द को भी सहायतार्थ जाने की बात स्वीकार करते हैं। सभी जयचन्द को प्रणाम कर जाते हैं।

पाँचवा दृश्य—यह दृश्य महोवे के मार्ग का। पुरवासी आल्हा-ऊदल के आगमन की खुशी में नगर सजाना चाहते हैं। वे परमार्दिदेव के साले माहिल का पुतला जलाने का भी निश्चय करते हैं। नाटक में जन-नाट्य की ओर इंगित करता हुआ यह दृष्टि को क़थावस्तु को जोड़ता भर है।

छठां दृश्य—महोवे के महल में सभी में मिलन का है। सभी जगनिक की अमर कविता की प्रशंसा करते हैं। दूत युद्ध के संदेश लेकर पृथ्वीराज के डेरे पर गया था; पर पृथ्वीराज दिल्ली वापस जा रहे हैं क्योंकि मुहम्मद गोरी ने पुनः आक्रमण कर दिया है। यह सुनते ही जगनिक देश की रक्षा की चिन्ता में दुखी होकर चले जाते हैं।

सातवाँ दृश्य—महोबे के राजकीय उद्यान में खुलता है। जगनिक पृथ्वीराज से हुए गोरी के युद्ध का आँखों देखा हाल बताते हैं। जगनिक ने गोरी के साथ हुए मुहम्मद गोरी के युद्ध में महोबे के वीरों को भी सहयोग करने की अनुमति चाही थी, पर पृथ्वीराज को अपने ऊपर ही विश्वास है। इस प्रकार राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र रक्षा की योजना विफल होती है।

तीसरा अंक

पहला दृश्य—महोवे के राज-प्रासाद के सिंहद्वार के ऊपरी प्रकोष्ठ में खुलता है। युद्ध को तैयारी पूर्ण है। पृथ्वीराज गोरी को हराकर महोवे पर पुनः चढ़ आये हैं। रानी मल्हना राजकंकड़ बाँधने के लिये वीर की तलाश में है। सभी योद्धा रजोन्मत्त हैं। जगनिक की ओजस्वी कविता अपने अंकों से जोश भरती है। मल्हना का राजकंकड लाखनदेव को बँधता है। अतः वही सेनापति होते हैं। महाराजा द्वारा सेना की विदाई होती हैं।

दूसरा दृश्य—रणभूमि में महोवे की सेना अपनी रक्षा में युद्ध रत है। चामुंड राय से पता चलता है कि कन्नौज के राजकुमार लाखन सी के नेतृत्व में महोवे की सेना ने भीषण युद्ध छेड़ दिया है। पृथ्वीराज को ऊदल और लाखन के वीरता की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सूचना दी जाती है। चन्द्र भी पृथ्वीराज को ऐसे भयंकर युद्ध को कभी न देखने की सूचना मिलती है। संयम राय को आल्हा ने मूर्च्छित किया। जगनिक निर्भय होकर पृथ्वीराज की ओर जाता है तथा पृथ्वीराज को लाखन से लड़ने जाने से रोकता है।

तीसरा दृश्य—युद्ध भूमि में जगनिक ब्रह्मजीत को नंगे पैर जाने से रोकते हैं, पर लाखन पर संकट आते देखकर ब्रह्मजीत उधर तेजी से बढ़ जाते हैं। उदल को लाखनसी के मारे जाने को समाचार मिलता है। तो स्तब्ध खड़े रहे जाते हैं। युद्ध भूमि में उनकी इस जड़ता से शत्रु को लाभ मिल जाता है और चामुंडराय ने ऐसे जड़ से खड़े वीर को अमर कर दिया। इस दृश्य में ऊदल लाखन दोनों वीर स्वर्ण सिधारते हैं।

चौथा दृश्य—युद्ध भूमि में माहिल प्रवेश करते हैं, वे अपने भांजे की मृत्यु पर खेद प्रकट करते हैं, पर जगनिक उन्हें घृणा की दृष्टि से देखता है। इस दृश्य में आल्हा का रूप दर्शनीय है। उन्होंने पृथ्वीराज को मूर्च्छित कर चामुण्डराय से भाइयों के बध का बदला लिया। कन्ह को ईदल ने रोक लिया। आल्हा सर्वनाश की जड़ पृथ्वीराज को मारने को उद्धत है। जगनिक दूर तक देखता है। पृथ्वीराज की मृत्यु से वह मुहम्मद गोरी की विजय और राष्ट्र की पराजय तक की बात सोचते हैं। इस प्रकार मूर्च्छित पृथ्वीराज आल्हा के क्रोध का शिकार होते-होते बच जाता हैं। आल्हा अपनी तलवार तोड़कर फेंक देते हैं और मन्त्र मुग्ध से यति के पीछे जाते हैं।

चौथा अंक—

पहला दृश्य—महोबे के कीर्ति सागर के तट पर खुलता है। ऊदल की समाधि के निकट अपार भीड़ एकत्र है। जगनिक द्वारा रचित कवि युवक गा रहे जगनिक यहाँ जनशक्ति का आह्वान करते हैं। वह राष्ट्रीय एकता का सक्रिय प्रयत्न करते हैं। वह कलिंग जाकर वहाँ भी शक्ति का मन्त्र फूंकना चाहते हैं।

दूसरा दृश्य—दिल्ली के महाकवि चन्द के भवन में खुलता है। जल्द से सूचना मिलती है कि पृथ्वीराज को युद्ध में मुहम्मद गोरी ने पराजित किया तथा बन्दी बनाकर गजनी चला गया। चन्द्र भी महाराजा के साथ ही गये हैं। जगनिक यह सुनकर स्वयं भी गजनी प्रस्थान करते हैं। 'पृथ्वीराज रासो' के शेषांश की सूचना का भार जल्ह पर आ पड़ा है।

तीसरा दृश्य—गजनी में शहाबुद्दीन गोरी के दरबार में खुलता है। वह अपने वीरों को शाबासी देता है। पृथ्वीराज उसकी कैद में है। चन्द्र गोरी की सभा में उपस्थित होता है। चन्द्र के उपक्रम से पृथ्वराज को शब्द-बेधी बाण के प्रदर्शन का अवसर प्राप्त होता है।

चौथा दृश्य—गजनी गोरी के दरबारे-आम में खुलता है। पृथ्वीराज के आगमन से गजनी की सड़कों पर हलचल का दृश्य उपस्थित होता है। कई मन का बजनी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लोहे का तौक गले में पड़े रहने पर भी पृथ्वीराज बड़े शान से चल रहे हैं। यह देखकर गजनी की जनता उनकी शक्ति देखकर मोहित हो रही है। दरबार में पृथ्वीराज को बाण विद्या का प्रदर्शन होता है। गोरी पृथ्वीराज के शब्द-वेधी बाण से मारा जाता है तथा पृथ्वीराज और चन्द्र आपस में ही अपने प्राणों की आहुति दे देते हैं। इस प्रकार भारतीय स्वतन्त्रता की अंतिम ज्योति शान्त हो जाती है।

पाँचवाँ अंक—

पहला दृश्य—इस दृश्य में महाकवि चन्द्र के भवन दिल्ली में उनके पुत्र जल्ह तथा जगनिक वार्तालाप कर रहे हैं। गजनी में नेत्रहीन पृथ्वीराज द्वारा गोरी का वध कराकर चन्द्र ने भारतीय स्वतन्त्रता की रक्षा करने का अन्तिम प्रयास किया। चन्द्र का यह प्रयत्न जल्ह के शब्दों में—'पृथ्वीराज रासो' के उत्तरार्ध की कहानी है। भीमखत्री से प्राप्त समाचार के आधार पर चन्द्र ने अंतिम वेला में एक छन्द भी रचा था। म्लेच्छविहीन धरा बनाने के संकल्प से दोनों कवि उठकर खड़े होते हैं।

दूसरा दृश्य—कालिंजर में महाराज परमार्दिदेव के मंत्रणा कक्ष में महाराज, मंत्री तथा जगनिक बैठकर मंत्रणा कर रहे हैं। विषय कुतुबुद्दीन का दिल्ली से अन्य प्रान्तों की ओर अभियान है। कन्नौज नरेश जयचन्द अपनी सेना को अपराजेय मानकर किसी प्रकार कुछ करने को तत्पर नहीं है। जगनिक के उद्योग से महोबे में हर जाति, वर्ग, धर्म, तथा स्तर की जनता स्वतंत्रता की लड़ाई को तत्पर हैं। परमार्दिदेव इस सेना के साथ वृद्धावस्था में लड़कर मरने को तैयार हैं। इस जनाभियान के साथ ही पर्दा गिरता है। नाटक में सैकड़ों वर्षों पूर्व देश के परिवर्तन की दिशा का मूल्यांकन किया गया है।

जगनिक में नाटकीय तत्व

नाटकीय घटनाएँ, पात्र, तथा वातावरण को परीक्षा के आधार पर किसी कवि की ऐतिहासिकता सिद्ध की जा सकती है। इस नाटक में नाटककार ने अपनी कथावस्तु का ताना-बाना ऐतिहासिक कृतियों में गजेटियर इत्यादि, 'पृथ्वीराज रासो' तथा जनश्रुतियों के आधार पर बुना है। ये सभी साक्ष्य ऐतिहासिक माने जाते हैं। मध्यप्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री द्वारिकाप्रसाद मिश्र ने भूमिका में लिखा है—"कथावस्तु दिल्ली नरेश पृथ्वीराज चौहान और महोबे के बीच विनाशकारी युद्ध का वर्णन तो करती ही है, जिसने एक बार उत्तर भारत को साहसी वीरों से शून्य-सा कर दिया था, वह मुहम्मद गोरी और पृथ्वीराज चौहान के बीच उस अंतिम युद्ध का वर्णन भी करती है, जिसके परिणामस्वरूप भारत में प्रथम बार इस्लामी शासन की पताका फहरायी और इतिहास ने सर्वथा नया मोड़ लिया। इन दो विनाशकारी युद्धों को अपनी प्रतिष्ठा में समेटे हुए कथावस्तु ने उस युग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की राजनैतिक स्थिति का यथार्थ, मार्मिक और विषाद से पूर्ण जीवित चित्र दिया है।"

उन्होंने पात्रों के सम्बन्ध में भी अपने विचार प्रकट करते हुए लिखा है— "पात्र लगभग सभी ऐतिहासिक व्यक्ति हैं। जगनिक नाटक का नायक है। उसके चरित्रांकन में लेखक ने विशेष कुशलता दिखलायी है। परमार्दिदेव, आल्हा, ऊदल, पृथ्वीराज, जयचन्द, चन्दवरवायी, मुहम्मद गोरी आदि पात्रों के विभिन्न क्रिया-कलापों से नाटक भरा पड़ा है। लेखक ने उनका वर्णन पूरी निष्ठा और तटस्थता से किया है। स्त्री पात्र नाटक में थोड़े हैं। महारानी मल्हना देवी व देवल देवी का प्रवेश नाटक में प्राण फूंक देता है और भारतीय नारीत्व की प्रतीक ये देवियाँ भी हमारी श्रद्धा की पात्र बनती हैं। आल्हा की स्त्री सुलक्षणा एवं कुड़हरि के राजा गंगाधर की पत्नी शारी रेखा भी आदर्श स्त्री पात्र हैं जो हमें प्रभावित करते हैं।" लेखक ने स्वंय अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है—"यह परिस्थितियों का ग्रहण, चित्रण, संश्लेषण या विश्लेषण किया गया है, वे पूर्णरूपेण इतिहास सम्मत हैं।"

पाश्चात्य तथा पौरवत्व नाट्याचार्यों के आधार पर नाटक के निम्नलिखित तत्व माने गये हैं—वस्तु, पात्र, कथोपकथन, देशकाल, शैली और उद्देश्य।

कथावस्तु—नाटक का प्रमुख तत्व है कथावस्तु के अभाव में नाटक की परिकल्पना नहीं की जा सकती है। जिस नाटक की वस्तु जितनी सशक्त होगी वह उतना ही सफल नाटक होगा। इस नाटक की कथावस्तु-महोवा, कन्नौज, दिल्ली और गजनी तक फैली हुई हैं। इसमें भारतीय इतिहास का वह काल वर्णित है, जो भारतीय इतिहास के परिवर्तन का कारण बना। दिल्ली पति पृथ्वीराज के और महोबाधिपति परमार्दिदेव के बीच हुए विनाशकारी तथा पृथ्वीराज व गोरी के बीच हुए निर्णायक युद्ध में देश की स्वाधीनता ही नहीं गयी वीरत्व का भी दिवाला निकल गया। यहाँ से मुगलकाल के इतिहास के शुभारम्भ से इतिहास एक नया मोड़ लेता है जो राष्ट्रीयता के लिये हितकर नहीं रहा है। उक्त दो विनाशकारी युद्धों में बंधी कथावस्तु अपने युग की राजनैतिक स्थिति का मार्मिक चित्रण है। यह नाटकीय दृष्टि से उपयुक्त है।

पात्र— नाटक के पात्र वास्तविक तथा सजीव होते हैं। तभी नाटक सफल होता है। इस नाटक के सभी पात्र ऐतिहासिक तथा जीवन्त हैं। इस नाटक का केन्द्र-बिन्दु जनकवि जगनिक हैं। नाटककार ने उसके चरित्र-चित्रण में विशेष कुशलता का परिचय दिया हैं। इस पात्र की प्रशंसा विरोधी पात्र तक करते हैं। सब प्रकार से भारतीय एकता और जनता जनार्दन की ओर झुका जगनिक का व्यक्तित्व बहुत ही आकर्षक है। नाटककार ने जगनिक की ही भाँति आल्हा, पृथ्वीराज, चन्द्र, मल्हना, देवलदेवी, के चरित्रों में भी प्राण फूंक दिये हैं। सुलक्षणा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा गंगादेवी भी प्रभावित करने वाली आदर्श स्त्री पात्र हैं । पात्र अपनी छोड़ते हैं । इस दृष्टि से नाटक सफल है ।

कथोकपथन—यह नाटक का प्रमुख तत्व है, जो नाटक को गति प्रदान करता है । संवादों के बिना नाटक बिना पंख के पक्षी की भाँति बेकार है । यही तत्व नाटक को अन्य विधाओं से भिन्न करता है । नाटक के अन्य पाँचों तत्व इसी पर आधारित रहते हैं । वे संक्षिप्त, सटीक तथा प्रवाह को बढ़ाने वाले मार्मिक होने चाहिए । जनकवि जगनिक के संवाद उक्त गुणों से भरपूर हैं । उदाहरणार्थ—

जगनिक—मुझे आशंका थी, वही हुआ ।

ऊदल—क्या कहते हो भाई ?

जगनिक—गोरी का आक्रमण एक राष्ट्रीय संकट है, उसके विरुद्ध अभियान सच्चा धर्म-युद्ध है । उसमें सबका आह्वान हैं और सबका सहयोग आवश्यक है । किन्तु इतना घोर व्यक्तिवाद ।

आल्हा—(परमाल से) महाराज अब चलकर विश्राम कीजिये । दिल्ली नरेश से कहला दीजिये कि हम उनकी प्रतीक्षा करेंगे ।

जगनिक—(अपने-आप) ओह ! भगवन इस देश की रक्षा करो, मुझे बल दो, मैं जीवन को सहेज बनाने का अपना कार्य करता रहूँ ।

देशकाल—नाटक में रीति-रिवाज, परिस्थिति, रहन-सहन, आचार-विचार, समय स्थिति तथा प्रकृति वर्णन ही देशकाल है । कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह ने तत्कालीन युग का चित्रण बड़े कौशल से किया है । अतः कहा जा सकता है कि नाटक में देशकाल का सही चित्रण हुआ है ।

भाषा-शैली—नाटक की भाषा एवं शैली दोनों में साहित्य का अन्य विधाओं से भिन्नता होती है । नाटक की भाषा, पात्र, परिस्थिति एवं विषय के अनुरूप रहती है । नाटकीय शैली में रंगमंचीय सुविधाओं का होना आवश्यक होता है । 'जनकवि जगनिक' की भाषा-शैली नाटकीयता एवं दर्शक मनोविज्ञान के अनुरूप है । जैसे आल्हा की माँ देवलदेवी अपनी बहू आल्हा की पत्नी सुलक्षणा को माहिल जैसे व्यक्ति की चिन्ता न करने को कहती है । ऊँह, उस कपट-कीट माहिल की क्या चिन्ता बेटी ! हाँ, अब मेरी मध्यान्ह-पूजा का समय आ गया है । आल्हा के लौटने पर तुम लोग उससे मेरा यह सन्देश कह देना कि उसे शीघ्र से शीघ्र महोबा के लिये प्रस्थान करना है ।'' यहां भारतीय पात्र हैं तो भाषा इस प्रकार की है । गजनी में मुगलों के माध्यम से नाटककार ने भाषा का स्तर बदला है । शोर सुनकर गोरी चतुर्दिक–सकपकाकर उसका कारण जानना चाहता है तो एक सरदार उसे बताता है––''मालूम होता है कि पृथ्वीराज का जलूस नजदीक आ गया है । गजनी की रियाया उसको देखकर खुश हो रही है ।'' इस प्रकार भाषा-शैली की दृष्टि से भी यह नाटक उपयुक्त है ।

उद्देश्य—उद्देश्य के बिना उद्योग नहीं होता है । हर एक उद्योग का एक उद्देश्य होता है । नाटक में उद्देश्य कथावस्तु के अनुरूप ही होता है । ऐतिहासिक कथावस्तु अतीत के गौरव के चित्रण द्वारा वर्तमान का भावी चित्र प्रस्तुत करती है । घटित से वर्तमान परिवर्तित होकर भविष्य को सुन्दर घटने के लिये छोड़ दे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तभी ऐतिहासिक नाटक का लक्ष्य पूरा होता है। 'जनकवि जगनिक' नाटक में भूत की भूलों की ओर ध्यानाकर्षण किया गया है। जिससे इतनी शताब्दियों तक गुलामी का मुँह देखना पड़ा। अब यदि वर्तमान में हम भूत से शिक्षा लें तो हमारा भविष्य गौरवशाली हो सकता है। पृथ्वीराज ने गजनी में अपनी भूल स्वीकार की। उन्होंने राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से अपनी बात का मूल्यांकन नहीं किया। इससे शिक्षा लेकर अब कोई शासक अपनी व्यक्तिगत रूप किसी पर न थोप कर राष्ट्र का हित करे जिससे समाज और राष्ट्र का कल्याण होना सम्भव है।

अभिनेयता—नाटककार ने अभिनेयता के सम्बन्ध में लिखा है "मैंने नाटक को अधिक से अधिक अभिनेय बनाने का प्रयत्न किया है। अपने रंगमंच के अभाव में सामान्यत: हिन्दी के नाटक लेखक के सामने जो कठिनाइयाँ आती हैं, वे ही मेरे भी सामने आयीं।"

वस्तु को एक ही अंक में महोबा, दिल्ली तथा गजनी तक फैलाना नाटकीय संकलन के लिये अधिक है। चतुर्थ अंक में इस प्रकार की बाधा है। इसी प्रकार कुछ अन्य दृश्य भी दृश्यत्व की दृष्टि से असम्भव है। इन कवियों के वावजूद भी नाटक अभिनेय है।

जनकवि जगनिक के पात्र—चरित्र-चित्रण

नायक में कथावस्तु के केन्द्रीभूत होने तथा फल का भोक्ता होने का गुण होता है। जगनिक इस नाटक में प्रधान पात्र हैं। उसी के आस-पास सम्पूर्ण कथावस्तु परिचालित होता है। शत्रु, मित्र, राजा, प्रजा सभी का विश्वास जगनिक पर है। वह प्रत्येक कड़ी को जोड़ता है। असन्तुष्टों को सन्तुष्ट करता है। दु:खियों को सुखी करता है तथा निराश्रितों में आशा का संचार करता है। नाटक में हर गति जगनिक प्राणशक्ति से परिचालित है। वह महाराज परमर्दिदेव के आधीन है, पर परिस्थितियों के प्रवाह में वह सबसे कमजोर व्यक्ति है। नाटक के अन्त में वह विदेशियों के आक्रमण से भयाक्रान्त परमर्दिदेव दु:खी है, पर जगनिक के उद्योग से जनसैन्यबल प्राप्त कर उनकी बूढ़ी नसों में रक्त संचरित हो उठता है और उनकी भुजाएँ फड़क उठती हैं वह कहते हैं—"बेटा धन्य है तुम्हारा उद्योग, ऐसी सेना का नेतृत्व करने का अवसर मुझे अपने जीवन के अन्तिम दिनों में मिल रहा है मेरे वृद्ध शरीर में भी युवकों का-सा रक्त प्रवाह बहने लगा है।"

जो नेतृत्व करता है, पथ दिखलाता है, ठहरे हुए को उठाकर खड़ा करता है वह नायक है। जगनिक में उक्त गुण हैं अत: वह नायक है। नाटक में मूलभाव राष्ट्रीय भावना का उदय होता है जगनिक इस भावना का सब प्रकार से समर्थन करते हुए कथावस्तु को आगे बढ़ाता है। अत: इस फल का भोक्ता भी वही है। फल का भोक्ता होने से जगनिक इस नाटक का नायक है। प्राक्कथन में श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र ने लिखा है—"पात्र लगभग सभी ऐतिहासिक हैं। जगनिक नाटक का नायक है। उसके चरित्रांकन में लेखक ने विशेष कुशलता दिखलाई है। राष्ट्रीय ऐक्य के लिये किया गया नायक का प्रयत्न, जो कदाचित् नाटक का एकमात्र कार्य है, भले ही तत्कालीन युग की मान्यताओं और कतिपय व्यक्तियों की वैयक्तिकता एवं अहं के कारण पूर्व न हो पाया हो, नायक के इस ओर किये गये प्रयत्न और उन्हें पूरा होते न देख उसकी आंतरिक छटपटाहट और तड़प उसके चरित्र का बड़ा ही सत्य रूप

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपस्थित करती है और अनायास ही उन्हें उस जनकवि के प्रति श्रद्धा से भर देती है।''

राष्ट्रीयता—जगनिक में अपनी मातृभूमि बुन्देलखण्ड के प्रति अपार स्नेह है। उसी स्नेह के वशीभूत होकर कवि अपनी मिट्टी को काव्यहार पहनाता है। कवि जब अपनी धरती की वन्दना करता है तो हर प्रकार से अपमान का अनुभव करने वाले आल्हा भी रो पड़ते हैं और अपना मान छोड़कर मातृभूमि की रक्षा हेतु तैयार हो जाते हैं। जब जगनिक गाते है—

''नदी बेतवा तुमको ध्यावौं निर्मल बहै दूध की धार।
लहर-लहर के तेज ओज पे वारौ कोटि वीर तलवार।।'

मातृभूमि की वन्दना ही देशभक्ति है। देश की जनता ही देश होती है। देश तो जड़ है जनता ही सजग तत्व है जगनिक में जनता के प्रति अपार स्नेह है। वह राजपरिवारों या राज-व्यक्तियों का गायक नहीं है। वह जनकीय है जनता उसकी वाणी पर मोहित है। वह जिधर चाहता है उधर मोड़ देता है। कवि में संकीतर्णा का भाव नहीं है। संकीर्ण सीमाओं को तोड़कर वह सम्पूर्ण राष्ट्रीय स्तर के विचार रखता है। पृथ्वीराज जो कि महोबा को स्वतन्त्रता के लिये शत्रु है, जगनिक उन्हें राष्ट्रीयता की दृष्टि से महान् मानते हैं। वह राष्ट्रीयता स्वतन्त्रता के लिये पृथ्वीराज को तथा कविचन्द को उत्साहित करता है। महोबा दिल्ली से गजनी तक उसका प्रयत्न राष्ट्रीयता का द्योतक है।

दूरदर्शिता—जगनिक सच्चा कवि है। कवि के लिये कहा जाता है—''कवि-र्मनीषी परिभू स्वयंभू। जगनिक में यह गुण है। वह भविष्य में दूर दृष्टि रखता है। नाटक में उसकी दृष्टि से स्पष्ट होता है कि पृथ्वीराज ने यह जगनिक की बात मान ली होती तो देश को गुलामी न भोगनी पड़ती। चन्द के समक्ष जगनिक ने पृथ्वीराज की आन्तरिक लड़ाइयों के दुष्परिणामों का चित्र खींचा है। चन्द द्वारा हाल पूछे जाने पर जगनिक ने कहा—''होना तो यह चाहिए कि आपके महाराज देश को एक बार दृढ़ राजनीतिक संगठन के सूत्र में आबद्ध करने का प्रयत्न करें। उन्हें चन्द्रगुप्त मौर्य, विक्रमादित्य, समुद्रगुप्त, और यशोधवर्मन् जैसे महान् पुरुषों का आदर्श अपने सामने रखकर देश की निस्तेज अनेकता को प्रज्जवलित एकता में परिणति करनी की साधना करनी चाहिए। अभी समय है। देश के इस समय राष्ट्रधर्म में दीक्षित असंख्य सैनिकों की आवश्यकता है। गाँव-गाँव में घर-घर जाकर अलख जगाने की आवश्यकता है। जगनिक के समक्ष भावी पराधीनता को रोकने की दूर-दृष्टि अस्थिर कुग्रहों में फिरा देश उसको पहचान नहीं सका।

प्रज्ञा-वाक्पटुता—जगनिक एक प्राणवान् कवि है। उसकी बुद्धि निर्मल तथ सजग है, जो समुदाय के हित-चिन्तन में सक्रिय है निर्लोभ तथा निर्भयता के कारण वह अपनी योजनाओं में पूर्व सफल है उसकी प्राणों की परख उसकी वाक्पटुता में होती है वाणी का धनी कवि कहीं असफल नहीं होता है। वह अपनी वाणी जादू से हर किसी को मोहित करता है। उसकी वाणी का जादू सिर पर चढ़कर बोलता है। उस युग का महाकवि उससे कुछ क्षण बातचीत करने के बाद अपनी राय व्यक्त करता हुआ कहता है—''ओह! सचमुच बड़ी उन्मादक है यह कल्पना अपने मेरी हृतन्त्री के कारण किसी अज्ञात तार को छू दिया है। जब आपकी सामान्य वार्त्ता में इतनी स्फूर्ति है तो आपकी कविता तो आज तेज का प्रज्ञ वाणी होगी।''

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इससे जगनिक प्रज्ञा तथा वाक्पटुता दोनों का पता चलता है।

नीतिज्ञता—कवि निश्छल होता है। जगनिक मे भी नीति इसी भावभूमि पर आधारित है। वह छल-कपट की नीति से ऊपर सहज जन-आकांक्षाओं का कवि है। अपनी वाक्पटुता से वह १५ दिन का युद्ध-विराम मनवा लेता है आल्हा को वापस कर लेता है और जनता को सन्तुष्ट कर देता है तो इसमें उसकी सहज नीति भी मिली हुई है। जयचन्द को दरबार में वह अपनी नीति का परिचय देता है। जयचन्द महोबे में अपमान की बात रखकर बनाफर बन्धुओं का वहाँ जाना अनुचित मानते हैं और जगनिक को शान्त करना चाहते हैं। जगनिक जयचन्द के तर्क को स्वीकार करते हुए अपनी बात रखकर उन्हें निरुत्तर कर देता है—

जयचन्द—"बनाफर बन्धुओं का जो अपमान महोबे में हुआ उसको भूलकर फिर उनका वहाँ जाना क्या क्षत्रियोचित नहीं।"

जगनिक—"कदापि नहीं राजाधिराज ! संकटग्रस्त मातृभूति के आह्वान की अपेक्षा करना ही अक्षत्रियोचित है।"

जगनिक जनता की आशा का केन्द्र है तथा अमर कवि है। उसकी कविता में काल तिरोहण का गुण है। उसकी कविताओं में सर्वसम्मोहन, रससिद्धि, एवं सजीवता का गुण है। जनश्रुतियों के द्वारा अमरता को प्राप्त करने वाला इतना बड़ा वीर रस का कवि दूसरा नहीं है।

बनाफर बन्धु—बनाफर बन्धुओं (आल्हा-ऊदल) का संयुक्त नाम राम-लक्ष्मण के नाम के समान ही जुड़ा हुआ है। राम के नाम के साथ ही लक्ष्मण का नाम स्वतः ही अधरों पर आ जाता है उसी प्रकार आल्हा के साथ उनके अनुज ऊदल का नाम जुड़ा हुआ है। उनका परिचय देते हुए जगनिक महाकवि चन्द से कहते हैं—"वे कोई राजा या राजकुमार नहीं हैं। महाकवि वे तो मेरे जैसे ही साधारण परिवार के क्षत्रिय कुमार हैं। पर मुझे ऐसा प्रतीत होता है, मानो इस युग में डूबते हुए क्षात्रधर्म ने अपनी दोनों बाहें फैलाकर उन्हीं दोनों का आश्रय पा लिया है।"

आल्हा-ऊदल में राम-लक्ष्मण की ही भाँति चारित्रिक भिन्नता है। आल्हा में स्वाभिमान है। वह अपमानित होकर पुनः महोबा वापस नहीं जाना चाहते हैं। उनके तर्कों से उनकी माँ देवल देवी भी प्रभावित होती हैं; पर उनके सामने रानी मल्हना तथा महोबे की धरती का आमन्त्रण अपमान से बड़ा है। अपने स्वाभिमान को आल्हा मातृभूमि की भक्ति पर चढ़ा देते हैं। उनका मातृभूमि का प्रेम जगनिक की कविता सुनकर आँखों से बहने लगता है। वह पृथ्वीराज से मातृभूमि के सम्मान हेतु निर्णायक युद्ध करते हैं। वह बड़े हैं तथा नायक हैं अतः गम्भीरता से काम लेते हैं। जयचन्द की सभा में जहाँ अन्य लोग संयम को डोर से बँधे हुए प्रतीत नहीं होते हैं आल्हा बँधे हैं और उनके संयम का महाराज जयचन्द पर यथोचित प्रभाव पड़ता है। जगनिक की कविता के आदर्श आल्हा राष्ट्रीयता के पोषक है वह आदर्शों की प्रतिमूर्ति हैं। पृथ्वीराज यदि जगनिक की योजना मानकर मुहम्मद गोरी के विरुद्ध आल्हा-ऊदल जैसे वीरों को भी लड़ाते तो राष्ट्रीय दिशा आज कुछ और ही होती। आल्हा का आदर्श सभी दिशाओं में अनुकरणीय है। वह अपराजेय योद्धा हैं। उन्हें जनश्रुति अमर मानती है। उनकी कीर्ति अमर है वह मातृ प्रेम के लिये अपनापन छोड़ते हैं। ऊदल, लाखन-सी तथा बृठाजित के वध का समाचार पाकर आल्हा विकराल काल बन जाते हैं तथा बदला लेने में सफल होते हैं। यदि आदर्श पात्र न होते तो पृथ्वीराज को भी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मूर्च्छितावस्था में समाप्त कर दिया होता। वह सशान किये जाने पर अपनी तलवार तोड़कर फेंक देते हैं और भाइयों के वियोग में युद्ध न करने की घोषणा करते हैं।

आल्हा मातृभूमि से पहले मातृ भक्त भी है। देवल देवी अपनी सगी जननी तथा मल्हना स्तन पायनी माँ की आश्य ही अपनी कार्यावली बनाते हैं।

ऊदल—सच्चे भ्रात भक्त हैं। कन्नौज के दरवार में भाई के अपमान की बात सुनकर वह सीधे तैयार हो जाते हैं और तलवार बाहर कर लेते हैं। अन्याय, अनीति तथा धोखा उन्हें असह्य है। ऊदल के चरित्र में तेजस्विता अधिक है। चन्देल कुमारी चन्द्रावली को चामुंडराय से छुड़ाने में योगियों के रूप पें ऊदल का युद्ध पृथ्वीराज को भी स्मरण है। दोनों वीरों की वीरता को देखकर चन्द भी विमोहित हैं। ऊदल में सच्चे मित्र का भाव है। वह लाखन-सी को अपना मित्र मानते हैं। अतः उनकी मृत्यु पर युद्ध-भूमि में ही ठगे से रहे जाते हैं। वह युद्ध की विभीषिका में घिरे होने पर भी मित्र के बध पर शोक सन्तप्त होते हैं और इसी में उनके भी प्राण जाते हैं। ऊदल की वीरता अनुकरणीय है।

पृथ्वीराज—दिल्ली नरेश पृथ्वीराज वीरता के अवतार हैं। तेज, शौर्य, उनका रूप धरकर ही मानों जीवित है उन्हें अपने बाहुवल पर पूर्ण भरोसा है। अपनी विपत्ति को वह किसी अन्य की विपत्ति नहीं मानते हैं अतः उसे झेलने हेतु स्वयं ही तैयार रहते हैं। क्षत्रिय का धर्म यदि वीरता का सात्विक प्रदर्शन ही है तो पृथ्वीराज उसमें सफल हैं। वह अपने से कम आयु वाले योद्धा से स्वयं नहीं लड़ते हैं। लाखन-सी के मोर्चे पर स्वयं जाने से उद्धव पृथ्वीराज जगनिक द्वारा सचेत किये जाने पर रुक जाते हैं। यह उनका क्षात्र धर्म ही है। उरई के नरेश माहिल के साथ वार्तालाप से पृथ्वीराज के चरित्र का हास-परिहास प्रिय गुण भी प्रकट हुआ है। एक सच्चे योद्धा के लिए यह गुण भी आवश्यक है। पृथ्वीराज में शक्ति का पारावार है। गजनी की सड़कों पर भारी तौख गले में पड़ा होने पर शान से गमन करने वाले इस भारतीय नरेश को देखकर वहाँ की जनता उसकी शक्ति पर मन्त्र-मुग्ध है। उसके इस आचरण को देखकर भारतीय का भी मस्तक पराजित होने पर भी उठ जाता है।

जनकवि जगनिक में क्रमशः मल्हना रानी, शशी रेखा देवी, देवल देवी तथा सुलक्षणा चार नारी पात्र प्रमुख हैं। चारों नारी पात्रों से भारतीय संस्कृति, धर्म, कर्त्तव्य-परायणता तथा धार्मिकता प्रकट होती है। **मल्हना रानी** के परमर्दिदेव अदूरदर्शी, अकुशल, भीरु तथा जनता का विश्वास न रखने वाले शासक हैं। मल्हना पर न केवल जनता का विश्वास है; वरन् वह दूरदर्शी, कुशल शासिका तथा प्रिय आचरण वाली भी है, उनके वचन की पूर्ति में शत्रु भी झुकता है। १५ दिन का युद्ध-विराम कराकर आल्हा-ऊदल को जगनिक द्वारा मनाकर वापस कर रानी ने देश को एक बार संकट से उवार लिया तथा जनविश्वास अर्जित किया। वह अपने वीरों को युद्धभूमि में वीरता से भरकर भेजने में भी क्षत्राणी की भूमिका निर्वाह करती है। मातृत्व की उदार मूर्ति मल्हना के दूध की लाज रखने में आल्हा-ऊदल अपना अपमान भी भूल जाते हैं। रानी का व्यवहार सर्वथा आकर्षक है। कुड़हरि की **रानी शशी रेखा देवी** में आदर्श नारी के सभी गुण हैं। माहिल की चाल के शिकार उसके पति गंगाधर जगनिक को अपने राज्य में रोकना चाहते हैं ताकि आल्हा-ऊदल को बुलाने में व्यवधान उपस्थित हो सकें। रानी इस पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करती

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है— "देव ! आपका कथन एकांगी है। शक्तिमान् की मैत्री अर्जित करने का उद्देश्य दुर्बल को अकारण सताना नहीं। यह बड़ा अनैतिक कार्य है। उच्च राजनीति कभी अनैतिक नहीं होती।" रानी की नैतिकता ही उसका चारित्रिक गुण है।

देवल देवी—वीरवर आल्हा की माँ है। उनमें एक धार्मिक नारी के गुण हैं। वह वीर जाया, वीर पत्नी तथा वीर माता हैं। अपने पुत्रों की दुर्बलताओं पर वह पर्दा नहीं डालती हैं। आल्हा द्वारा मातृभूमि, मातृतुल्या रानी मल्हना का आमन्त्रण ठुकराने पर वह उसका जोरदार खंडन करते हुए आल्हा को कर्त्तव्य पर दृढ़ करती है। उनके भीतर कर्त्तव्य-परायण भारतीय नारी का रक्त संचरित हो रहा है। वह जगनिक के गुणों की खुलकर प्रशंसा भी करती है। मल्हना रानी के प्रति अपनी बहिन सा प्रेम प्रदर्शित कर उनका मान रखती हैं। दुग्ध पान कराने वाली मल्हना रानी और अन्न खिलाने वाली महोबे की भूमि के आमन्त्रण को वह परमर्दिदेव के द्वारा किये गये अपमान से अधिक महत्व देती है और अपने पुत्रों को युद्ध के लिये तैयार करती है।

आल्हा की पत्नी **सुलक्षणा** भी उक्त नारियों की भाँति ही आदर्श नारी पात्र है। वह कहती है—"धर्म संकट कैसा, माँ कहती है धर्म युद्ध का पथ प्रशस्त है।"

इस प्रकार इस नाटक के नारी पात्र अभिनेयता में सहायक होते हुए आदर्श गुणों के कारण दीपशिखा के समान ही देदीप्यमान् हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

प्रश्न १—जनकवि जगनिक की कथावस्तु संक्षेप में लिखिये ?

प्रश्न २—नाटकीय तत्वों के आधार पर 'जनकवि जगनिक' की व्याख्या कीजिये ?

प्रश्न ३—'जनकवि जगनिक' की ऐतिहासिकता का निर्णय करते हुए नाट्य-शिल्प के आधार पर इसकी सफलता निर्धारित कीजिये ?

प्रश्न ४—जनकवि जगनिक के नायक का निर्णय करते हुए नाटक के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण कीजिये।

प्रश्न ५—"जनकवि जगनिक के स्त्री पात्र दीपशिखा के समान अलोकमय हैं" इस अभिमत के सन्दर्भ में स्त्री पात्रों का चरित्रांकन कीजिये ?

प्रश्न ६—जनकवि जगनिक के चरित्रांकन में कुँवर चन्द प्रकाश सिंह की नाट्य-कला का सफल परीक्षण हुआ है। सिद्ध कीजिये ?

———

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्वितीय प्रश्न पत्र

१. संक्षेपण और विस्तारण
२. निबंध
३. उपन्यास (संघर्ष)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संक्षेपण

संक्षेपण शब्द का अभिप्राय है—किसी बात या तथ्य को संक्षेप में लिखना। भाषा शास्त्र के नियमों के अनुसार संक्षेपण का आशय किसी कथन अथवा रचना को इतना संक्षिप्त रूप में लिखना है कि उसका मूल भाव सुरक्षित रहे। संक्षेप में लिखना या कहना भारतीय विद्वानों की प्राचीन परम्परा रही है। भारतीय वैयाकरणों के अनुसार एक मात्रा कम हो जाना भी पुत्र जन्म की प्रसन्नता के बराबर है—

अंग्रेजी में जो अथ Precis का है वही अर्थ हिन्दी में संक्षेपण का है। संक्षेपण के अतिरिक्त संक्षेपीकरण, संक्षिप्तिकरण, संक्षिप्त लेख, और संक्षिप्त लेखन शब्दों का भी प्रचलन है पर जो भाव संक्षेपण से व्यक्त होता है वह अन्य शब्दों से नहीं है। श्री शैलेन्द्र नाथ श्रीवास्तव ने अपनी पुस्तक 'संक्षेपण कैसे करें' में पृष्ठ २ पर लिखा है—"यह अपने अन्य प्रतिद्वन्द्वियों से छोटा है और जिस रचना रूप में हम लघुता का प्रयत्न करते हैं उसके नामकरण में भी लघुता का ध्यान रखना ही चाहिए।"

संक्षेपण भारतवर्ष के लिए कोई नया शब्द नहीं है। कुछ लेखकों का ऐसा विचार है कि संक्षेपण अंग्रेजी की देन है, गलत है भारत में संक्षेपण की क्रिया अत्यन्त प्राचीन है। सूत्र शैली में लिखने की प्रक्रिया अत्यन्त प्राचीन काल से चली आ रही है। भारतीय वैयाकरणों, दार्शनिकों, धर्माचार्यों ने संक्षेप में कहने पर बहुत जोर दिया था। संस्कृत 'अष्टाध्यायी नामक ग्रन्थ तो इसका आदर्श है।

संक्षेपीकरण की परिभाषा कई विद्वानों ने दी है। जिनमें कुछ परिभाषायें निम्नलिखित प्रकार हैं—

(१) "किसी विस्तृत विवरण, सविस्तार व्याख्या, वक्तव्य, पत्र व्यवहार, लेख इत्यादि के तथ्यों और निर्देशकों के ऐसे संयोजन को संक्षेपण कहते हैं जिसमें अप्रासंगिक, असम्बद्ध, पुनरावृत्त, अनावश्यक बातों का त्याग और सभी अनिवार्य उपयोगी तथा मूल तथ्यों का प्रवाहपूर्ण और संक्षिप्त संकलन हो।"

आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना—डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद

(२) "संक्षेपीकरण को हम किसी बड़े ग्रन्थ का संक्षिप्त संस्करण बड़ी मूर्ति का लघु अंकन और बड़े चित्र का छोटा चित्रण कह सकते हैं।"

हिन्दी रचना कोष—प्रो० नलिन विलोचन तथा प्रो० केशरी कुमार

(३) "संक्षेपण वह रचना रूप है जिसमें शैली के माध्यम से किसी रचना का सार तत्व उपस्थित किया जाता है।" संक्षेपण कैसे करें। —शैलेन्द्र नाथ श्रीवास्तव

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(४) "संक्षेपण किसी लिखित सामग्री के आधारभूत तथ्यों का सुनियोजित आख्यान है।"

—जे० बी० बर्नार्ड

(५) "संक्षेपीकरण किसी कथ्य का वह सार है जिसमें मूल भाव सुरक्षित रहता है। यह लगभग एक-तिहाई होता है।" —प्रो० रामस्वरूप त्रिपाठी 'राम'

इन परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि संक्षेपण में मूल अवतरण या रचना सार होता है। मूल रचना का तथ्य संक्षेपण में होता है तथा अनावश्यक बातें त्याग दी जाती हैं। संक्षेपण में कम से कम शब्दों में मूल रचना के विचारों को अभिव्यक्त किया जाता है। यह एक-तिहाई से अधिक कदापि नहीं होना चाहिए।

संक्षेपण का महत्व और उपयोगिता

आज के व्यस्त जीवन में संक्षेपण का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। संक्षेप में अपने विचार व्यक्त करना एक कला है जो व्यक्ति अपने विचार संक्षेप शैली में अभिव्यक्त नहीं कर सकता उसे प्रबुद्ध भी नहीं कहा जा सकता। कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक विचार व्यक्त करना प्रबुद्धता का लक्षण है। प्राचीन वैयाकरण तथा दार्शनिक सूत्र शैली को महत्व देते रहे हैं। इसलिए आज कार्यालय पद्धति में भी संक्षेपण का प्रवेश हो गया है। अभिवक्ता, सम्पादक, लेखक, व्यापारी, सम्वाददाता सभी संक्षेपण के महत्व को स्वीकार करने लगे हैं। संक्षेपण के व्यापक महत्व को देखते हुए प्रायः सभी विश्व-विद्यालयों में संक्षेपण पाठ्यक्रम का अंग हो गया है।

संक्षेपण की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद ने उचित ही लिखा है—"संक्षेपण एक प्रकार का मानसिक प्रशिक्षण है। इससे छात्रों के पठन-पाठन और लेखन में सरलता, स्वच्छता, प्रभाव और स्पष्टता की क्षमता उत्पन्न होती है। छात्रों में मनोयोग, दृढ़ता और एकाग्रता की सामर्थ्य उद्दीप्त होती है। उनमें स्पष्ट और गूढ़ विचारों तथा भावों को सुलझे रूप में रखने की शक्ति आती है। छोटी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर बोलना या लिखना उतना कठिन नहीं होता जितना बहुत से तथ्यों को थोड़े में लिखना या बोलना। यह सागर में सागर भरने की कला है। संक्षेपण से ही छात्रों में शब्द संयम, भाव संयम और चिन्तन संयम की क्षमता उत्पन्न हो सकती है। सारांश यह है कि संक्षेपण एक ओर हमारे व्यावहारिक जीवन के लिए उपयोगी है तो दूसरी ओर हमारे मानसिक चिन्तन में स्पष्टता, सरलता, सुरुचि, व्यवस्था, दृढ़ता और एकाग्रता की सामर्थ्य जाग्रत करता है। निष्कर्ष यह है कि—

(१) उत्कृष्ट संक्षेपण हमारे श्रम और समय की रक्षा करता है।

(२) मूल सन्दर्भ में बिखरे तथ्यों में से आवश्यक और काम की बातों को अलग करता है।

(३) कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक विचारों को प्रकट करता है। यह हमारी भेदक शक्ति को विकसित करता है। हममें ध्यान लगाने की क्षमता उत्पन्न करता है।"[1]

---

१. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संक्षेपण तथा अन्य समान रचना रूप

संक्षेपण से मिलते-जुलते अन्य रचना रूप भी हैं यथा—सारांश, भावार्थ मुख्यार्थ, आशय आदि। यहाँ संक्षेपीकरण तथा इन रचना रूपों का अन्तर स्पष्ट किया जा रहा है ताकि छात्रों का भ्रम दूर हो सके—

(१) **संक्षेपीकरण तथा सारांश**—संक्षेपीकरण तथा सारांश दोनों में ही मूल रचना का सार निहित होता है। दोनों ही रचनाएँ संक्षिप्तिकरण को ही लेकर चलती हैं। दोनों में मौलिक अन्तर यह है कि संक्षेपण मूल रचना का एक-तिहाई होता है जबकि सारांश और भी छोटा होता है। यह परिस्थिति तथा आवश्यकता के अनुसार पाँचवाँ भाग से लेकर आठवाँ भाग तक हो सकता है।

(२) **संक्षेपण तथा भावार्थ**—संक्षेपण और भावार्थ दोनों ही संक्षिप्तता में आस्था रखते हैं। दोनों में पर्याप्त समानताएँ हैं। दोनों में मौलिक अन्तर यह है। संक्षेपण परिधियों में जकड़ा हुआ है जबकि भावार्थ की सीमा में जकड़ी हुई नहीं होती। भावार्थ की शैली प्रत्यक्ष कथन में होती है तथा संक्षेपण की शैली परोक्ष कथन में होती है। भावार्थ की शैली मूल के निकट होती है। भावार्थ में लेखक अलंकार, मुहावरे, लोकोक्ति तथा कहावतों का प्रयोग कर सकता है, केवल प्रतिबन्ध यह है कि वह मूल से छोटा आकार होना चाहिए जब कि संक्षेपण इनका प्रतिबन्धित है। संक्षेपण एक तिहाई से अधिक किसी कीमत पर नहीं होना चाहिए। भावार्थ के साथ यह प्रतिबन्ध नहीं है।

(३) **संक्षेपण और मुख्यार्थ**—मुख्यार्थ (Gist) अत्यन्त छोटा होता है। यह सारांश, भावार्थ तथा आशय से भी छोटा होता है। मूल रचना का मूल तथ्य दो या चार वाक्यों में प्रस्तुत कर दिया जाता है।

(४) **संक्षेपण और आशय**—आशय में मूल रचना का स्वरूप प्रस्तुत किया जाता है। उसका अर्थ स्पष्ट किया जाता है। गूढ़ वाक्यों की व्याख्या भी की जाती है। विशेष बात यह है कि आशय की सीमा रेखा नहीं है। वह मूल रचना से छोटा भी हो सकता है, बराबर भी हो सकता है और बड़ा भी हो सकता है। शर्त इतनी है कि कम से कम शब्दों में अवतरण (गद्य हो या पद्य) का अर्थ स्पष्ट होना चाहिए। संक्षेपण में यह बात नहीं है। संक्षेपण का आकार निश्चित होता है। इसमें व्यक्तिक्रम नहीं किया जा सकता।

संक्षेपण की विशेषताएँ

(१) **मूल रचना के तथ्यों का अनुसन्धान**—मूल रचना के महत्वपूर्ण तथ्य संक्षेपण में आने चाहिए तथा अनावश्यक अंश त्याग देने चाहिए। महत्वपूर्ण अंश छूट गये हैं तो संक्षेपण पूर्ण नहीं कहा जा सकता।

(२) **संक्षिप्तता**—संक्षिप्तता संक्षेपण का प्राण है। मूल रचना के भाव तथा गम्भीर तथ्य संक्षेप में कहना ही तो संक्षेपण कहलाता है। संक्षे-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पण मूल रचना के तिहाई भाग से अधिक नहीं होना चाहिए। यदि मूल रचना में १२५ शब्द हैं तो संक्षेपण में ४२ या ४३ शब्द होने चाहिए।

(३) क्रमबद्धता—मूल रचना में भाव जिस क्रम से आये हैं इसी क्रम से संक्षेपण में भी आने चाहिए। यदि क्रम भंग हो जाता है तो पाठक संक्षेपण के माध्यम से मूल रचना को समझ नहीं सकता। इस प्रकार संक्षेपण का प्रभाव समाप्त हो जाने का भय है।

(४) सुबोधता तथा शुद्धता—संक्षेपण समय की बचत के लिए किया गया प्रयास है। कलात्मकता तथा सृजनात्मक शक्ति के माध्यम से लेखक मूल रचना के भाव को संक्षेपण के द्वारा व्यक्त करता है। संक्षेपण में सुबोधता का होना आवश्यक है। यदि पाठक संक्षिप्त अंश द्वारा मूल रचना को समझने में समर्थ नहीं हो पाता तो संक्षेपीकरण की उपयोगिता क्या है ? अतः संक्षिप्त अंश इस प्रकार होना चाहिए कि पाठक मूल रचना के भाव को समझने में समर्थ हो सके। संक्षेपीकरण में शुद्धता का होना भी आवश्यक है।

(५) प्रवाहपूर्ण शैली—संक्षेपण की शैली सरल तथा सुबोधमयी होनी चाहिए। भाषा गतिशील होनी चाहिए, शैली प्रवाहमयी होनी चाहिए।

(६) सरल भाषा—भाषा सरल होनी चाहिए। समास तथा क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिए। संक्षेपण में लेखक को अपनी भाषा में विचार व्यक्त करने चाहिए।

कुशल संक्षेपक के गुण

(१) सजग पाठक—संक्षेपण का लेखक सजग पाठक होना चाहिए। अवतरण की सजगता के पाठ पढ़ने के बाद ही उसके मूल तथ्यों का ज्ञान हो पाता है। महत्वपूर्ण तथ्यों को उसे स्मृति में रखना होता है तभी संक्षेपीकरण करना आसान हो पायेगा।

(२) विवेक पूर्ण—संक्षेपक विवेक के द्वारा मूल रचना के तथ्यों का विवेचन करे। संक्षेपक का यहाँ यह दायित्व हो जाता है कि वह यह निर्णय करे कि कौन से अंश ग्राह्य करने योग्य हैं तथा कौन से अंश छोड़ने योग्य हैं।

(३) धैर्य—संक्षेपक में धैर्य होना आवश्यक है। उसे शीघ्रता नहीं करना चाहिए। संक्षेपण में अवतरण को एक से अधिक बार पढ़ना पड़ता है तब कहीं मूल भाव का ज्ञान हो पाता है। क्रम से सभी अंशों को सँजोना भी संक्षेपक का कार्य है।

(४) अभ्यास—'करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान' कहावत के अनुसार अभ्यास किसी कार्य में सफलता के लिए आवश्यक है। अभ्यास के द्वारा सफल संक्षेपक बनाया जा सकता है। अभ्यास से संक्षेपक कला का निखार आता है तथा कार्य में दक्षता प्राप्त होती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(५) **भाषा पर अधिकार**—संक्षेपक में भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है। भाषा पर जिसका अधिकार होगा वही शब्दों का सही प्रयोग कर सकता है। शब्द-भंडार जितना व्यापक होगा उतना ही अच्छा संक्षेपीकरण किया जा सकता है।

संक्षेपण विधि

संक्षेपण के दो पक्ष हैं—

(१) विषयगत, (२) शैलीगत।

विषयगत पक्ष में निम्नलिखित बातें ध्यान में रखने योग्य हैं—

(१) **वाचन**—संक्षेपण मूल अवतरण का सक्षिप्त रूप होता है। प्रायः यह मूल अवतरण का एक-तिहाई होता है। संक्षिप्त अंश में मूल अवतरण का सार होता है। सार ज्ञात करने के लिए मूल अवतरण को सतर्कता के साथ पढ़ना आवश्यक है। प्रथम वाचन में यदि भाव का पता नहीं चलता तो कई वाचन करने पड़ते हैं। यदि अवतरण की भाषा सरल है तो एक या दो वाचन ही पर्याप्त होते हैं। यदि भाषा क्लिष्ट है तो कई बार पढ़ना पड़ता है। अवतरण के मूल भाव को जानना ही वाचन का उद्देश्य होता है।

(२) **प्रमुख विचार-बिन्दुओं को रेखाङ्कित करना**—वाचन के पश्चात् मूल अवतरण के प्रमुख विचार बिन्दुओं को रेखाङ्कित कर लिया जाता है। इन प्रमुख विचार बिन्दुओं के माध्यम से मूल भाव का आकलन किया जाता है। इन विचार बिन्दुओं के द्वारा ही प्रारूप प्रस्तुत किया जाता है। प्रारूप में यह जानना आवश्यक है कि मूल तथ्य से सम्बन्धित अंश छूट तो नहीं गया है तथा अनावश्यक अंश आ तो नहीं गया है।

(३) **प्रारूप प्रस्तुत करना**—विचार बिन्दुओं के सहयोग से प्रारूप तैयार किया जाता है। प्रारूप की भाषा लेखक की स्वयं की हो। प्रारूप में मुख्य तथ्य पर विशेष ध्यान दिया जाता है। प्रथम प्रारूप में संशोधन भी करना पड़ता है। प्रथम प्रारूप में यहध्यान रखना पड़ता है कि मूल भाव छूटने न पाये तथा अनावश्यक अंश सम्मिलित न हो पाये। भाषा भी लेखक की हो। मूल अवतरण के शब्दों से बचकर चलना चाहिए।

(४) **द्वितीय प्रारूप**—प्रथम प्रारूप की समीक्षा करना आवश्यक होता है। इस प्रारूप में यह देखना होता है कि आवश्यक तथ्य आ गये हैं या नहीं। अनावश्यक अंश तो नहीं आ गया है। मुहावरे, लोकोक्तियाँ कहावतें तो नहीं सम्मिलित हो गये हैं। कुल शब्दों की संख्या मूल अवतरण से $\frac{1}{3}$ से अधिक नहीं है। इस प्रकार संशोधन करने के पश्चात पुनः प्रारूप लिखना होता है। यह प्रारूप ही संक्षेपण है।

(५) **भाषा**—भाषा सरल, सुबोध तथा प्रवाहपूर्ण होनी चाहिए। भाषा संक्षेपण कर्त्ता की निजी हो। लोकोक्तियाँ, मुहावरे तथा कहावतें नहीं होनी चाहिए। जहाँ तक सम्भव हो सरल हिन्दी के शब्दों का प्रयोग होना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(६) शाषक—इसके उपरान्त संक्षिप्त अवतरण का शीर्षक निर्धारित करना चाहिए। शीर्षक में मूल तथ्य का ज्ञान कराने की क्षमता होना आवश्यक है।

शैलीगत पक्ष—शैली अभिव्यक्ति के ढङ्ग को कहते हैं। विषय को अभिव्यक्ति करना ही उतना ही महत्वपूर्ण है जितना उसे जानना। संक्षेपण भी एक मूल अवतरण का होता है तथा स्वयं में पूर्ण होता है। कहा भी गया है—"संक्षेपण का अर्थ मूल के विचारों का बिन्दु संकलन ही नहीं है, बल्कि एक स्वतन्त्र रचना है, जिसकी अपनी शैली है, अपना आकर्षण है। वह अर्थ की अभिव्यक्ति में समर्थ होती है। इसमें अभिधा की प्रधानता होती है। चमत्कार और आडम्बर के अभाव में इन गुणों के कारण संक्षेपण सुपाठ्य और सुन्दर और सुबोध होता है।"[1] शैलीगत पक्ष की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं—

(१) **अभिधा प्रधान शैली**—जैसा कि ऊपर बताया गया है कि संक्षेपण में भाषा सरल, सुबोध होना आवश्यक है। इसके लिए अभिधा मूलक शब्द शक्ति का प्रयोग करना चाहिए। लक्षण या व्यंजना से अर्थ गूढ़ हो जाता है तथा भाषा क्लिष्ट हो जाती है। अभिधामूलक शैली के लिए निम्नलिखित बातें ध्यान में रखने योग्य हैं—

(i) **अलंकारों का त्याग**—अभिधामूलक शैली के लिए यह आवश्यक है कि अलंकारों का प्रयोग न किया जाय। अलंकारों के प्रयोग से भाषा की सुबोधता समाप्त हो जाती है।

(ii) **विशेषण तथा क्रिया विशेषणों का त्याग**—साधारणीकरण करते समय विशेषण तथा क्रिया विशेषणों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। सामान्यतः विशेषण का कार्य संज्ञा शब्दों से लेना चाहिए।

(iii) **कहावतों तथा मुहावरों का त्याग**—कहावतों, लोकोक्तियाँ तथा मुहावरों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। इनके प्रयोग के स्थान पर साधारण भाषा का प्रयोग करना उचित है।

(२) **अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द**—हिन्दी मेंऐसे भी शब्द हैं जो अनेक शब्दों के स्थान पर प्रयुक्त होकर उनके अर्थ को ध्वनित कर देते हैं जैसे—वात्सल्य—माता-पिता तथा आचार्य का बच्चों के प्रति स्नेह भाव। ऐसे शब्दों के प्रयोग से संक्षिप्तता भी आती है तथा भाव-प्रकाशन में सुबोधता रहती है। अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का अध्ययन आप बी० ए० (पूर्वार्द्ध) में कर चुके हैं। बी० ए० पूर्वार्द्ध की हिन्दी भाषा में इस सम्बन्ध में विस्तार से अध्ययन किया जा चुका है। यहाँ भी आगामी पृष्ठ पर एक संक्षिप्त सूची भी दी जा रही है ताकि छात्र इन शब्दों का प्रयोग संक्षेपण करते समय कर सकें।

(३) **भाषा का सुगठित स्वरूप**—संक्षेपीकरण भी एक भाषा का एक स्वरूप

१. संक्षेपण कैसे करें : शैलेन्द्र नाथ श्रीवास्तव।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है। संक्षेपीकृत अवतरण में एकरूपता, भाषा का सुसंगठित रूप होना चाहिए। व्याकरणिक शुद्धता होना भी आवश्यक है।

(४) अप्रत्यक्ष कथन का प्रयोग—प्रत्यक्ष कथन के स्थान पर अप्रत्यक्ष कथन का प्रयोग संक्षेपीकृत अवतरण में आवश्यक होता है।

(५) अन्य पुरुष का प्रयोग—संक्षेपण में प्रथम पुरुष के स्थान पर अन्य पुरुष का प्रयोग करना चाहिए। सन्दर्भ प्रसंग आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए। संक्षेपण में मूल अवतरण के तिहाई से अधिक या कम शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। एक या दो शब्दों का कम या अधिक होना क्षम्य है।

संक्षेप में कहा जा सकता है—

(१) लोकोक्तियाँ, मुहावरों तथा कहावतों का प्रयोग न करें।

(२) अभिधा मूलक शब्द-शक्ति का प्रयोग करें।

(३) क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग न करें।

(४) अन्य पुरुष का प्रयोग करें।

(५) अप्रत्यक्ष कथन का प्रयोग करें।

(६) भाषा अवतरण की न होकर अपनी भाषा का प्रयोग करें।

(७) व्याकरणिक अशुद्धियाँ न करें।

(८) सन्दर्भ, प्रसंग, आलोचना, टीका-टिप्पणी आदि न लिखें।

(९) अनावश्यक बातों से बचें।

(१०) आवश्यक तथ्य अवश्य ही आने चाहिए।

(११) मूल अवतरण का एक-तिहाई ही संक्षेपण में लिखा जाता है।

(१२) किसी भी प्रकार का उदाहरण या दृष्टान्त न दें।

(१३) भाषा सरल, सुबोध तथा सारगर्भित होनी चाहिए।

अनेक शब्दों के स्थान पर शब्द

एक शब्द	अनेक शब्द
अगोचर—	जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा न हो सके।
अजेय—	जो जीता न जा सके।
अनुक्रमणिका—	पुस्तक में आने वाले अध्यायों की क्रमवार सूची। या सन्दर्भ ग्रन्थों की क्रमवाच सूची।
अन्तेवासी—	आचार्य के आश्रम रहकर अध्ययन करने वाला शिष्य।
अनुष्ठान—	किसी शुभ कार्य को विधिपूर्वक करना।
अजातशत्रु—	जिसका कोई शत्रु उत्पन्न न हुआ हो।
अनैतिहासिक—	जो इतिहास से प्रमाणित न होता हो।
अनाहूत—	बिना निमन्त्रण के जाना।
अप्रत्याशित—	जिसकी आशा न हो।
अतिथि—	जिसके आने की तिथि ज्ञात न हो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एक शब्द	अनेक शब्द
अण्डज—	जो अण्डे से उत्पन्न हुआ हो ।
अद्वितीय—	जिसके समान दूसरा न हो ।
अनिर्वचनीय—	जिसका वर्णन वचनों द्वारा न हो सके ।
आद्यन्त—	प्रारम्भ से अन्त तक
आपाद मस्तक—	सिर से पैर तक
इन्द्रियातीत—	जो इन्द्रियों से परे हो ।
ईप्सित—	जिस वस्तु की आकाञ्छा हो ।
उदारचेता—	जिसकी वृत्ति उदार हो ।
उर्वरा—	जिस भूमि में अधिक अन्न पैदा होता हो ।
एकाधिकार—	जिस पर एक दूसरे का अधिकार न हो ।
ऐहिक—	इस संसार सम्बन्धी
औपनिवेशिक—	उपनिवेश सम्बन्धी
औपचारिक—	औपचारिकताओं को पूर्ण कराने वाला
किंकर्त्तव्यविमूढ़—	अपने कर्त्तव्य का निश्चय न करने वाला
खेचर—	आकाश में चलने वाला
कृतज्ञ—	अपने प्रति किये गये उपकारों को मानने वाला
कृतघ्न—	उपकारों को न मानने वाला
कुशाग्र बुद्धि—	जिसकी बुद्धि तीव्र हो ।
कल्पनातीत—	जो कल्पनाओं से परे हो ।
गोचर—	इन्द्रियों द्वारा जाने वाला, चरागाह ।
चक्रपाणि—	जिसके हाथ में चक्र हो ।
चम्पू—	गद्य-पद्य मिश्रित काव्य
चीवर—	बौद्ध भिक्षुओं द्वारा पहना जाने वाला वस्त्र
चाक्षुष—	नेत्र से सम्बन्ध रखने वाला
चारण—	विरदावलि गाने वाले भाट
छद्मवेषी—	छिपे वेष में रहने वाला
छापामार—	बिना सूचना आक्रमण करने वाला
छावनी—	सेना के ठहरने वाला स्थान
छिद्रान्वेषी—	दूसरों में दोष देखने वाला
जिज्ञासु—	जानने की इच्छा रखने वाला
जितेन्द्रिय—	जिसने इन्द्रियों को वश में कर लिया है ।
जिजीविषा—	जीने की इच्छा करना
जितेन्द्रिय—	जिसने इन्द्रियों को जीत लिया है ।
जाज्वल्यमान—	जलता हुआ प्रकाश पिण्ड

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आडम्बर—	दिखावा करना
तस्कर—	चोरी या छल से धन ले जाने वाला
तटस्थ—	निष्पक्ष भाव रखने वाला
तटवर्ती—	नदी या सागर के किनारे रहने वाला
तितीर्षु—	तैरने की इच्छा रखने वाला
दलित—	जिसे दबाया गया हो
दावाग्नि—	जंगल में लगने वाली अग्नि
दुर्गम—	जहाँ आर-पार जाना सुगम न हो।
दुर्बोध—	जिसे समझना कठिन हो
दुःसाध्य—	जिसे सिद्ध करना कठिन हो।
द्रुतगामी—	शीघ्र चलने वाला
दृष्टव्य—	जो देखने योग्य हो।
दूरदर्शी—	दूर तक देखने वाला
दुर्भेद्य—	जिसे कठिनाई से भेदा जा सके।
दुराग्रह—	अनुचित बात या कार्य के लिए हठ या जिद्द।
दुर्दम्य—	जिसका सरलता से दमन न हो सके।
धनेश—	धन का स्वामी या धन का अधिपति
धूमाच्छादित—	धुँए से ढँका हुआ।
धूमिल—	जो स्पष्ट दिखाई न दे।
नश्वर—	जो नाशवान हो
नवजात—	शीघ्र उत्पन्न हुआ शिशु
नवोदित—	नया उदय हुआ।
नभचर—	आकाश में विचरण करने वाला।
नवोढ़ा—	नया विवाह करके लाई गई स्त्री
नारकीय—	नरक के योग्य जीव-जन्तु
नास्तिक—	जिसकी ईश्वर में आस्था न हो।
निशाचर—	जो रात में विचरण करता हो, राक्षस
निदेशक—	निदेश देने वाला, विभाग का वरिष्ठ अधिकारी।
निर्देशक—	पर्यवेक्षक, तथा संचालन करने वाला
निरुपम—	जिसकी उपमा न दी जा सके।
निरामिष—	जो मांसाहारी न हो।
निर्माल्य—	वह द्रव जिसके छिड़कने से सजीवता आ जाय अथवा देवार्पित वाला
निर्मूल—	आधारहीन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निराधार—	जिसका कोई आधार न हो ।
परमार्थी—	मुक्ति की कामना करने वाला
पराश्रित—	दूसरों के आश्रित रहने वाला
पराधीन—	दूसरों के आधीन रहने वाला
परजीवी—	दूसरों पर आश्रित रहने वाला
परकीया—	दूसरे पुरुष से प्रेभ करने वाली स्त्री
निर्निमेष—	विना पलक गिराये देखना
प्रत्युत्पन्नमति—	शीघ्र ही निर्णायक बुद्धि वाला व्यक्ति
पिष्टपेषण—	कही हुई बात को बार-बार कहना
प्रहसन—	हास्य कथायें
प्रतिपाद्य—	ऐसा विषय जिसका उत्तर देना हो
प्रभाती—	प्रातःकाल जगाने के लिए गाया जाने वाला गीत
प्रोषित पतिका—	जिसका पति विदेश गया हो
प्रागैतिहासिक—	इतिहास से पूर्व का समय
भग्नावशेष—	किसी इमारत के टूटने-फूटने से बचा हुआ भाग
मनसा-वाचा-कर्मणा—	मन से, वचन से, कर्म से
मीनाक्षी—	मछली जैसे नेत्रों वाली
मुमुक्षु—	मोक्ष की कामना करने वाला
मृगनयनी—	हिरण के समान आँखों वाली स्त्री
यशःशेष—	वह व्यक्ति जिसका मृत्यु के बाद यश शेष रहा हो ।
यौतुक—	विवाह के समय कन्या को दिया जाने वाला दहेज ।
रिक्थ—	उत्तराधिकार में प्राप्त सम्पत्ति
लघिमा—	बड़े से छोटा बनाने की कला जानने वाला व्यक्ति
लुब्धक—	शिकार करने वाला
विपन्न—	विपत्ति में फँसा हुआ व्यक्ति
वितण्डावाद—	व्यर्थ की बहस जिसका कोई आधार न हो ।
विकल्प—	कई बातों मे से एक का निर्णय
शब्दवेधी—	जो शब्द को सुनकर बाण चलाने की विद्या में प्रवीण हो ।
सधवा—	जिसका पति जीवित हो ।
सर्वज्ञ—	जो सब कुछ जानता हो ।
सदावर्त—	जहाँ भोजन बिना मूल्य मिलता हो ।
सहोदर—	एक ही उदर से उत्पन्न होने वाला (सगा भाई)
सहधर्मिणी—	साथ-साथ धर्म निर्वाह करने वाली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुषुप्त— सोने की इच्छा वाला
सैंधव— सिंधु देश का घोड़ा
स्तवक— फूलों का गुच्छा
स्तवन— प्रार्थना करना
स्थिवर— स्थिर रहने वाला व्यक्ति
स्वेदज— जो पसीने से उत्पन्न हुआ हो
हस्तलाघव— जो हाथ से हथियार चलाने में प्रवीण हो।
हव्य— हवन में डालने योग्य वस्तु
हृदय रंजक— हृदय को प्रसन्न करने वाला
क्षत्रप— किसी क्षेत्र का अधिपति
क्षील प्रहस्त— जिसका हाथ काम करने में तेज हो।
त्रिकालज्ञ— तीनों कालों की बात जानने वाला
त्रस्त— जिसको दुःख दिया गया हो।
त्रिताप— दैहिक, दैविक एवं भौतिक दुःखों का समूह
त्रिमूर्ति— ब्रह्मा, विष्णु और महेश

संक्षेपण के उदाहरण

अभ्यास १

राजन, शुद्ध बुद्धि तो सदैव निर्लिप्त रहती है। केवल साक्षी रूप से वह सब दृश्य देखती है। तब भी इन सांसारिक झगड़ों में उसका उद्देश्य होता है कि न्याय का पक्ष विजयी हो—यही न्याय का समर्थन है। तटस्थ की यही सुभेच्छा सत्व से प्रेरित होकर समस्त सदाचारों की नींव विश्व में स्थापित करती है। यदि वह ऐसा न करे तो अप्रत्यक्ष रूप मे अन्याय का समर्थन हो जाता है—हम विरक्तों को भी राजदर्शन की आवश्यकता हो जाती है।

(८० शब्द)

सारांश—शुद्ध बुद्धि निरपेक्ष होती है। न्याय-अन्याय संघर्ष में तटस्थ रहने से अन्याय का अप्रत्यक्ष समर्थन होता है। न्याय के रक्षार्थ योगी को राजदर्शन जानना आवश्यक है।

(२७ शब्द)

अभ्यास २

निम्नलिखित अवतरण का सारांश तथा शीर्षक लिखिए—

वैदिक हिंसापूर्ण यज्ञों और पुरोहितों के एकाधिपत्य से साधारण जनता के हृदय क्षेत्र में विद्रोह की उत्पत्ति हो रही थी। उसी के फलस्वरूप जैन बौद्ध धर्मों का प्रादुर्भाव हुआ। वह हिंसामय वेदवाद और पूर्ण अहिंसा वाली जैन दीक्षाओं अतिवाद से बचता हुआ एक मध्यवर्ती नया मार्ग या सम्भवतः धर्मचक्र प्रवर्त्तन के समय गौतम ने इसी से अपने धर्म को मध्यम प्रतिपदा के नाम से अभिहित किया और इसी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धार्मिक क्रान्ति ने भारत के भिन्न-भिन्न राष्ट्रों को परस्पर संधि विग्रह करने के लिए बाध्य किया। (८६ शब्द)

१. शीर्षक—धार्मिक क्रान्ति

संक्षेपण--वैदिक हिंसामय यज्ञों के विद्रोह स्वरूप जैन और बौद्ध धर्म का उद्भव हुआ। बौद्ध धर्म वैदिक और जैन धर्म का मध्यवर्ती मार्ग था। धार्मिक क्रांति ने भारतीय प्रदेशों में संधि-विग्रह किया। (३० शब्द)

अभ्यास ३

कहा जाता है कि हिन्दी वाले बेकार हैं अकर्मण्य हैं, कायर हैं, इन तीनों विशेषणों को हम स्वीकार करते हैं, यदि हममें ये महान् गुण न होते तो मुट्ठी भर अंग्रेजी समर्थक हम पर इस प्रकार खुल्लम-खुल्ला अट्टहास करते-करते वह हमारी कमजोर नसों को जानते हैं और उन पर प्रहार करके सदा के लिए अपंग बना देना चाहते हैं। इसलिए आज हम अपने हिन्दी भाषी और हिन्दी प्रेमी-बन्धुओं से निवेदन करना चाहते हैं—भाई अपने भेद-भावों को भुला दीजिए, कविता नयी हो या पुरानी कहानी प्रेमचंद शैली में लिखी गई हो या अज्ञेय शैली में वह सब हिन्दी है और यदि हिन्दी की रक्षा न हुई तो आपकी भी न हो सकेगी और आप अपने झगड़ों के लिए मुँहबाये खड़े रह जायेंगे। इसी तरह चाहे आप सरकारी नौकर हों चाहे स्वतन्त्र पत्रकार, चाहे श्रमजीवी लेखक, अपने संकट को पहिचानिये और अपनी शक्ति को संगठित कर विरोधी तत्वों पर कस कर प्रहार कीजिए। इसलिए बन्धुओं राष्ट्रीयता की रक्षा के लिए अपना पुनीत कर्त्तव्य समझकर युद्धभूमि में कूद पड़िये। किन्तु ठहरिये उतावली में आने की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता पड़ने पर बलिदान के लिए तत्पर अवश्य रहिए किन्तु पहिले संगठन का सहारा लीजिए। हमारी संगठन की शक्ति को देखकर राष्ट्रभाषा के विरोधियों की रूह कांप उठेगी। (कानपुर वि० वि०, १९६९)

(शब्द संख्या २१२)

संक्षेपण

मुट्ठी भर अंग्रेजी हिमायता हमें अकर्मण्य और काया कह कर अपंग बना देना चाहते हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दी पर उनका आक्रमण राष्ट्रीयता पर आक्रमण है। हिन्दी भाषी काल, युग, विधा एवं शैली के मतभेद को भुलाकर संगठित हों। शिक्षक, पत्रकार, लेखक सभी संगठित होकर विरोधियों के आक्रमण का उत्तर दें। यह कार्य उतावलेपन से न हो। बलिदान के लिये तत्पर रहो। संगठन शक्ति देखकर ही विरोधियों की रूह काँप उठेगी। (शब्द ७०)

अभ्यास ४

आज मुद्रण यंत्रों के आविष्कार से सत्य काव्य पाठ्य बन गया है और इस प्रकार उसका रूप वैयक्तिक हो गया है। कवि सम्मेलनों को छोड़कर श्रव्य काव्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एकान्त अध्ययन की विधा बन कर रह गया है। इसके अतिरिक्त वह विद्वद्वर्ग की वस्तु है, विज्ञ सामाजिक ही काव्य के अन्तर्निहित मर्म को समझकर उसका आनन्द लाभ कर सकते हैं। इसके सर्वथा विपरीत एक तो नाटक का आनन्द रंगशाला में बैठकर ही लिया जा सकता है और इस रूप में इसमें सामाजिकता है। दूसरे इनमें रंगमञ्च और अभिनय की सहायता से साधारण अनुभूति-वाला सामाजिक भी समुचित आनन्द लाभ प्राप्त कर सकता है। नाटक में स्थापत्य, मूर्ति, चित्र, संगीत, नृत्य तथा काव्य कला का संयोग होने के कारण सामाजिक को कवि कल्पना के साथ साधारणीकरण में सुविधा हो जाती है और इससे उसकी प्राभावोत्पादन क्षमता बढ़ जाती है। एक सुप्रसिद्ध आभणक के अनुसार देखने और सुनने में बड़ा अन्तर होता है जो प्रभाव चित्र के प्रत्यक्ष दर्शन से मानस पर पड़ता है वह उसके विषय में सुनने से कभी नहीं पड़ सकता।

(शब्द संख्या १६६)

संक्षेपण

मुद्रण यंत्रों के आविष्कार के कारण श्रव्य-काव्य पाठ्य काव्य हो गया है। श्रव्य काव्य विद्वद्वर्ग का विषय रह गया है। नाटक सर्वसाधारण का विषय है। वह रंगमंच पर देखा जा सकता है। नाटक में सभी ललित कलाओं का समावेश होता है। इससे इसका प्रभाव स्थायी हो जाता है। सुनने की अपेक्षा देखने का प्रभाव स्थायी होता है।

(५७ शब्द)

शीर्षक—दृश्य काव्य।

अभ्यासार्थ अवतरण

(१)

यदि मैं सम्राट न होकर किसी विनम्र लता के कोमल किसलयों के झुरमुट में एक अधखिला फूल होता और संसार की दृष्टि मुझ पर न पड़ती—पवन की किसी लहर को सुरभित करके धीरे से उस प्याले में चू पड़ता तो इतना भीषण चीत्कार इस विश्व में न मचता। उस अस्तित्व अनस्तत्व के साथ कितनी सुखी होता। भगवान असंख्य ठोकरें खाकर लुढ़कते हुए जड़-ग्रह पिण्डों से भी तो इस चैतन्य मानव की बुरी गति है। धक्के पर धक्के खाकर भी यह निर्लज्ज सभा से नहीं निकलना चाहता। कैसी विचित्रता।

(शब्द संख्या ६१)

(२)

इतिहास में घटनाओं की प्रायः पुनरावृत्ति ही देखी जाती है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि उसमें कोई नई घटना होती ही नहीं। किन्तु असाधारण नई घटना भी भविष्य में फिर होने की आशा रखती है। मानव समाज की कल्पनाओं का भण्डार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अक्षय है क्योंकि वह इच्छा-शक्ति का विकास है। इन कल्पनाओं का, इच्छाओं का मूल मन्त्र बहुत ही सूक्ष्म और अपरिस्फुट होता है। जब वह इच्छाशक्ति किसी व्यक्ति या जाति में केन्द्रीभूत होकर अपना सफल या विकसित रूप धारण करती है तभी इतिहास की सृष्टि होती है। विश्व में जब तक कल्पना उच्चता को नहीं प्राप्त होती तब तक वह रूप परिवर्तन करती हुई पुनरावृत्ति करती ही जाती है। समाज की अभिलाषा अनन्त स्रोत वाली है। पूर्व-कल्पना के पूर्ण होते-होते एक नई कल्पना उसका विरोध करने लगती है और पूर्व कल्पना कुछ काल तक ठहरकर फिर होने के लिए अपना क्षेत्र प्रस्तुत करती है। इधर इतिहास का नवीन अध्याय खुलने लगता है। मानव समाज के इतिहास का इसी प्रकार संकलन होता है। (शब्द संख्या १६४)

(३)

उपन्यास की कथावस्तु में एक से अधिक कथानकों का गुम्फन किया जाता है किन्तु कहानी में एक ही कथानक रहता है। उपन्यासकार के कथानक का मार्ग लम्बा रहता है, उसके बीचबीच में अनेक मोड़, अनेक विश्रामस्थल एवं अनेक घटनास्थल उपस्थित होते हैं, जबकि कहानीकार की यात्रा छोटी-सी होती है जिसमें विभिन्न मोड़ों, विश्राम-स्थलों एवं अनेक घटना-स्थलों की सम्भावना ही नहीं होती। इसके अतिरिक्त उपन्यासकार की गति शिथिल होती है; बैलगाड़ी में बैठे राहगीर की भाँति वह अपने दाँए-बाँए झाँकता हुआ धीरे-धीरे आगे बढ़ता है जबकि कहानीकार वायुयान की भाँति अपने लक्ष्य की ओर सीधा दौड़ता है। उसके दाँए-बाँए क्या हो रहा है इसे देखने का उसे अवकाश ही नहीं रहता। उपन्यास में पात्रों की संख्या कहानी से कई गुना अधिक होती है और वह सभी के व्यक्तित्व की प्रायः सभी विशेषताओं का चित्रण करता है जबकि कहानीकार कुछ पात्रों को लेकर उनकी कुछ विशेषताओं का या किसी विशेष प्रमुख प्रवृत्ति का ही उद्घाटन कर पाता है। कहानी के कथोपकथन में लम्बे-लम्बे व्याख्यानों या दीर्घ बहसबाजी के लिए स्थान नहीं रहता। सभी कहानीकार अपने देशकाल के समस्त वातावरण को प्रस्तुत करना आवश्यक नहीं समझते। उपन्यास की भाँति कहानीकार अपनी रचना में अनेक समस्याओं का या अनेक सिद्धान्तों का चित्रण नहीं करता, अपितु वह अपना सारा ध्यान किसी एक विचार सिद्धान्त या समस्या पर ही केन्द्रित करता है।

(१) इस अवतरण का संक्षेपण कीजिए जो एक तिहाई से अधिक न हो।

(२) इस अवतरण का उचित शीर्षक दीजिए। (शब्द संख्या २२७)

(४)

इधर जब से विश्वविद्यालयों में हिन्दी की उच्च शिक्षा का विधान हुआ तब से उसके साहित्य के विचारों के शृंखलाबद्ध इतिहास की आवश्यकता का अनुभव छात्र और अध्यापक दोनों कर रहे थे। शिक्षित जनता की जिन-जिन प्रवृत्तियों के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनुसार हमारे समाज के स्वरूप में जो परिवर्तन होते आये हैं जिन-जिन प्रभावों की प्रेरणा से काव्यधारा की भिन्न-भिन्न शाखायें फूटती रही हैं उन सबके सम्पर्क निरूपण तथा उसकी दृष्टि के लिए सुसंगत काल विभाग के बिना साहित्य के इतिहास का सच्चा अध्ययन कठिन दिखाई पड़ता था। सात-आठ सौ वर्षों की काव्य राशि सामने लगी हुई थी पर ऐसी निर्दिष्ट सारिणियों की उद्‌भावना नहीं थी जिसके अनुसार सुगमता से उस प्रभूत सामग्री का वर्गीकरण होता। भिन्न-भिन्न शाखाओं के हजारों कवियों में केवल कालक्रम से गुँथी उपर्युक्त वृत्त मालाएँ साहित्य के इतिहास में अध्ययन में कहाँ तक सहायता पहुँचा सकती थी। सारे रचना-काल को आदि मध्य पूर्व उत्तर इत्यादि खण्डों में आँख मूँद कर बाँट देना यह भी न देखना कि किस खण्ड के भीतर क्या आता है, क्या नहीं ? किसी वृत्त संग्रह को इतिहास नहीं बना सकता।

(१) अवतरण का संक्षेपण कीजिए।

(२) उपयुक्त शीर्षक दीजिए। (शब्द संख्या २७५)

(५) १९७३

धन लोभ के मानव भावों को पूर्णरूप से अपने अधीन कर लिया है। कुलीनता और शराफत, गुण और कमाल की कसौटी, पैसा और केवल पैसा है। जिनके पास है वे देवता स्वरूप हैं, उनका अन्तःकरण कितना ही काला क्यों न हो? साहित्य, संगीत और कला सभी धन की देहली पर माथा टेकते हैं, यह दवा जहरीली हो गई है कि इसमें जीवित रहना कठिन होता जा रहा है। डाक्टर और हकीम हैं कि वह बिना लम्बी फीस लिये बात नहीं करते। वकील, बैरिस्टर हैं कि वह मिनटों को अशर्फियों से तौलते हैं। मौलवी साहब और पंडित जी भी पैसे वालों के बिना पैसे के गुलाम हैं। अखबार उन्हीं का राग अलापते हैं। (आज गुण और योग्यता की सफलता उसके मूल्य के हिसाब से मानी जाती है। इस अर्थ-लोलुपता ने आदमी के दिलोदिमाग पर इतना अधिकार जमा लिया है कि उसके राज्य पर किसी और से भी आक्रमण करना कठिन दिखाई देता है। स्नेह, सच्चाई और सौगन्ध का पुतला मनुष्य दया, ममता, शून्य-जड़-यन्त्र बनकर रह गया है) इस महाजनी सभ्यता ने नये-नये नीति नियम गढ़ लिये हैं।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का संक्षेपण कीजिये जो मूल गद्यांश के एक-तिहाई से अधिक न हो।

(ख) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिये।

(ग) उपर्युक्त गद्यांश के काले अंशों का भाव स्पष्ट कीजिये।

(घ) उपर्युक्त अवतरण में ( ) के अन्दर लिखे हुये अंश को अपने शब्दों में व्याख्या कीजिये ?

(ङ) उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर 'महाजनी सभ्यता' का तात्पर्य समझाइये ?

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(६) १९७४

आरम्भिक आर्य द्रविड़ों की अपेक्षा अधिक भावुक थे, भारत में पहुँचने के पूर्व वे अधिक घुमक्कड़ और मौजी थे। अतएव वे उत्साही और प्रकृति-प्रेमी थे। यदि सभ्यता, संस्कृति का आधिभौतिक पक्ष है तो भारत में इस पक्ष का अधिक विकास आर्यों ने किया है। वैदिक युग के आर्य मोक्ष के लिये चिंतित नहीं थे न वे संसार को आसार मान कर उससे भागना चाहते थे। उनकी वैदिक प्रार्थनायें भी हैं और सबल, स्वस्थ, प्रफुल्ल जीवन को प्रोत्साहन देने वाले मंत्र भी। उनकी प्रार्थनायें हैं जिनसे पस्त से पस्त मनुष्य के भीतर भी उमंग की लहर जग सकती है किन्तु भारतीय संस्कृति की कई कोमल विशिष्टतायें जैसे अहिंसा, सहिष्णुता और वैराग्य-भावना आर्यों के पूर्व ही द्रविड़ स्वभाव के प्रभाव से विकसित हो चुकी थी। यह देश आर्यों के आगमन के पूर्व से ही अहिंसक, अल्पसन्तोषी और सहिष्णु रहता आया है। आर्यों ने यहाँ आकर जीवन की धूम मचा दी, प्रकृति और आशावाद के स्वर से सारे समाज को पूर्ण कर दिया। किन्तु अति का उत्तर बराबर अति तक पहुँच कर रुकता है। जब आर्यों का यज्ञवाद, भोगवाद का पर्याय बनने लगा और आमिष प्रियता से प्रेरित ब्राह्मण जीव हिंसा को धर्म मानने लगे, तब इस देश की संस्कृति यज्ञ और जीवाघात दोनों से विद्रोह कर उठी। उपनिषदों में संन्यास मोक्ष और निवृत्ति की भावनायें पुनः प्रकट होने लगीं। कुछ दूरदर्शी आर्य भी प्राग्वैदिक निवृत्तिपरक भावनाओं को अपनाने लगे। महावीर और बुद्ध ने भी इसी निवृत्तिवादी विचारधारा का उद्घोष किया। कालान्तर में आर्यों और द्रविड़ों का सांस्कृतिक मिश्रण इतनी महानता से हुआ कि आज उनके बिलगाव का प्रयत्न कठिन है।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का संक्षेपण कीजिये जो मूल गद्यांश के एक-तिहाई से अधिक न हो।

(ख) शीर्षक लिखिये।

(ग) उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर उन तत्वों एवं परिस्थितियों का परिचय दीजिये जिन्होंने भारतीय संस्कृति के निर्माण और विकास में योग दिया है।

(७) १९७५

जिसमें अधिक बल होगा वही टिक पायेगा। इस प्रकार की बातें आज हो रही हैं और ऐसी बात करने वाले मानते हैं कि स्नायुओं का बल ही जीवित और अमर बनने की कसौटी है किन्तु यह सत्य होता तो जगत के कितने ही भूतकाल में गर्त हुये आक्रांत देश आज कीर्ति के शिखर पर होते और अन्य धर्म या देश पर आक्रमण न करने वाले हम भारतीय कभी के विनष्ट हो गये होते, परन्तु हम जीवित हैं। हमारी संस्कृति की नींव भीषण प्रहारों के पश्चात् भी सुदृढ़ है। कभी किसी देश अथवा जाति पर विजय नहीं प्राप्त करना चाहते। हम भौतिक बल पर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नहीं, आत्मबल पर विश्वास करते हैं इसलिये हम जीवित हैं। समस्त विश्व का इतिहास टटोल कर देखो संसार में जो कुछ भी महान् है, उदात्त है, उसका मूल भारत में रहा है इस भूमि से प्रकट आध्यात्म विद्या तथा तत्व ज्ञान से सारा जगत लाभान्वित हुआ है। यद्यपि भारत में सत्ता-दंड बार-बार खंडित हुये हैं, सत्ता का भिक्षापात्र एक हाथ से दूसरे हाथ में फिरता रहा है किन्तु प्रजा सदैव अपने जीवन मार्ग पर चलती रही है। राष्ट्रीय जीवन का प्रवाह कभी वेगपूर्ण और कभी मंद रहा है। दासता के युगों में हम दीर्घ निद्रा में भी सोये हैं, परन्तु अब अंधकार-मय रात्रि समाप्त हो गयी है, नवीन सूर्य का उदय हो गया है और नवजागरण का बिगुल बज रहा है, भारत अमर है और जब तक उसकी आत्मा जीवित रहेगी उसे कोई नहीं मार सकता।

(क) एक-तिहाई में संक्षेपण कीजिये ?

(ख) शीर्षक लिखिये ?

(ग) उपर्युक्त गद्यांश के काले छपे शब्दों में से किन्हीं चार का पल्लवन कीजिये ?

(८) १९७९

ऋतुराज वसंत के आगमन से ही शीत का भयंकर प्रकोप बन गया। वृणों और लताओं के अंग में नूतन पंक्तियों के प्रस्फुटन से यौवन की मादकता छा गई। कनेर, करवीर, मदार, पाठल इत्यादि पुष्पों की सुगन्धि दिगदिगन्त में अपनी मादकता का संचार करने लगी। न शीत की कठोरता, न ग्रीष्म का ताप। समशीतोष्ण वातावरण में प्रत्येक प्राणी की नस-नस में उत्फुल्लता और उमंग की लहरें उठ रही हैं। गेहूँ की सुनहली बालियों से पवन-स्पर्श के कारण रुनझुन का संगीत फूट रहा है, पत्तों के अधरों पर सोया हुआ संगीत मुखरित हो गया है। पलाश-वन अपनी अरुणिमा में फूला नहीं समाता है। ऋतुराज वसन्त के सुशासन और सुव्यवस्था की छटा हर ओर दिखलाई पड़ती है। कलियों के यौवन की अँगड़ाई भ्रमरों को आमन्त्रण दे रही है। अशोक के अग्निवर्ण कोमल एवं नवीन पत्ते वायु के स्पर्श से तरंगित हो रहे हैं। आम्र मंजरियों की भीनी गन्ध और कोयल का प्रत्येक अलाप, भ्रमरों का गुंजन, और कलियों की चटक वनों और उद्यानों के अंगों में शोभा का संचार सब ऐसा लगता है जैसे जीवन में सुख ही सत्य है। आनन्द के एक क्षण का मूल्य पूरे जीवन को अर्पित करके भी नहीं चुकाया जा सकता है। प्रकृति ने बसन्त पर अपने रूप को इतना संवारा है अंग-अंग को सजाया और रचा है कि उसकी शोभा का वर्णन भी व्यर्थ है उसकी उपमा नहीं दी जा सकती है।

(क) एक-तिहाई में संक्षेपण कीजिये ?

(ख) शीर्षक लिखिये ?

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(९) १९७७

दृढ़तापूर्वक मान लीजिये कि आपकी उस वस्तु के साथ एकता है जिसकी आपको जरूरत है। आप अपने मन, वचन और काया को उस वस्तु की ओर लगा दें। उसकी 'प्राप्ति' में तिलमात्र भी सन्देह न रखें। आपको उसके प्राप्त करने में अवश्य सफलता होगी आप उसे अवश्य आकृष्ट कर सकेंगे। गरीबी हमारा मानसिक रोग है। यदि आप इससे पीड़ित हों, यदि आप इस रोग के शिकार हों, तो अपने मानसिक भाव को बदल दें और दुःख, दरिद्रता और लाचारी के विचार मन में लाने के बदले सुख समृद्धि, ऐश्वर्य, स्वाधीनता और आनन्द के विचारों से अपने मानस क्षेत्र को प्रकाशित करें फिर यह देखकर आपके आश्चर्य का पार न रहेगा कि आपका सुधार आपकी उन्नति किसने ज़ोरों से हो रही है। हमें विजय और सफलता पूर्णतया मन की वैज्ञानिक क्रिया से होती है जो मनुष्य समृद्धिशाली और सौभाग्यशाली होता है उसका पूर्णतया यह विश्वास रहता है कि मैं समृद्धिशाली और सौभाग्यशाली हो रहा हूँ। उसे अपनी पैसा कमाने की योग्यता पर विश्वास रहता है। वह अपने व्यवसाय को सन्देह युक्त शंकाशील मन से शुरू नहीं करता वह अपने समय को गरीबी की बातों तथा विचारों में नहीं खोता। दरिद्रता से लड़खड़ाता हुआ नहीं चलता और न वह गरीब की सी पोशाक पहनता है। वह अपनी शक्ति को उस वस्तु की ओर दौड़ाता है जिसके लिये वह कोशिश करता है जिसके लिये वह अपनी कोशिश कर रहा है तथा जिसकी प्राप्ति में उसका पूरा विश्वास और दृढ़ निश्चय है। देश में ऐसे हजारों गरीब लोग हैं, जो अपनी गरीबी से अर्ध सन्तुष्ट हो गये हैं और जिन्होंने उसके विकराल पंजों से निकलने का प्रयत्न ही छोड़ दिया है अब चाहे वे कितना कठिन परिश्रम करें, उन्होंने तो अपनी आश खो दी है, स्वाधीनता प्राप्त करने की आशा नष्ट कर दी है।

(क) एक-तिहाई में संक्षेपण कीजिये ?
(ख) शीर्षक लिखिये।

(१०) १९७८

शिक्षा और परीक्षा के माध्यम के रूप में हिन्दी को स्वीकार करने का प्रश्न दिन-दिन जटिल होता जा रहा है। यद्यपि भारतीय संविधान में सार्वदेशिक आधार पर, विभिन्न राजकीय प्रयोजकों के लिये 'देवनागरी लिपि' में लिखित हिन्दी भाषा के व्यवहार की व्यवस्था की गई है तथापि विभिन्न राज्यों को क्षेत्रीय भाषाओं के समुचित व्यवहार की सुविधा भी दी गई है। इस वैधानिक व्यवस्था के अनुसार भारत के भिन्न-भिन्न, राज्यों के विश्वविद्यालयों तथा अन्य प्रकार की शिक्षा संस्थाओं में, शिक्षा और परीक्षा के माध्यम के रूप में विभिन्न भाषाओं का व्यवहार किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे लोग अंग्रेजी को इन क्षेत्रों में बनाये रखना चाहते हैं, जो अंग्रेजों के जाने से बाद अपने को अनाथ अनुभव करने लगे हैं। सम्भवतः राष्ट्रीय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विकास की दृष्टि से ये प्रवृत्तियाँ कदापि वांछनीय नहीं हैं। देश के स्वाभाविक विकास और एकता के लिये सभी शिक्षण संस्थाओं में सभी विद्यार्थियों और परीक्षाओं के लिये, राष्ट्रभाषा हिन्दी का अध्ययन अनिवार्य होना चाहिये। इस विषय में देश के अहिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्रों में कतिपय अंग्रेजी के पढ़े-लिखे लोगों द्वारा जो प्रचार और व्यापार हो रहे हैं उनका अविलम्ब अन्त होना राष्ट्र-भाषा एवं अन्य प्रान्तीय भाषाओं के विकास और राष्ट्रीय एकता की स्थापना के लिये अत्यन्त आवश्यक है। यह तभी सम्भव है, जब इस प्रश्न पर राष्ट्रीय दृष्टि से सहानुभूति के साथ विचार हो। हमें ऐसा यत्न करना चाहिये कि सभी देशवासी अपनी-अपनी मातृभाषा को समुचित शिक्षा के अतिरिक्त राष्ट्र भाषा हिन्दी का यथेष्ट ज्ञान प्राप्त करना राष्ट्र-हित की सिद्धि का साधन समझें।

(क) एक-तिहाई में संक्षेपण कीजिये ?

(ख) शीर्षक लिखिये ?

(११) १९७९

कवि या लेखकगण अपने समाज के मस्तिष्क और सुख दोनों ही होते हैं। कवि की पुकार समाज की पुकार होती है। कवि समाज के भावों को व्यक्त कर सजीव और शक्तिशाली बना देता है। कवि की बनाई हुयी सामाजिक भावों की मूर्ति समाज की नेत्री बन जाती है। इस प्रकार कवि और लेखकगण समाज के उन्नायक और इतिहास के विधायक अवश्य होते हैं, किन्तु उनकी भाषा में हमको समाज के भावों की झलक मिलती रहती है।

कवि द्वारा हम समाज के हृदय तक पहुँच जाते हैं केवल इतना ही नहीं, वरन् हमको उन परिस्थितियों का भी पता लग जाता है जो समाज को प्रभावित कर वायुमंडल में एक नई लहर उत्पन्न कर देती है। समाज के प्रतिनिधि स्वरूप कवियों और लेखकों के विचार ही संगृहीत साहित्य बनाते हैं।

(क) एक-तिहाई में संक्षेपण कीजिये ?

(ख) शीर्षक लिखिये ?

विस्तारण

विस्तारण शब्द का अर्थ है कि उक्ति या कथन को विस्तार से लिखना या समझाना। इसे अंग्रेजी में Amplification या Expension भी कहते हैं। हिन्दी में विस्तारण के लिए पल्लवन शब्द का प्रयोग भी किया जाता है। इसका आशय यह है कि कथन या उक्ति को पल्लवित करना या विस्तार से कहना आप इससे पूर्व संक्षेपण का अध्ययन कर चुके हैं। संक्षेपण में अवतरण या उक्ति को संक्षेप में लिखा जाता है। यह संक्षेपण मूल अवतरण का एक-तिहाई होता है। विस्तारण या पल्लवन इसका विलोम है। विस्तारण में उक्ति या कथन को विस्तार से समझाया जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उदाहरण तथा कहावतों से उक्ति की व्याख्या की जाती है। पाठक के मानस पटल पर स्पष्ट छवि अंकित करना विस्तारण का उद्देश्य होता है।

परिभाषा—हिन्दी में विस्तारण का प्रयोग आधुनिक युग की देन है। इसकी परिभाषा पर भी विवेचन हुआ है। हिन्दी के व्याकरणाचार्यों ने इस पर अपनी परिभाषाएँ प्रस्तुत की हैं। कुछ परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं—

(१) किसी सुसंगठित एवं गुम्फित विचार अथवा भाव के विस्तार को पल्लवन कहते हैं।[१]

—डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद

(२) पल्लवन का अर्थ होता है—पल्लवन उत्पन्न करना या विषय का विस्तार करना।[२]

—डॉ० रामचन्द्र वर्मा

(३) किसी उक्ति या कथन की विस्तृत व्याखया जो उदाहरणों तथा दृष्टान्तों द्वारा पल्लवित की गई हो—विस्तारण कहलाती है।

—प्रो० सुरेश चन्द्र शर्मा

(४) अंग्रेजी में Expansion की परिभाषायें अनेक विद्वानों ने दी हैं जिनमें T. S. Imam की परिभाषा अधिक स्पष्ट है—

"Amplification is axact of expansion or enlargement of thought process by manner of representation. It is a diffusive discussion. It is dilating upon all the particulars of a subject by way of illustrations and various examples and proofs."

—T. S, Imam : An A. B. C. of General English, Page 201.

विस्तारण का महत्व—विस्तारण किसी सूक्ति या कथन की विस्तृत व्याख्या है। प्रायः साहित्य में ऐसे ग्रन्थ होते हैं जिनकी व्याख्या अपेक्षित है। साहित्य के अतिरिक्त अन्य विषयों के सूत्र ग्रंथों की व्याख्या भी आवश्यक होती है। सूत्र वाक्य भाष्य या टीका के माध्यम से ही जाने जा सकते हैं। संस्कृत के कारिका ग्रंथ तो गम्भीर विचारों के आदर्श ग्रंथ हैं। हिन्दी में भी ऐसे निबन्धकार हैं जो व्याख्या की अपेक्षा करते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी तथा डॉ० नगेन्द्र के निबंधों की व्याख्या अपेक्षित है। इन कार्यों में विस्तारण की आवश्यकता है। अतः किसी सूक्ति या गम्भीर चिन्तन की विस्तृत विवेचना विस्तारण के माध्यम से ही सम्भव है।

विस्तारण तथा स्पष्टीकरण—विस्तारण और स्पष्टीकरण दोनों ही विवेचन की अपेक्षा रखते हैं। प्रक्रिया का अन्तर है। स्पष्टीकरण में दुरूह एवं क्लिष्ट अंशों की विवेचना की जाती है पर विस्तारण में वाक्य को उदाहरण दृष्टान्त के माध्यम से समझाया जाता है। विस्तारण में केन्द्रीय बिन्दु का आशय स्पष्ट किया जाता है।

विस्तारण और व्याख्या—व्याख्या में किसी गद्यांश अथवा पद्यांश की समस्त

१. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, पृष्ठ ३३१।

२. शुद्ध हिन्दी कैसे लिखें, पृष्ठ २६५।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

काव्य-शास्त्रीय व्याख्या की जाती है। मूल-भाव की इस प्रकार व्याख्या की जाती है ताकि कवि या लेखक का दृष्टिकोण स्पष्ट हो जाय। व्याख्या के साथ-साथ उसका सन्दर्भ एवं प्रसंग भी दिया जाता है पर विस्तारण में यह नहीं होता। विस्तारण गद्यांश या पद्यांश का न होकर सूत्र वाक्य, विशिष्ट कथन का ही होता है।

विस्तारण तथा आशय—किसी गद्यांश या पद्यांश मूल अर्थ स्पष्ट करना आशय के अन्तर्गत आता है। आशय की कोई सीमा नहीं होती। आशय कभी मूल से छोटा भी हो सकता है और बड़ा भी हो सकता है। आशय का उद्देश्य मूल भाव को स्पष्ट करना है। इस कार्य के लिए जितने अधिक या कम शब्द आवश्यक हुए, प्रयोग किये जाते हैं। विस्तारण सदैव मूल भाव से वहाँ होता है। पल्लवन करते समय दृष्टि केन्द्रीय भाव पर अवश्य रहती है पर उसे उदाहरण और दृष्टान्त के द्वारा उसे स्पष्ट किया जाता है। यह सदैव विस्तृत रूप होता है।

विस्तारक की विशेषताएँ

विस्तारण करते समय कुछ विशेषताएँ अपेक्षित हैं। विस्तारणकर्त्ता के ये विशेषताएँ होनी चाहिए :—

(१) **सूक्ष्म निरीक्षण दृष्टि**—मूल सूक्ति के केन्द्रीय भाव का निरीक्षण करने की गहन दृष्टि विस्तारणकर्त्ता में होना आवश्यक है तभी वह उसका मर्म समझ सकता है।

(२) **तार्किकता**—कुशल तथा सक्षम विस्तारक तार्किक होना चाहिए। वह तर्कों के माध्यम से मूल भाव का विस्तारण करता है। विषय के पक्ष और विपक्ष में तर्क शक्ति द्वारा व्याख्या करना यथार्थ का बोधन करना है।

(३) **विविध विषयों का ज्ञाता**—विस्तारक को विज्ञान, इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र तथा ललित कलाओं का ज्ञान होना आवश्यक है। जब तक उसे विविध विषयों का ज्ञान नहीं होगा वह पल्लवन पूर्णरूप से नहीं कर सकता है।

(४) **अभ्यास**—'करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान' के अनुसार विस्तारणकर्त्ता में अभ्यास करने की शक्ति होनी चाहिए। जितना अधिक अभ्यास किया। रीतिकालीन साहित्य के माध्यम से ही ज्ञात होता है कि तत्कालीन विलासिता में डूबा हुआ था। राजा तथा सामन्त सुरा-सुन्दरी का उपभोग ही जीवन का लक्ष्य समझते थे। प्रजा दुःखी और त्रस्त थी। आधुनिक युग का साहित्य भी समाज के स्वरूप का प्रतिबिम्बित करता है। 'यदि स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास देखना है तो प्रेम-चन्द्र के अभ्यास पढ़ने पड़ेंगे।' यह कथन स्पष्ट करता है कि तत्कालीन समाज का चित्र साहित्य में देखा जा सकता है। अतः यह कहना पूर्णतः सत्य है—'साहित्य समाज का दर्पण है।'

(२) **समाचार पत्र लोकतंत्र की आधारशिला है**—लोकतंत्र वह शासन व्यवस्था है जिसमें शासन की शक्ति लोक (जनता) में निहित होती है। जनता के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रतिनिधियों द्वारा ही शासन सूत्र संभाला जाता है। प्रतिनिधियों का सही निर्वाचन तभी सम्भव है जब जनता प्रशिक्षित एवं अपने विचारों की अभिव्यक्ति करने में सक्षम हो। विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता एवं विचारों की अभिव्यक्ति लोकतंत्र में मौलिक अधिकार होती है। समाचार पत्र इस उद्देश्य के लिए सर्वोत्तम साधन है।

जिस लोकतंत्रात्मक पद्धति में समाचार पत्रों का गला रुंधा होता है, वह लोकतंत्र ही नहीं है। रूस, चीन आदि साम्यवादी देशों में लोकतंत्र तो है पर विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता न तो नागरिकों में है और न समाचार पत्रों में। ऐसे देश में लोकतंत्र पनप नहीं सकता। ब्रिटिश शासन में समाचार पत्रों ने ही वह क्रान्ति कर दी थी कि विदेशी शासन काँप उठा। जहाँ भी क्रान्ति हुई है, समाचार पत्रों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। यह कहना पूर्णतः सत्य है कि समाचार पत्रों की स्वतंत्रता के बिना लोकतंत्र का विकास सम्भव नहीं किया जायेगा हो विस्तारण करने की कला में निखार आयेगा।

विस्तारण करने की विधि

विस्तारण करते समय निम्नलिखित नियमों का पालन करना आवश्यक है—

(१) **वाचन**—विस्तारण करने से पूर्व सूत्र वाक्य या मूल वाक्य का वाचन आवश्यक है। एकाधिककार पढ़ने से मूल भाव स्पष्ट हो जाता है। मूल भाव स्पष्ट हो जाने के बाद भी उसकी व्याख्या करना सम्भव हो सकता है।

(२) **संबंधित विचारों का संकलन**—विस्तारणकर्ता को सूत्र वाक्य से संबंधित विचार संकलित करने चाहिए। इतिहास कथायें, कहावतों के माध्यम से विशद् व्याख्या करनी चाहिए।

(३) **उदाहरण तथा दृष्टान्त का प्रयोग**—विषय तथा सूक्ति को स्पष्ट करने के लिए उदाहरण, कहावतें, लोकोक्तियों एवं दृष्टान्त का प्रयोग आवश्यक है।

(४) **प्रथम प्रारूप** तैयार करना—विस्तारण करने हेतु एकत्रित सामग्री का उपयोग करके प्रारूप तैयार करना चाहिए। तथ्यों को अनुच्छेदों में आवश्यकतानुसार विभाजित कर लेना चाहिए।

(५) **अंतिम प्रारूप**—प्रथम प्रारूप का अवलोकन आवश्यक है। यह ध्यान देना है कि प्रथम प्रारूप में दुर्बोधता तो नहीं है। भाषा सरल, सुबोध तथा भावग्राही होनी चाहिए, सदैव अन्य पुरुष का प्रयोग करना चाहिए। विस्तारण द्वारा सूक्ति की सही व्याख्या होनी चाहिए। यहाँ यह भी दृष्टव्य है कि विस्तारण इतना कम न हो कि व्याख्या भी न हो सके और इतना अधिक भी न हो कि व्याख्या निबंध हो जाय। यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि किसी बात का पिष्टपेषण न हो जाय। पुनरुक्त दोष से विस्तारण को बचाना चाहिए।

लेखन—द्वितीय तथा अंतिम रूप से प्रारूप तैयार करने के बाद विस्तारण को स्वच्छतापूर्वक लिखना चाहिए

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विस्तारण के उदाहरण

(१) **साहित्य समाज का दर्पण है**—साहित्य समाज का दर्पण है। जिस प्रकार दर्पण में हम अपनी छवि एवं प्रतिच्छाया देखते हैं। उसी प्रकार साहित्य में, हम समाज का प्रतिबिम्ब देख सकते हैं। कोई भी साहित्यकार शून्य में साहित्य सर्जना नहीं कर सकता। समाज से विच्छिन्न होकर साहित्य की सर्जना आकाश कुसुम देखना है। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी न किसी रूप में साहित्य का प्रेरक स्रोत समाज ही होता है।

व्यक्ति समाज की इकाई है। व्यक्ति समूह की इच्छायें एवं क्रियायें समाज की इच्छायें एवं क्रियायें बन जाती हैं। बाबू गुलाबराय जी ने साहित्य को जीवन का प्रकाशन माना है। "वह जीवन के महासागर से उठी हुई उच्चतम तरंग है। मानव जाति के भावों, विचारों, संकल्पों की आत्म-कथा साहित्य के रूप में प्रसारित होती है। साहित्य जीवन-विश्व का मधुमय सुमन है। वह जीवन का चरम विकास है, किन्तु जीवन से बाहर उसका अस्तित्व नहीं।" एक और स्थान पर कहा गया है 'जो वृत्तियाँ जीवन की ओर सब क्रियाओं का मूल स्रोत हैं वे ही साहित्य को जन्म देती है।' यहाँ जीवन को समाज के रूप में ही देखा गया है। मैथ्यू आरनोल्ड ने कहा है—'Literative is the criticism of life.'

साहित्य समाज की समस्त क्रियाओं का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करता है। हमारे समक्ष वर्तमान समाज होता है जो समाज अतीत में व्यतीत हो गया है। उसका साक्षात् स्वरूप हमारे सामने नहीं है। साहित्य के माध्यम से हम तत्कालीन समाज तक पहुँचने में सफल होते हैं। संस्कृत साहित्य के द्वारा हम वैदिक युगीन समाज का स्वरूप समझ सकते हैं। पाली साहित्य के द्वारा बुद्ध-कालीन समाज का ज्ञान होता है। बारहवीं शताब्दी में देश में जो सामाजिक एवं राजनैतिक उथल-पुथल हुई थी। उसका आज कोई अवशोषण नहीं है। इतिहास भी मौन है। इतिहास से घटनाओं का पता तो लगता है। लेकिन बहुत से प्रसंग अनछुए भी रह जाते हैं। इसका उत्तर तत्कालीन साहित्य देता है।

भक्तिकालीन परिस्थितियाँ तथा सामाजिक स्थिति का स्वरूप यदि देखना है तो तत्कालीन साहित्य का अवलोकन करना पड़ेगा। साहित्य ही वह सच्चा दर्पण है तो समाज का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करता है। इसी प्रकारसमाचार पत्रों के सम्पादकों के लिए यह भी विचारणीय विषय है कि समाचार पत्रों की स्वतंत्रता का अर्थ निरंकुशता नहीं है। लोकतंत्र की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि राष्ट्रवादी विचारों को पल्लवित किया जाय। यह ध्यान देने योग्य बात है कि लोकतंत्र में मतदान प्रणाली होती है। मत प्राप्त करने के लिए निकृष्ट कोटि के राजनीतिज्ञ जातीय तथा साम्प्रदायिकता का विष फैलाते हैं। भारत में आज भी 'अल्पसंख्यक' और 'बहुसंख्यक' कहकर साम्प्रदायिकता फैलाने का कुचक्र

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कांग्रेस नेताओं द्वारा किया जा रहा है। विघटनकारी आज भी राष्ट्र को कमजोर कर रहे हैं। ऐसे समय में समाचार पत्र अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

निम्नलिखित सूत्र वाक्यों का पल्लवन कीजिये—

(१) आवश्यकता आविष्कार की जननी है।

(२) असफलता सफलता की कुन्जी है।

(३) जनचेतना लोकतंत्र की सफलता का सूत्र है।

(४) कला का सर्वोच्च एवं अंतिम ध्येय सौंदर्य है।

(५) गाँधी टोपी की उमंग और है, गाँधीत्व की गंध और।

(६) शिक्षा की उपेक्षा ही राष्ट्र के पराभव का कारण बनती है।

(७) आज का विद्यार्थी ही कल का नागरिक है।

(८) शिशु ईश्वरीय स्वरूप है।

(९) जब वीरता भागती है तो उसके पैरों से राजनीति के छल-छन्द की धूल उड़ती है।

(१०) अहिंसा वीरों का भूषण है।

(११) आलस्य मानव का सबसे बड़ा शत्रु है।

(१२) परिश्रम वह कुन्जी है जो मनुष्य के भाग्य का ताला खोल देती है।

(१३) सबहिं नचावत राम गोसाइं।

(१४) प्रेम और श्रद्धा का योग ही भक्ति है।

(१५) नर और नारी जन्मते और मरते हैं, पर राष्ट्र सदा अमर रहता है।

(१६) हिंसा बुरी चीज है पर दासता उससे भी बुरी है।

(१७) अन्याय सहन करना सबसे बड़ा पाप है।

(१८) विरह प्रेम की जाग्रति गति है और सुषुप्ति मिलन है।

(१९) प्रेम स्वप्न है तो श्रद्धा जागरण।

(२०) कहानी का उद्देश्य पुष्प में गंध की भाँति छिपा रहता है।

(२१) प्रकृति मूक शिक्षक है।

(२२) साहित्य समाज का दर्पण है।

(२३) लोभ पाप का मूल है।

(२४) राजनीति की खूनी जमीन में साहित्य की तपः साधना नहीं हो सकती।

(२५) राजनीति बिना नारी के सध भी जाये पर संस्कृति में नारी का योग आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है।

(२६) होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(२७) चिता दहति निर्जीव को चिन्ता जीव समेत।

(२८) रहिमन रहिबा की भली जो परसे चितलाय।

(२९) हृदय की विशालता मानवता का मूल है।

(३०) समाचार पत्र विचार स्वातंत्र्य का सर्वोत्तम साधन है।

(३१) अज्ञान अंधकार स्वरूप है।

(३२) शृङ्गार का रसराजत्व सूर काव्य की देन है।

(३३) सूर वात्सल्य रस का कोना-कोना झाँक आये हैं।

(३४) बैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है।

(३५) करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।

(३६) नर और नारी जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं।

(३७) जीवन एक कला है।

(३८) संसार में उत्थान और पतन का चक्र निरन्तर चलता रहता है।

(३९) निष्कामिता की कुन्जी यह है कि अपना ख्याल कम और दूसरों का अधिक रखा जाय।

(४०) चार दिनों की चाँदनी फेरि अंधेरी रात।

(कानपुर वि० वि०, १९७४)

(४१) जिसमें अधिक बल होगा वही टिक पायेगा।

(४२) हमारी संस्कृति की नींव भीषण प्रहारों के पश्चात् भी जीवित है।

(४३) हम भौतिक बल पर ही नहीं, आत्म-बल पर विश्वास करते हैं।

(कानपुर वि० वि०, १९७५)

(४४) ऋतुराज बसन्त के सुशासन और सुव्यवस्था की छटा हर ओर दिखलाई पड़ती है।

(४५) आनन्द के एक क्षण का मूल्य पूरे जीवन को अर्पित करके नहीं चुकाया जा सकता।

(कानपुर वि० वि०, १९७६

(४६) गरीबी हमारा मानसिक रोग है।

(४७) हमको विजय और सफलता पूर्णतया मन की वैज्ञानिक क्रिया से होती है।

(कानपुर वि० वि०, १९७७)

(४८) देश के स्वाभाविक विकास और एकता के लिए सभी शिक्षण संस्थाओं में शिक्षार्थियों के लिए राष्ट्र-भाषा हिन्दी का अध्ययन अनिवार्य होना चाहिए।

(कानपुर वि० वि०, १९७८)

(४९) कवि की पुकार समाज की पुकार होती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(५०) कवि द्वारा हम समाज के हृदय तक पहुँच जाते हैं।

(५१) समाज के प्रतिनिधि स्वरूप कवियों एवं लेखकों के विचार ही संग्रहीत होकर साहित्य बनाते हैं।

(५२) सौजन्य और स्नेह की सीमा नहीं है।

(५३) परिश्रम और लगन आत्मा के बहुमूल्य आभूषण और जीवन के आधार हैं।

(५४) प्रत्येक नियम का अपवाद होता है।

(५५) निराशा की अंतिम अवस्था विरक्ति होती है।

(५६) बलिदान संधि पत्र से अधिक बलवान होता है।

(५७) अमृत तो जीवन में है श्मशान में केवल मृत्यु है।

(५८) पराधीनता मानवता का सबसे बड़ा पतन है।

(५९) गरीबी जीवन का अभिशाप है।

(६०) विश्वास प्रेम की आधारशिला है।

———

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संघर्ष

विश्वम्भर नाथ 'कौशिक'

हिन्दी उपन्यास ने अपने विकास के लिये अल्प समय लिया है। उपन्यास का यह विकास आश्चर्य है। उपन्यासकारों ने प्रत्येक क्षेत्र में जो उन्नति की है; साहित्य में जहाँ एक ओर अनेक विधाओं ने जन्म लिया वहाँ दूसरी ओर उपन्यास ने अपने जन्म से अब तक सर्वाधिक की उन्नति की है।

उपन्यास की पृष्ठभूमि पर जब हम उतरते हैं तो देखते हैं कि भारत के संक्रान्ति काल में जब राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं संघर्ष चल रहे थे; सन् १८५७ में भारतीय साहित्य में उपन्यास लिखा गया। बंगला भाषा में 'आलालेर घरेर दुलाल' नामक उपन्यास प्यारी चाँद मित्र द्वारा लिखा गया। इसी प्रकार मराठी भाषा में उपन्यास लिखे गए। हिन्दी का श्री निवास दास कृत प्रथम उपन्यास 'परीक्षा गुरु' सन् १८८२ ई० में प्रकाशित हुआ। कतिपय विद्वान् 'भाग्यवती' को पहला उपन्यास मानते हैं।

हिन्दी उपन्यास विकास के तीन युग

हिन्दी उपन्यास के प्रगति के मानदण्ड श्री प्रेमचन्द है। प्रेमचन्द के उपन्यासों के आधार पूर्व और उत्तर उपन्यासों का विकास ही हैं। इस प्रकार हिन्दी उपन्यास के विकास के तीन युग हैं जो निम्न प्रकार है—

(१) प्रेमचन्द पूर्व युग (१८८२ ई० से १९१७ ई०)
(२) प्रेमचन्द युग (१९१८ ई० से १९३६ ई०)
(३) प्रेमचन्दोत्तर युग (१९३७ ई० से आज तक)

इन तीनों युगों का विवरण संक्षेप में इस प्रकार है—

(१) **प्रेमचन्द पूर्व युग**—इस युग को हिन्दी उपन्यास का प्रारम्भिक युग भी कहा जाता है। इस प्रारम्भिक युग के अन्तर्गत मौलिक और अनूदित उपन्यास मिलते हैं। हिन्दी में उपन्यास की अवधारणा का श्रेय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को है। उन्होंने सर्वप्रथम 'पूर्ण प्रकाश चन्द्रमा' का अनुवाद कराके और स्वयं शुद्ध करके प्रकाशित किया था। उन्होंने 'एक कहानी : कुछ आप बीती कुछ जग बीती' नाम से भी उपन्यास लिखना प्रारम्भ किया, लेकिन अकस्मात् मृत्यु के कारण अधूरा ही रह गया। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की मित्र-मण्डली सर्वश्री राधाकृष्णदास, बाबूगदाधर सिंह, पं० रामशंकर व्यास और लाला श्रीनिवास दास आदि ने हिन्दी उपन्यास को नयी दिशा प्रदान की।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस अल्पकाल में उपन्यास साहित्य का सर्वाधिक विकास हुआ । इस काल की औपन्यासिक प्रवृत्तियों का वर्गीकरण निम्न प्रकार किया जा सकता है—

(क) **सामाजिक प्रवृत्ति**—'भाग्यवती' हिन्दी का पहला सामाजिक उपन्यास है । इसके रचयिता, श्री श्रद्धाराम फिल्लौरी हैं । उन्हीं के शब्दों में इस उपन्यास का उद्देश्य था 'भारत खण्ड की स्त्रियों को गृहस्थ धर्म की शिक्षा देना ।' कथानक, चरित्र-चित्रण, रोचकता एवं कलात्मकता की दृष्टि से भी सफल है । श्रीनिवास दास का 'परीक्षा गुरु', उपन्यास भी इसी प्रवृत्ति में लिखा गया था । इस प्रवृत्ति को आगे बढ़ाने वाले अन्य उल्लेखनीय उपन्यासकार हैं—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (एक कहानी : कुछ आप बीती कुछ जग बीती), किशोरी लाल गोस्वामी (माधवी-माधव), 'हरिऔध' (ठेठ हिन्दी का ठाठ), बालकृष्ण भट्ट (नूतन ब्रह्मचारी, सौ अजान एक सुजान) आदि । इन उपन्यासों में तद्युगीन पृष्ठभूमि के परिप्रेक्ष्य में धार्मिक, नैतिक, चारित्रिक एवं शिक्षा सम्बन्धी विभिन्न तत्वों का सफलतापूर्वक प्रतिपादन हुआ है । कथानक कल्पना पर चरित है, चरित्र-चित्रण अल्प विकसित और शैली शिथिल है । कलात्मकता का पूर्ण अभाव है ।

(ख) ऐतिहासिक प्रवृत्ति—इस युग का सर्वप्रथम ऐतिहासिक उपन्यास किशोरी लाल गोस्वामी का 'हृदय हारिणी वा आदर्श रमणी' (१८९० ई०) है । गोस्वामी जी के अन्य प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यास में हैं—'लवंगलता' (१८९०), 'ताराबाई' (१९०२), 'रजिया बेगम' (१९०४), 'गुल-बहार' (१९१६) आदि । इनके उपन्यासों के विषय में शिवनारायण श्रीवास्तव ने लिखा है कि "इनके लिखने में गोस्वामी जी की दृष्टि प्रधानतः इस बात पर रही है कि एक ओर तो मुसलमानों की विलासिता कपट-चातुरी, स्वार्थ-लिप्सा, विश्वासघात, निर्दयता, हिन्दुओं पर अत्याचार एवं बर्बरता आदि का वर्णन किया जाय और दूसरी ओर हिन्दू राजाओं की वीरता, दृढ़ता, धर्मप्रेम, कर्त्तव्यनिष्ठा आदि उदात्त गुणों की चित्र एकत्र किये जायँ ।" रीतिकाल का इनकी रचनाओं पर पर्याप्त प्रभाव है । ऐतिहासिक प्रवृत्ति के उपन्यासकारों में जयरामदास गुप्ता, गंगाप्रसाद गुप्त, ब्रजनन्दन सहाय, मिश्रबन्धु आदि प्रमुख हैं ।

(ग) **तिलस्मी, जासूसी और जादुई प्रवृत्तियाँ**—जासूसी, तिलस्मी और ऐय्यारी के कारनामों से भरपूर उपन्यास इसी वर्ग में आते हैं । देवकीनन्दन खत्री कृत 'चन्द्रकांता', 'चन्द्रकांता संतति', 'भूतनाथ', उल्लेखनीय उपन्यास हैं । खत्री जी के उपन्यास भले ही साहित्यिक दृष्टि से उच्चकोटि के न हो किन्तु इससे हिन्दी के प्रचार प्रसार में पर्याप्त सहयोग मिला है । इस विषय में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का अभिमत उल्लेखनीय है बहुत से लोगों ने केवल 'चन्द्रकांता' या 'चन्द्रकांता संतति' के पढ़ने के लिये ही हिन्दी सीखी थी ।

इसी प्रकार गोपालराम गहमरी ने जासूसी प्रवृत्ति, की नींव डाली और सौ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से भी अधिक उपन्यास लिखे। 'चतुर चंचल', 'चक्करदार चोरी', 'अद्भुत खून', 'ठनठन जासूस', 'मेम की लाश' आदि इनके महत्त्वपूर्ण उपन्यास हैं।

जादुई उपन्यासों की रचना बहुत कम हुई। फिर भी निहालचन्द्र वर्मा की कृति 'जादू का महल' (१६१५) इस प्रवृत्ति की महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

(घ) **प्रेमाख्यानक प्रवृत्ति**—प्रेमाख्यानक उपन्यासों को लिखने का एकमात्र श्रेय किशोरीलाल गोस्वामी को ही है। 'लीलावती', 'प्रणयिनी परिणय', 'कुसुम कुमारी' आदि ऐसे ही उपन्यास हैं।

अन्य प्रवृत्तियाँ—वीर चरित्र और दुश्चरित्र दोनों प्रकार के चरित्रों पर आधारित उपन्यास साहसिक प्रवृत्तियों में लिखे गये हैं। साहसिक का अर्थ डाकू होता है। अतः इन उपन्यासों में डाकुओं के चरित्रों का ही अंकन किया गया है। 'अमीर अली ठग' इस प्रवृत्ति की सर्वश्रेष्ठ रचना है। पौराणिक प्रवृत्ति में 'सती मदालसा', 'सती सीता', 'वीर कर्ण' जैसी सामान्य स्तर की ही रचनायें रची गईं। भावात्मक प्रवृत्ति के एकमात्र लेखक ब्रजनन्दन सहाय थे। उनका 'सौन्दर्योपासक' (१६२२) इसकी सर्वोत्कृष्ट रचना है।

मौलिक उपन्यासों के साथ ही इसी युग में बंगला, मराठी आदि के उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद हुआ।

सारांशतः हम कह सकते हैं कि इस युग का उपन्यास सोद्देश्य था उसका अपना एक लक्ष्य था, जिसकी पूर्ति में वह सफल हुआ है।

(२) **प्रेमचन्द युग**—मुंशी प्रेमचन्द जी के आगमन के साथ ही हिन्दी उपन्यास में नव्य युग का प्रवर्त्तन हुआ। सर्वप्रथम उन्होंने ही मानव जीवन को उसके यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया। वास्तविक उपन्यास का श्रीगणेश इसी युग में हुआ। यथार्थ का समावेश हुआ। आदर्शवादी दृष्टिकोण की प्रधानता रही। समाज की कुंठाओं का अंकन हुआ। मनोवैज्ञानिकता के आगमन से मानव मन का भी गहराई से विवेचन हुआ। प्रकृतिवाद भी प्रभाव बढ़ता गया। इस युग में अनेक परम्पराओं ने जन्म लिया है।

इस युग में पूर्ववर्ती प्रेमाख्यानक, जादुई, साहसिक और पौराणिक प्रवृत्तियाँ लुप्त हो गई हैं। नवीन और पुरातन प्रवृत्तियों का वर्गीकरण निम्न प्रकार है—

(क) **विषयपरक**—

(१) सामाजिक
(२) राजनीतिक
(३) ऐतिहासिक

(ख) **सैद्धान्तिक**—

(१) व्यक्तिवादी
(२) मनोवैज्ञानिक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(३) आदर्शवादी

(४) यथार्थवादी

(५) आदर्शोन्मुख यथार्थवादी

(६) प्रगतिवादी ।

(क) विषयपरक—

(१) **सामाजिक प्रवृत्ति**—प्रेमचन्द का सेवा सदन (१९१८) इस परम्परा की पहली कड़ी है। सर्वप्रथम कल्पना का स्थान यथार्थ ने ग्रहण किया। राजा रानी और परियों की कहानी पर आधारित उपन्यास पीछे रह गये। जन-जीवन का यथार्थ सामने आया। उनकी कृतियों में उनका युग बोलता जान पड़ता है। उनके प्रमुख उपन्यास हैं—रंगभूमि, गबन, गोदान, कर्मभूमि आदि सामाजिक ही है। समाज की रूढ़वादिता, स्त्री शिक्षा की समस्या, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, जीवन का दिखावटीपन आदि सामाजिक समस्याओं को इन उपन्यासों में उठाया गया है तथा उनका समाधान करने का प्रयत्न भी किया गया है।

(२) **राजनीतिक प्रवृत्ति**—इस युग की दूसरी प्रवृत्ति राजनीतिक प्रवृत्ति के एकमात्र प्रतिनिधि प्रेमचन्द स्वयं थे। उनके 'प्रेमाश्रम', 'रंग-भूमि', और 'गोदान' राजनीतिक उपन्यास ही है। 'गोदान' तो अपनी ऊँचाई में आज भी हिन्दी उपन्यास में सर्वोपरि है। जिस ढंग से, जिस मार्मिकता से, जिस विस्तार से भारतीय किसान से दुःख दर्द भरे जीवन की कहानी उसमें कही गई है, वह किसी प्रामाणिक इतिहास या विश्लेषण से कम नहीं।

(३) **ऐतिहासिक प्रवृत्ति**—इस परम्परा का सम्यक् विकास इसी युग में हुआ है। सर्वप्रथम ऐतिहासिकता का पूर्ण निर्वाह इसी युग के उपन्यासों में मिलता है। वृन्दावन लाल वर्मा सर्व समर्थ ऐतिहासिक उपन्यासकार हुए हैं। 'गढ़कुंहार', 'विराटा की पद्मिनी', 'झांसी की रानी', 'कचनार' और 'मृगनयनी' आदि वर्माजी के सुप्रसिद्ध उपन्यास हैं। उपन्यास में पहली बार इतिहास और कल्पना का समन्वय वर्माजी ने ही किया है। सभी घटनायें इतिहास सम्मत हैं। वर्माजी के उपन्यासों में इतिहास और कल्पना, रोमांस और आदर्श, कला और कर्त्तव्य का सफल समन्वय हुआ। ऐतिहासिक उपन्यासकारों में दूसरा नाम भगवतीचरण वर्मा का है। जिन्होंने 'चित्रलेखा' द्वारा ऐतिहासिक उपन्यासों में नया ही मानदण्ड स्थापित किया।

(ख) सैद्धान्तिक—

(१) **व्यक्तिवादी**—इस परम्परा का पालन करने वाले प्रमुख उपन्यासकार हैं—जयशंकार प्रसाद (कंकाल, तितली), भगवतीचरण वर्मा (चित्रलेखा, टेढ़े मेढ़े रास्ते, भूले-बिसरे चित्र, सीधी सच्चे बातें), भागवती प्रसाद बाजपेयी (चलते चलते, दो बहनें, सपना बिक गया, टूटते बन्धन) आदि। इन उपन्यासों में भारतीय आत्म-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वाद, परम्परागत मूल्यों, रूढ़ियों, परम्पराओं के प्रति विद्रोह भावना, समाजवाद आदि। वैयक्तिक जीवन दर्शन का प्रतिफलन हुआ है।

(२) **मनोवैज्ञानिक**—मनोविज्ञान एवं मनोविश्लेषण के सिद्धान्तों को आधार बनाकर लिखे गये उपन्यास इस परम्परा में आते हैं। इनमें मुख्यतः यौन-वृत्तियों, दमित वासनाओं, कुंठाओं एवं ग्रन्थियों का विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता है। जैनेन्द्र कुमार (परख, सुनीता, कल्याणी, सुखदा) इलाचन्द्र जोशी (संन्यासी, जहाज का पंछी, जिप्सी) अज्ञेय (शेखर: एक जीवन, नदी के द्वीप) डॉ० देवराज (अजय की डायरी, पथ की खोज) आदि इस परम्परा के मुख्य उपन्यासकार हैं।

(३) **यथार्थवादी**—इन उपन्यासों में व्याप्त अनैतिकता, दुराचार, व्यभिचार, अत्याचार प्रभृति बुराइयों का अंकन हुआ है। यौन कुंठा और तद्जनित समस्याओं को स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्रमुख उपन्यासकार हैं—आचार्य चतुरसेन (हृदय की परख, हृदय की प्यास, अदल-बदल, गोली, आभा, अपराजिता, बगुला पंख आदि), पांडेय बेचन शर्मा उग्र (चन्द हसीनों के खतूत, शराबी, फाल्गुन के दिन चार आदि) अमृतलाल नागर (सेठ बांकेमल, बूंद और समुद्र, सुहाग के नूपुर आदि), मोहन राकेश (अंधेरे बंद कमरे), कमलेश्वर (एक सड़क सत्तावन गलियाँ, तीसरा आदमी), आदि।

(४) **प्रगतिवादी**—मार्क्सवादी दृष्टिकोण पर आधारित उपन्यास प्रगतिवादी परम्परा के अन्तर्गत आते हैं। शोषक और शोषित के मध्य वर्ग-संघर्ष को यथार्थ रूप में चित्रित करना इन उपन्यासों का मूलाधार होता है। इस परम्परा के श्रेष्ठ उपन्यासकार यशपाल (दादा कामरेड, देश द्रोही, पार्टी कामरेड मनुष्य के रूप), नागार्जुन (रतिनाथ की चर्चा, बलचनमा, नई पौध), रांगेय राघव (प्रोफेसर, आखिरी आवाज), अमृतराय (बीज, नागफनी का देश, हाथी का दाँत) आदि।

(३) **प्रेमचन्दोत्तर युग**—इस काल के नव्य लेखकों में सर्वश्री उपेन्द्रनाथ अश्क, अज्ञेय, यशपाल, रांगेय राघव, राहुल सांकृत्यायन, उदयशंकर भट्ट, हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामेश्वर शुक्ल अंचल, अमृतलाल नागर, धर्मवीर भारती, नागार्जुन, मन्मथनाथ गुप्त, डॉ० देवराज, राजेन्द्र यादव, फणीश्वरनाथ रेणु, भैरव प्रसाद गुप्त, नरेश मेहता, राजेन्द्र अवस्थी, मोहन राकेश, रजनी पनिकर और शिवानी आदि हैं।

इस युग में प्रेमचन्द युगीन प्रवृत्तियों के अतिरिक्त वैज्ञानिक और आंचलिक प्रवृत्तियों के नाम की दो प्रवृत्तियों का उदय हुआ। आंचलिक प्रवृत्तियों का आशय है—किसी अंचल या प्रदेश विशेष के ग्रामीण वातावरण एवं लोक संस्कृति का चित्रण। नागार्जुन (बलचनमा, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे) और फणीश्वर नाथ रेणु (मैला अंचल, परती परिकथा) इस परम्परा के आदि स्तम्भों में से हैं। अन्य उपन्यासकार हैं। डॉ० रामदरश मिश्र (पानी के प्राचीर) देवेन्द्र सत्यार्थी (रथ के पहिये) उदयशंकर भट्ट (सागर, लहरें और मनुष्य) आदि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वैज्ञानिक प्रवृत्तियों में जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, इस परम्परा के उपन्यासों में विषय, शिल्प और शैली को लेकर अनेक प्रयोग हुये हैं। धर्मवीर भारती का 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' इस दिशा में सफल प्रयास है। नरेश मेहता का 'डूबते मस्तूल', गिरिधर गोपाल का 'चाँदनी के खंडहर' आदि। अधिकाधिक कौशल एवं चमत्कार पैदा करना उनका जैसे अभीष्ट बन गया है।

पुरानी प्रवृत्तियों में सामाजिक प्रवृत्ति का अत्यधिक विस्तार हुआ। आचार्य चतुरसेन शास्त्री के 'बगुला के पंख', 'उदयास्त', 'पत्थर युग के दो बुत', उपेन्द्रनाथ अश्क के 'गिरती दीवारें', 'गर्म राख', 'शहर में घूमता आईना', 'एक नन्हीं किन्दील', भगवती चरण वर्मा का 'सबहिं नचावत राम गुसाईं', श्री लाल का 'राग दरबारी' आदि उपन्यास इस प्रवृत्ति की उपलब्धियाँ हैं।

ऐतिहासिक प्रवृत्ति का विस्तार भी सामाजिक प्रवृत्ति से कम न हुआ। 'मृगनयनी', 'भुवन विक्रम', 'मुर्दों का लीला', 'महायात्रा', 'अंधेरा रास्ता', 'जय यौधेय', 'दिव्या', 'बाणभट्ट की आत्मकथा' आदि इस प्रवृत्ति की विशेष रचनायें हैं। कलात्मक दृष्टि से भी ये उच्चकोटि के उपन्यास हैं।

गाँधीवादी प्रवृत्ति के लेखकों में भगवती प्रसाद वाजपेई का 'भूदान' अनन्त गोपाल शेवड़े के 'ज्वालामुखी' और 'भग्न मन्दिर' विशेष महत्व के हैं।

इस प्रकार आज हिन्दी उपन्यास का विकास हो रहा है। सारतः हिन्दी उपन्यास साहित्य बड़ी छिप्रता से विकसित हो रहा है। विषय वैविध्य एवं शैली और शिल्प की दृष्टि से उपन्यासों में आशातीत प्रगति हुई है। हमें अभी साहित्य की इसी विधा से बहुतेरी आशायें हैं। संक्षेप में बाबू गुलाबराय ने हिन्दी उपन्यास के सर्वांगीण विकास को इस प्रकार शब्द-बद्ध किया है—"हिन्दी उपन्यास संस्कृत का हितोपदेश और 'पंचतंत्र' की उपदेशात्मक शैली से आरम्भ होकर तिलस्मी, ऐयारी और जासूसी उपन्यासों द्वारा मनुष्य की कौतूहल बुद्धि को जागृत करता हुआ ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक घटनाओं और समस्याओं के चित्रण पर आया और उनमें उन्हीं समस्याओं के सहारे चरित्र-चित्रण की रुचि और बढ़ी। राजनीति में उसने गाँधीवाद और मार्क्सवाद दोनों ही पक्ष लिये। अब व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक चित्रण की ओर जा रहा है। उपन्यास एक नये प्रकार की संस्कृति का पोषण कर रहे हैं। इसमें भय केवल इतना ही है कि पुरानी संस्कृति में जो कुछ सारवान है वह भी न खो दिया जाय। भूसी के साथ गेहूँ फेंक देना बुद्धिमानी न होगी।"

उपन्यास तथा अन्य विधायें

उपन्यास को मनुष्य के सामाजिक, वैयक्तिक अथवा दोनों प्रकार के जीवन का रोचक साहित्यिक प्रतिरूप कहा जा सकता है, जिसका निर्माण प्रायः एक कथासूत्र के आधार पर होता है। विषय और अभिव्यंजना की विविधता के कारण उपन्यास

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के अगणित रूप प्रचलित हैं। फलतः इस सम्बन्ध के अद्यतन विद्वानों में पर्याप्त मत-भेद है। व्युत्पत्ति—उपन्यास शब्द को अंग्रेजी के 'नाविल' (Novel) का पर्यायवाची कहा जा सकता है। इसी शब्द के आधार पर मराठी में 'कादम्बरी', गुजराती में 'नवलकथा' और बंगला में हिन्दी के समान 'उपन्यास' शब्द गढ़ लिया गया है।

उपन्यास शब्द अधिक पुराना नहीं है। संस्कृत लक्षण ग्रन्थों में 'उपन्यास' शब्द का उल्लेख है। नाट्यशास्त्र में वर्णित प्रतिमुख संधि का यह एक उपभेद है। इसकी दो प्रकार से व्याख्या की गई है। पहली 'उपन्यास प्रसादनम्' अर्थात् प्रसन्न करने को उपन्यास कहते हैं। दूसरी, 'उपपत्तिकृतोह्यर्थ उपन्यास', 'संकीर्तित', अर्थात् किसी अर्थ को युक्तियुक्त रूप में उपस्थित करना उपन्यास है। किन्तु आज उपन्यास शब्द का प्रयोग अत्यंत व्यापक अर्थ में हो रहा है। अब नाटक साहित्य के उपन्यास शब्द और सम्प्रति के उपन्यास में नाम का हो साम्य है। 'उपन्यास' का शाब्दिक अर्थ है सामने रखना। अर्थात् उप-समीप और न्यास रखना, उपस्थित करना आदि होता है। हिन्दी साहित्य कोष के पृष्ठ १३६ पर लिखा है "इसका अर्थ निकट रखी हुई वस्तु अर्थात् वह वस्तु या कृति जिसको पढ़कर ऐसा लगे कि यह हमारी ही है, इसमें हमारे ही जीवन का प्रतिविम्ब है, इसमें हमारी ही कथा हमारी ही भाषा में कही गई है। आधुनिक युग में जिस साहित्य विशेष के लिये इस शब्द का प्रयोग किया जाता है, उसकी प्रकृति को स्पष्ट करने में यह शब्द सर्वथा समर्थ है। ..... भरतमुनि ने नाट्यकला में इसे 'उपपत्ति कृतोह्यर्थ' तथा 'प्रसादनम्' कहा है अर्थात् किसी अर्थ को युक्तिपूर्ण ढंग से उपस्थित करने वाला तथा प्रस्ताव प्रदान करने वाला कहा है।"

परिभाषा—यद्यपि उपन्यास आधुनिक युग की उपज है। उस युग की जिसका दृष्टिकोण सर्वथा व्यक्तिवादी हो गया है। आज अराजकता का बोलबाला है, बाहरी दुनियाँ में तो कम, हमारे आन्तरिक जगत् में अधिक। समष्टि को कुचलकर व्यक्ति ऊपर उठ आया है। इसमें जो लचीलापन है बन्धनहीनता, है उसके कारण वह कभी भी कोई रूप धारण कर सकता है। यही कारण है कि उसकी भी साहित्य की अन्य विधाओं के समान कोई निश्चित परिभाषा नहीं की जा सकी।

फिर भी कुछ परिभाषायें निम्न-प्रकार हैं—

"उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है।"

—डॉ० श्याम सुन्दर दास (साहित्यालोचन, पृष्ठ १८)

उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द लिखते हैं कि "मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र-मात्र समझता हूँ। मानव-चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।" (प्रेमचन्द : कुछ विचार, पृष्ठ ३८)

सुधी समीक्षक आचार्य नन्ददुलारे बाजपेई के शब्दों में "उपन्यास से आज-कल गद्यात्मक कृति का अर्थ लिया जाता है। पद्यबद्ध उपन्यास नहीं हुआ करते।"

(आधुनिक साहित्य, पृष्ठ १२२)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

New English Dictionary में उपन्यास की परिभाषा इस प्रकार लिखी है—"A fictions prose tale or narrative of considerable length, in which characters actions professing to represent those of real life are portrayed in a plot."

The quest for literature by G. I. Shipley, P. 354

"The novel as literary from has still a flavour of newness."

—राबर्ट लिडेल

निष्कर्षत: बाबू गुलाबराय के शब्दों में हम कह सकते हैं कि "उपन्यास कार्य-कारण श्रृंखला में बँधा हुआ गद्य कथानक है जिसमें अपेक्षाकृत अधिक विस्तार तथा पेचीदगी के साथ वास्तविक जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों से संबंधित वास्तविक या काल्पनिक घटनाओं द्वारा मानव जीवन के सत्य का रसात्मक रूप से उद्घाटन किया जाता है।"

उपन्यास का स्वरूप—उपन्यास शब्द की व्युत्पत्ति और परिभाषा द्वारा उसके स्वरूप का निर्धारण तो हो गया है, परन्तु उसकी वास्तविक रूपरेखा का अंकन तब तक नहीं होगा, जब तक साहित्य की अन्य विधाओं से उसका साम्य और वैषम्य प्रकट न किया जाय।

उपन्यास और नाटक—शास्त्रीय विचार से उपन्यास की गणना श्रव्य काव्य के अन्तर्गत की जाती है और नाटक दृश्य काव्य के अन्तर्गत। कथात्मक-वृत्ति की दृष्टि से उपन्यास और नाटक में कोई विषमता नहीं है। दोनों ही गद्यात्मक आख्यान हैं। दोनों में तात्विक एकता विद्यमान् है। ये तत्व इस प्रकार हैं—कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, वातावरण, शैली तथा उद्देश्य।

उपन्यास में रूप और आकार सम्बन्धी कोई प्रतिबन्ध नहीं होता है, वह कितना भी वृहद् रूप धारण कर सकता है। इसके विपरीत नाटक में रंगमंच की सीमाओं को ध्यान में रखना आवश्यक है। प्रभावात्मक दृष्टि से यद्यपि दोनों में समता है तथापि स्वाभाविकता की दृष्टि से इनमें अवश्य अन्तर आ जाता है। क्योंकि उपन्यास रचना में नाट्य रचना की अपेक्षा लेखक को अधिक स्वतन्त्रता रहती है और वह एक नाटककार की अपेक्षा अधिक स्वाभाविक ढंग से स्वतन्त्रतापूर्वक कथा और पात्रों के साथ विचार कर सकता है।

उपन्यास में अतीत की घटनायें उसी परिवेश में वर्णित की जाती हैं और नाटक में विगत घटनाओं को क्रिया द्वारा दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। नाटककार को जो कुछ कहना है वह कुछ शब्दों द्वारा और कुछ भावभंगी द्वारा कहता है। वह स्वयं रंगमंच पर नहीं उतर सकता। उसके विपरीत उपन्यासकार अपनी कृति में समय-समय पर प्रकट होता रहता है। पात्र भी एक दूसरे की आलोचना कर देते हैं। उपन्यास का पाठक अपने कक्ष में या कक्ष से बाहर कहीं भी मनचाही अवधि तक पढ़ सकता है जबकि नाटक का आनन्द समय और स्थान की सीमा के अन्तर्गत नाटक भवन में ही ले सकता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपन्यास की कथा परिच्छेदों में बँटी रहती है और नाटक में पाँच अर्थ-प्रकृतियाँ—बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी, कार्य, पाँच कार्यावस्थायें—प्रारम्भ, प्रयत्न, प्रत्याशा, नियताप्ति, फलागम और इन दोनों को जोड़ने वाली पाँच संधियाँ-मुख, प्रतिमुख, गर्भ, विमर्श और निर्वहण मानी गई हैं।

अतः उपन्यास और नाटक के मूल तत्वों में अधिक भिन्नता नहीं है। हाँ, व्यावहारिक दृष्टि से इनमें पर्याप्त अन्तर परिलक्षित होता है।

उपन्यास और कहानी—आकारगत भेद के आधार पर कहानी को उपन्यास का लघु रूप कहा जाता है, किन्तु यह भेद स्थूल है। कहानी के आकार के विषय में बहुधा कहा जाता है कि 'कहानी तभी कहानी कही जायेगी जब वह एक निश्चित समय में अथवा अनिवार्यतः एक ही बैठक में पढ़ ली जाय।' अतएव यह धारणा नितान्त भ्रामक है कि उपन्यास और कहानी में केवल आकार की दृष्टि से ही भिन्नता है, अन्यथा इसमें कोई मौलिक भेद नहीं है।

उपन्यास जीवन का व्यापक और विस्तृत चित्र उपस्थित करता है। उपन्यासकार मूल कथा को संग्रथित करने वाली विविध घटनाओं को उन्हीं परिस्थितियों के साथ चित्रित करता है। यही कारण है कि उपन्यास का कथा-संगठन कहानी की अपेक्षा शिथिल होता है। पात्रों की संख्या भी कहानी में उपन्यास की अपेक्षा कम होती है। कहानी जीवन को उसकी सम्पूर्णता के साथ प्रतिबिम्बित नहीं करती, बल्कि उसके किसी एक पक्ष का ही उद्घाटन करती है। उपन्यास यदि मानव चरित्र की व्याख्या करता है तो कहानी में एक चरित्र की झलक मात्र दिखायी जाती है।

कहानी में हल्के मनोरंजन के साथ ही गम्भीर उद्देश्य भी निहित रहता है। इसलिए उसमें जीवन के किसी एक पक्ष का स्थूल चित्रण होता है। कहानी का आधार कोई एक विचार अथवा घटना हो सकती है। उपन्यासों में तत्वों के प्रयोग में स्वतन्त्रता रहती है। उपन्यास और कहानी दो शैलियाँ मात्र हैं। बाबू गुलाबराय ने कहानी को उसके पुराने रूप में उपन्यास की अग्रज और नये रूप उसकी अनुज स्वीकार किया है।

उपन्यास और महाकाव्य—उपन्यास और काव्य या महाकाव्य में मुख्य अन्तर है—उपन्यास यदि एक गद्यात्मक माध्यम है तो महाकाव्य पद्यात्मक। वैसे उपन्यास को महाकाव्य की गद्य शैली से भिन्न नहीं मानना चाहिए। 'दोनों की लेखन-प्रक्रिया, सृष्टि-संयोजना, कथा-कल्पना, वस्तु-नियोजन और उपलब्धियों की दृष्टि मे काव्य और उपन्यास का मूल उद्देश्य प्रायः एक-सा ही होता है। हाँ, रचना प्रक्रिया की दृष्टि से उपन्यास और महाकाव्य में भिन्नता होती है। उपन्यास में यदि विश्लेषणात्मक प्रवृत्ति की प्रधानता होती है तो महाकाव्य में रचनात्मक प्रवृति की। डॉ० गुलाबराय के अनुसार, "उपन्यास में महाकाव्य का-सा वर्णन अवश्य होता है किन्तु वह महाकाव्य नहीं। नायक-नायिका कुछ जातीय महत्व रखते हैं। राम या कृष्ण आदि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महाकाव्यों के नायक जाति की भावनाओं और संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हुए हमारे सामने आते हैं। उनका व्यक्तित्व जाति के श्रेष्ठतम् भावों से बनता है।" उपन्यास मानवीय जीवन के यथार्थ स्वरूप का उद्‌घाटन करता है जबकि कवि की दृष्टि में यथार्थ का पुट होते हुए भी कल्पनात्मकता की ही प्रमुखता होती है। दोनों का लक्ष्य यद्यपि मानवीय जीवन भी व्याख्या करना है तथापि कवि का आधार कल्पना प्रधान भाव जगत् होता है और उपन्यासकार उसकी आलोचना करता है।

उपन्यास : प्रकार

स्वरूप एवं विषय की दृष्टि से उपन्यासों की अनेक कोटियाँ निर्धारित की जा सकती हैं। प्रत्येक उपन्यासकार अपना एक विशिष्ट दृष्टिकोण रखता है, जिसके सहारे वह व्यक्ति, जीव एवं समाज की समस्याओं का निरीक्षण-परीक्षण हुए उसे सार्थक अभिव्यक्ति देता है। अतएव विभिन्न प्रवृत्तियों के आधार पर उपन्यासों को हम विभिन्न वर्गों में विभाजित कर सकते हैं—

(१) **ऐतिहासिक उपन्यास**—ऐतिहासिक उपन्यास का मूल उद्देश्य होता है—युग के सत्य की अभिव्यक्ति। ऐतिहासिक उपन्यासकार इतिहास के तथ्य को कल्पित या असत्य रूप में उपस्थित नहीं कर सकता। इसीलिए चरित्रों के सम्बन्ध में यथार्थता और कल्पनात्मकता का प्रश्न विचारणीय रहता है। वर्णित चरित्र अपने युग का दर्पण होता है। वह जीवन्त रूप में हमारे सामने प्रस्तुत होता है। वृन्दावनलाल वर्मा कृत 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई', 'गढ़कुंडार', प्रतापनारायण श्रीवास्तव कृत 'बेकसी का मजार' आदि कुछ प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास हैं।

(२) **सांस्कृतिक उपन्यास**—सांस्कृतिक उपन्यासों में विविध इतिहास-युगों की सांस्कृतिक परिस्थितियों पर विशेष बल दिया जाता है। भगवतीचरण वर्मा कृत 'चित्रलेखा' सुप्रसिद्ध सांस्कृतिक उपन्यास है। इसी कड़ी में चतुरसेन का 'वैशाली की नगर वधू', यशपालकृत 'दिव्या', 'अमिता' इत्यादि विशेष उल्लेखनीय हैं।

(३) **सामाजिक उपन्यास**—अधिकांश उपन्यास सामाजिकता की भावना से अनुप्राणित हैं। विषय-विस्तार की दृष्टि से सामाजिक उपन्यास का क्षेत्र बहुत व्यापक है। सुविधा की दृष्टि से इन्हें विभिन्न वर्गों के अन्तर्गत रखा जा सकता है—समस्या-प्रधान (परीक्षागुरू), भाव-प्रधान (चलते-चलते), आदर्शवादी (सेवा-सदन), नीति-प्रधान (नूतन ब्रह्मचारी) आदि।

(४) **यथार्थवादी उपन्यास**—यथार्थवाद वस्तुतः सत्यान्वेषण की भावना से उद्‌भूत प्रवृत्ति है। इसमें जीवन के साधारण और वास्तविक जीवन के चित्रण पर विशेष बल दिया गया। प्रेमचन्द का 'गोदान' पहला हिन्दी का यथार्थवादी उपन्यास है। इस प्रकार के उपन्यासों को विभिन्न वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास, प्रगतिवादी उपन्यास, अतियथार्थवादी उपन्यास, प्रकृतिवादी उपन्यास आदि।

(५) **मनोवैज्ञानिक उपन्यास**—मनोवैज्ञानिक उपन्यास चरित्रों को मानसिक और भावात्मक जीवन से सम्बद्ध रहता है। कथानक वाह्य घटनाओं से अलिप्त रहता है। इसमें पात्रों के कायाकल्प का मूलाधार कोई न कोई मनोवैज्ञानिक कारण होता है। प्रमुख मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार हैं—जैनेन्द्र कुमार, इलाचंद्र जोशी, अज्ञेय आदि।

(६) **राजनीतिक उपन्यास**—राजनीतिक उपन्यासों में राजनीतिक तत्वों की प्रमुखता रहती है। इनमें देश की स्वतन्त्रता को राष्ट्र प्रेम की समस्या से सम्बद्ध करके प्रस्तुत किया गया है। इन उपन्यासों में प्रायः साम्यवादी विचारधारा का पोषण अथवा समर्थन परिलक्षित होता है। इस प्रवृत्ति से प्रभावित प्रमुख उपन्यासकार हैं—यशपाल, रांगेय राघव, नागार्जुन, अमृतराय आदि।

(७) **प्रयोगात्मक उपन्यास**—प्रयोगात्मक उपन्यासों का आरम्भ अज्ञेय के 'शेखर : एक जीवनी' नामक उपन्यास से माना जाता है। कथानक, चरित्र-चित्रण व शिल्प सभी दृष्टियों से यह एक प्रयोगात्मक उपलब्धि है। अन्य उपन्यासकारों में भारतीय प्रभाकर माचवे, राजेन्द्र यादव आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

(८) **तिलस्मी-जादुई-जासूसी उपन्यास**—इस प्रकार के उपन्यास लिखने का प्रमुख श्रेय बाबू देवकी नंदन खत्री को है। उसकी लिखित 'चन्द्रकांता' और 'चन्द्रकांता संतति' का ऐतिहासिक महत्व है। उसमें ऐय्यारी के अनोखे और चमत्कारपूर्ण कार्य वर्णित हैं। निहाल चन्द्र वर्मा का 'जादू का महल' और दुर्गा प्रसाद खत्री का 'लाल पंजा और प्रतिशोध' क्रमशः जादुई और जासूसी उपन्यास हैं।

(९) **वैज्ञानिक उपन्यास**—वैज्ञानिक उपन्यास में उपन्यासकार विज्ञान के क्षेत्र मे होने वाले नव्यतम् आविष्कारों को कथात्मक परिणति प्रदान करता है। विज्ञान से मानव सदा से प्रभावित होता आया है अतः दोनों का घनिष्ठ सम्बन्ध है। आचार्य चतुरसेन का 'खग्रास' एक सफल वैज्ञानिक उपन्यास है।

(१०) **लोककथात्मक उपन्यास**—किसी लोक कथा को आधार बनाकर लिखे गए उपन्यास लोक कथात्मक उपन्यास की श्रेणी में रखे जाते हैं। इन कथाओं का प्रारम्भ, मध्य और अन्त एक विशेष परिपाटी में लिखा हुआ मिलता है। 'पंचतन्त्र' और 'हितोपदेश' को आधार बनाकर न जाने कितने उपन्यास लिखे जा चुके हैं। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा', 'काठ का उल्लू' आदि प्रमुख लोक कथात्मक उपन्यास हैं।

(११) **आँचलिक उपन्यास**—इन उपन्यासों में एक अंचल विशेष को आधार बनाया जाता है। एक निश्चित सीमा के बाहर जाने के लिए उपन्यासकार किंचित् स्वतन्त्र नहीं है। फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा लिखित 'मैला आँचल', 'परती परिकथा',

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूर्णिमा और परानपर नामक स्थलों से ही सम्बन्ध है। अतः ये पूर्णतया आंचलिक उपन्यास हैं।

उपन्यास के तत्व

थोड़े बहुत मतभेद के साथ उपन्यास के मूल तत्व छः माने गये हैं—

(१) कथानक,

(२) पात्र एवं चरित्र-चित्रण,

(३) कथोपकथन,

(४) देशकाल एवं वातावरण,

(५) भाषा-शैली,

(६) उद्देश्य।

(१) **कथानक**—उपन्यास के विविध तत्वों में कथानक सर्वप्रमुख तत्व है। कथानक उपन्यास की रचना का मूलाधार है। कथानक वह नींव है जिसके ऊपर उपन्यास रूपी महल खड़ा किया जाता है। इसके अन्तर्गत वे सभी घटनायें एवं सूत्र समाहित हैं जिनसे उपन्यास की रचना होती है। कथानक का विषय जीवन से, इतिहास-पुराण आदि ग्रन्थों से कहीं से भी लिया जा सकता है। मुंशी प्रेमचंद ने एक स्थल पर लिखा है कि—

"उपन्यासों के लिए पुस्तकों से मसाला न लेकर जीवन ही से लेना चाहिए।" एक अच्छे कथानक के लिए जिन गुणों का होना अपरिहार्य है, वे बाबू गुलाबराय के अनुसार ये हैं—मौलिकता, कौशल, संभवता, सुसंगठितता तथा रोचकता।

सारतः कथानक उपन्यास का मूल तत्व है। साथ ही उपन्यास-रचना का आधार भी है। यही कारण है कि कथानक को उपन्यास के विविध तत्वों में सर्वोपरि महत्व प्रदान किया गया है।

(२) **पात्र एवं चरित्र-चित्रण**—कथानक के पश्चात् पात्रों का उपन्यास में महत्वपूर्ण स्थान होता है। पात्र दो प्रकार के होते हैं प्रधानपात्र और गौणपात्र। प्रधानपात्रों में नायक, नायिका एवं सहनायक, सहनायिका आते हैं। कथानक की पूरी बागडोर इन्हीं के कंधों पर होती है और फल प्राप्ति भी अन्त में प्रायः नायक-नायिका को मिलती है। गौण पात्र कथानक को गति प्रदान करते हैं। पात्रों का चुनाव यथार्थ की ठोस धरती से होना चाहिये। तभी उनमें सप्राणता एवं सजीवता होगी।

उपन्यास में चरित्र-चित्रण की दो विधियाँ हैं—

(१) **विश्लेषणात्मक विधि** (Analytical) —इस विधि में उपन्यासकार स्वयं चरित्र-चित्रण पर रोशनी डालता है।

(२) **अभिनयात्मक** (Dramatic)—इनमें पात्रों द्वारा अथवा उसके क्रिया-कलाप से चरित्र पर प्रकाश पड़ता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बाबू श्याम सुन्दरदास ने इन्हीं दो प्रणालियों को स्वीकार किया है। चरित्र-चित्रण के गुणों में संगति के साथ मौलिकता, स्वाभाविकता, अनुकूलता, सजीवता और सहृदयता का होना आवश्यक है। संगति हो किन्तु इतनी नहीं कि पात्र यंत्र-चालित-सा लगने लगे। कोई भी पात्र न तो अच्छा-ही-अच्छा और न ही बुरा-ही-बुरा चित्रित होना चाहिये क्योंकि यथार्थ जीवन में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं होता है। नये उपन्यासकार कथानक की तुलना में चरित्र-चित्रण को अधिक महत्व दे रहे हैं और इसी को आज उपन्यास का प्राण-तत्व माना जाने लगा है।

(३) **कथोपकथन**—कथोपकथन, संवाद अथवा वार्त्तालाप उपन्यास का आवश्यक तत्व है। कथोपकथन के अभाव में उपन्यास में कृत्रिमता का वातावरण छा जाता है। इसलिये प्रेमचन्द जी ने कहा भी है कि "उपन्यास में वार्त्तालाप जितना अधिक हो और लेखक की कलम से जितना ही कम लिखा जाय उतना ही अच्छा है।'

शिव नारायण श्रीवास्तव ने कथोपकथन की परिभाषा करते हुये लिखा है कि "किसी भी उपन्यास की सफलता के लिये यह अत्यावश्यक है कि उसके पात्रों की बातचीत स्वाभाविक तथा प्रसंगानुकूल हो।' बाबू गुलाबराय के अनुसार "पात्रानुकूल वैचित्र्य के साथ ही उसमें स्वाभाविकता, सार्थकता, सजीवता और संक्षिप्तता के गुण वांछनीय हैं।"

सारत: उत्तम कथोपकथन के लिए स्वाभाविकता के साथ-साथ संक्षिप्तता, नाटकीयता, प्रसंगानुकूलता, प्रभावोत्पादकता एवं सोद्द्श्यता का होना आवश्यक है।

(४) **देशकाल एवं वातावरण**—देशकाल एवं वातावरण उपन्यास का अत्यन्त महत्वपूर्ण तत्व है। इससे कथानक की वास्तविकता का आभास मिलता है। देशकाल के अन्तर्गत किसी समाज या राष्ट्र की धार्मिक, सामाजिक, साँस्कृतिक, राजनीतिक परिस्थितियों और आचार-विचार, रहन-सहन, रीति-रिवाज का चित्रण आता है।

बाबू गुलाबराय लिखते हैं "कथानक के पात्र भी वास्तविक पात्र की भाँति देशकाल के बन्धन में रहते हैं यदि वे भगवान की भाँति देशकाल के बन्धनों से परे हों तो वे भी हम लोगों के लिए अभेद्य रहस्य बन जाएँगे इसलिए देशकाल का वर्णन आवश्यक हो जाता है। जिस प्रकार बिना अँगूठी के नगीना शोभा नहीं देता उसी प्रकार बिना देशकाल के पात्रों का व्यक्तित्व भी स्पष्ट नहीं होता है और घटनाक्रम के समझने के लिए इसकी आवश्यकता होती है।

देशकाल के चित्रण में सदा इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह कथानक के स्पष्टीकरण का साधन ही रहे साध्य न बन जाय। जहाँ देशकाल का वर्णन अनुपात से बढ़ जाता है, वहाँ उससे जी ऊबने लगता है, लोग जल्दी-जल्दी पलटकर, कथा सूत्र को ढूंढ़ने लग जाते हैं। देशकाल का वर्णन कथानक को स्पष्टता देने के लिए होना चाहिये न कि उसकी गति में बाधा डालने के लिए।"

(काव्य के रूप, पृष्ठ १७५-७६)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(५) **भाषा-शैली**—भाषा वही सफल कही जायेगी जो उपन्यास की कथा, काल और पात्र के अनुरूप हो। उसमें स्थानीय मुहावरों, लोकोक्तियों, सजग शब्दावली का प्रयोग होना चाहिये जिससे उसकी प्रवाहमयता संरक्षित बनी रहे। भाषा का पात्रानुकूल होना आवश्यक है सामान्यतः उपन्यासों में सरस, सरल, प्रवाहमयी एवं मुहावरेदार भाषा प्रयुक्त होती है।

शैली उपन्यास का विशिष्ट तत्व है। अभिव्यंजना का प्रकार ही शैली है। "शैली साहित्यिक आलोचना का एक परिभाषित शब्द है जिसे कुछ लोग तो विशिष्टता प्रधान रूप में ग्रहण करते हैं तथा जिसका प्रयोग किसी अभिव्यक्ति गुण के अथवा प्रकार के नामकरण अथवा वर्णन के लिए होता है।"

शैली की अनेक परिभाषायें मिलती हैं—"प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति ही शैली का अर्थ या इति है।"

"Style is the man himself." —Buffon.

"काव्य में शैली का वही स्थान है जो मनुष्य में उसकी आकृति या वेशभूषा का।" —डॉ० गुलाबराय

उपन्यासकार आवश्यकतानुसार शैली बदलने का अधिकारी होता है। मुख्य शैलियाँ ये हैं—वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक, पत्रात्मक, डायरी शैली तथा मिश्रित शैली। अस्तु शैली तत्व उपन्यास को आकर्षक रूप प्रदान करता है। शनैः-शनैः नव्यतम् शैलियों का विकास हो रहा है।

(६) **उद्देश्य**—बाबू गुलाबराय के अनुसार उपन्यास कहानी मात्र नहीं है। आज का उपन्यास पाठक समस्या के साथ ही उसका समाधान भी चाहता है। समस्या का हल प्रायः उपन्यासकार पाठकों पर छोड़ देता है। लेखक स्वयं समाधान से अपरिचित रहता है। तब जो सहानुभूति पाठकों के मन पर छा जाती है वही प्रस्तुत समस्या के निराकरण का शुभ अनुष्ठान है। उद्देश्य के सम्बन्ध में मुंशी प्रेमचन्द का कथन भी उल्लेखनीय है—"हमारा ख्याल कि क्यों न कुछ साहित्यकार कोई विचार प्रधान रचना भी इतनी सुंदरता से करे, जिसमें मनुष्य की मौलिक प्रवृत्तियों का संघर्ष निभता रहे। 'कला के लिए कला' का समय वह होता है जब देश संपन्न और सुखी हो। जब हम देखते हैं कि भाँति-भाँति के राजनीतिक और सामाजिक बन्धनों से जकड़े हुए हैं, जिधर निग्राह उठती है उधर दुःख और दरिद्रता के भीषण दृश्य दिखलाई देते हैं, विपत्ति का करुण क्रन्दन सुनाई देता है तो कैसे सम्भव है कि किसी विचारशील प्राणी का दृश्य न दहल उठे।" (कुछ विचार, पृ० ४२)

आज के युग में उपन्यास सशक्त और सफल अभिव्यक्ति का माध्यम है इसीलिए एक दृष्टिकोण एक उद्देश्य विशेष को लेकर उपन्यास की रचना की जाती है। आज उपन्यास मात्र मनोरंजन नहीं रह गया है, अपितु विविध समस्यायें और विचारों का वाहक बनता जा रहा है इसीलिए उद्देश्य में विविधता दृष्टिगोचर होती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लेखक-परिचय

पं० विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' हिन्दी के प्रखर कथाकार थे। उनका जन्म १८६१ में अम्बाला छावनी में हुआ था। कौशिक जी अपने पिता पं० हरिश्चन्द्र कौशिक के सबसे छोटे पुत्र थे। उनके चाचा इन्द्रसेन ने, जो कानपुर में वकालत करते थे, चार वर्ष की उम्र में ही उन्हें गोद ले लिया था। अस्तु, उनकी शिक्षा-दीक्षा कानपुर में ही हुई। हाईस्कूल करने के बाद उनकी पढ़ाई छूट गई। उन्होंने स्कूल में उर्दू और फारसी पढ़ी तथा घर पर ट्यूटर से हिन्दी सीखी। कौशिक जी ने पहले उर्दू में शायरी की। तत्पश्चात् गद्य में कुछ लेख भी लिख दिया कर देते थे। सन् १६०६ में हिन्दी के प्रति उनकी रुचि बढ़ी, उर्दू से उन्होंने एक प्रकार का वैराग्य-सा ले लिया था। सन् १६११ से वह हिन्दी में लिखने लगे थे। महावीर प्रसाद द्विवेदी से उन्होंने कहानी लिखने की प्रेरणा ली थी। साहित्य संदेश के उपन्यास अंक में इस सम्बन्ध में उन्होंने लिखा है—"एक बार द्विवेदी जी से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ उन्होंने मुझसे पूछा—'तुम्हारी रुचि किस ओर है? मैंने कहा—'कहानी तथा उपन्यास की ओर।' उन्होंने कहा—'तो वही लिखा करो।' मैं बंगला जानता था, अतएव उन्होंने रवीन्द्रनाथकृत 'षोडसी' कहानी संग्रह दिया और कहा कि इसमें से एक कहानी का अनुवाद कर दो? मैंने 'निशीथ' नामक कहानी का अनुवाद कर दिया। इसके पश्चात् अपनी इच्छा से ही 'रक्षा-बंधन' मौलिक कहानी लिखकर उनको दी। उन्होंने पसन्द की। तब से बराबर मौलिक कहानियाँ लिखने लगा।" इसी प्रकार कौशिक जी ने हिन्दी जगत् में प्रवेश करके प्रेमचन्द युग में उनके बाद लोकप्रिय कहानीकार का रूप ग्रहण किया। उनके द्वारा रचित ३०० कहानियाँ आज भी हिन्दी साहित्य में उनके नाम को अमर किये हुए है। सन् १६४६ ई० में इस संसार सिन्धु से हमेशा-हमेशा के लिए विदा हो गई।

उनकी साहित्यिक रचनायें निम्न प्रकार हैं :—

(१) **उपन्यास**—'माँ' 'भिखारिणी' तथा 'संघर्ष'।

(२) **संकलन**—'जारीना', 'रूस का राहु-रासपुटिन की जीवनी।'

(३) **चिट्ठी**—दुबे जी की चिट्ठियाँ—विजयानन्द दुबे के नाम से लिखी हुई चिट्ठियों का संग्रह।

(४) **कहानी संग्रह**—कल्प मन्दिर, चित्रशाला, भाग, मणिमाला, कल्लोल, पेरिस की नर्तकी।

(५) **अनुवादी**—मिलन मन्दिर (बंगला), अत्याचार-परिणाम (बंगला)

उपन्यास-कला

कौशिक जी ने अपनी उपन्यास रचनाओं में भाग तीन उपन्यास लिखे हैं जो इस प्रकार है माँ, भिखारिणी और संघर्ष। 'संघर्ष' उपन्यास कौशिक जी की मृत्यो-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परांत सन् १६४६ के लगभग प्रकाशित हुआ। इस तीसरे, 'संघर्ष' उपन्यास को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है यह उनका पहला उपन्यास हो और इसकी परिपक्वता परिलक्षित न होने पर ही इसे प्रकाशित करना ठीक न समझा हो। शायद यह उनकी तीसरी ही रचना हो लेकिन यदि ऐसा है तो यह कहना गलत न होगा कि कौशिक जी के अन्य दोनों उपन्यासों की तुलना में यह नगण्य है। "कौशिक जी के वर्णन का ढंग, कथोपकथन की सजीवता तथा चरित्रों को देने की प्रतिभा प्रेमचंद की ही अनुगामिनी है। इनकी भाषा बहुत चलती, व्यावहारिक और उपन्यास लेखन के उपर्युक्त है। सामयिक जीवन का यथार्थ अंकन करते हुए आदर्श की ओर उन्मुख होने वाली प्रेमचन्दी प्रवृत्ति इनमें भी मिलती है। प्रेमचन्द का अनुभव उनकी पर्यवेक्षण-शक्ति अवश्य अनुपम थी और उनमें वे अपना जोड नहीं रखते, परन्तु कौशिक जी में प्रेमचन्द की अपेक्षा भावप्रवण अधिक है और इस दृष्टि से वे बंगाली उपन्यासकारों के अधिक निकट हैं। कौशिक जी के उपन्यासों की कथावस्तु सीधी-साधी और सुलझी हुई होती है। उसमें जटिलता या दुरूहता का नाम नहीं होता क्योंकि वे जीवन की विविधता, व्यापकता के चित्रण का प्रयास नहीं करते। थोड़े से पात्रों और साधारण घटनाओं द्वारा, समाज के किसी यथार्थ रूप का हृदयस्पर्शी एवं पूर्ण चित्रण करके ही वे संतुष्ट हो जाते हैं। 'संघर्ष' में हमें यह सब देखने को मिलता है। उसका सम्यक् विवेचन प्रस्तुत है।

कथासार

शाम के चार बज चुके थे। कॉलेज-हॉस्टल में चहल-पहल थी। बी० ए० की परीक्षायें समाप्त हो चुकी थीं। वि० वि० के हॉस्टल से सभी छात्र विदा ले रहे थे। मदन मोहन भी प्रस्थान के लिए अपना सामान बाँध रहा था। इसी समय उसका मित्र जयनारायण आ पहुँचा और मदन मोहन से पूँछने लगा—"असबाब बांधने से फुर्सत मिल गई या कोई कसर बाकी है।" यह सुनकर मदन उत्तर देता है कि "कहाँ फुर्सत मिल गई अभी तो बहुत कुछ करना है" इस प्रकार दोनों में बातें प्रारम्भ हो गईं इसी बीच जयनारायण ने कहा—"उससे मुलाकात हुई या नहीं? किससे" मदन ने उत्तर दिया। इस पर जयनारायण ने कहा "यार मदन कभी-कभी तुम इतना बनने लगते हो, जिसकी कोई हद नहीं।" अंत में मदन को स्वीकार करना पड़ा—"अच्छा, शायद तुम्हारा मतलब मिस स्नेहलता से है।" मदन ने उत्तर दिया कि एक बार उससे भेंट हुई थी उसने स्टेशन पर मिलने को कहा है। इस पर जयनारायण ने पूछा "तुम्हारे जाने का समाचार सुनकर उसके मुख पर कैसे भाव उत्पन्न हुए थे?" "कुछ उदास तो अवश्य हुई थी?" मदन ने कहा। इस प्रकार स्नेहलता के बारे में दोनों लोग बहुत देर तक बातें करते रहे। इसी समय जयनारायण ने विवाह का प्रश्न उठाया। मदन ने बिलकुल स्पष्ट शब्दों में कह दिया "अभी विवाह का प्रश्न आ ही कैसे सकता है? अभी दो वर्ष तो उसे बी० ए० पास करने में ही लगेंगे। उसके पश्चात्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कदाचित् एम० ए० भी पास करे। उसके अतिरिक्त पहले मैं भी तो उससे विवाह के योग्य बन लूँ अभी मेरा अपना ही कोई ठिकाना नहीं व्याह करके भी क्या करूँ ? वह बड़े घर की बेटी है। मेरे जैसे गरीब के साथ उसका विवाह होना कैसे सम्भव हो सकता है।" इन बातों के पश्चात् उसका मित्र जयनारायण स्टेशन पर मिलने का वादा करके चला गया।

मदन, जयनारायण और उसके कुछ दोस्त स्टेशन पर मिस स्नेहलता की प्रतीक्षा कर रहे थे। स्नेह के आने पर जयनारायण ने मदन से कहा कि "जब अभी से यह हाल है तो आगे ईश्वर मालिक है।" जयनारायण के इस किये गये व्यंग्य को विवश होकर सहन किया इसी बीच उनमें से एक दोस्त ने कहा "लो वह आ गई" स्नेहलता को देखकर मदन मोहन के शरीर में खुशी की लहर सी दौड़ गई। थोड़ी देर पश्चात् स्नेहलता आई और मुस्कराती हुई बोली "क्षमा करना मुझे कुछ विलम्ब हो गया रास्ते में ताँगे का घोड़ा कुछ बिगड़ गया था। मुझे चोट नहीं लगी। ताँगे वाले ने उसे सँभाल लिया।" इसी समय ट्रेन की आवाज सुनाई दी। ट्रेन आते ही मदन ने तृतीय श्रेणी में अपना सामान रख फिर दोस्तों से आकर मिला। तत्पश्चात् मदन ने स्नेह से कहा "और मुझे विश्वास है कि तुम भी मुझे न भूलोगी।" स्नेहलता ने उत्तर दिया, "आशा तो ऐसी ही है।" गार्ड के सीटी देते ही मदन ने अपनी सभी दोस्तों से हाथ मिलाकर और स्नेह से पुनः कहा "इस गरीब को न भूल जाना, बस इतनी ही प्रार्थना है।" यह कहकर वह गाड़ी में बैठ गया। जब वह अपनी सीट पर बैठा तो उसकी आँखों से प्रेमाश्रु बह रहे थे।

मदन मोहन के एक वृद्ध पिता और एक विधवा बुआ है। पिता का नाम पंडित शारदा मोहन हैं। उसके पिता की आकांक्षा थी कि उच्च शिक्षा प्राप्त कर उसका पुत्र किसी अच्छे पद पर आरूढ़ हो। इसलिए ८०) पेंशन पाने पर भी उसकी पढ़ाई की व्यवस्था करते रहे। अतः मदन मोहन भी उपयुक्त नौकरी पाकर उनकी पढ़ाई की आकांक्षा पूरी करना चाहता था क्योंकि वह अपने पिता का इकलौता पुत्र था। हैजे के अकस्मात् आक्रमण से उसके पिता का निधन हो गया और उसके आगे जीवन निर्वाह की समस्या मुँह बाये आ खड़ी हुई। इधर उसके मन में एक ही धुन सवार थी कि किसी प्रकार वह इस योग्य बन सके कि स्नेहलता के पिता को उसके साथ अपनी कन्या को विवाह करने में आपत्ति न हो।

पिता की मृत्योपरांत उनके संदूक में केवल ४००) नगद और थोड़ा-सा सोने-चाँदी का जेवर निकला। पिता के क्रियाकर्म के पश्चात् उसके पास केवल दो सौ रुपये बचे। १५ दिन बाद परीक्षा परिणाम घोषित होने पर वह द्वितीय श्रेणी में पास हो गया। उसने अच्छे पर नौकरी पाने के अनेक असफल प्रयत्न किये लेकिन सफलता न मिली फलतः राजासाहब के यहाँ बच्चों को पढ़ाने का विज्ञापन देख प्रार्थना पत्र दे दिया सौभाग्य से वहाँ उसकी नियुक्ति हो गयी ६०) वेतन और रहने को मुफ्त

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मकान । बुआ के खाने-पीने की व्यवस्था कर वह नौकरी के लिए चल दिया और शाम के ५ बजे के लगभग राजा साहब की कोठी पर पहुँचा और उसने चपरासी को अपना परिचय दिया । उसका परिचय पाते ही चपरासी ने उसे उसके ठहरने के स्थान पर पहुँचा दिया । आफिस में समान सजे कमरे में उसकी भेंट प्राइवेट सेक्रेटरी दलजीत सिंह से हुई । उनकी उम्र लगभग २७-२८ वर्ष, रंग गोरा, बड़ी-बड़ी आँखें और दाढ़ी-मूँछ सफाचट थी । थोड़ी बहुत बात-चीत के पश्चात् उन्होंने बताया कि आप कल से पढ़ाने का कार्य प्रारम्भ कर दीजिए । एक लड़का आठ वर्ष का और लड़की सात वर्ष की है । इसके बाद मदन अपने कमरे में चला गया । आधा घंटे बाद राजा साहब ने बुलाया । 'राजा ने कुशल समाचार पूछने के पश्चात् शराब का गिलास उठा लिया और अपने सेक्रेटरी से कहा—'अरे भाई, मास्टर को भी दो ।' पर मदन ने बड़ी विनम्रता के साथ अस्वीकार कर दिया ।

जब मदनमोहन वहाँ पर नौकरी करने लगा तब उसे राजा साहव के बारे में निम्न बातें मालूम हुई । राजा साहब के दो रानियाँ, वर्तमान संतानें छोटी रानी की, बड़ी रानी राजघराने की तथा छोटी रानी एक साधारण परिवार की थी, छोटी रानी का भाई चन्द्रशेखर गृह-प्रबन्धक था, राजा साहब के एक गुरू भी हैं उन्हें सब गुरू महाराजा कहते हैं । भांग, गांजा और सिगरेट पीते हैं । महल के पीछे उनकी एक कुटिया है, पचास वर्षीय एक ब्राह्मण चन्द्रधर द्विवेदी कोषाध्यक्ष हैं । राजा साहव के पुराने कर्मचारी हैं । राजा साहब को इन पर श्रद्धा है । महल की प्राचार के बाहर एक बड़े भवन में कोषाध्यक्ष, मैनेजर आदि का दफ्तर और अतिथि-गृह है । राज्य की आमदनी लगभग आठ लाख रुपये है । मदनमोहन को निवास के लिए एक बंगला दिया गया इसके एक भाग में मुनीम लाल मिश्री ला० अग्रवाल रहते हैं ।

लालाजी की मदनमोहन से एक दिन शाम को संन्यासी जी के सम्बन्ध में बात-चीत हुई । लाला ने बताया कि वे राजा के गुरु हैं, अच्छे से अच्छा खाना खाते हैं, गांजा तथा सिगरेट पीते हैं 'स्वामी जी समझते हैं अच्छा चेला मूढ़ा और चेला समझता है राजगुरू का होना राजा के लिए आवश्यक है । इस कारण उन्होंने गोबर गणेश बनाकर बिठा लिया है । बड़ी रानी निराशमय जीवन व्यतीत करती हैं । वे पूजा पाठ में अधिक ध्यान देती हैं । उनका खाना, दास-दासियाँ सभी कुछ अलग है । महीने में तीन-चार बार राजा उसके महल में जाते हैं । यहाँ चार आदमियों का गुट है छोटी रानी का भाई चन्द्रशेखर, सेक्रेटरी दलजीत सिंह, हेड मैनेजर और स्वामी जी हैं । ये चारों व्यक्ति जो चाहते हैं वही करते हैं । यहाँ तो वही अपने पद पर निरापद रह सकता है जो केवल अपने काम से काम रखे । आपसे पहले एक टीचर बच्चों को पढ़ाने के लिए रखे गये थे लेकिन राजनीति में उनके पैर पड़ते उन्हें निकाल बाहर किया गया । यह सब जानकारी प्राप्त कर मदन लालाजी के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की । एक ला० मिश्रीलाल के साथ मदन स्वामी जी का रंग-ढंग देखने के लिए, प्रवचन सुनने के लिए गया । उधर से शास्त्री जी आ गये और इधर राजा साहब अपनी प्रेयसी वेश्या चंद।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से मिलने के लिए लखनऊ जा रहे थे। उनके साथ प्राइवेट सेक्रेटरी दलजीत सिंह, ड्राइवर तथा दो नौकर और थे। रास्ते में एक गाँव में कार रुकी वहाँ पर राजा साहब की दृष्टि एक षोडशी सुन्दरी पर पड़ी। राजा साहब को देख वह शीघ्र ही गली में एक मकान में अदृश्य हो गई। लखनऊ पहुँचकर वे अपने प्राइवेट सेक्रेटरी दलजीत सिंह से बोले "आज तो चंदा महारानी आ रही हैं कल उसी ऐंग्लो इण्डियन गर्ल को लाना जो पिछली बार आई थी।" खाना खाने के बाद राजा साहब चंदा के साथ शयनागार में गये। रात्रि १२ बजे के बाद जब राजा साहब शराब के नशे में चूर थे, चन्दा चुपचाप सेक्रेटरी साहब के शयनागर में प्रविष्ट हो गई।

इसी प्रकार दिन गुजरते रहे और मदन-मोहन की भेंट एक दिन त्रिवेदी जी से हुई। त्रिवेदी जी ने भी उसे इस बारे में कुछ बातें बताई और कहा कि यदि बच्चे तुमसे हिल-मिल जायँ तो कोई भी ताकत तुमको नौकरी से नहीं हटा सकती। त्रिवेदी के द्वारा बताई गई बातों के बारे में ही मदन मोहन विचार करता रहा। उसकी इस चिंतित दशा को देखकर उसकी बुआ ने उसके समक्ष विवाह का प्रश्न रखा। यह प्रश्न सुनकर उसे स्नेहलता की याद आ गई वह कहता है पता नहीं अब उससे भेंट होगी भी या नहीं। कॉलेज जीवन की बात, स्नेहलता से किये गये वादे, अपने प्रति उसकी भावनायें ये सब बातें आज एक खेल प्रतीत हो रही थीं परन्तु स्नेहलता के प्रति अब भी उसका वैसा ही निश्छल प्रेम था। यद्यपि छोटी रानी व बड़ी रानी में परस्पर कोई मनोमालिन्य नहीं था लेकिन छोटी रानी में घमंड था और बड़ी रानी एक सहज चरित्र थी। एक दिन छोटी रानी ने राजा साहब के चंदा से संबंध की बात बड़ी रानी कहकर अपने मन की पीड़ा व्यक्त की। इस पर बड़ी रानी ने कहा—'ज्योत्स्ना ! तुम व्यर्थ ही अपना रक्त जलाती हो। हम रानियों का प्रारब्ध ही ऐसा है। हमारी श्रेणियों की स्त्रियों में कदाचित् ही कोई ऐसी भाग्यवान निकले जिसे सौत का जलाया न सहन करना पड़ता हो।" राजा साहब जब लखनऊ से लौटकर घर पर आये तो छोटी रानी को रूठ देख वह बड़ी रानी के पास चले गये और बातों-बातों में बड़ी रानी ने उन्हें लखनऊ की बातें भी स्पष्ट करा दीं।

कुछ दिन बाद मदन मोहन को अपने घर में रात्रि में एक खटका सुनाई दिया। खटका सुनकर पहले तो उसे चोर जैसा आभास हुआ लेकिन जब यह आवाज सुनाई पड़ी कि—"मैं चोर नहीं, मुसीबत की मारी हूँ, मुझे बचाइये, मेरी रक्षा कीजिए।" स्त्री जैसा स्वर सुनकर मदन मोहन समझ गया कि यह अवश्य ही मुसीबत की मारी है और उसने अपनी बुआ से सब हाल उससे पूछने के लिए कहा। इसके पश्चात् त्रिवेदी जी, मिश्री लाल व मदन मोहन की एक बैठक हुई और उस बैठक में मदन मोहन को उससे विवाह करने के लिए कहा गया इस पर मदन मोहन को स्नेहलता से किये गये वायदे याद आ गये। अंत में उसकी बुआ ने भी यह सब स्वीकार कर लिया और लड़की सुरक्षा के नाते त्रिवेदी जी के यहाँ पहुँचा दी गई। यह वही लड़की है जो एक दिन राजा साहब को एक गाँव में लखनऊ जाते समय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मिली थी दो तीन नौकर उसे अंधेरे में पकड़कर राजा साहब के यहाँ ले जा रहे थे लेकिन वह हाथ छुड़ाकर भाग खड़ी हुई और अचानक ही अपनी रक्षा के लिए मदन मोहन के घर में घुस गई थी। यह सुनकर राजा साहब का हृदय खिन्न हो गया और वँह लखनऊ चले गये।

अचानक ही जब राजा साहब लखनऊ चले गये तो ज्योत्स्ना को बहुत बुरा लगा और उसने स्वयं पढ़ने के लिए मदन मोहन के समक्ष प्रस्ताव रखा और यह भी कहा कि राजा साहब को इस बात का पता न लगे। यह सुन मदन मोहन अत्यधिक चिंतित हुआ और उसने यह सब बातें मिश्रीलाल से कह सुनाईं। मदन भी बात सुनकर मिश्रीलाल ने मदन मोहन पर व्यंग्य किया तो दूसरे दिन मदन मोहन ने ज्योत्स्ना से बड़े सहज भाव में कहा कि माता जी मैं तो सदैव आपको माँ समझता हूँ इसलिए आप अपने पढ़ने के बारे में राजा साहब से आज्ञा ले लें तो अत्यधिक अच्छा है क्योंकि हो सकता है वह इसका गलत अर्थ लगावें। मुझे अपने से भय नहीं है क्योंकि मैं अंत:करण से शुद्ध हूँ लेकिन भय तो मुझे राजा साहब का है और फिर एक बेटा यदि अपनी बात माँ से नहीं कहेगा तो किससे कहेगा। यह सुनकर ज्योत्स्ना का मुँह उतर गया लेकिन तुरन्त ही उसने उसे पुत्र रूप में स्वीकार कर अपनी सहायता की याचना की और मदन मोहन ने बड़ी प्रसन्नता के साथ उसे स्वीकार किया।

पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार त्रिवेदी जी ने कन्या के विवाह की व्यवस्था की और मदन भी इसी बीच विवाह के लिए वहीं पहुँच जाता है। विवाह की खबर पाकर छोटी रानी ने मदन को चाँदी के थाल में गुलाबी रंग की साड़ी-ब्लाउज, एक सोने का रत्न जड़ा हार तथा ५००) प्रदान किये। इसी बीच मदन ने निराश होकर स्नेहलता को एक पत्र लिखा लेकिन उसका जवाब नहीं आया। दोनों की शादी हो गई। छोटी रानी ने राजा साहब से कहकर मदन का वे ६०) से बढ़वाकर १००) करवा दिया।

जब कई महीने गुजर गये। इधर चंदा के प्रति राजा का दिल भर गया था और उधर ज्योत्स्ना ने मदन मोहन और बड़ी रानी के सत्परामर्श से अपने को भी बदल दिया था। इस बात की इस चांडाल चौकड़ी को अत्यधिक चिन्ता हुई। एक दिन ज्योत्स्ना का भाई चन्द्रशेखर अपनी मंडली से बोला---"जीजी पर तो उसने न जाने कौन सा जादू कर दिया है कि उसके आगे मेरी बात ही नहीं सुनती।" "अब तो वह जीजी का भी अध्यापक है" चन्द्रशेखर ने कहा। इस पर इन सबने मदन मोहन को हटाने और उसे बदनाम करने का विचार किया। उपर्युक्त योजना के अनुसार चन्द्रशेखर ने बड़ी रानी से कहा कि छोटी जीजी ने शर्मा जी को इतना सिर चढ़ा रक्खा है कि इसका प्रभाव लोगों पर गलत पड़ता है। सभी लोग यही कहते हैं कि शर्मा जीजी पर मुग्ध हैं स्वामी जी भी एक दिन इसके बारे में पूछ रहे थे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चन्द्रशेखर के ज़ाने के पश्चात् शास्त्री जी आये उन्होंने भी मदन मोहन के प्रति गलत बातें कहीं। इस पर बड़ी रानी ने शर्मा के प्रति क्रोध प्रकट किया और शर्मा को यहाँ से विदा करने के लिए कहा।

कुछ समय पश्चात् राजा साहब अपने एक अन्य राजा के विवाहोपलक्ष्य में गये हुये थे तब बड़ी रानी ने छोटी रानी से कहा चन्द्रशेखर और शास्त्री जी तुम्हें लेकर मदन को वदनाम करना चाहते हैं। इसलिए तुम उसे एक बार ढंग से डाँट दो और इसमें कौन-कौन से व्यक्ति सम्मिलित हैं यह भी पूछ लेना छोटी रानी ने जब चन्द्रशेखर से शर्मा के बारे में पूछा तो वह बोला—"शर्मा जी अच्छे आदमी नहीं हैं जीजी ! यहाँ तो तुम्हें माता कहते हैं—और बाहर जाने क्या क्या बकते हैं" जब रानी ने उससे पूछा कि तुमसे किसने कहा तो उसने बताया कि प्राइवेट सेक्रेटरी साहब, शास्त्री जी तथा स्वामी जी की ओर संकेत किया। छोटी रानी ने यह सूचना शीघ्र ही बड़ी रानी को दी। एक दिन ज्योत्स्ना स्वामी जी के दर्शन के लिए पहुंचे मदन का प्रसंग आते ही वह बोल उठे "सुना था शर्मा जी से पढ़ती हो। परन्तु यह कार्य तुमने अच्छा नहीं किया पुत्री। शर्मा ऊपर से जितना सज्जन दिखाई पड़ता है, उतना सज्जन नहीं है उसे शीघ्र ही यहाँ से विदा कर दो।" स्वामी जी की बात सुन ज्योत्स्ना को अवश्य विश्वास हो गया कि अवश्य ही शर्मा ऐसा होगा अन्यथा महात्माओं को षड्यंत्र से क्या प्रयोजन ? यह सब बातें छोटी रानी ने बड़ी रानी को भी बताई तो दोनों ही रानियाँ इस निष्कर्ष पर पहुँचीं कि स्वामी जी भी इस षड्यंत्र में सम्मिलित हैं। इस प्रकार राजा साहब के लखनऊ से लौटते ही दोनों रानियों ने स्वामी जी की धूर्तता की कलई खोल दी। अगले दिन जब राजा साहब स्वामी जी के दर्शन के लिए पहुँचे तो उन्होंने स्वामी जी से कहा—"स्वामी जी, मेरी इच्छा है कि अब आप कुछ दिन अयोध्या जाकर रहें और वहाँ के लोगों को लाभ पहुँचायें। वहाँ सरयू तट पर हमारा एक भवन है, वहीं विश्राम करें।" अगले दिन स्वामी जी वहाँ से विदा हो गये।

एक दिन मदन बच्चों को पढ़ाकर लौट रहा था तभी शिवसहाय ने कहा कि "आजकल राजा साहब को मोटरकारों का शौक है।" इसी बीच दलजीत सिंह ने कहा कि "रानियों को पढ़ने का शौक है।" दलजीत सिंह का यह व्यंग्य मदन मोहन के हृदय में बाण के समान चुभ गया और उसने यह सब बातें आकर मिश्रीलाल को बताईं। इस घटना को मदन मोहन ने छोटी रानी से भी कहना चाहा लेकिन सामने पड़ते ही विचार बदल दिया। कुछ दिन बात मदन जिलेदार साहब के साथ इलाके में घूमने के लिए निकल गया। जिलेदार शिवसहाय किसानों से दूना लगान वसूल करता था लेकिन रशीद उतने की ही देता था। गाँव की इस दयनीय दशा पर मदन का हृदय भर आया। लेकिन वह अकेला क्या करता ? एक दिन वह 'देवी मन्दिर' के निकट पहुँचा तो उसकी भेंट एक वृद्ध वैद्य से हुई। इसी बीच उसकी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दृष्टि एक शांत मुखमंडल वाले वृद्ध सज्जन पर पड़ी वृद्ध वैद्य ने उसकी पूरी दुःखभरी कथा कह सुनाई। जब शुक्ल जी ने मदन से पूछा कि वह कहाँ है तो मदन ने बताया कि वह मेरे घर के पास रहती है आप उससे मिलना चाहें तो मिल सकते हैं इस पर उस वृद्ध सज्जन अर्थात् शुक्ल जी ने कहा "इसके लिए मैं आपका चिर ऋणी रहूँगा।" यह सुन मदन ने उन्हें धीरज बँधाया। घर वापस आकर सारा वृत्तान्त मदन ने सरस्वती को बताया। विकल पिता अपनी बेटी व दामाद को पाकर अत्यंत खुश हुआ और उसने उसे भेंट में २५००) दिये और वहाँ से बड़े हर्ष के साथ लौटे।

उक्त प्रसंग के कुछ दिन पश्चात् राजा साहब के यहाँ हाकिम परगना की दावत हुई। उस दावत में हाकिम परगना, ठाकुर अनिरुद्ध सिंह तथा अन्य दो स्त्रियों भी सम्मिलित हुए। इस घटना के एक सप्ताह पश्चात् ज्योत्स्ना ने शर्मा जी से अनिरुद्ध सिंह के यहाँ कुछ उपहार दे आने के लिए कहा उसने बताया कि दावत में उनकी पत्नी भी आई थीं उनसे मुझे स्नेह हो गया है। जब शर्मा उनके बंगले पर पहुँचा तो वहाँ उसकी भेंट स्नेहलता से हुई। दृष्टि मिलते ही उनके मुँह से निकल पड़ा—"ऐ तुम ! स्नेहलता !" तुम यहाँ कैसे मदन" उसने उत्तर में बताया कि "मैं राजा साहब के यहाँ ट्यूटर हूँ" दोनों में विवाह आदि के बारे में बातें हुईं फिर शर्मा ने ज्योत्स्ना दिया गया पत्र और बण्डल दे दिया। स्नेहलता पत्र का उत्तर देने के लिए दूसरे में चली गई। मदन का मृत प्रेम इसी बीच पुनः जागृत हो गया और जब वह लिफाफा देने को हुई तो उसकी इच्छा हुई कि उसका हाथ पकड़कर घसीट ले और हृदय से लगा ले लेकिन साहस न हुआ। लखनऊ से वापस आने पर उसका मन फिर स्नेहलता के लिए व्याकुल हुआ और दो दिन की छुट्टी पर वह फिर स्नेह के पास पहुँचे। बात-चीत के बाद स्नेह ने शाम आने का सिनेमा चलने का वादा किया। उसने उन्हें देखते देख लपककर उसे अपने बाहुपाश में ले लिया इस पर स्नेह ने विरोध करना चाहा लेकिन वह बोल न सकी क्योंकि मदन ने अपने अधरद्वय से स्नेह के अधरद्वय पर आक्रमण करके बोलना बंद कर दिया था। शर्मा ने शीतल जल की भाँति उसका अधर सुधापान किया और अंत में लज्जित होकर बोला "स्नेह मुझे क्षमा करना, मैं आपे में नहीं रहा।" शाम को दोनों लोग सिनेमा गये। खाना भी उसने वहीं खाया। जब वह चला तो स्नेह ने सहसा उसके गले में बाहें डालकर कहा "कल आना अवश्य" शर्मा जी ने भी उसे अपने बाहुपाश में ले लिया।

रास्ते में जब वह अपनी कोठी की ओर जा रहा था तो मन ही मन उसमें यह बात उत्पन्न हुई कि "स्नेह मुझसे अनुचित संबंध स्थापित करना चाहती है" यह विचार आते ही उसका मन उद्विग्न हो उठा। अगले दिन ग्यारह बजे राजा साहब बिना खाना खाये मोटर लेकर निकल गये लेकिन शर्मा को चैन न पड़ा। वह भी डिप्टी साहब के बंगले पर पहुँचा वहाँ उसे पता चला कि स्नेहलता राजा साहब के साथ घूमने गई है तो उसके मन में राजा-साहब के प्रति विद्वेषाग्नि भड़क उठी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दूसरे दिन जब वह स्नेह-से मिला तो उसने कहा कि "कल तो राजासाहब के साथ-खूब घूमीं। कहाँ गई थी?" इस पर स्नेह ने मदन को बहुत डाँटा। मदन होंठ चबाते हुए बोला स्नेह तुम विनाश के कगार पर खड़ी हो इस पर स्नेह ने कहा कि "तुम पुरुष लोग कितने स्वार्थी हो। जब तक स्त्री तुम्हारी इच्छा का पालन करे, वह रास्ते पर है परंतु जहाँ उसने अपनी इच्छा से काम किया कि तुम लोग 'विनाश', 'पतन', 'अधर्म' की रट लगाने लगते हो" जब मदन ने स्नेह को राजासाहब के प्रति सावधान होने के लिए कहा तो उसने कहा "केवल राजा साहब के प्रति अपने प्रति नहीं।" इस व्यंग से व्याकुल होकर जब मदन चलने लगा तो स्नेह उनसे लिपट गई और बोली "इतने भावुक मत बनो मदन! हम संसार में आनंद लूटने के लिए आये हैं। अतः व्यर्थ झगड़ों का त्याग करके जीवन का सुख लूटो" लेकिन शर्मा वहाँ से वापस लौट आया।

राजा साहब को बार-बार लखनऊ जाते देख छोटी रानी के मन में शंका हुई। इसका पता लगाने के लिए उसने मदन से कहा। इधर शर्मा स्वयं चिंतित और लखनऊ चल दिया। उधर स्वामीजी ने चन्द्रशेखर और दलजीत को शासन का लोभ देकर राजा साहब को खत्म करने की आज्ञा दी। एक दिन राजा साहब स्नेह के यहाँ गये। तभी किसी ने अकस्मात् राजा पर वार किया लेकिन राजासाहब तो बच गये और स्नेह सामने आ गई। हास्पिटल में पहुंचकर स्नेह ने प्राण त्यागे। प्राण त्यागते समय उसने अपने पति तथा प्रेमी मदन से क्षमा माँगी। अचानक मदन ने चुपचाप उस आक्रमणकारी को पकड़ लिया तो उसने बयान में बताया कि उसके आक्रमण का लक्ष्य तो राजा साहब थे स्नेह तो दुर्भाग्यवश सामने पड़ गई। चन्द्रशेखर और दलजीत पकड़ लिए गए लेकिन चन्द्रशेखर को छोटी रानी की आज्ञानुसार छोड़ दिया गया।

दो-तीन दिन के पश्चात् इन घटनाओं से उचाट होने पर उसने अपना त्याग पत्र राजासाहब के समक्ष पेश किया। राजा साहब ने कहा कि जब आपका क्षे० तैयार हुआ तो आप अब जा रहे हैं मुझे एक प्राइवेट सेक्रेटरी की जरूरत है। इस प्रकार मिश्रीलाल से परामर्श लेकर उसने वह पद स्वीकार किया। अपने पद का सदुपयोग करके उन्होंने राज्य में अनेक सुधार किये किसानों को सुविधायें दीं, स्कूल खोले, अस्पताल खोले, राज्य एक अच्छी रियासत के रूप में परिणत हो गया। लेकिन स्नेहलता की मधुर स्मृतियाँ अब भी उसके हृदय में एक बार तूफान-सा खड़ा कर देती हैं।

संघर्ष : एक समस्यामूलक उपन्यास

जैसा कि 'उपन्यास' शब्द की व्युत्पत्ति द्योतित करती है कि उपन्यास का अर्थ है किसी भी विषय को पास में रखना अर्थात् उपन्यस्त करना। प्रत्येक उपन्यास-कार अपनी रचना के माध्यम से अपने विचारों को तत्कालीन सामाजिक परिस्थि-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तियों के सामने रखता है। स्पष्ट है कि इन सबके पीछे उसका कोई न कोई उद्देश्य होता है, कोई लक्ष्य होती है। उपन्यासकार कभी समाज को सुधारना चाहता है, कभी समाज में परिवर्तन लाता है, कभी नई व्यवस्थायें लाना जाता है तो कभी उपन्यास के माध्यम से धन तथा यश की भी कामना करता है। कहना न होगा कि साहित्यकार समाज में संचालित होकर समाज के संचालन का प्रयास करता है।

संस्कृत साहित्य में साहित्य सृजन के निम्न छः उद्देश्य बताये गये हैं।

"काव्यं यशसे अर्थकृते व्यवहार विदेशिवेतरक्षतये।
सद्यः परिनिवृत्तये कान्ता सम्मित तपोपदेशयुजे।।

वर्तमान हिन्दी उपन्यास साहित्य में किसी भी उपन्यास के उद्देश्य वहुधा सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक होते हैं। सामाजिक एव राजनीतिक उद्देश्य प्रमुख हैं। उपन्यासकार समाज में व्याप्त कुण्ठा, घुटन, संताप आदि को चित्रित करता हुआ विभिन्न सामाजिक समस्याओं को दर्शाता हुआ पाठक की आत्मा को झकझोरता है और उससे यह अपेक्षा करता है कि वह विभिन्न सामाजिक समस्यायों के लिए समाधान प्रस्तुत करे। इस दृष्टिकोण से प्रस्तुत उपन्यास 'संघर्ष' में लेखक का मुख्य उद्देश्य विभिन्न समस्याओं का चित्रण करना है। जिनके माध्यम से वह पाठक के अंतस्थल पर चोट करता है और उसे विवश कर देता है कि वह समस्योन्मुखी वने।

प्रस्तुत समस्या प्रधान उपन्यास 'संघर्ष' में लेखक ने निम्न समस्याओं को सामने रखा है।

(१) स्वच्छंद प्रेम की समस्या—जहाँ मनुष्य होता है वहाँ निश्चित ही समाज का आविर्भाव हो जाता है और जहाँ समाज का आविर्भाव होता है वहाँ उसके अतिरिक्त विधान और पारस्परिक स्नेह संबंध पैदा हो जाते हैं। प्रश्न यह उठता है कि स्नेह संबंध समाज के विधि निषेधों से परिचालित हों अथवा स्वतंत्र रहें अर्थात् मनुष्य सदैव नैतिक नियमों में बंधा रहे या उनसे परे रहे। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने जीवन रूपी पुरुष के पराग प्रेम की समस्या को सामने रखा है और यह प्रश्न चिन्ह लगाया है कि यह नैतिकता की चहार दीवारी के अंदर रहे या बाहर।

उपन्यासकार कौशिकजी के समय से पूर्व स्वच्छंद प्रेम की समस्या ने अन्य उपन्यासकारों को आकृष्ट किया था। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रमचंद के युग से ही यह समस्या जन्म ले चुकी थीं तत्पश्चात् इलाचंद्र जोशी, जैनेद्र आदि उपन्यासकारों ने इन्हें जीवनता प्रदान की। जैनेन्द्र का सबसे छोटा उपन्यास 'परख' उसकी नायिका 'कट्टो' उस समय चर्चा का विषय बनी थी। स्वयं कौशिक जी ने अपने दूसरे उपन्यास 'भिखारिणी' में इस समस्या को मुख्य स्थान दिया है। इसी प्रकार प्रस्तुत उपन्यास में भी उन्होंने स्वच्छंद प्रेम को सामने रखकर विचार-विमर्श किया है। यह बात अन्यथा है कि उन्होने उसका कोई समाधान प्रस्तुत न करके पाठकों पर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

छोड़ दिया है कि वे ही इसके औचित्य तथा अनौचित्य का निर्णय करें। स्वच्छंद प्रेम की समस्या निम्न स्थलों पर प्रदर्शित होती है।

उपन्यास की नायिका स्नेहलता के माध्यम से लेखक ने इस समस्या को मुखरित किया है। नायिका का समस्त जीवन स्वच्छंद प्रेम का पर्याय है। अपने अध्ययन-काल से लेकर यौवन-काल तक और कदाचित् अवसान कर वह इसको निनादित करती रहती है। छात्र जीवन में ही वह जब नायक मदनमोहन से भेंट करती है तो उसके साथ अपने स्नेह संबंध बनाती है और वैभव की चकाचौंध में उसे विस्मृत कर डिप्टी अनिरुद्धसिंह की पत्नी बन जाती है तथा अपने वैवाहिक जीवन में भी वह केवल अपने पति की ही अंकशायिनी नहीं रहती, राजा साहब तथा नायक मदनमोहन से भी अपने संबंध स्थापित करने के लिए प्रयास करती है। इस प्रकार राजा साहब का जीवन उनकी दूसरी रानी ज्योत्स्ना, महाविद्यालय का वातावरण आदि दृश्य स्वच्छंद प्रेम के औचित्य तथा अनौचित्य के दिग्दर्शन के लिए सामने लाये गये हैं।

(२) **भ्रष्टाचार एवं रिश्वतखोरी की समस्या**--प्रस्तुत उपन्यास भ्रष्टाचार रिश्वत की समस्या को भी यथास्थान दिखाया गया है। नायक मदनमोहन शर्मा, अध्ययन के पश्चात् जब नौकरी के लिए रुपयों की रिश्वत देता है तथा बदले में उसे नौकरी भी नहीं मिल पाता है। उसके रुपये कोई भ्रष्ट व्यक्ति हजम कर जाता है आदि-आदि घटनायें इसका परिचायक हैं। इसी प्रकार राजा साहब के कर्मचारी जिस प्रकार से निम्न वर्गीय व्यक्तियों से रिश्वत लेते हैं, वह भी घृणास्पद है। लेखक ने इस प्रकार से इन दृश्यों को प्रस्तुत कर 'संघर्ष' उपन्यास में समाज की ऐसी कुरीतियों के लिए अपना गहरा आक्रोश प्रकट किया है।

(३) **अन्धविश्वास एवं रूढ़िवाद की समस्या**—भारतवर्ष में अन्धविश्वास धर्म का पर्याय सा बन गया है। अन्धविश्वास नें, रूढ़ियों ने और तथाकथित अध्यात्मवाद ने भारतवर्ष के जीवन को प्रभावित किया है। स्वामी शंकराचार्य ने अपनी महाध्वनि से।

"पुनरपि जन्मं पुनरपि मरणं
पुनरपि जननी जठरे गमनं
तदपि मुञ्चति आशा पिण्डम्
भज गोविन्दं मूढमते ॥"

जिन अन्धविश्वासों को दूर किया था और आध्यात्मिक चेतना को झकझोरा था उसी का प्रतिबिम्ब है 'संघर्ष' उपन्यास में व्यक्त हुए स्वामीजी का चरित्र। संघर्ष में स्वामीजी यदि एक तरफ उपनिषदों का प्रवचन करते हैं तो दूसरी ओर सिगरेट भी पीते हैं। इसी प्रकार एक तरफ वे धर्म के अध्यायों का बखान करते हैं तो दूसरी ओर राज्य की राजनीति को भी अपने चेलों के माध्यम से प्रभावित करते रहते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्राचीन अन्धविश्वास कि प्रत्येक राज्य में कोई न कोई ऋषि, साधु अथवा राज साधु होना ही चाहिए, इस बात की इसमें खिल्ली उड़ाई गई है। संघर्ष उपन्यास के पृ० ३०-३१ की निम्न उक्तियाँ जो कि भजन लाल एवं मदन मोहन शर्मा के वार्त्तालापों से संबद्ध हैं। द्रष्टव्य है—

"यदि स्वामीजी को तीन-चार दिन गाँजा, भाँग, सिगरेट न मिले तो उन्हें पता लगे कि यह संसार क्या है ?"

"कहां के स्वामी और कहाँ के शिष्य। स्वामीजी समझते हैं कि अच्छा चेला मूढ़ा, चेला समझता है कि राजगुरू का होना राजा के लिए आवश्यक है। इस कारण उन्होंने इसको गोबर-गणेश बनाकर बैठा लिया।"

स्वामीजी के परिचय के लिए मिश्रीलाल की यह उक्ति भी दृष्टव्य है।

"राजा के गुरू हैं, रेशमी वस्त्र पहनते हैं, बढ़ियाँ गाँजा तथा सिगरेट पीते हैं। उनके लिए जो भांग बनती है उसमें भी बढ़िया मसाले होते हैं इसलिए राजगुरू का मामला चकाचक रहता है।"

इस प्रकार के दृश्य जान बूझकर डाले हैं और वे केवल इसलिए कि जनता जाग सके तथाकथित इन मुल्ला, मौलवियों, गुरुओं, स्वामियों इत्यादि से दूर रह सकें। समाज में ऐसे बगुला-भक्तों की आवश्यकता नहीं।

(४) **वर्गभेद की समस्या**—प्राचीन काल से चली आ रही सबसे बड़ी विषम समस्या वर्गभेद की समस्या को भी इस उपन्यास में स्थान मिला है। वर्गभेद अर्थात् पूँजीपति और पूँजीहीनों की समस्या। एक ओर जहाँ पूँजी के केन्द्राधिकारी यह सोचते रहते हैं कि पैसे को किस प्रकार से खर्च किया जाए तो, दूसरी ओर निर्धन वर्ग यह सोचता है कि दो समय की रोटी के लिए पैसा कैसे इकट्ठा किया जाए। अर्थात् एक तरफ हुजूर हैं तो दूसरी तरफ मजूर। प्रस्तुत उपन्यास में मदन मोहन शर्मा निर्धन वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। धनाभाव में वह पढ़ नहीं सका और नौकरी करने पर विवश हो गया। धनी वर्ग का प्रतिनिधित्व राजा साहब के माध्यम से होता है जो अपने धन का अपव्यय करते रहते हैं। इस समस्या को सामने रखकर लेखक ने पाठकों का ध्यान पूँजी के असमान वितरण की ओर खींचा है।

(५) **जातिगत भेद की समस्या**—आंग्ल भाषा की एक कहावत के अनुसार—

"God made the man,
And man made the taurns."

अर्थात् ईश्वर ने मनुष्यों को पैदा किया और मनुष्यों ने नगरों का निर्माण किया। कहने का तात्पर्य यह है कि मानव द्वारा प्रकृतिदत्त चीजों में विविधता वाई लायी गई और यह विविधत केवल एक ही क्षे० में नहीं, जीवन के हर क्षे० में विभक्त होती गई। प्राचीन भारतीय परम्परा के स्रोत चार वर्ग नाना जाति और उपजाति में विभक्त होते गये और कालान्तर में सभी उपजातियाँ अपने वैयक्तिक अस्तित्व के कारण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऊँच और नीच के विचारों से ग्रसित हो गई। जाति की इसी ऊँच-नीच की भावना ने समाज की प्रगति को रोका। इसी तथ्य को लेकर कौशिक जी ने मदन मोहन शर्मा और सरस्वती के विवाह के समय हुए वार्त्तालाप, मदन मोहन शर्मा और स्नेह के जाति से सम्बन्धित प्रारम्भ में आये हुए वार्त्तालाप आदि-आदि उपन्यास में दिखाये गये हैं। इस प्रकार से कौशिक जी ने वर्तमान समाज की ज्वलंत समस्या की ओर पाठक का ध्यान आकर्षित किया है।

(६) **बेकारी की समस्या**—वर्तमान समस्या की सबसे बड़ी समस्या बेकारी की समस्या भी इस उपन्यास में दर्शायी गई है। नायक मदन मोहन शर्मा इसका प्रतीक है। अध्ययनोपरांत बेकारी की श्रेणी में आ जाता है उसे कहीं भी अच्छी नौकरी नहीं मिलती है। इस पर वह शिक्षा को दोषी ठहराता हुआ कह उठता है कि "क्या यही उच्च शिक्षा है? क्या इसी परिणाम के लिए माता-पिता अपनी गाढ़ी कमाई का हजारों रुपया खर्च करके अपने लड़कों को शिक्षा दिलाते हैं? मेरी अपेक्षा तो मजदूर ही कहीं अच्छे हैं, जो सुबह से शाम तक मजदूरी करके अपना पेट भर लेते हैं।" अंत में हारकर वह ट्यूशन पढ़ाने लगता है अर्थात् निजी शिक्षक बन जाता है। यह बात अन्यथा है कि उपन्यासकार ने उसे बाकी आगे बढ़ाकर इस बात की ओर संकेत किया है कि लगनशील, उत्साही, दृढ़ इच्छा वाले जीवन में कभी हार नहीं खाते हैं जो बीज उगना जानते हैं उनके लिए उर्वर और अनुर्वर का कोई महत्व नहीं। कदाचित् इसी भाव को लेकर उन्होंने बेकारी की समस्या का यह प्रच्छन्न समाधान रखा।

(७) **वेश्यावृत्ति एक अभिशाप**—प्राचीन काल से चली आ रही वेश्यावृत्ति की समस्या को भी इस उपन्यास में स्थान मिला है। बड़ी विडम्बना है कि संसार सिमट रहा है और चतुर्मुखी विकास हो रहा है फिर भी हमारे समाज का यह कलुष ज्यों का त्यों है। यदि किसी बड़े नगर में वेश्यावृत्ति नहीं है तो वहाँ पर इसका आधुनिक रूप 'काल गर्ल' के रूप में दिखाई पड़ता है। प्रस्तुत उपन्यास में ईसाई काल गर्ल और वेश्या चंदा के माध्यम से इस समस्या को सामने रखा गया है। लेखक में इस समस्या को सामने रखकर यही 'नहीं दर्शाया है कि इससे वेश्यायें बढ़ती है और विलासियों का धन उनके नूपुरों की धुनि में समा जाता है, अपितु यह भी दिखाया गया है कि जो पुरुष इस कुप्रथा के शिकार हैं उनकी पत्नियाँ अपने को बहुत ही कठिनता से संयमित कर पाती हैं। राजा साहब की छोटी रानी ज्योत्स्ना का राजा साहब की इस आदत के कारण मदन मोहन की ओर आकर्षित होना इसी बात का प्रतीक है। यद्यपि लेखक ने छोटी रानी को माँ का संबोधन दिल-वाकर सत्पक्ष को आगे बढ़ाने की चेष्टा की है तो भी इस बात से विमुख नहीं हुआ जा सकता कि इस समस्या में कितनी बुराइयाँ निहित हैं।

(८) **सहशिक्षा की समस्या**—वर्तमान काल की शिक्षा की सबसे बड़ी समस्या

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सहशिक्षा की समस्या है। लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में इस समस्या को भी प्रदर्शित किया है। मनोवैज्ञानिक तथ्य यह है कि स्त्री पुरुष का आकर्षण जो किशोर वय में सर्वाधिक होता है, इसका नियामक है। स्त्री शिक्षा और पुरुष शिक्षा एक हो जाने के कारण एक नई नैतिकता का जन्म होता है। कौशिक जी ने छात्र छात्राओं की शिक्षा से उत्पन्न बुराइयों की ओर ध्यान आकर्षित किया है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

"......शाम को खेल मे भाग लेने के बहाने लडके और लड़कियाँ साथ-साथ सिनेमा देखते या शहर सपाटा करते। ऐसी दशा में प्रोफेसर भी क्यों पीछे रहें कुछ मन चले प्रोफेसर भी लड़कियों को पढ़ाने के बहाने कालेज में छुट्टी के बाद रोक लेते या घर पर बुलाते।" इस प्रकार के दृश्य प्रस्तुत करने के बाद कौशिक जी कहते हैं कि "इस प्रकार कॉलेज में प्रेमकला की शिक्षा भलीभाँति मिलती थी।" स्पष्ट है कि कौशिक जी सहशिक्षा के समर्थक नहीं हैं। उनकी दृष्टि मे सह-शिक्षा से सामाजिक चरित्र गिर जाता है। अप्रत्यक्ष रूप से यह ध्वनित होता है कि आज की शिक्षा के युग में शिक्षार्थियों के साथ-साथ शिक्षाविदों का चरित्र भी ऊँचा होना चाहिए अर्थात् समस्या उतनी सह-शिक्षा की नहीं है जितनी कि विषय पढ़ाने वाले अध्यापक के व्यक्तिगत चरित्र की।

(९) **स्त्री स्वातन्त्र्य की समस्या**— कौशिक जी ने अपने इस उपन्यास के माध्यम से स्त्री स्वातन्त्र्य की समस्या को भी सामने रखा है। उपन्यास की नायिका स्नेहलता का संपूर्ण चरित्र स्त्री स्वातन्त्र्य के प्रश्न को घेरे हुए है। वह शिक्षा काल में भी स्वतन्त्र रहती है और अपने वैवाहिक जीवन में भी स्वतन्त्र ही रहना चाहती थी। डिप्टी अनिरुद्धसिंह जैसे सामाजिक दृष्टि से अभावहीन पति को पाकर भी वह घर की चहारदीवारी के घेरे में बन्द नहीं रहती। अपितु राजा साहब और उपन्यास के नायक मदन मोहन शर्मा से खुलकर मिलती है। इस प्रकार से वर्तमान युग में इस समस्या को भी कौशिक जी ने दर्शाया है।

(१०) **विवाह की समस्या**—आधुनिक युग में जबकि हिन्दू संस्कृति के १६ संस्कार छिन्न-भिन्न हो चुके हैं विवाह एक प्रगति का सोपान न रहकर समस्या रह गया है। कुछ विचारकों का तो यह थी कथन है कि विवाह रूपी संस्था को तोड़ देना चाहिए। जीवन-निर्वाह के लिए यह आवश्यक नहीं कि विवाह हो। इसी वैवाहिक समस्या को और इससे उत्पन्न कमियों को कौशिक जीने अपने इस उपन्यास में यत्र-तत्र दिखाया है। राजा साहब उनकी छोटी रानी, डिप्टी अनिरुद्धसिंह और स्नेहलता इनके जीवन में कहीं भी साम्य दृष्टिगोचर नहीं होता अर्थात् अनमेल विवाह की समस्या भी सामने आ जाती है ऐसे दृश्यों को सामने रखकर कौशिक जी ने इस समस्या को भी उपन्यास में स्थान दिया है।

इस प्रकार कौशिक जी ने अपने इस 'संघर्ष' उपन्यास में नाना सामाजिक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समस्यायों को उभारकर उनका समाधान चाहने का अपना उद्देश्य सामने रखा है। इस प्रकार यह एक समस्या-प्रधान उपन्यास है।

संघर्ष : उपन्यास की शास्त्रीय समीक्षा

जिस प्रकार से जीवन के किसी भी क्षेत्र का कोई भी अस्तित्व ईकाइयों के माध्यम से संगठित होता है ठीक उसी प्रकार से साहित्य की प्रत्येक विधा अपनी नाना ईकाइयों के कारण ही संपूर्णता की उपलब्धि होती है। विद्वानों ने विवेचन करके उपन्यास की विभिन्न ईकाइयों को औपन्यासिक तत्व कहकर पुकारा है।

पौर्वात्य एवं पाश्चात्य दोनों विचार-धारा वाले आलोचकों ने मोटे तौर पर उपन्यास के निम्न तत्व माने हैं—

(१) कथानक।
(२) चरित्र-चित्रण।
(३) कथोपकथन।
(४) देशकाल एवं वातावरण।
(५) भाषा शैली।
(६) उद्देश्य।

(१) **कथानक**—किसी भी उपन्यास की कथावस्तु ही उपन्यास का मूल होती है वस्तुतः कथावस्तु रूपी आधारशिला पर ही उपन्यास रूपी महल खड़ा किया जाता है। यदि कथावस्तु लचर होगी तो उपन्यास का संपूर्ण ढांचा स्वस्थ-स्वरूप की प्रस्तुति न कर सकेगा। प्रत्येक रचनाकार जितना समय उपन्यास लिखने में बिताता है। लगभग उतना ही समय खाका या कथावस्तु बनाने में। इस दृष्टि से उपन्यास की कथावस्तु में एक विषय सीमा अथवा क्षेत्र खोजा जाता है और उसी के आधार पर उपन्यास का निर्माण होता है।

हिन्दी साहित्य में उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद का युग ऐसा था जिसमें कथानक की सामाजिकता पर जोर अधिक दिया जाता था। कौशिक जी इसी श्रेणी के कलाकार हैं। उनके उपन्यास संघर्ष का कथानक भी सामाजिकता को लिए हुये हैं। कहना न होगा कि इस कारण से उनके उपन्यास राजनीति के कोढ़ में जाने से बच गये हैं और इसी कारणवश उनके उपन्यास चरित्र प्रधान न होकर कथानक प्रधान बन बैठे हैं। चरित्र प्रधान उपन्यासों में जो संघर्ष होता है वह पात्रों के अंतर्द्वन्द्व से प्रकट होता है अर्थात् संघर्ष आन्तरिक होता है। कथानक प्रधान उपन्यासों में पात्रों का संघर्ष बाह्य अधिक होता है। यही कारण है कि 'संघर्ष' उपन्यास का संपूर्ण संघर्ष बाह्य है घटनाओं से संबंधित है पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व से नहीं।

मुख्य तथा प्रासंगिक कथा—प्रत्येक उपन्यास के कथानक में एक मुख्य अथवा आधिकारिक कथा होती है जो कि उपन्यास के मुख्य उद्देश्य के लिए लिखी जाती है। इसके अतिरिक्त कार्य प्रासंगिक कथायें होती हैं जो रचनाकार के अन्य अनेक गौण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उद्देश्यों को तो प्रकट करती ही है साथ ही साथ मुख्य काया को भी संबल प्रदान करती हुई चलती हैं। इस दृष्टि से इस उपन्यास की मुख्य कथा मदनमोहन शर्मा का सङ्घर्षमय जीवन है। नायक के अध्ययनकाल से लेकर और उसके उत्तरकाल तक सभी घटनायें नायक के चारों ओर चक्कर लगाती हैं। अन्य छोटी-छोटी कथायें भी नायक की सफलता के साथ ही विलीन हो जाती हैं। इसकी प्रासंगिक कथाओं में राजासाहब, छोटी रानी, सरस्वती की कथा डिप्टी अनिरुद्धसिंह का जीवन आदि कथायें आती हैं।

इस प्रकार से इस उपन्यास में मुख्य और प्रासंगिक कथायें बहुत ही अच्छे ढङ्ग से सुनियोजित की गई हैं। यद्यपि यदि प्रासंगिक कथाओं की संख्या, कुछ कम कर दी जाती तो अधिक अच्छा रहता लेकिन इसे लेखक की सफलता ही मानना चाहिए। छोटी कथायें भी नायक के चरित्र को बल प्रदान करती हैं।

(२) **पात्र एवं चरित्र-चित्रण**—उपन्यास का नायक शास्त्रीय दृष्टिकोण के अनुसार धीरोदत्त नायक की कोटि में नहीं आता है। इसका कारण उसके वर्ण्य की वैषम्यता और परिवेश को परिवर्तनशीलता है। खलनायक की इस उपन्यास में सृष्टि अवश्य की गई है जो स्वामी जी, चन्द्रशेखर आदि के क्रियाकलापों के माध्यम से अपना कार्य करते हैं। इस उपन्यास की सबसे अधिक विशिष्टता इस बात में है कि शास्त्रीयता के अनुसार उपन्यास की नायिका नायक मदनमोहन की पत्नी सरस्वती को होना चाहिए था लेकिन उपन्यासकार ने स्नेहलता के चरित्र को अत्यधिक रंग दिया है जिसके कारण स्त्री पात्रों में सबसे मुख्य चरित्र की स्वामिनी वह बन सकी है। अन्य पात्र यथा राजा साहब, बड़ी रानी, छोटी रानी, त्रिवेदीजी आदि सभी किसी न किसी अंश में नायक के चरित्र को उभारने में सक्षम हैं। हम कह सकते हैं कि पात्रों की योजना करते समय कौशिकजी ने बड़ी उदारता से काम लिया है। पात्र यदि कम हो सकते तो कदाचित् कथानक के गठन में और भी कुशलता आ सकती थी।

जहाँ तक चरित्र-चित्रण का प्रश्न है प्रत्येक पात्र के चरित्र को सिद्धहस्त कलाकार कौशिक जी ने यथानुरूप चित्रित किया है। उन्हें विशेष सफलता उस समय मिलती है जब वे कोई धार्मिक अथवा सामाजिक रूढ़ि पर प्रहार कर रहे होते हैं। उपन्यासकार कौशिक जी ने नायक के माध्यम से सङ्घर्ष अभिव्यक्ति, स्नेहलता के माध्यम से उच्छृंखलता, स्वामीजी के माध्यम से कपटाचरण से युक्त संत, राजा साहब के माध्यम से विलासी शासक, वेश्या चंदा के माध्यम से सामाजिक कुरीति, बड़ी व छोटी रानी के माध्यम से रति के जीते जागते चित्र प्रस्तुत किये हैं। प्रत्येक पात्र के चरित्र चित्रण में कौशिक जी को अतीव सफलता प्राप्त हुई है।

(३) **कथोपकथन या संवाद**—कथोपकथन के दृष्टिकोण से लेखक में अपनी कला को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत करने की चेष्टा की है। यद्यपि उपन्यास जो कि अभिव्यक्ति का एक सीधा माध्यम है उसमें कथोपकथन अथवा संवाद लेखक अपनी निधि नहीं होते। नाटक, एकांकी आदि की बात अन्यथा है। इसी कारण से इस उपन्यास में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भी पारस्परिक वार्त्तालाप जहाँ छोटे-छोटे हैं अच्छे बन पड़े हैं। शेष वार्त्तालाप पात्रों के न होकर स्वयं लेखक के माध्यम से प्रकाशित किये गये हैं। यही कारण है कि यदि कुछ स्थलों को छोड़ दिया जाये तो संवाद कौशल की दृष्टि से यह उपन्यास अत्यन्त प्रभावोत्पादक न बन सका है। कौशिकजी ने स्वयं ही पात्रों की ओर से वार्त्तालापों का कथन कर पारस्परिक संवादों की तीक्ष्णता को कम कर दिया है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं :—

"असबाब बाँधने से फुर्सत मिल गई या कोई कसर बाकी है।"

"कहाँ फुरसत मिल गई, अभी तो बहुत कुछ करना है।"

"अच्छा शायद तुम्हारा मतलब मिस स्नेहलता से है।"

(४) **देशकाल एवं वातावरण**—उपन्यास जैसा कि कहा गया है मानव जीवन का जीता जागता चित्र है। मानव की भावनायें सामयिक परिस्थितियाँ एवं तत्संबंधी वातावरण का सन्तुलित चित्रण उपन्यास की श्रेष्ठता का प्रमाण होता है। कौशिक जी इस दृष्टि से सफल उपन्यासकार कहे जा सकते हैं। जहाँ वे पृष्ठभूमि का निर्माण कर रहे होते हैं चाहे वह किसी परिस्थिति, किसी घटना अथवा किसी पात्र की गति देने के लिए ही हो, अपना सान्निध्य नहीं रखते हैं। कौशिक जी के उपन्यास में राजा रानियों के चित्रण, रियासती वातावरण, जमींदारों के अत्याचार, निर्धनों की मूक सहनशीलता सभी कुछ वातावरण सापेक्ष है। कौशिक जी बहुधा किसी पात्र को सामने लाते समय उसका चित्रण इस भाँति करते हैं कि वातावरण तो तदनुकूल बनता ही जाता है पात्रों का चरित्र भी ऊर्द्धव होता जाता है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

"राजा साहब के गुरु भी हैं इनको सब गुरु महाराज कहते हैं······बड़े हृष्ट-पुष्ट तथा चिकने चुपड़े हैं। भांग तथा गांजा के प्रेमी हैं। सिगरेट भी पीते हैं। रेशमी वस्त्र पहनते हैं··· ·····।"

इस प्रकार से परिस्थिति, घटना, वातावरण व काल आदि की सूचना देते समय कौशिक जी ने निःसन्देह अत्यन्त कुशलता से काम लिया है।

(५) **भाषा-शैली**—कौशिक जी उस युग के हैं जिस युग में जमींदार, किसान, अंग्रेज और देश भक्त शोषक व शोषित में पारस्परिक आन्दोलन की भावनायें उठ रही थीं। अतः ऐसे काल में कोई भी भाषा स्थिर नहीं रहती। उसमें समाज के सभी प्रचलित शब्द आ जाते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास 'सङ्घर्ष' में भी कौशिक जी ने अरबी, फारसी, अँग्रेजी, संस्कृत, आदि सभी भाषाओं के शब्द धड़ल्ले के साथ प्रयुक्त किये हैं। कहीं पर वे नाइथ, फैशन, एटीकेट, गेट, ऐक्टर आदि शब्दों का प्रयोग करते हैं तो कहीं पर मोहलत, जबरदस्ती, दिलफेंक आदि उर्दू शब्दों का प्रयोग करते हैं यदि कहीं वे सामान्य जनता द्वारा बनाये गये शब्द दाल, साग, डिप्टियायिन, पंडित आदि शब्दों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का प्रयोग करते हैं तो कहीं पर वातावरण के अनुरूप संस्कृत शब्दों को भी सांख्य-पृथक् बालाप्रवदन्ति न पंडितः आदि संस्कृत शब्दों का भी प्रयोग करते हैं।

(६) उद्देश्य—उद्देश्य की दृष्टि से यदि इस उपन्यास को परखें तो हम पाते हैं कि इसके मुख्य दो उद्देश्य हैं :—

(i) मुख्य उद्देश्य।

(ii) गौण या सहायक उद्देश्य।

इसका प्रमुख उद्देश्य जैसा कि नाम से विदित है संघर्षशीलता में निहित है। उपन्यास का उद्देश्य आशावाद और एक ऐसे आशावाद की प्रतिष्ठा करना है जो जीवन की किसी समस्या के सामने मिलता नहीं। संघर्ष में विजित होता हुआ उपन्यास का नायक मदनमोहन शर्मा अपने जीवन की प्रत्येक समस्या से जूझता हुआ अन्त में सफल होता है। नायक अन्तिम सफलता के माध्यम से लेखक ने हमें बताया है कि सत्य की असत्य पर सदैव विजय होती है।

जैसा कि विदित है प्रस्तुत उपन्यास सामाजिक समस्याओं से परिपूर्ण है। इस समस्या उपन्यास में लेखक ने अनेकानेक समस्याओं को सामने रखकर और उनका हल निकालकर अपने अन्य की पूर्ति की है। अतः हम कह सकते हैं कि उद्देश्य की दृष्टि से प्रस्तुत उपन्यास एक सफल उपन्यास है।

शीर्षक के दृष्टिकोण से भी यह उपन्यास कम महत्वपूर्ण नहीं। संघर्ष जो कि मानवजीवन का मूल बिन्दु है जिसके बिना विकास नहीं हो सकता इसी तथ्य को नायक के जीवन में अवतरित कर और उसका औचित्य सिद्ध कर लेखक ने 'संघर्ष' नाम उचित ही रखा है।

स्नेहलता का चरित्र-चित्रण

'संघर्ष' नामक उपन्यास की नायिका वस्तुतः स्नेहलता ही है वह इसलिए कि सम्पूर्ण उपन्यास की कथावस्तु उसके चतुर्दिक घूमती रहती है। स्नेहलता जिसके चरित्र के कई आयाम हैं पूरे उपन्यास में भली प्रकार प्रकट हुई है। एक ओर जहाँ वह बुद्धिमता में किसी से पीछे नहीं है तो दूसरी ओर विलासिता में भी नहीं। उसके चरित्र की इन विरोधी प्रवृत्तियों ने ही उसके चरित्र को एक विशेष परिवेश में लाकर खड़ा कर दिया है।

(१) स्नेहलता और स्वातन्त्र्य दृष्टिकोण—उसके चरित्र का मूलभूत गुण इसमें सन्निहित है कि वह स्त्री को पुरुष के बराबर समझती है उसकी दासी नहीं। यही कारण है कि वह नाना सामाजिक प्रवृत्तियों एवं रूढ़ियों से अपने को मुक्त रखती है। अपनी प्राप्त शिक्षा के आधार पर वह पुरुषों के साथ किसी प्रकार के संकोच को बर्दाश्त नहीं करती। मदन मोहन जब स्नेहलता को उसके वैवाहिक जीवन के वासनामय रुझान की ओर संकेत करता है तो वह कहती है कि "तुम पुरुष लोग कितने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वार्थी हो जब तक स्त्री तुम्हारे अनुकूल रहती है, तुम्हारी आज्ञा और इच्छा का पालन करती है तब तक वह चाहे जो हो वह ठीक रास्ते पर है परन्तु जहाँ उसने अपनी इच्छा, अपने हृदय की प्रेरणा से कोई काम किया और वह तुम्हारे प्रतिकूल, बस तुम लोग विनाश, पतन, अधर्म की रट लगाने लगते हो। मंच पर से कुछ कहना, पुस्तकों में कुछ लिखना और आचरण उसके विपरीत करना और उस पर तुर्रा यह कि सारा बोझ स्त्रियों की खोपड़ी पर लादना, इस कपट का कोई ठिकाना है, परन्तु अब स्त्रियाँ पुरुषों में इस कपट वेश को जान गई हैं, समझ गई हैं कि पुरुष स्त्री को बन्धन में रखकर बन्धनमुक्त रहना चाहता है।"

उपर्युक्त उद्धरण स्नेहलता के स्वातन्त्र्य के दृष्टिकोण भली प्रकार से प्रकाशित करता है।

(२) **स्नेहलता का वैवाहिक दृष्टिकोण**—स्नेहलता विवाह के सम्बन्ध में अपने विचार परम्परा से हटकर रखती है। काफी समय पूर्व साहित्यकार जैनेन्द्र के द्वारा उठाई गई "पत्नी घर में, प्रेयसी मन में" समस्या का उद्घाटन एवं निरूपण स्नेहलता के चरित्र के माध्यम से होता है। वह 'पति घर में और प्रेमी मन में" के सिद्धान्त की समर्थिका मालूम पड़ती है। उसके चरित्र की विशेषता है यह बात अन्यथा है कि कथाकार जैनेन्द्र और उनके अन्य साथियों के विचारधारा से स्नेहलता का चरित्र साम्य रखता है। यह इस बात से प्रकट होता है कि वह विवाह तो डिप्टी अनिरुद्ध सिंह से करती है और प्रेम मदन मोहन शर्मा से तो कभी राजा साहब के प्रति भी आकर्षित हो जाती है व पति और प्रेमी को अलग-अलग स्तर का मानती है "पति तो पारिवारिक जीवन के लिए आवश्यक है, प्रेम के लिए नहीं।" वस्तुत: अपने इन रुझानों को भी वह स्त्री स्वातन्त्र्य का ही प्रतीक समझती है। उसकी दृष्टि से इस तरह से जीवन व्यतीत करने में कोई नीतिगत दोष नहीं है।

आलोचकों के दृष्टिकोण से स्नेहलता का यह वैवाहिक दृष्टिकोण भले ही प्रगतिवादी हो, विनाशवादी हो अथवा सृजनवादी हो इतना तो अवश्य है कि यह उसके चरित्र की एक क्रान्तिकारी विशेषता है।

(३) **स्नेहलता और प्रेम**—स्नेहलता के जीवन के सम्पूर्ण आयोग (पक्ष) यह घोषित करते हैं कि वह स्वच्छंद प्रेम की उपासिका है उसे किसी भी दिशा में बन्धन स्वीकार नहीं वह बँधकर जीना नहीं चाहती है इस दृष्टि से भले ही उसका चरित्र भोगवाद की ओर चला जाता हो पर प्रकृतिवादिता भी उस पर स्पष्ट रूप से छाई रहती है वह प्रेम के सम्बन्ध में स्वतन्त्र चिंतन कर सकती है उसकी दृष्टि में प्रेम मौलिक भावना भी है और आकर्षण भी। प्रस्तुत उपन्यास में उसके प्रेम सम्बन्धी दो दृष्टिकोण हमें दर्शित होते हैं।

(i) प्रेम एक रूप जन्य आकर्षण—उपन्यास के प्रारम्भिक अंश इस बात को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्योतित करते हैं कि प्रेम के सम्बन्ध में उसका दृष्टिकोण स्थायी नहीं। स्नेहलता अपने जीवन के प्रथम दिनों में जिस नायक मदन शर्मा से प्रेम करती है समय के अन्तराल की वैभव और चकाचौंध में फँसकर उसे विस्मृत कर देती है। वह स्वयं नायक मदन मोहन शर्मा और उसकी निर्धनता के प्रति उपहास करने लगती है। उससे रोहिणी द्वारा मदनमोहन शर्मा के बारे में प्रश्न करने पर विचित्र उत्तर की प्राप्ति होती है। "हां, एक पत्र आया था किसी राजा साहब के ट्यूटर हैं, साठ रुपल्ली पाते हैं और मुझसे विवाह के स्वप्न देखते है, मुझे वे अच्छे लगते थे, आदमी था सीधा पर विचार बिछड़े हुए, लजीले, सदाचार के पुतले, स्त्रियों से अलग रहने वाले, रसिकता नाम मात्र नहीं, ऐसा आदमी एक अच्छा मित्र हो सकता है पति ऊँह"। इस प्रकार के अंश यह बताते हैं कि वैभव के सामने उसका प्रेम तुच्छ है।

(ii) **प्रेम एक मौलिक आधार**—उपन्यास के अन्तिम अंश इस बात को दर्शाते हैं कि वह अपने इस दृष्टिकोण को भूल जाती है। समय के चक्र के बढ़ने के साथ ही उसके प्रेम की वास्तविकता स्पष्ट होने लगती है। वस्तुतः कबीर का निम्न दोहा—

"प्रेम कली अति साँकरी यामै दुई न समाय।"

उसका जीवन प्रतीक बन जाता है। मदनमोहन शर्मा और अनिरुद्ध सिंह के द्वारा किये गये कार्यों से वह प्रभावित होती है और अपने उन क्षणों पर पश्चाताप करती है जिन क्षणों में उसने मदन मोहन को ठुकरा दिया था। मृत्यु पूर्व उसके कहे हुए अंश उसके प्रेम की स्थिति का यथा-स्थिति अंकन करते हैं। वस्तुतः किशोरावस्था का प्रेम जो कि उसने अपने अध्ययनकाल में किया था, विस्मरण की वस्तु नहीं और यह मनोवैज्ञानिक सत्य है कि प्रथम दर्शन अथवा प्रथम स्पर्श अविस्मरणीय है। यही कारण है कि वह वैवाहिक जीवन के पश्चात् भी वह बंधन में नहीं रह पातीं। वस्तुतः यह उसके चरित्र का दोष नहीं यह उसके प्रथम प्रेम का कारण और परिणाम है। यदि ऐसा न होता तो सूरदास जी ने कहा है—

"बालापन की प्रेम कहो अली कैसे छूटै।"

जैसे पद नहीं रचे होते।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि अपनी अवैधानिक स्थिति में उसके लिए प्रेम एक रूपजन्य आकर्षण है और वैचारिक स्थिति में एक सुदृढ़ आधार। संक्षेप में उसके चरित्र में स्त्री स्वातन्त्र्य, स्त्री शिक्षा, प्रगतिवादिता, पुराने संस्कारों का क्षय, रूढ़िवाद, अन्धविश्वास आदि का विरोध आदि नाना गुण भरे हुए हैं।

शीर्षक की सार्थकता

(१) **नामकरण का महत्व**—उपन्यास में नाम का बड़ा महत्व होता है। पाठक पर पहले इसका ही प्रभाव पड़ता है। भक्तजनों में तो इसका इतना महत्व है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि इसके बिना कुछ हो नहीं सकता। एक लुटेरे और लठमार को एक महर्षि के रूप में परिणित कर देने का श्रेय नाम को ही है। 'राम' नाम के जाप ने उसकी जीवन-धारा ही बदल दी। नाम में व्यक्ति अथवा वस्तु के रूप और गुण का आभास पाते हैं। यही बात उपन्यास के नामकरण के सम्बन्ध से है। पाठक को पहला परिचय इस नाम से ही होता है। नाम से ही रचना के उद्देश्य या प्रतिपाद्य विषय का ज्ञान होता है। साधारण नामकरण से उसके नामकरण में अंतर होता है।

(i) **व्यंग्यपूर्ण**—शिशु के नामकरण से तो उसके भावी जीवन के सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञात नहीं हो सकता। हो सकता है कि उसका नाम करोड़ीमल रख दिया जाये और आगे चलकर वह दाने-दाने को तरस जाये। ऐसे ही कुछ उपन्यासों के नाम ऐसे होते हैं जिनका अन्त में बिल्कुल विपरीत परिणाम होता है अर्थात् व्यंग्य किया जाता है।

(ii) **यथा नाम तथा गुण**—कुछ उपन्यास ऐसे होते हैं जिसमें जैसा उसका नाम होता है वैसे ही गुण पाये जाते हैं।

(iii) **उद्देश्य को प्रकाशित करने में सक्षम**—कुछ उपन्याओं के नाम इस प्रकार के होते हैं जो उस उपन्यास के उद्देश्य को पूर्ण रूप से प्रकाशित करने में सक्षम होते हैं।

(iv) **संघर्ष सीधा सरल नाम**—आजकल उपन्यास के नामकरण के सम्बन्ध में अनेक प्रवृत्तियाँ और स्त्रियाँ प्रचलित हैं। समय और सभ्यता की गति के साथ उनमें अनेक परिवर्तन आते जाते हैं। प्रेमचन्द युग में सीधे सरल प्रतिपाद्य विषय के अनुरूप नाम देने की अधिक प्रथा थी। सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि आदि ऐसे ही नाम हैं। कौशिक जी भी वस्तुतः प्रेमचंद युग के प्रमुख उपन्यासकार थे। अतः उनमें भी उपन्यासों के नामकरण के बारे में इसी प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं। 'संघर्ष' इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

'संघर्ष' शीर्षक उद्देश्य और कथावस्तु के अनुरूप

'संघर्ष' शीर्षक उपन्यास के उद्देश्य और कथावस्तु के अनुरूप है। उपन्यास में नायक मदन मोहन शर्मा के आंतरिक और बाह्य-संघर्ष की कहानी चित्रित है। अतः 'संघर्ष' नामकरण और शीर्षक पूर्णतः सार्थक है। औपन्यासिक वस्तुविन्यास की दृष्टि से भी उपन्यासकार ने संघर्ष का नियोजन किया है। पाश्चात्य धारणा के अनुसार नाटक या उपन्यास की वह स्थिति जिसमें विरोधी शक्तियाँ अंतिम बार परस्पर संघर्ष करती हैं तथा जो कथावस्तु को निर्णयात्मक क्षण प्रदान करती है 'संघर्ष' कहलाती है। 'संघर्ष' में केवल दो विरोधी शक्तियाँ होती हैं। क्योंकि प्रेक्षक या पाठक की सहानुभूति केवल एक शक्ति के साथ ही होती है तथा अन्य समस्त शक्तियाँ या तो उसकी सहायता करती हैं या विरोध। संघर्ष की घटनायें कार्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

व्यापार का अंश हैं। नाटक या उपन्यास का वह स्थल जहाँ विरोधी शक्तियों की हार-जीत का अंतिम निर्णय होता है संघर्ष कहलाता है।

कथावस्तु का चयन नामानुसार—संघर्ष उपन्यास के कथानक में भी संघर्ष की उक्त स्थितियाँ विद्यमान हैं। यहाँ भी दो विरोधी शक्तियाँ हैं एक 'सत्' की समर्थिका नायक मदन मोहन शर्मा की और इसके साथी, खजांची चन्द्रधर द्विवेदी आदि की और दूसरी है असत् की समर्थिका छोटी रानी के भाई चन्द्रशेखर तथा उसके साथी दलजीत सिंह, हेड-मैनेजर और स्वामीजी की। मदन मोहन के बढ़ते प्रभाव को देखकर चंद्रशेखर आदि मिलकर उसे हटाने का प्रयत्न करते हैं पर अंत में असफलता ही हाथ लगती है। पाठक की सहानुभूति भी 'सत्' शक्ति के साथ ही हैं। नायक यदि मदन मोहन है तो खलनायक का कार्य चंद्रशेखर ने किया है।

इस बाह्य संघर्ष के साथ नायक के प्रेम संबंधी अंतर्द्वन्द्व ने भी कथावस्तु में महत्वपूर्ण स्थान धारण किया है। ब्राह्मणकुमार मदन मोहन क्षत्रिय कन्या स्नेहलता जीवन संगिनी बनाने के जो स्वप्न देखा करते है, वे उनके अंतर्द्वन्द्व के ही परिचायक हैं। गरीबी और अमीरी के साथ जातिगत दूरी भी उनके स्वप्न को साकार नहीं होने देती। इस प्रकार संघर्ष पर आधारित है।

नायक की कथा : संघर्ष कथा—नायक मदन-मोहन की कथा वस्तुत: अन्तर्द्वन्द्व की ही कथा है। बी० ए० की परीक्षा दे लेने के बाद ही उसका जीवन संघर्ष शुरू हो जाता है। पिता की असामान्य स्थिति के कारण जब आगे पढ़ना संभव न हुआ नौकरी मिले भी तो कैसे फिर ऐसी नौकरी और उसकी प्रियतमा स्नेहलता को उसका बना दे, कहाँ मिलेगी। ये सब बातें उनके मन को मथ डालती है। पिता की अकल्पित मृत्यु उनके संघर्ष को और भी उग्र बना देती है। अंत में मिलती है तो सामान्य है तो सामान्य ट्यूटरशिप। वहाँ भी अस्तित्व के लिए संघर्ष करना अनिवार्य हो जाता है। मिश्रीलाल और चंद्रधर त्रिवेदी आदि का साहचर्य उनके संघर्ष का सहायक बन जाता है। अंत में बड़ी और छोटी रानी की सहायता से वे समस्त विरोधियों को पराजित करने में सफल होते हैं—

इस प्रकार संघर्ष में हमें तीन प्रकार के संघर्ष के दर्शन होते हैं—

(१) नायक मदन मोहन का अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष।

(२) स्नेहलता को लेकर चलने वाला मदन मोहन का अन्तर्द्वन्द्व और राजा साहब के बाह्य संघर्ष।

(३) राजमहल में अपना प्रभुत्व बनाये रखने के लिए चन्द्रलेखर आदि का संघर्ष। तीनों ही दृष्टियों से उपन्यास का शीर्षक 'संघर्ष' पूर्णत: सटीक है।

नायक का चरित्र-चित्रण

उपन्यास मानव जीवन की यथार्थताओं से निर्मित एक घर है अथवा मानव

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चरित्र का चित्र मात्र है। इसी कारणवश जब किसी व्यक्ति ने इसका निर्माण किया तो वह पात्रों तथा चरित्र-चित्रण की एकमात्र समस्या से अपने को बचा न सका। यह बात अन्यथा है कि चरित्र-चित्रण प्रतिपाद्य बना हो या आनुषंगिक। चरित्र-चित्रण के अभाव में उसकी सृष्टि उपन्यास की संज्ञा से अभिहित नहीं की जा सकती। परंतु 'संघर्ष' में कौशिक जी चरित्र-रचना पर उतना ध्यान नहीं दे सके हैं, जितना कथा पर दिया है। संपूर्ण उपन्यास में केवल एक चरित्र मदन मोहन शर्मा का है, जिसके विविध पक्षों का उद्घाटन उन्होंने किया है।

मदन मोहन का परिचय—शाम के चार बज चुके थे। कालेज हॉस्टल में चहल-पहल थी। बी० ए० परीक्षायें समाप्त हो गई थीं। छात्र घर जाने की तैयारी कर रहे थे। मदन मोहन भी परीक्षा समाप्त हो जाने पर अपने घर पहुँचा। मदन मोहन के पिता पं० शारदा मोहन शर्मा ८० रु० पेंशन पाते थे। परिवार में तीन प्राणी थे। शर्मा जी स्वयं उनका पुत्र मदन और उनकी विधवा बुआ। शर्मा जी की बड़ी महत्त्वाकांक्षा थी कि उनका इकलौता पुत्र शिक्षा प्राप्त कर किसी अच्छे पद पर आरूढ़ हो। इसी बीच हैजे के अकस्मात् आक्रमण से उसके पिता का निधन हो गया। पिता की मृत्यु से मदन मोहन पर अनर्थ वज्रपात हुआ गुजारे की समस्या उसके सामने मुँह बाये आ खड़ी हुई। अब वह अच्छी नौकरी पाने के अनेक प्रयत्न करता है लेकिन सफलता हाथ नहीं लगती परिणामस्वरूप एक दिन उसने दैनिक पत्र में एक राज-परिवार में गृह-शिक्षक का विज्ञापन देखा और यह सोचकर कि यदि यत्न किया जाय तो यह स्थान प्राप्त हो जायगा प्रार्थना पत्र भेज दिया। भाग्यवश वहाँ उसकी नियुक्ति, ६० रु० वेतन और रहने को मुक्त मकान पर हो गई। यहाँ से उसके जीवन का एक नया अध्याय शुरू होता है यहीं पर उसने अपनी लोकप्रियता के माध्यम से अपने विरोधी षड्यन्त्रकारियों को परास्त कर एक नये जीवन की रचना की। मदन मोहन शर्मा उपन्यास का नायक है। वस्तुतः प्रारम्भ से लेकर अन्त तक सम्पूर्ण कथावस्तु इसी के इर्द-गिर्द चलकर काटती रहती है। उपन्यास की नायिका स्नेहलता से प्रारम्भ में बिछुडकर अनेक संघर्षमयी परिस्थितियों की जंजीरों को काटता हुआ फिर पुनः विवाहिता स्नेहलता से मिलता है।

(१) **अध्ययनशील छात्र**—'संघर्ष' उपन्यास के नायक मदन मोहन शर्मा से हमारी प्रथम भेंट उस समय होती है जब वह वि० वि० के हॉस्टल में शिक्षा ग्रहण कर रहा होता है। बी० ए० की परीक्षायें समाप्त हो चुकी हैं सभी छात्र कालेज के हॉस्टल से विदा होने की तैयारी कर रहे होते हैं। वह भी घर जाने की तैयारी कर रहा होता है। इसी बीच उसकी भेंट मित्र जयनारायण से होती है। जयानरायण मदन से कहता है। "असबाब बाँधने से फुर्सत मिल गई या कोई कसर बाकी?" "कहाँ फुर्सत मिल गई अभी तो बहुत कुछ करना है।" उसे अपना जीवन निराशाजनक प्रतीत होता है। कालेज में वह स्नेहलता से प्रेम करता है। लेकिन इसके बावजूद भी वह बी० ० में द्वितीय श्रेणी में पास हो जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(२) **मदन एक भावुक प्रेमी**—मदन जब बी० ए० की परीक्षा देकर घर जा रहा होता है। तब उसका साक्षात्कार एक भावुक प्रेमी के रूप में होता है। उसका मित्र जयनारायण स्नेहलता के बारे में मदन से कहता है कि "तुम्हारे जाने का समाचार सुनकर उसके मुख पर कैसे भाव उत्पन्न हुए थे ?" "कुछ उदास तो अवश्य हुई थी" मदन ने उत्तर दिया। इस तरह जब जयनारायण मदन से विवाह के सम्बन्ध में कहता है तो वह साफ-साफ स्पष्ट कह देता है "अभी विवाह का प्रश्न आ ही कैसे सकता है। अभी दो वर्ष तो उसे बी० ए० पास करने में ही लगेंगे। उसके पश्चात् कदाचित् एम० ए० भी पास करे। इसके अतिरिक्त पहले मैं भी उससे विवाह के योग्य बन लूँ। अभी मेरा अपना ही कोई ठिकाना नहीं है। व्याह करके भी क्या करूँ ? वह बड़े घर की बेटी है। मेरे जैसे गरीब के साथ उसका विवाह होना कैसे सम्भव हो सकता है ?" इसी प्रकार जब मदन वि० वि० से घर जा रहा होता है तो स्नेह अपने वायदे के अनुसार उससे मिलने के लिए स्टेशन पर आ जाती है। मदन ने स्नेह से कहा—"और मुझे विश्वास है कि तुम भी मुझे न भूलोगी।" "आशा तो ऐसी ही है।" कहकर स्नेह ने उत्तर दिया। गार्ड के सीटी देते ही मदन ने सबसे हाथ मिलाया और स्नेह से पुनः कहा—"इस गरीब को न भूल जाना बस इतनी ही प्रार्थना है" इस प्रसंग से मदन के भावुकता भरे प्रणय का स्पष्टीकरण होता है। वह नौकरी की तलाश में स्नेहलता के लिए व्याकुल रहता है। जिस समय सरस्वती से विवाह करने का प्रश्न सामने आता है तो भी अन्त में उसकी आत्मा स्नेहलता के लिए तड़पती है और वह अन्तिम निर्णय के रूप में स्नेहलता को पत्र लिखता है। पत्र लिखते समय उसे अपने द्वारा स्नेहलता से किये गये वायदे उसके मन में एक बड़ा तूफान खड़ा कर देते थे। सरस्वती से विवाह होने के पश्चात् भी वह स्नेहलता से मिलने पर अपने पर काबू न पा सका और उसको आलिंगन बद्ध कर लिया।

(३) **संघर्षशील व्यक्तित्व**—'संघर्ष' उपन्यास के नायक मदन मोहन का जीवन संघर्ष में ही व्यतीत हुआ। अपने अध्ययन काल मे ही बी० ए० की परीक्षा के पश्चात् उसके ऊपर पिता की मृत्यु से विपत्ति का पहाड़ गिर पड़ा फलस्वरूप उसके सामने गुजारे की समस्या मुँह बाये आ खड़ी हुई। उसने नौकरी प्राप्त करने के लिए न जाने किन-किन पूँजीपतियों के दर-दर पर ठोकर खाई। जब ६० रु० पर उसे नौकरी मिल भी जाती है तो उसकी लोकप्रियता से जलने वाले षड्यन्त्रकारी न जाने कितने उसके लिए षड्यन्त्र रचते हैं लेकिन वह इन सब परिस्थितियों से संघर्ष करता हुआ अपनी मंजिल प्राप्त कर लेता है।

(४) **मदन के प्रेम में आन्तरिक संघर्ष**—मदन के प्रेम में आन्तरिक संघर्ष उस समय जन्म लेता है जब ज्योत्स्ना उससे पढ़ने के लिए अपना प्रस्ताव रखती है और कहती है कि राजा साहब को पता न पड़े। इसी बीच जब सरस्वती उसके घर अचानक ही प्रविष्ट होती है तो उसकी रक्षा की समस्या उसके सामने आती है और जब

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

त्रिवेदी जी तथा मिश्री लाल उससे सरस्वती के विवाह का प्रश्न उसके सामने रखते हैं उसके मन में आंतरिक संघर्ष होता है इधर स्नेहलता भी उसके पत्र का जवाब नहीं देती है तो उसकी स्थिति ऊहापोह की स्थिति हो जाती है। इसी प्रकार स्नेहलता विवाहित होने के बाद जब पुनः उसके जीवन में आती है तो वह इसी अन्तर्द्वन्द्व के कारण उससे मिलने के लिए बार-बार उत्कंठित होता है।

(५) मदन एक धीरोदात्त नायक—यद्यपि मदन के चरित्र में भावुकता भरे प्रेम के उदाहरण दृष्टिगोचर होते हैं लेकिन उसके साथ ही उसके चरित्र में कुछ ऐसे गुण विद्यमान हैं जिससे वह अंततः ऊपर उठता गया। कालेज जीवन में भी वह स्नेहलता के अलावा और किसी का शिकार न हुआ। राजा साहब के यहाँ नौकरी करने पर भी उसने लोकप्रियता ही अर्जित की और छोटी रानी के द्वारा पढ़ने पर भी उसने अपने को मिथ्या भ्रम का शिकार नहीं होने दिया अन्यथा कुछ ही ऐसे व्यक्ति हैं जिनका रूप के आकर्षण के आगे पैर न फिसला हो और फिर जो एक बार फिसल गया वह फिर कभी नहीं उठ सकता है। उसके द्वारा ज्योत्स्ना से कहे गये ये शब्द उसकी सात्विकता का परिचय देते हैं—"मुझे आपसे भय नहीं लगता, आपको मैं अपनी माता के समान समझता हूँ कोई बालक अपनी माता से भय नहीं करना। अपने से मुझे इस कारण भय नहीं लगता कि मेरा अन्तःकरण शुद्ध है।" इस प्रकार मदन में एक सात्विक पुरुष के लक्षण विद्यमान हैं। आचार्य विश्वास के द्वारा लिखित 'धीरोदात्त नायक' की इस परिभाषा के अनुसार—

"त्यागी कृती कुलीन सुश्री को रूप यौवनोत्साही।
दक्षोऽनुरक्तलोकस्तेजी वैदग्ध्य सीलवन्विता।।"

उसमें धीरोदत्त नायक के गुण भी विद्यमान हैं वह त्यागी है उसमें लोग नाम मात्र का नहीं है जिसका प्रतीक छोटी रानी है। वह कृती भी है सरस्वती का उदाहरण इसका साक्षात् प्रमाण है। वह रूप और यौवन से भी सम्पन्न है। लोकहित में वह सदैव कार्यरत रहा। उसने प्राइवेट सेक्रेटरी का पद पाते ही अस्पताल, स्कूल खुलवाये। किसानों को लगान की वसूली में रियायत की आदि सुविधायें प्रदान की ये सब गुण धीरोदात नायक के परिचायक हैं।

(६) मदन के प्रेमजनित चरित्र में दुर्बलता—यद्यपि मदन मोहन स्नेहलता को पाने के लिए अनेक असफल प्रयत्न करता है लेकिन उसे सफलता नहीं मिल पाती है। वह नौकरी की तलाश में भी स्नेहलता के तड़पता रहता है और सरस्वती के विवाह के समय भी स्नेहलता से विवाह के किये गये वायदे उसके मस्तिष्क को एक झकझोर देते हैं। लेकिन सरस्वती के विवाह के पश्चात् भी स्नेहलता के प्रति प्रेमालिगन में अपने पर काबू न पाता यह उसके दुर्बल चरित्र का प्रमाण देते हैं।

मदन मोहन के चरित्र की यह दुर्बलता पाठक के मन में एक बार पीड़ा का तूफान खड़ा कर देती है लेकिन यह स्वाभाविक भी है क्योंकि यह मनोवैज्ञानिक तथ्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है कि प्रथम दर्शन और प्रथम स्पर्श कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। इससे यह प्रमाणित होता है कि कौशिक जी मानव के अन्तर्मन की बात भी जान लेते हैं।" उन्होंने नायक की इस दुर्बलता को छिपाया नहीं यह उनकी बौद्धिकता का प्रतीक है।

राजा साहब का चरित्र-चित्रण

'संघर्ष' उपन्यास के दूसरे प्रमुख पात्र राजा साहब हैं। जिस प्रकार छोटी-छोटी रियासतों के राजाओं का चरित्र होता है उसी प्रकार उनका भी चरित्र चित्रित हुआ है। 'संघर्ष' उपन्यास का नायक मदन मोहन शर्मा पिता की मृत्यु के पश्चात् नौकरी की तलाश करता है तो उसे फिर राजा साहब के यहाँ ६० रु० वेतन पर नौकरी प्राप्त हो जाती है और वह राजा साहब के दोनों बच्चों को ट्यूशन पढ़ाता है।

राजा साहब के दो रानियाँ हैं। बड़ी रानी से कोई सन्तान न हुई इसी कारण उन्होंने दूसरी शादी की। छोटी रानी का नाम ज्योत्स्ना है। उससे दो सन्तानें हुई, एक लड़का और एक लकड़ी। राजा साहब सदैव वेश्यायों से लिप्त रहते थें। उनके अनेक नौकर-चाकर थे।

(१) **ऐय्याशी प्रवृत्ति का राजा**—'संघर्ष' उपन्यास के राजा साहब ऐय्याशी प्रवृत्ति के हैं और सदैव ऐय्याशी लोगों का ही प्रतिनिधित्व करते हैं, वे शराब, भांग तथा गांजा के भी प्रेमी हैं। इसीलिए अपने बच्चों के ट्यूटर मदन मोहन को भी सर्वप्रथम शराब प्रदान करते हैं "अरे भई, जरा मास्टर साहब को भी दो।" राजा साहब प्रवचन सुनने के बहाने अपनी वेश्या चन्दा से भी मिलने जाते हैं और वहाँ पर उसके साथ भी भोग विलास करते हैं। इसी प्रकार वह स्नेहलता के बाहुपाश का भी बन्धन बन जाते हैं। राजा साहब को रोज एक नई लड़की भोग-विलास के लिए चाहिए। जिस समय राजा साहब चन्दा से मिलने के लिए जाते हैं तो रास्ते में उन्हें एक षोडशी सुन्दरी दिखाई पड़ती है उसे देखते ही राजा साहब का मन मचल जाता है और नौकरों को उसे पकड़ने का आदेश देते हैं।

(२) **संवेदनशीलता**—राजा साहब में शराब इत्यादि कामलोलुपता के साथ मानवीय गुणों का समावेश भी है। वे बड़ी रानी का भी ध्यान रखते हैं इसीलिए वह बड़ी रानी के महल में भी प्रवेश करते हैं और छोटी रानी ज्योत्स्ना के रोष का ध्यान रखते हुए उसके भी महल मे प्रवेश करते हैं। एक बार राजा साहब चाँदनी रात में झील के किनारे छोटी रानी ज्योत्स्ना से अपनी संवेदनशीलता का परिचय इस प्रकार देते हैं, "देखी ज्योत्स्ना ! मेरे हृदय पर तो केवल तुम्हारा ही अधिकार है, किसी दूसरी की छाया भी वहाँ नहीं पहुँच सकती, परन्तु खेलने के लिए अर्थात् जो बहलाने के लिए चन्दा को बुला लेता हूँ। मन-बहलाव दूसरी बात है, प्रेम और प्यार दूसरी बात ! चन्दा चन्द रोज है। वह एक दिन छूट जायगी कदाचित् फिर मैं उसकी सूरत भी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देखना पसन्द नहीं करूँगा। परन्तु तुम ! तुम तो सदैव ही मेरे हृदयासन पर विराजमान रहोगी। मृत्यु को छोड़कर कोई भी शक्ति हमें तुम्हें अलग न कर सकेगी बस इतना ही नहीं छोटी रानी जिस समय मदन मोहन पढ़ने को कहती है तो भी वे बिल्कुल ही सशंकित नहीं होते और उसे पढ़ने की आज्ञा दे देते हैं। इसी प्रकार मदन मोहन की शादी हो जाने पर वन उसके वेतन में वृद्धि कर देते हैं।

(३) **पत्नियों के प्रति निष्ठा का भाव**—राजा साहब में अपनी दोनों रानियों के प्रेम के प्रति निष्ठा का भाव है। बड़ी रानी के प्रति उनके हृदय में सम्मानपूर्ण प्रेम है और छोटी रानी के प्रति आत्मिक प्रेम का भाव। लेकिन प्रेम की अभिव्यक्ति दोनों ओर है। राजा साहब कहने लगते हैं "चन्दा चन्द रोजा है वह एक दिन छूट जायेगी कदाचित् मैं उसकी फिर सूरत देखना भी पसन्द न करूँगा परन्तु तुम तो सदैव मेरे हृदयासन विराजमान रहोगी। मृत्यु को छोड़कर संसार में कोई भी शक्ति हमें तुमसे अलग न कर सकेगी।"

(४) **राजा साहब में उदात्तता**—छोटी रानी ज्योत्स्ना समवयस्क मदन से पढ़ना आरम्भ करती है तो राजा साहब को इसके सम्बन्ध में कभी शंका तक नहीं होती इस ओर से राजा साहब बिल्कुल निश्चिन्त रहते हैं। उनकी उदात्तता ने एकाध बार परिहास को छोड़कर इसे गम्भीरता से कभी नहीं लिया बाद में उनका व्यक्तित्व परिवर्तन भी इन्हीं दोनों गुणों के कारण हुआ।

(५) **राजा साहब में दयालुता**—राजा साहब यद्यपि हर समय चाटुकार लोगों से घिरे रहते हैं लेकिन फिर भी जनता के लिये प्रतिवर्ष विजयादशमी का उत्सव आयोजित करते हैं। मदन की प्रेरणा से राजा साहब जनता के हितों के लिये अस्पताल, विद्यालय और मार्गों की व्यवस्था करते हैं। किसानों के लिये खेतों की सिंचाई की व्यवस्था करते हैं। राजा साहब में गुण-ग्राहकता भी विद्यमान् है। कोषाध्यक्ष त्रिवेदी जी के कार्य की प्रशंसा करते हैं। कर्त्तव्य-परायण मदन मोहन की उनकी योग्यता और कर्त्तव्यशीलता के कारण ही राजा साहब प्रशंसा करते रहे और अन्त में उन्होंने मदन मोहन शर्मा को ही प्राइवेट सेक्रेटरी बनाया और राज्य के हित के कार्य किये। राजा साहब जब अपने दुर्गुणों को छोड़कर सच्चरित्र राजा के रूप में हमारे सामने आते हैं तब वे हमारे हृदय को सहज में ही आकृष्ट कर लेते हैं। जहाँ पर एक ओर राजा साहब अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं वहाँ मानवीय गुणों से भी विभूषित हैं।

छोटी रानी ज्योत्स्ना का चरित्र-चित्रण

'संघर्ष' उपन्यास में नारी पात्रों में छोटी रानी ज्योत्स्ना का चरित्र प्रमुख है। आद्योपान्त उसका चरित्र एक सहज नारी का चरित्र है। जिस प्रकार से ज्योत्स्ना सबको सुख और शीतलता प्रदान करती है उसी प्रकार से उसके व्यक्तित्व की चन्द्रिका

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भी सबको स्नेहार्द्र किये रहती है। ज्योत्स्ना का व्यक्तित्व उसके नाम के अनुकूल है।

सुन्दरता—ज्योत्स्ना का जन्म एक साधारण और कुलीन घराने में हुआ था लेकिन रूप एवं गुण के प्रभाव से वह रानी बन गई थी। ज्योत्स्ना रूपगर्विता रानी थी। विलासी राजा चन्दा से मिलने के लिए जब लखनऊ जाते हैं ज्योत्स्ना इसे सहन नहीं कर सकती। वह सोचती है कि उसमें क्या कमी है ? राजा साहब को रोकने का प्रयत्न करती है "राजा कभी-कभी तुम मेरा तिरस्कार करके चन्दा से मिलने जाते हो तो मुझे हार्दिक क्लेश होता है।"

प्रतिक्रिया का भाव—ज्योत्स्ना एक ऐसी नारी हैं जिसे पति प्रेम की लालसा है। उसका पति राजा केवल उसका ही होकर रहे ज्योत्स्ना उसके लिये प्रयास भी करती है किन्तु राजा साहब उसकी अपेक्षा करते हैं अतः वह अपनी बड़ी रानी से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करती है। भयंकर प्रतिक्रिया के रूप में वह मदन मोहन शर्मा की ओर आकृष्ट हो जाती है किन्तु मदन के सात्विक विचारों से वह अपने चरित्र की रक्षा करती है।

कर्त्तव्य-निष्ठा—राजमहल में जब कुचक्र और सज्जनता का पता चलता है, पता चलते ही वह सचेष्ट हो जाती है। बड़ी रानी से सलाह लेती है और स्वामी जी को अयोध्या भेज देती है। राजा साहब को भी अपना मार्ग बदलने को बाध्य करती है। वह अपना अधिकार प्रयोग करती है। स्नेहलता और राजा साहब को पृथक् करने के लिए समझाने के प्रयोजन से लखनऊ भेज देती है।

स्नेह और वात्सल्य की प्रतिमूर्ति—अपने बच्चों से तो स्नेह रखना स्वाभाविक है लेकिन समवयस्क व्यक्ति से पुत्र भाव रखना बहुत ही कठिन होता है। मदन मोहन शर्मा के इन शब्दों में "मुझे आपसे भय नहीं लगता, आपको मैं अपनी माता के समान समझता हूँ, कोई बालक अपनी माता से भय नहीं करता ......। अतः अपने मन की बात माता से न कहूँ तो किससे कहूँ क्योंकि केवल माता ही पुत्र को सत्परामर्श दे सकती है।" तो उसका मुँह एक बार अवश्य उतर जाता है लेकिन चारित्रिक निष्ठा का उदय हो जाता है।

मातृवत् उदारता की मूर्ति—जिस समय मदन मोहन छोटी रानी ज्योत्स्ना को माँ कहकर सम्बोधित करता है तो वह मदन मोहन से अपने मातृभाव का परिचय देती हुई कहती है "तुमने मुझे अपनी माता बनाता है, आज से मैं भी तुम्हें अपना पुत्र मानूँगी। परन्तु तुम क्या एक सपूत की भाँति अपनी माता का दुःख दूर करने की चेष्टा करोगे ? इसी प्रकार जब मदन मोहन सरस्वती से शादी करने के लिए जाता है तब ज्योत्स्ना चाँदी के एक थाल में गुलाबी रंग की साड़ी, ब्लाउज, हार और ५०० रुपये रखकर देती है और जब मदन मोहन को राज महल से निकालने का षड्यंत्र

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रचा गया तो भी वह बड़ी रानी से कहकर उसकी रक्षा करती है। यह सब उसके मातृभाव का परिचायक है।

प्रेम पिपासिता—यद्यपि ज्योत्स्ना को राजा साहब बड़ी रानी की अपेक्षा ज्यादा चाहते हैं। फिर वह चाहती है कि उसका पति केवल उसका ही होकर रहे। राजा साहब का चन्दा से प्रेम करना उसको अच्छा नहीं लगता है उसकी प्रेम की भावना व्यक्तिकरण इन शब्दों में होता है "कैसी निर्मल चाँदनी है, कैसा एकांत, कैसी शान्ति, कितना सुन्दर आकाश। इच्छा होती है कि हम तुम अनन्त काल तक इसी प्रकार इसी स्थान पर बैठे रहें। 'ना मैं देखूँ और को ना तोहि देखन दूँ।' कहने का तात्पर्य यह है कि वह एकान्त की उपासिका है। उसके उपर्युक्त कहे गये शब्दों का राजा साहब पर इतना प्रभाव पड़ा कि बहुत दिनों तक राजा साहब के हृदय पतंग की अंकशायिनी बनी रही।

स्वातंत्र्य प्रेमी—छोटी रानी ज्योत्स्ना स्वातंव्य की प्रेमी है। वह बन्धन में रहकर जीना नहीं चाहती। उसे बन्धन कदापि स्वीकार नहीं है। वह इसी स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में इसी नारी जाति पर घृणा सी प्रकट करती हुई बड़ी रानी से कहती है कि "हम लोगों का जीवन भी क्या जीवन है कोई स्वतन्त्रता नहीं। न कहीं स्वतंत्रता-पूर्वक आ जा सकती है, न घूम फिर सकती हैं। हाँ, घर के अन्दर का सुख प्राप्त है परन्तु केवल इतने से ही सन्तोष नहीं होता। हमारे आदमी तक हमारे वश में नहीं।"

प्रभावशाली चरित्र—अन्य सभी स्त्री पात्रों में छोटी रानी ज्योत्स्ना का चरित्र एक प्रभावशाली चरित्र है। यद्यपि वह एक बार मदन मोहन शर्मा के प्रति आकृष्ट हो जाती है लेकिन तुरन्त ही अपने पर काबू पाती है और अपने को पतन के गर्त में गिरने से बचाती है। वह अपने चरित्र के माध्यम से राजा साहब को भी प्रभावित करती है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि ज्योत्स्ना का चरित्र अन्य सामान्य नारियों के लिए प्रेरणादायक है।

प्रेम निरूपण

अन्य उपन्यासों की भाँति 'संघर्ष' उपन्यास में भी प्रेम की अभिव्यक्ति की गई है। प्रेम दो प्रकार का होता है—(१) विशुद्ध प्रेम और (२) वासनायुक्त प्रेम। 'संघर्ष' उपन्यास में विशुद्ध प्रेम नाममात्र को भी नहीं है चारों ओर वासनायुक्त प्रेम ही प्रेम दिखाई पड़ता है। विशुद्ध प्रेम का सम्बन्ध हृदय और आत्मा से होता है और वासनायुक्त प्रेम ऐन्द्रिक लालसा से सम्बन्धित है। यद्यपि कौशिक जी वासनात्मक प्रेम के समर्थक नहीं हैं फिर वह कोई भी आदर्श प्रेम का प्रमाण इस उपन्यास में प्रस्तुत नहीं कर सके हैं।

(१) मदन मोहन और स्नेहलता का सम्बन्ध—उपन्यास के प्रारम्भ में ही

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मदन मोहन व स्नेहलता का प्रेम छात्र काल से ही प्रारम्भ हो जाता है यद्यपि मदन मोहन का प्रेम पहले तो एक विशुद्ध प्रेम की धरती पर अवतरित होता है लेकिन तत्पश्चात् वह जब अपने सरस्वती से विवाह के प्रश्न पर उसे स्नेह की याद आती है लेकिन उसे विस्मृत कर वह उस सरस्वती से शादी कर लेता है। शादी के पश्चात् भी स्नेहलता से मिलने पर वह फिर उसके बाहुपाश में बँध जाता है। इस प्रकार उसका प्रेम वासनात्मक प्रेम में परिणत हो जाता है।

(२) **राजा साहब और रानियों का सम्बन्ध**—राजा साहब के द्वारा दोनों रानियों से किये गये प्रेम में भी वासना की गन्ध आती है। इधर एक ओर राजा साहब बड़ी रानी से कहते हैं कि रानी हृदय की प्यास तो केवल तुमसे बुझ सकती है। ऐन्द्रिक तृष्णा बुझाने के लिए तो दूसरा ठिकाना भी है। इसी प्रकार छोटी रानी से भी कहते हैं कि "चंदा चंद रोज है। एक दिन वह छूट जायेगी ...... और तुम तो सदैव मेरे हृदयासन पर विराजमान रहोगी।" कितनी विडम्बना है इन शव्दों में कि नारी की कोई महत्ता ही नहीं। नारी को केवल एक भोग-विलास की वस्तु मान लिया जब चाहे तब उससे खेल लो फिर छोड़ दो।

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

(१) उपन्यास शव्द की व्युत्पत्ति निर्दिष्ट करते हुए उसकी परिभाषा प्रस्तुत कीजिए।

(२) पं० विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक' की उपन्यास कला का परिचय देते हुए उनकी उपन्यास कला की समीक्षा कीजिए।

(३) उपन्यास का साहित्य की अन्य विधाओं से अन्तर स्पष्ट कीजिए।

(४) संघर्ष उपन्यास के नाम का उसकी कथावस्तु के साथ क्या सम्बन्ध वनता है, लिखिये तथा यह भी बताइये कि उपन्यास का संघर्ष नाम रखना कहाँ तक सार्थक है?

(कानपुर वि० वि०, १९७३)

(५) कहानी और उपन्यास का अन्तर स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'संघर्ष' उपन्यास में लेखक ने किन सामाजिक समस्याओं का निरूपण किया है, उदाहरणपूर्वक लिखिए।

(कानपुर वि० वि०, १९७४)

(६) पात्र-योजना की दृष्टि से 'संघर्ष' उपन्यास के कलात्मक सौंदर्य का विवेचन कीजिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथवा

'संघर्ष' उपन्यास सामन्त युगीन परिस्थितियों की एक यथार्थ झाँकी है। उपर्युक्त कथन की उदाहरण सहित विवेचना कीजिये।

अथवा

'संघर्ष' उपन्यास के नामकरण की सार्थकता पर विचार कीजिये।

(कानपुर वि० वि०, बी० ए० उत्त०, १९७५)

(७) 'संघर्ष' उपन्यास के किसी एक पुरुष पात्र का चित्राङ्कन कीजिए।

अथवा

'संघर्ष' उपन्यास के नामकरण की सार्थकता पर विचार कीजिए।

अथवा

'संघर्ष' के आदर्श और यथार्थ की स्थिति का विवेचन कीजिये।

(कानपुर वि० वि०, १९७६)

(८) 'संघर्ष' उपन्यास के 'राजा साहब' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

'संघर्ष' उपन्यास की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

(कानपुर वि० वि०, १९७७)

(९) 'संघर्ष' उपन्यास में आदर्श और यथार्थ की स्थिति का विवेचन कीजिए।

अथवा

'संघर्ष' उपन्यास का उद्देश्य स्पष्ट कीजिये।

अथवा

पात्र-योजना की दृष्टि से संघर्ष उपन्यास के कलात्मक सौंदर्य का विवेचन कीजिए।

(कानपुर वि० वि०, १९७८)

(१०) कौशिक जी के उपन्यास 'संघर्ष' में गांधीवादी जीवन दर्शन की छाप है। इस कथन के पक्ष अथवा विपक्ष में अपने विचार व्यक्त कीजिये।

अथवा

चरित्र-चित्रण की दृष्टि से संघर्ष उपन्यास की सफलता पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'आधुनिक युग में उपन्यास अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'संघर्ष' उपन्यास को ध्यान में रखते हुए इस कथन की सार्थकता प्रतिपादित कीजिए।
(कानपुर वि० वि०, १९७९)

(११) औपन्यासिक तत्वों के आधार पर संघर्ष की समीक्षा कीजिए।

अथवा

'संघर्ष' के आधार पर कौशिक जी की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'संघर्ष' को आप ऐतिहासिक उपन्यास कहेंगे या सामाजिक ? कारण सहित उत्तर दीजिये।

(कानपुर वि० वि०, १९८०)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२
निबन्ध

हिन्दी का 'निबन्ध' शब्द वस्तुतः अंग्रेजी के 'Essay' का पर्यायवाची है। फ्रांसीसी साहित्यकार मान्तेन (Montaine) 'एस्से' के आदि-लेखक माने जाते हैं। उनके अनुसार यह आत्म-प्रकाशन अथवा आत्माभिव्यक्ति का एक प्रयास है।[1] संस्कृत में 'निबन्ध' शब्द का अर्थ है—निःशेष बन्ध अर्थात् वह रचना जिसमें बन्ध या संगठन हो, सम्बद्धता और तारतम्यता का गुण हो। अंग्रेजी विद्वान् जॉनसन ने निबन्ध के सम्बन्ध में कहा है—निबन्ध एक असम्बद्ध, अव्यवस्थित मस्तिष्क को उन्मुक्त अभिव्यक्ति है।[2] लेकिन इससे निबन्ध की प्रारम्भिक स्थिति का ही ज्ञान होता है। आज निबन्ध का रूप सुगठित और भली-भाँति व्यवस्थित है। वह साहित्य की परिपक्व विधा है। क्या विषय और क्या विवेचन दोनों ही दृष्टियों से यह विधा आज चिरन्तन पनप रही है। पश्चिमी विद्वान् ह्यूगवार के शब्द इस सन्दर्भ में पठनीय हैं—"There is no subject, from the stars to the dust-heap and from the amoeba to man, which may not be dealt with an essay."

इस प्रकार साहित्य की इस विधा का पर्याप्त विकास देखा जाता है। इसमें न तो बौद्धिकता का अभाव कहा जा सकता है और न हृदय की कमी। बौद्धिकता का आशय यहाँ मात्र विषय-विवेचन गम्भीरता से है। श्री ए० सी० बेनसन्त ने तो निबन्ध में हास-परिहास का भी तत्व स्वीकार किया है— "It must concern itself something jolly. His (Essayist's) charm depends upon giving the sense of a good humour, gracious and reasonable personality as to establish a sort of pleasant friendship with the readers." अस्तु, जिस निबन्धकार का ज्ञान-परिज्ञान जितना अधिक व्यापक होगा, उसका निबन्ध उतना ही सफल और प्रभावपूर्ण होगा। स्व० डॉ० श्यामसुन्दर दास की परिभाषा से यही ध्वनित होता है—"निबन्ध वह लेख है, जिसमें किसी गहन विषय पर विस्तृत और पांडित्यपूर्ण विचार किया जाता है।" शुक्लजी के शब्दों में भी भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबन्धों में ही सबसे अधिक सम्भव है। तात्पर्य यह कि निबन्धकार

1. These essays are attempt to communicate a soul.
2. A loose sally of mind, an irregular, un-digested pieee, not a regular and orderly performance.

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जब निबन्ध लिखता है, तब निःसन्देह अपने ठोस बुद्धिगत विचारों को शृङ्खलाबद्ध करता ही है, साथ ही अपने व्यक्तित्व के रस को भी जहाँ-तहाँ उसमें निचोड़ना वह नहीं भूल पाता। तभी निबन्ध गद्य की अन्य सामान्य विधाओं की अपेक्षा अधिक रोचक एवं सजीव बन पाता है। वस्तुतः निबन्ध किसी भी निबन्धकार की अनुभूतियों और स्वतन्त्र चिन्तन का सरल, सजीव, रोचक और मर्यादित प्रकाशन है, जो रसमग्न करने के साथ मानव-जीवन को दिशा भी देता है। निबन्धकार के विचार एवं भावों के अनुरूप उसमें शब्द-संगठन होता है। स्वर्गीय गुलाबराय जी के शब्दों में—"निबन्ध उस गद्य-रचना को कहते हैं जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छन्दता, सौष्ठव और सजीवता तथा आवश्यक संगति और सम्बद्धता के साथ किया गया हो।"

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि निबन्ध वर्तमान-युग की महत्त्वपूर्ण और परिपक्व साहित्यिक विधा है। उसमें हृदय-तत्व और बुद्धि-तत्व, विषयी और विषय का पूर्ण समन्वय देखा जाता है; साथ ही उसकी भाषा का रूप मर्यादित, सुगठित एवं व्यवस्थित होता है।

सफल निबन्ध की विशेषताएँ

(१) **वर्ण्य-वस्तु के क्षेत्र की व्यापकता**—निबन्धकार अपनी रचना के लिए किसी भी विषय का चयन कर सकता है, उसके लिए कहीं कोई प्रतिबन्ध नहीं होता। कोई भी भाव-विचार, दृश्य, कर्म, उद्देश्य निबन्ध का प्रतिपाद्य हो सकते हैं।

(२) **सीमित या मर्यादित आकार**—यह ठीक है कि निबन्ध का विषय जीवन और जगत् के किसी भी क्षेत्र से ग्रहण किया जा सकता है, तथापि उसके विवेचन में आकारगत सीमा सफल निबन्ध की अपनी विशेषता है। इसके लिए निबन्धकार को थोड़े में बहुत कहने की प्रवृत्ति को अपनाना पड़ता है। उसकी शैली का रूप संयमित और व्यवस्थित होना आवश्यक है।

(३) **स्वाधीनता**—निबन्ध-लेखन में निबन्धकार जिस प्रकार विषय-चयन के क्षेत्र में स्वाधीन होता है, उसकी विवेचना में भी स्वतन्त्र होता है। चाहे जिस रूप में अपने निबन्ध का समारम्भ और अन्त कर सकता है। उसके लिए कोई विशेष नियम नहीं होते। अपनी अनुभूतियों और विचारों को पाठक के मन में उतार देना ही उसकी सफलता का द्योतक है। लेकिन इसका आशय यह कदापि नहीं कि सफल निबन्ध में भाव एवम् विचारों का क्रमिक तारतम्य अपेक्षित नहीं है।

(४) **व्यक्तित्व और जीवन-दर्शन**—'शैली ही व्यक्तित्व है' के आधार पर निबन्धकार का व्यक्तित्व उसके निबन्ध में झलकता ही रहता है। उसके व्यक्तित्व की छाप से वह अछूता नहीं रह सकता। **हडसन** का कथन बिलकुल सत्य है कि सफल निबन्ध वही है, जिसमें निबन्धकार की वैयक्तिकता मूलतः विद्यमान हो।[1]

1. "The true essay is essentially personal." —*Hudson.*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आखिर निबन्ध में निबन्धकार की भावात्मक या विचारात्मक वर्ण्य-विषय-सम्बन्धी प्रतिक्रिया ही तो विद्यमान् रहती है। अतः उसके व्यक्तित्व और जीवन-दर्शन की व्यंजना उसकी सफलता का ही प्रमाण है। यह वैयक्तिकता सफल निबन्ध का अनिवार्य तत्व कहा जा सकता है।

(५) **आत्मीयता**—सफल निबन्ध में निबन्धकार की आत्मा का मधुर रस व्याप्त रहता है। यों आत्मीयता भी वैयक्तिकता का ही अङ्ग है। अपने आत्म-पक्ष को निबन्धकार पाठकों के समक्ष निःसंकोच-भाव से उद्घाटित करता है, पूर्ण तन्मयता से प्रकट करता है। इसी गुण के कारण पाठक निबन्ध को पुनः-पुनः पढ़ता है। निबन्धकार के साथ पाठक का रागात्मक-सम्बन्ध जुड़ जाता है। यह निबन्ध की सफलता का सर्वोपरि आयाम है। आत्म-निवेदन की शैली इसी का रूप है।

(६) **व्यंग्य एवं हास-परिहास का योगदान**—निबन्धकार के व्यक्तित्व तथा आत्म-पक्ष के समावेश के साथ हास-परिहास की मनोवृत्ति का समावेशन भी सफल निबन्ध में, उसकी रोचकता के लिये अपेक्षित गुण होता है। मीठी चुटकियों और विनोदी वाक्यों से निबन्ध का कलेवर सरस बन जाता है। यहाँ व्यंग्य से तात्पर्य व्यंजना-पद्धति से भी है, तभी तो निबन्धकार सामान्य शब्दों में भी विशेष अर्थ आपूरित कर देता है। अतः निबन्ध की इस विशेषता से एक ओर शैली का रूप निखरता है, तो दूसरी ओर पाठक की अभिरुचि निबन्ध में रहती है।

(७) **भाषा-शैली की विशेषता**—निबन्ध साहित्य की ऐसी विधा है, जिसमें अन्य विधाओं के गुणों का भी सहज समाहार हुआ रहता है। उसकी भाषा-शैली का रूप इसी से एक विशेषता लिये रहता है। उसकी भाषा में अधिक उदाहरणों की भरमार तो सचमुच उसकी प्रेषणीयता में बाधा उत्पन्न करती है, किन्तु लोकोक्ति एवं मुहावरों के प्रयोग से निबन्धकार की अभिव्यक्ति का स्वरूप अधिक प्रभावशाली, सरस तथा सार्थक हो जाता है। शैली के विचार से सफल निबन्ध में शैली का रूप सशक्त और व्यंजनापूर्ण होता है। बड़ी-से-बड़ी बात कम शब्दों में कहना ही निबन्ध की विशेषता है। साथ ही संक्षिप्तता, संगठन तथा कसे हुए वाक्यों का प्रयोग ही सफल निबन्ध की कसौटी है। नाटकीय संवादों जैसी गति और शक्ति ही सफल निबन्ध का प्राण है। अनर्गल भाषा का प्रयोग उसकी सफलता में बाधक होता है।

(८) **विषय और विषयी का समन्वय**—सफल निबन्ध में वर्ण्य-विषय तथा निबन्धकार की आत्मा का पूर्ण समन्वय होता है। दूसरे शब्दों में बुद्धि-तत्व और हृदय-तत्व का सामंजस्य ही सफल निबन्ध की विशेषता है। विषय प्रतिपादन के साथ निबन्धकार की आत्मा का हृदय-रस उसे और अधिक अमृतमय बना देता है।

निबन्ध के प्रकार या भेद

निबन्ध के प्रारूप तथा विशेषताओं के विवेचन से यह स्पष्ट है कि उसके मूलभूत तत्व क्या हैं? इन्हें दो रूपों में रखा जा सकता है—वर्ण्य-विषय और शैली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

या विवेचन-पद्धति। इन्हीं आधारों पर निबन्ध के अनेक प्रकार या भेद कहे जा सकते हैं।

सामान्यत: निबन्ध के दो प्रकार कहे जा सकते हैं—एक, **व्यक्तिपरक निबन्ध,** और दूसरे, **वस्तु या विषयपरक निबन्ध**। प्रथम को पुन: दो भागों में विभक्त किया जा सकता है— **विचारात्मक-निबन्ध,** और **भावात्मक निबन्ध**। निदान इनमें क्रमश: मस्तिष्क और हृदय के भावों की प्रधानता रहती है। इन दोनों के समन्वय से भी निबन्ध का अन्य रूप समक्ष आ जाता है और वह है—**मनोवैज्ञानिक निबन्ध**। पुन: जिन निबन्धों में निबन्धकार के आत्म-तत्त्व की प्रधानता हो, उन्हें **आत्मपरक निबन्ध** कहा जा सकता है। इसी प्रकार वस्तुपरक निबन्धों को भी दो रूपों में रखा जा सकता है। **वर्णनात्मक,** और **विवरणात्मक-निबन्ध**। इस वर्गीकरण को निम्न रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है—

निबन्ध

- व्यक्तिपरक निबन्ध (Subjective)
  - विचारात्मक (Reflective)
  - भावात्मक (Emotional)
- मनोवैज्ञानिक निबन्ध (Psychological)
  - आत्मपरक (Personal)
- वस्तुपरक निबन्ध (Objective)
  - वर्णनात्मक (Descriptive)
  - विवरणात्मक (Narrative)

व्यक्तिपरक या निजपरक निबंधों में निबन्धकार के व्यक्तित्व की प्रधानता रहती है, तथा वस्तुपरक निबन्धों में वर्ण्य-विषय की प्रधानता रहती है।

विचारात्मक निबन्ध—ये वे व्यक्तिपरक निबन्ध हैं, जिनमें निबन्धकार के मस्तिष्क का ही अधिक प्रयोग होता है। इसी से इसमें बुद्धि-तत्त्व की प्रधानता होती है। इन निबन्धों में निबन्धकार समाज, समस्या, साहित्य, राजनीति आदि विषयों पर अपने मौलिक विचार व्यक्त करता है। उसकी चिन्तनशीलता और मननशीलता का इनमें इसी से अच्छा परिचय मिलता है। इस प्रकार के निबन्धों में निबन्धकार स्वयं को भावना और कल्पना से दूर रखता है और विवेचन इस प्रकार करना पड़ता है कि पाठक या वाचक को उनमें नीरसता का अनुभव न हो। विचारों को भी बड़े सजीव ढंग से संजोना पड़ता है; ताकि वे पाठक को मात्र नीरस उपदेश न दीख पड़ें। संतुलन, सामंजस्य और रोचकता का भी समावेश अपेक्षित होता है। आचार्य शुक्ल के शब्दों में—"शुद्ध विचारात्मक निबन्धों का चरमोत्कर्ष वही कहा जा सकता है जहाँ एक-एक पैराग्राफ में विचार दबाकर कसे गये हों और एक-एक वाक्य किसी सम्बद्ध विचार-खण्ड को लिये हों। इन निबन्धों का प्रभाव पाठक के मस्तिष्क पर ही पड़ता है।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भावात्मक निबन्ध—इन निबन्धों में हृदय-तत्त्व की प्रधानता होती है। विषय का विवेचन भी इसी ढंग से होता है ताकि पाठक के अन्तःकरण पर ही इसकी प्रतिक्रिया सम्पन्न हो। भाव और कल्पना की प्रचुरता ही इनकी विशेषता है। अतः भाव और अनुभूति का रूप जितना अधिक प्रखर एवं मर्मस्पर्शी होगा तथा उनकी अभिव्यक्ति का रूप तदनुकूल 'जितना अधिक प्रभावशाली होगा; ये निबन्ध उतने ही सफल प्रमाणित होंगे। इनमें शैली का रूप ऐसा होना चाहिए कि पाठक के समक्ष वर्ण्यभाव का चित्र खिंच जाय और वह उसकी माधुरी में पूर्णतः डूब जाय। इसके लिए अनुभूतियों की क्रमबद्धता एवं व्यवस्था अपेक्षित है। ये निबन्ध वस्तुतः गद्य-गीति या गद्य-काव्य की कोटि के ही होते हैं। अन्तर केवल यह होता है कि भावात्मक निबन्ध गद्य-गीति की अपेक्षा आकार में बड़ा होता है। हास्य तथा व्यंग्य-प्रधान निबन्धों को भी इसी कोटि में लिया जा सकता है। निदान, उनमें भी व्यक्ति के हृदय की ही प्रधानता होती है।

आत्मपरक निबन्ध—यों तो विचारात्मक तथा भावात्मक-निबन्ध भी व्यक्ति-परक ही होते हैं, तथापि आत्मपरक निबन्ध विशुद्ध व्यक्तिपरक होने से दोनों से भिन्न कहे जा सकते हैं। इनके निबन्धकार का व्यक्तित्व सरलता से पहचाना जा सकता है, जबकि भावात्मक तथा विचारात्मक-निबन्धों में वह समाज में इस प्रकार घुल-मिल जाता है कि सहज ही पहचाना नहीं जा सकता। आत्मपरक निबन्धों में निबन्धकार अपनी ही बात कहता है और पाठक की सहानुभूति प्राप्त करता है। वस्तुतः निबन्ध-कार के भौतिक अभाव अथवा समृद्धि, सुख अथवा दुःख और विवशता अथवा स्फूर्ति आदि के आधार पर ही इन निबन्धों की रचना होती है। इनमें विशुद्ध भाव व्यक्ति के साथ सम्बद्ध होकर ही अभिव्यक्त होते हैं। इसके विपरीत भावात्मक निबन्धों में भावों का सम्बन्ध सामाजिक जीवन से होता है। आत्मपरक निबन्धकार अपनी ही दुनियाँ में रहता और विचरता है। किन्तु भावात्मक निबन्धकार संसार को अपना बना लेता है।

वर्णनात्मक निबन्ध—जिन निबन्धों में किसी वस्तु, प्राकृतिक दृश्य, मेला, घटना आदि का आँखों देखा सजीव चित्रण हो, उन्हें वर्णनात्मक निबन्ध कहते हैं। सजीवता इनकी विशेषता है। निबन्धकार को चाहिए कि वह वर्ण्य का पूरा चित्र लाकर प्रस्तुत कर दे। निदान, उसके प्रति पाठक की रागात्मक-वृत्ति जाग्रत हो जाय। इसके लिए उसे कल्पना और भाव का सहारा भी लेना पड़ता है, किन्तु विचार का बहुत कम। इसमें निबन्धकार वस्तु को जैसा देखता है, वैसा सजीव रूप में चित्रित करता है। ऐसे निबन्धों के लिए सरल एवम् प्रसाद-शैली का प्रयोग ही उपयोगी होता है। इनका लिखना सरल होता है।

विवरणात्मक निबन्ध—ऐसे निबन्धों में काल्पनिक घटनाओं, पौराणिक-ऐतिहासिक आख्यानों, संस्मरणों और कथाओं का विवरण होता है। जहाँ दो घट-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नाओं के बीच कोई रिक्त-स्थान होता है, उसकी पूर्ति निबन्धकार कल्पना के सहारे करता है। निबन्धकार का व्यक्तित्व इनमें सदैव बना रहता है और विषय के साथ आत्मीयता भी रहती है। घटनाओं की श्रृंखला को बनाये रखना इनके लिए आवश्यक है। इनमें कलात्मकता की ओर अधिक ध्यान देना पड़ता है, ताकि पाठक को नीरसता की अनुभूति न हो। बीच-बीच में हास्य और व्यंग्य के छींटे रोचकता का समावेश करते हैं। इन निबन्धों के लिए प्रसाद तथा व्यंजना प्रधान शैली ही उपयोगी होती है।

निबन्ध संगठन

निबन्ध-संगठन के लिए निम्न बातों के प्रति सतर्क रहना आवश्यक है—

(१) **भाव या विचारों की क्रमबद्धता, व्यवस्था और श्रृङ्खला**—निबन्ध का विकास व्यवस्थित तथा श्रृंखलाबद्ध होना चाहिए। आदि से अन्त तक उसमें एक क्रम का पूर्ण निर्वाह किया गया हो और निश्चित अन्त हो। अतः उसकी रूप-रेखा को पहले से ही निर्धारित कर लेना चाहिए। इस व्यवस्था और सूत्रबद्धता से ही वर्ण्य का पूर्वापर-सम्बन्ध स्थिर हो सकेगा।

भाव या विचारों की इस व्यवस्था में तर्क-संगत सम्बन्ध होना आवश्यक है। तात्पर्य भाव या विचारों में मनोवैज्ञानिक-दृष्टि से एक क्रमिक सम्बन्ध हो।

(२) **अनुपात एवं सन्तुलन**—निबन्ध में भाव और विचारों में पूर्ण अनुपात और सन्तुलन होना चाहिए। आशय, प्रधान भाव या विचार का अपेक्षाकृत अधिक विवेचन होना चाहिए तथा गौण का कम। साथ ही उनमें सन्तुलन को बनाये रखना भी अपेक्षित है।

(३) **परिच्छेदों में विभाजन**—भाव और विचारों की व्यवस्था तथा क्रम-बद्धता के लिए उनका परिच्छेदों में होना अपेक्षित है। परिच्छेदों की संख्या निबन्ध के प्रतिपाद्य विषय पर निर्भर करेगी। प्रत्येक विचार को अलग-अलग परिच्छेदों में व्यक्त करना ही अधिक उपयोगी होता है।

निबन्ध के मुख्य अंग

वैज्ञानिक दृष्टि से निबन्ध को चार मुख्य अंगों में विभक्त किया जा सकता है—**शीर्षक, प्रस्तावना, प्रसार, और उपसंहार।**

शीर्षक—निबन्ध का शीर्षक आकर्षक तथा उपयुक्त होना चाहिए। शीर्षक को देखकर ही पाठक अपनी धारणा बनाता है, पढ़ने की रुचि जाग्रत होती है। आकर्षक तथा उपयुक्त होने के अतिरिक्त विषय के साथ सम्बन्ध होना भी शीर्षक की सफलता के लिए अनिवार्य है।

प्रस्तावना—निबन्ध का प्रारम्भिक अंग प्रस्तावना है। कुछ विद्वान् इसे आवश्यक मानते हैं और कुछ सीधे वर्ण्य-विषय पर ही उतर आते हैं। लेकिन, इसका होना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अपेक्षित है। निदान, इसके सहारे ही पाठक विषय में प्रविष्ट होता है। इसके लिए प्रस्तावना का वर्ण्य से सम्बन्धित होना चाहिए। आकर्षण तथा कौतूहल-वर्धन भी इसकी विशेषता है। इसका आकार छोटा होना चाहिए। विस्तृत प्रस्तावना से उसका अनुपात बिगड़ जाता है। साथ ही प्रस्तावना की भाषा सरल, सुबोध और प्रसाद-गुण युक्त होनी चाहिए।

प्रस्तावना लिखने के लिए निबन्ध के विषय को समक्ष रखना चाहिए।

प्रसार—इसी को मध्य-भाग कहा जाता है। यह निबन्ध का सर्वाधिक महत्व-पूर्ण अंग है। इसी के अन्तर्गत विषय का विवेचन-विश्लेषण होता है। विवेचन में क्रमबद्धता होनी चाहिए। यह तभी सम्भव है जबकि निबन्धकार को विषय की पूर्ण जानकारी हो और फिर विचारों को मस्तिष्क में क्रमबद्ध जुटा लिया गया हो।

उपसंहार—यह निबन्ध का अन्तिम अंग है। इस स्थल तक आते-आते पाठक की अभिरुचि विषय के सम्बन्ध में तृप्त हो जानी चाहिए। इसमें स्वाभाविकता का निर्वाह होना चाहिए।

निबन्ध-लेखन की रीति

निबन्ध-लेखन की कला सरलतम और कठिनतम दोनों प्रकार की है। फिर भी, निबन्ध-लेखन के पूर्व निम्न बातों पर ध्यान अवश्य देना चाहिए—

(i) **विषय-चयन**—यों तो किसी भी विषय पर निबन्ध लिखा जा सकता है, तथापि पाठकों की रुचि के अनुकूल होना उसकी सफलता के लिए आवश्यक है। केवल निबन्धकार तक ही वह सीमित नहीं होना चाहिए।

(ii) **मनन और अध्ययन**—विषय-चयन के बाद उस पर गहनता में मनन और अध्ययन करना चाहिए, ताकि ठोस विचार-सामग्री को समाविष्ट किया जा सके। निदान, व्यक्ति स्वयं में अपूर्ण है। अतः मनन और अध्ययन की अपेक्षा होती है।

(iii) **मानव एवं मानवेत्तर-प्रकृति का निरीक्षण**—निरीक्षण की यह मनोवृत्ति निबन्ध-लेखन की सफलता के लिए आवश्यक है। प्राकृतिक दृश्यों के निरीक्षण से ही हम किसी प्राकृतिक स्थान का वर्णन कर सकते हैं। नगर का वर्णन भी ऐसी ही स्थिति में सम्भव है। फिर निरीक्षण-द्वारा ज्ञान का प्रसार होता है।

(iv) **रूप-रेखा**—निबन्ध-लिखने के पूर्व उसकी रूप-रेखा तैयार कर लेनी चाहिए और उसी क्रम में विषय का प्रतिपादन करना चाहिए। इस प्रकार निबन्ध में सन्तुलन बना रहता है तथा भाव एवं विचारों की व्यवस्था और क्रमबद्धता की भी रक्षा होती रहती है। आकार की दृष्टि से भी निबन्ध का कलेवर सुव्यवस्थित हो जाता है।

(v) **भाषा-शैली**—यह तत्त्व निबन्ध लेखन की कला का बहुत महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। विषयानुकूल भाषा-शैली का प्रयोग निबन्ध की सफलता के लिए आवश्यक है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बीच-बीच में हास्य-व्यंग्य का पुट रोचकता के लिए अपेक्षित है। लोकोक्ति-मुहावरों के प्रयोग से भाषा की व्यंजना-शक्ति बढ़ती है। अतः उनका प्रयोग भी करना चाहिए।

(vi) **अभ्यास**—उपर्युक्त सभी अपेक्षाओं के अतिरिक्त निबन्धकार की सफलता बहुत-कुछ उसके निरन्तर अभ्यास पर निर्भर करती है। निदान, लिखना पूर्णता लाता है। अतः निरन्तर निबन्ध-लेखन का अभ्यास उसकी सफलता के लिए परमावश्यक है।

१. स्वदेश-प्रेम

रूपरेखा—

(१) प्रस्तावना, (२) स्वदेश-प्रेम की विशेषता, (३) स्वदेश का गौरव तथा गर्व, (४) स्वदेश-प्रेम से मनुष्यत्व का उदय, (५) देश की-उन्नति, (६) स्वदेश-प्रेमी आत्माएँ, (७) उपसंहार—स्वदेश के प्रति कर्त्तव्य।

संसार में माँ तथा मातृभूमि दो ही ऐसी अमर विभूतियाँ हैं, जिनकी रक्षा तथा सुख-साधना में मानव-मात्र अपना सर्वस्व हँसते-हँसते बलिदान करने में उत्सर्ग समझता है। स्वाभिमान और जीवन की सार्थकता से प्रसन्नचित मृत्यु का आलिंगन करके भी उसके मौन चेहरे पर एक कान्ति की रेखा स्पष्ट दीख पड़ती है। इसीलिए तो कहा जाता है—'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' अर्थात् माता और मातृभूमि की महिमा स्वर्ग से बढ़कर है। माता नौ माह तक गर्भ में हमारा पोषण करती है और पुनः जन्म देकर स्वयं अनेक कष्टों में पलकर भी हमारे भावी जीवन के लिए चिन्तित बनी रहती है। मातृभूमि के साथ हमारा सम्बन्ध इतना गूढ़ और गहन-तम हो जाता है कि अन्तःबाह्य का अन्तर ही प्रायः लुप्त हो जाता है। जिस धरा की मृदुल धूलिका में रेंग-रेंगकर हम चलना सीखते हैं; जिस पर उत्पन्न-अन्न-राशि से शरीर की रक्षा करते हैं; जिसकी जलवायु में रहकर अपनी नैसर्गिक प्रक्रियाओं को पूर्ण करते हैं और जिस पर विकसित मखमली हरी घास एवं पुष्प-कलिकाओं के सौन्दर्य को देखकर हम फूले नहीं समाते, क्या ऐसी मातृभूमि के प्रति हमारा कोई कर्त्तव्य नहीं है? क्या इसके ऋण से आजीवन-उऋण हुआ जा सकता है? और क्या इसके प्रति मौन रहकर कृतघ्न बने रहना मनुष्यत्व की हत्या नहीं है? धन्य हैं वे देश-भक्त जो अपनी मातृभूमि की रक्षा में प्राणों की बलि देकर अमर हो जाते हैं; जिनके कर्त्तव्य-पालन की कहानियों से इतिहास गौरवपूर्ण बना रहता है और जिन्हें पाकर मृत्योपरान्त भी मानवता जिनकी यश-चन्द्रिका से आलोकमयी बनी रहती है। सचमुच स्वदेश-प्रेम जीवन का सर्वोपरि आदर्श है। जिस अन्तःकरण में इस मधुरभाव को स्थान नहीं, वह हृदय नहीं, पाषाण है।

भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मानव जीवन में भूतल पर जन्म लेते ही 'स्व' तथा 'पर' की भावनाएँ स्वयमेव अन्तःकरण में जाग उठती हैं। फिर, एक के प्रति आकर्षण और दूसरे के प्रति विकर्षण की क्रिया भी स्वतः ही होने लगती है। अगर देखा जाय तो 'स्व' की अमर भावना ही हमें घर से परिवार, परिवार से गाँव और गाँव से नगर, प्रान्त तथा राष्ट्र और अन्तर्राष्ट्रीय विश्व-बन्धुत्व के द्वार तक पहुँचा देती है। सम्पूर्ण मानव-जाति उसके स्नेह की सीमा का अंग बन जाती है। हमारा विचार-क्षेत्र संकुचित न रहकर विस्तार पा जाता है। बस यही स्वदेश-प्रेम की आधारशिला है, उसकी प्रमुख विशेषता है। जानवरों और पशु-पक्षियों में भी यह विशेषता न्यूनाधिक रूप में मिलती है। भोर की उषाकालीन अरुणिमा के साथ भोजन की खोज में अपने नीड़ों से निकलकर अनन्त आकाश में विचरने वाले विहंगम संध्या समय वहीं आकर विश्राम करते हैं। जंगल में चरने के लिये गये हुए जानवर गोधूलि-वेला में स्वयं अपने खूंटों पर आकर रंभाने लगते हैं। आखिर क्यों ? इसी 'स्व' के प्रेम के कारण। फिर मनुष्य तो प्रतिभासम्पन्न प्राणी है। स्वदेश-प्रेम की पुनीत भूमिका पर देश की प्रत्येक वस्तु के प्रति हमारा समान प्यार और सम्मोह हो जाता है। यदि ऊँचे-ऊँचे पर्वत-शृङ्गों और लहराती सरिताओं तथा अठखेलियां करते निर्झरों को देखकर हमारा मस्तक गर्व से उठ जाता है, हरे-भरे खलिहानों को देखकर हमारा अन्तःकरण आनन्द में डूब जाता है, तो अपने देश की कला और संस्कृति को देखकर हम स्वाभिमान से भर उठते हैं। क्या मानव समाज और क्या प्रकृति, सभी के साथ घुल-मिलकर हम एकाकार हो जाते हैं। हमारे स्वदेश पर कोई कुदृष्टि डालता है, उसके अपमान का दुःसाहस करता है, तो हम प्राणों की बाजी लगाकर भी उसका प्रतिशोध करते हैं। हँसते-हँसते फांसी के तख्ते पर लटक जाते हैं। न हमें सागर की गहराई पर सन्देह होता है और पर्वत की हिम-शृंखलताओं का भय; देश-हित के लिए समर्पित हो जाना ही हमारे जीवन का एकमात्र लक्ष्य बन जाता है।

स्वदेश का गौरव और गर्व प्रतिपल हमारे अंतस् में त्याग तथा कर्तव्य-परायणता की अमर भावना को दृढ़ करते-रहते हैं। तभी तो देश हित के लिये चल पड़ने पर हमें न राज-प्रासादों का वैभव ही रोक पाता है और न पत्नी का प्यार ही बाधक बन पाता है। एक अलौकिक तेज से हमारी इन्द्रियाँ दमक उठती हैं। न हमें अकाल-मृत्यु का भय रहता है और न पुनर्जन्म की अशंका। न भौतिक सुख की कोई आकांक्षा होती है और न किसी वस्तु के अभाव में दुःख की अनुभूति। हर घड़ी हमारे सामने स्वदेश के सम्मान और उत्थान का प्रश्न ही उपस्थित रहता है और उसी की पूर्ति में हम अपना सर्वस्व समर्पण कर धन्य होते हैं। महाराणा प्रताप ने घास की रोटियां खाकर, जंगल तथा भयानक वन-प्रदेश में रहकर मुगलों के विरुद्ध अपनी मातृ-भूमि मेवाड़ के गौरव को अन्तिम क्षण तक मिटने नहीं दिया। देश की स्वाधीनता के लिये कोटिशः शहीदों की स्मृतियां हमारे अंतस् में रोमांच पैदा करती हैं। पंजाबकेसरी लाला लाजपतराय, सरदार भगतसिंह के नाम क्या यों ही भुला देने के हैं ? भारत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के स्वाधीनता संग्राम का इतिहास इन विविध देश-भक्तों की गाथाओं से भरा है। इन शहीदों के निधन पर देश अनूठे दर्प से भर उठता है, लाख-लाख वाणियों में उच्चरित जयनाद से आकाश गूँजने लगता है। युग-युग तक मानव-जाति जिनकी समाधियों पर पुष्पहार चढ़ाकर श्रद्धांजलि अर्पित करने में स्वाभिमान समझती है। विदेशी इनके कृत्यों को सुनकर नत-मस्तक हो जाते हैं। चारों ओर पवन जैसे उनका यश-सौरभ बिखेरकर स्वदेश-हित में मर-मिटने की प्रेरणा देने लगता है। भला, स्वदेश-प्रेम के इस गौरव एवं गर्व की समता इन्द्रपुरी का वैभव किस प्रकार कर सकता है?

स्वदेश प्रेम देश-भक्ति को हमारे अन्तस् में जगाता है। स्वदेश की प्रत्येक वस्तु हमें प्राणों से भी अधिक प्रिय लगने लगती है। प्रत्येक देशवासी हमारा आत्मीय हो जाता है। हम जाति, धर्म वर्ग संप्रदाय तथा प्रांत की सीमाओं को भूल बैठते हैं। सम्पूर्ण देश का दुःख हमारा दुःख होता है और उसका सुख हमारा सुख। हृदय का यह पल्लवन और विशदीकरण ही तो स्वदेश-प्रेम की भावना का सोपान है। आत्मोत्सर्ग का इससे बढ़कर कोई अन्य आधार भी तो नहीं कहा जा सकता। सचमुच स्वदेश-प्रेम हमें सच्चे अर्थों में मानव बना देता है। अपने पराये की सीमाएँ स्वतः क्षीण हो जाती हैं। तभी तो अपने जीवन को सफल बनाने के लिए फूल के रूप में कवि की वाणी गा उठती है—

मुझे तोड़ लेना बनमाली, उस पर तुम देना फेंक।
मातृ-भूमि पर सीस चढाने, जिस पथ जाते वीर अनेक।।

—माखनलाल चतुर्वेदी

स्वदेश-प्रेम से सम्पूर्ण राष्ट्र हमारे जीवन की इकाई बन जाता है। उसी की उन्नति के लिये हम प्रयत्नशील होते हैं। देश की राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक समस्याएँ हमारी अपनी हो जाती हैं। देशोन्नति के लिए हम स्वावलम्बन की भावना को जगाते हैं, आलस्य का गला घोंटते हैं। आर्थिक उत्थान के लिए पर्याप्त शारीरिक श्रम करते हैं, उत्पादन को बढ़ाने के लिये नूतन साधनों का प्रयोग करते हैं और राजनैतिक समस्याओं को सुलझाने के लिए परस्पर भ्रातृ-भाव को जगाते हैं, सहयोग से रहना सीखते हैं। जिन देशवासियों में स्वदेश-प्रेम होता है, उनकी शक्ति के आगे विश्व झुक जाता है, विज्ञान से नाशक-यन्त्र असफल हो जाते हैं।

भारतीय इतिहास देश-भक्तों की चर्चाओं से भरा पड़ा है। महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, महारानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, गुरुगोविन्द सिंह, सरदार भगत सिंह आदि यशस्वी आत्माएँ हमारी वाणी का वैभव रही हैं। आधुनिक युग में भी स्वर्गीय बापू, पं० जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, सुभाष बोस, बाल गंगाधर तिलक, बाबू जयप्रकाश नारायण आदि के अमर त्याग और स्वदेश-प्रेम से आज हम स्वाधीनता के गौरव का पाठ सीखते हैं। इतिहास इनकी त्यागमयी कहानियों का ज्वलन्त प्रतीक है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निष्कर्ष यह है कि स्वदेश-प्रेम ही जीवन की सफलता-सम्पन्नता का परिचायक एवं प्रतीक-स्तम्भ है। देश-भक्तों की कीर्ति मानव-जाति को एक अमर पाठ पढ़ाती रहती है। विश्व उनके नाम का स्मरण कर कृतकृत्य होता है। पृथ्वी पर ईश्वर-सदृश उनकी पूजा होती हैं। इसके विपरीत देश-द्रोही सर्वत्र अपमानित होते हैं। न उनका कहीं समाज में अस्तित्व होता है और न ही अन्य व्यक्ति उनके साथ कोई सहानुभूति रखते हैं। अतः स्वदेश की रक्षा और सम्मान का ध्यान रखना मानव-मात्र का परम धर्म है। स्वदेश-भक्त ही सच्चे आत्मोत्सर्ग को प्राप्त कर अन्त में वैकुण्ठवासी बनते हैं। उनके लोक-परलोक दोनों बन जाते हैं। इतिहास उनकी गाथाओं से गौरवान्वित होता रहता है।

२. विद्यार्थी जीवन और अनुशासन

अथवा

जीवन के विकास की आधारशिला

मानव-जीवन चिन्ता और विषमताओं की अक्षय पिटारी है। इन्हीं से जूझते-जूझते हमारी अल्पायु समाप्त हो जाती है और फिर भावी जीवन की सम्पूर्ण आशा, आकाँक्षाएँ एवं साधें अधूरी रह जाती हैं। लेकिन यदि अपने प्रारम्भिक काल में हम भविष्य-निर्माण हेतु कष्ट सह लेते हैं तो इस स्थिति का दर्शन नहीं हो पाता। जिस प्रकार नींव सुदृढ़ होने पर हम ऊँचे से ऊँचा प्रासाद खड़ा करने में सफल होते हैं और उसके अभाव में हमारी सम्पूर्ण कल्पनाएँ धूल-धूसरित हो जाती हैं उसी भाँति विद्यार्थी जीवन मानव की वही नींव है. अतः इस समय हम जैसा स्वयं को ढ़ाल लेते हैं, हमारा भविष्य उसी के अनुकूल निर्मित होता है। विद्यार्थी के मस्तिष्क पर जिन रेखाओं को अंकित किया जाता है, बस, वे ही आगे चलकर विकसित होती हैं। फिर न उनके परिवर्तन की कोई गुंजाइश रह जाती है और न नवीन अंकन की। पुस्तकों के अहर्निश अध्ययन से, गुरुजनों की वाणी के प्रसाद से, महापुरुषों के वक्तव्यों से इस जीवन में हम जिन मणि-मुक्ताओं से अपने मस्तिष्क को भर लेते हैं, वही हमारे जीवन-पर्यन्त तक के लिये अमर निधि होते हैं। अतः विद्यार्थी-जीवन ही हमारे भविष्य निर्माण का प्रवेश-द्वार है, हमारे उत्कर्ष-अपकर्ष का प्रथम सोपान है। इसके अतुलनीय महत्व को किसी प्रकार कम करना सम्पूर्ण मानव जीवन को भुलाना है।

हमारे यहाँ जीवन के प्रारम्भिक २५ वर्षों के समय में ब्रह्मचर्य पालन की बात कही गई है, वही विद्यार्थी-जीवन की प्रधानावस्था है। यों तो मानव आजीवन अध्ययन करता हुआ ज्ञान-वर्द्धन करता है लेकिन उस ज्ञान के मूल तन्तु इसी काल में उदय होते हैं। इसीलिए प्राचीन काल में इस अवस्था में जंगल में गुरु-आश्रमों में रहकर अध्ययन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किया जाता था और फिर गृहस्थ जीवन में प्रवेश। फलतः ऐसे विद्यार्थियों का भविष्य सुखमय होता था। समाज में झोपड़ी से राजमहलों तक उनका आदर सम्मान होता था। न भौतिक सुख उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करके पथ-भ्रष्ट कर पाते थे और न नारी सौन्दर्य में उनकी इन्द्रियाँ अटक पाती थीं। सन्तोष उनका धन होता था, दया-क्षमा उनके अस्त्र-शस्त्र होते थे और स्नेह, सहानुभूति तथा परोपकार के अमर भाव उनके जीवन का आदर्श तथा कल्याण के मार्ग होते थे। फिर भला इससे बढ़कर जीवन का कौन-सा उत्सर्ग हो सकता है? यही तो विद्यार्थी-जीवन की गौरव गरिमा है। आदर्श विद्यार्थी के दिव्य-गुण उसके देवत्व के प्रतीक होते हैं।

आदर्श विद्यार्थी का सबसे बड़ा गुण उसकी विनम्रता है। इसी गुण से वह क्या परिवार, क्या गुरुजन, क्या पड़ोस और क्या समाज सर्वत्र सबका प्रिय हो जाता है और फिर यह विद्याध्ययन का तो परम आशीर्वाद ही है—'विद्या ददाति विनयम्'। जो विद्यार्थी विनम्र न होकर कटुभाषी या उच्छृङ्खल होते हैं वे न ज्ञानोपार्जन में ही सफल होते हैं, न समाज में सम्मानित। इसी के सहारे उसमें दया, क्षमा, मधुर-भाषण, कष्ट-सहिष्णुता, हृदय उदारता आदि अन्य गुणों का उदय हो जाता है। गुरुजनों की आज्ञा-पालन उसकी अनुशानप्रियता का द्योतक है। उस समय अन्तःकरण में अहं का लेशमात्र भी हमें पदच्युत करने में समल होता है। अनुशासन के अभाव में जीवन अवगुणों का अंगार बन जाता है, बौद्धिक-विकास अवरुद्ध हो जाता है और हम सुमार्ग को त्यागकर कुमार्ग के पथिक हो जाते हैं। छोटों के प्रति स्नेह तथा पूज्यजनों के प्रति श्रद्धा का भाव भी विद्यार्थी का एक गुण है, कारण, इसी से वह गुरु का कृपा-भाजन बन पाता है तथा गीता में तो कहा भी है—'श्रद्धावान् लभ्यते ज्ञानम्'। गुरु की विशेष कृपा से उसके हृदय में स्वतः एक उत्साह जगने लगता है। किसी बात के सम्बन्ध में वह स्वयं विचार करने लगता है, उसकी जिज्ञासा बढ़ने लगती है, जिससे ज्ञान का विस्तार होता है जो विद्यार्थी कक्षा में मौन बने हुए सुनते रहते हैं, जिज्ञासा के अभाव में उनका ज्ञान-क्षेत्र सीमित ही रह जाता है। वे भूल जाते हैं कि विद्यार्थी जीवन ही अधिकाधिक ज्ञानार्जन का प्रमुख आश्रम है।

परिश्रमशीलता भी आदर्श विद्यार्थी का प्रधान गुण है, क्योंकि बिना परिश्रम के जीवन में कोई सफल नहीं होता। आलस्य का सहारा लेना विद्यार्थी के लिये सबसे बड़ा अभिशाप है। कहा है—An idle man's mind is a devil's workshop' और फिर सच्चे विद्यार्थी के जीवन में सुख कहाँ? उसे तो संसार का सम्पूर्ण वैभव, भोग-विलास और आकर्षण का सभी सुख त्याग देना पड़ता है, तभी वह अपने लक्ष्य की पूर्ति कर सकने में सफल होता है। गरीबों के बच्चे इसीलिये धनिकों की अपेक्षा अधिक विवेकसम्पन्न होतें हैं, सदैव अच्छे नम्बरों से उत्तीर्ण होते हैं। सुख की कामना करना और विद्याध्ययन में प्रवृत्त होना परस्पर विरोधी हैं। संस्कृत में कहा भी है—'सुखार्थिनः कुतो विद्या, विद्यार्थिनः कुतः सुखम्'।

इसके अतिरिक्त एक आदर्श विद्यार्थी को संयम-नियम का पालन करना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चाहिये। कारण हमारी क्षणिक कामनाएँ, इन्द्रियाँ जिनकी मूलभूता हैं, प्रतिपल पथ-भ्रष्ट करने का कुचक्र रचती हैं। यदि संयम-नियम से रहने, ब्रह्मचर्य का पालन करने, अल्पाहार से, सत्संगति से अपने में उनको दबा देने की क्षमता-प्राप्त कर ली है तो वे उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ पातीं। अतः इन सभी गुणों की अपेक्षा है। नित्यप्रति उसे उचित समय में अपने कार्य करने की आदत को बनाना चाहिए। तभी उसका मन इधर-उधर न भटक कर एकाग्र रहेगा। अध्ययन के लिए मन एवं बुद्धि की एकाग्रता परम वाँछनीय है। एक बात को ग्रहण करने पर पुनः उसे नहीं भूल पाते और फिर संयम से रहने से हमारा स्वास्थ्य ठीक रहता है, चेहरे पर अपूर्व तेज तथा क्रान्ति की आभा विद्यमान रहती है। इसके लिए विद्यार्थी को नियमपूर्वक व्यायाम भी करना चाहिये। इस प्रकार संयम-नियम से हमें अनेक लाभ होते हैं। समय का सदुपयोग होता है। फलतः विद्यार्थी-जीवन से ही हममें परिस्थितियों के भार सम्भालने की क्षमता आने लगती है, जिससे भविष्य में किसी अन्य का मुँह नहीं ताकना पड़ता।

आदर्श विद्यार्थी अपना अधिकाँश समय सत्साहित्य के अध्ययन और ज्ञानार्जन में ही व्यय करता है एक क्षण भी वह व्यर्थ नहीं खोता। विद्याध्ययन ही उसका एक-मात्र लक्ष्य होता है—'क्षण त्यागो कुतो विद्या'। वास्तव में मानव जीवन में समय का अत्यधिक मूल्य है। खोये हुये धन को पुनः अर्जित किया जा सकता है लेकिन बीते हुए क्षणों को पाना असम्भव ही है। आदर्श विद्यार्थी को सदैव "सादा जीवन उच्च-विचार" के भव्य आदर्श को सक्षम रखना चाहिये। वाह्य टीप-टाप से वह प्रतिपल दूर रहता है। हमारे यहाँ आदर्श विद्यार्थी के पाँच लक्षण कहे गये हैं—

काक चेष्टा, बको ध्यानं, स्वानं निद्रा तथैव च।
अल्पहारी, गृहीत्यागी, विद्यार्थी पंच लक्षणम्॥

विद्यार्थी के उक्त सभी गुण उसे जीवन में मनुष्यत्व से देवत्व की ओर उन्मुख करते हैं। उसे जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में रहना सिखाते हैं। फिर वह जीवन को किसी प्रकार का भार न मानकर खेल समझता है और उस खेल में हारकर भी पुनः बाजी मारने को तैयार बना रहता है। निस्संदेह विद्यार्थी-जीवन ही मानव का एकमात्र आधार है।

विद्यार्थी को राजनीति में भाग लेना चाहिये या नहीं, आज यह विवादास्पद विषय है। मेरे मत में अवश्य लेना चाहिये। आज हम स्वतन्त्र हैं। आज का विद्यार्थी कल का नागरिक है, उसी के कन्धों पर देश का भार है और फिर राजनीति भी तो अध्ययन का एक विषय है। जो लोग नारेबाजी और दलबन्दी को ही मूल राजनीति समझ बैठे हैं, वे भटके हुए हैं और नूतन स्वतन्त्रता का अनुचित लाभ उठा रहे हैं। प्राचीनकाल में राजकुमार ऋषियों के यहाँ राजनीति की शिक्षा पाते थे। चन्द्रगुप्त चाणक्य का सम्बन्ध किससे छिपा है? चाणक्य-नीति तो इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध ही है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आज कालेज और विश्वविद्यालयों में राजनीति का एक विषय भी पाठ्यक्रम में स्वीकृत है। बिना इसके न तो विद्यार्थी अपने अधिकार एवं कर्त्तव्य से अवगत हो सकता है और न देशी-विदेशी नीति की जानकारी हासिल कर सकता है। हाँ, यह अवश्य है कि उसे नित्य की हड़तालों और दलबन्दी से सदैव पृथक् रहना चाहिये, क्योंकि ये उसके लक्ष्य को शीघ्र भुला देती हैं। कुशल राजनीतिज्ञ ही देश का भाग्य-विधाता होता है। आज पं० नेहरू की राजनीति के आगे संसार अवनत है। क्यों ? क्या दल-बन्दी के कारण—कदापि नहीं। यह उनके विद्यार्थी-जीवन में राजनीति में हाथ बँटाने का ही परिणाम है।

राष्ट्र और विद्यार्थी का सम्बन्ध माता-पुत्र का है। विद्यार्थी का जीवन केवल अपने आप तक ही सीमित नहीं रहता, वरन् समाज और राष्ट्र भी उससे आशा लगाये बैठे रहते हैं। वही भविष्य में राष्ट्रोत्थान के कारण बनते हैं। उन्हीं के बलिदान और ज्ञान से देश की प्रगति होती है। सन् १९४२ की देशव्यापी क्रान्ति का विद्यार्थी से ही सम्बन्ध था। इसी जीवन में हमें संगठन का अमर वरदान मिलता है, जो कि राष्ट्र की उन्नति के लिये परम-अपेक्षित है। विश्व के स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में सर्वत्र विद्यार्थी ही अग्रसर हुये हैं। सुभाषचन्द्र बोस, चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह आदि विद्यार्थी-जीवन में ही नेतृत्व-शक्ति प्राप्त कर चुके थे। विद्यार्थी ही सचमुच राष्ट्र का भावी कर्णधार होता है।

लेकिन आज विद्यार्थी-समाज को देखकर लज्जा से झुक जाना पड़ता है। उसमें न प्रतिभा का प्रकाश है और न शक्ति एवं सौन्दर्य। न गुरुजनों के प्रति श्रद्धा का भाव है और न माता-पिता के प्रति कर्तव्य पालन की उत्सुकता। न ज्ञानार्जन की क्षुधा है और न गुण-ग्रहण की आकुलता। न विनम्रता, दया-क्षमता का वैभव है और न स्नेह, सहानुभूति तथा परोपकार की गौरव-गरिमा। न उसमें स्वाभिमान रहा है और न स्वावलम्बन। आदर्श और चरित्र नाम की संज्ञाएँ तो उसके लिये आज निरर्थक हैं। वह पाश्चात्य अनुकरण में गौरवान्वित होता है। सिनेमा एवं अश्लील-साहित्य से उसे प्रेम है। अध्यापकों को सड़कों पर पीटना, कक्षा में निरीह-छात्रों के साथ दुर्व्यवहार करना, चोरी करना आदि उसके नित्य कर्म हैं। धर्म उसके लिये पाखंड का रूप है और 'सादा जीवन उच्च विचार' का आदर्श मूर्खों एवं युग-निरपेक्ष व्यक्तियों का बाना। सचमुच वर्तमान विद्यार्थी-जीवन दिनोंदिन अवनति की ओर बढ़ रहा है।

निष्कर्ष यह है कि विद्यार्थी-जीवन ही मानव के समग्र जीवन की गुत्थियों को खोलने, रहस्यों को स्पष्ट करने का प्रथम आधार है। यह भावी-जीवन निर्णय की आधारशिला है और वही राष्ट्र के उत्थान के लिये प्रथम सोपान है। अतः इसकी गुरुता को अस्वीकार करना जीवन के सच्चे मार्ग से भटकना है; स्वयं को प्रकाश से अंधकार की ओर ले जाना है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३. वर्तमान शिक्षा-प्रणाली

अथवा

आधुनिक शिक्षा-प्रणाली के गुण और दोष

अथवा

यदि मैं शिक्षा मंत्री हो जाऊँ

निस्संदेह विश्व का कोई भी देश अपने छात्रों की उन्नति में ही राष्ट्र की उन्नति के संकेत ग्रहण कर सकता है। यदि उनकी शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध सचमुच ज्ञानवर्धक है, उन्हें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला है, उनके जीवन में मनुष्यत्व जगाने वाला तथा राष्ट्र-प्रेम एवं चरित्र-निर्माण की प्रेरणा देने वाला है तो वह देश निश्चय ही भाग्यशाली है। धनाभाव में भी वह प्रगति का अधिकारी है। विश्व के अन्य शक्तिशाली राष्ट्र उसके लिये नगण्य हैं; भौतिक जगत् की कोई भी बाधा उसके लिये खेल है। सच्ची शिक्षा-दीक्षा से बढ़कर मानव-जीवन का कोई मित्र नहीं। हाँ, यह आवश्यक है कि विभिन्न राष्ट्रों में इसका स्वरूप वहाँ की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में ही निश्चित होना चाहिये। यदि वह अन्य का अनुकरण है तो कदापि उपादेय नहीं हो सकती और उससे देशोन्नति की आशा करना आकाश-गंगा के सुमन के समान है। आज हम युगों की दासता के उपरान्त स्वतन्त्र हुए हैं। भारत की पावन-भूमि की अपनी विशेषताएँ हैं। वे जन्म के साथ हमारे जीवन में प्रस्फुटित होती हैं। उनकी अवहेलना करके देश के स्वतन्त्र अस्तित्व की रक्षा करना असम्भव है। क्या अंग्रेज अपने २५० वर्ष के शासन-काल में हमारी धर्म की गहन जड़ को खोद सके थे। क्या भारतीय संस्कृति के देवत्व को धूमिल कर सके थे ? कदापि नहीं। तब फिर किस प्रकार उनके द्वारा प्रदत्त वर्तमान शिक्षा-प्रणाली हमारे लिये लाभप्रद हो सकती है ? आज उसमें आमूल-चूल परिवर्तन की परमावश्यकता है। भारत को भारत ही समझकर हमारी शिक्षा का प्रबन्ध होना चाहिये। मेरे कहने का यह आशय नहीं कि हम विश्व से पिछड़े रहें। शिक्षा का प्रचार घर-घर में होना चाहिये। निरक्षरता देश के लिये अभिशाप है। परन्तु वह हमें देश की मिट्टी से पृथक् न कर दे, यह अपेक्षित है। यह हमारी भारतीयता को लूट ले, इस सम्बन्ध में सतर्क रहना है। इस दृष्टि से वर्तमान शिक्षा-प्रणाली बहुत दोषपूर्ण है।

वर्तमान शिक्षा-प्रणाली का आरम्भ अंग्रेजों के शासनकाल में हुआ। जब वे यहाँ आये तब भारतीयों के साथ विचारों के आदान-प्रदान के लिये ऐसे भाषा-माध्यम की अपेक्षा थी जो उनके अनुकूल होता। इसके लिये उन्होंने पाश्चात्य ढंग पर यहाँ शिक्षा-संस्थाएँ आरम्भ कीं। भारतीय कला और संस्कृति से सम्बन्धित विषयों के महत्व को गिराया जाने लगा और छात्रों में पाश्चात्य सभ्यता के प्रति एक विशेष

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आदर की भावना को जन्म देने का कुचक्र रचा गया। परिस्थितियों ने भारतीयों को इसे स्वीकार करने के लिये विवश किया। लार्ड मैकाले ने अंग्रेजी को राष्ट्र-भाषा घोषित कर स्कूल-कालेजों में उसे अनिवार्य कर दिया। फलतः सस्ते दामों में क्लर्कों का उत्पादन होने लगा। आज की शिक्षा-प्रणाली भी हमें क्लर्कों के अतिरिक्त और कुछ नहीं दे पा रही है, इसीलिए आये दिन हड़ताल और झगड़े देखे जाते हैं। आज तक वही शिक्षा-प्रणाली चल रही है। किसी भी सरकार का यह साहस नहीं हुआ कि उस शिक्षा-प्राणली में आमूल-चूल परिवर्तन करे। यदि मैं भारत अथवा प्रदेश का शिक्षा मंत्री हुआ तो शिक्षा-प्रणाली में आमूल-चूल परिवर्तन कर दूँगा जिसकी रूप-रेखा उस प्रकार होगी।

भारतीय मनीषियों ने शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य में मानवता को जगाना कहा है, जिससे परोपकार ज्ञानार्जन, दया, सहिष्णुता तथा कर्त्तव्य-पालन आदि गुणों का प्रादुर्भाव होता है। इसके विपरीत वर्तमान शिक्षा-प्रणाली हमें इन गुणों से बहुत दूर ले जा रही है। हम फैशन-परस्त होते हैं, समय का मूल्यांकन नहीं करते, परिश्रम से भागते हैं और कामान्धता जीवन में घर कर जाती है। भला, ऐसी शिक्षा-पद्धति से समाज और राष्ट्र का क्या हित हो सकता है? आज विद्यालय अराजकता और अनुशासनहीनता के केन्द्र बने हुए हैं। प्रजातन्त्र राष्ट्र के लिए उसके छात्र ही तो शासन के सूत्रधार हैं अगर शिक्षा-पद्धति में परिवर्तन न हुआ तो देश की स्वाधीनता पर भी चोट आ सकने की संभावना हो सकती है।

इसका सर्वप्रथम दोष है—मातृभाषा के प्रयोग अभाव। कोई भी देश मातृभाषा की अवज्ञा करके न जीवित रह सकता है और न उन्नति ही कर सकता है। विद्यालयों में विदेशी भाषा आज भी शिक्षा का माध्यम बनी है और यह हमारे पतन की प्रतीक है। अच्छा है, सरकार इस ओर प्रयत्नशील है। फिर भी दैनिक व्यवहार में मातृभाषा के प्रयोग की ही आवश्यकता है, किन्तु आज का छात्र कालेज में आते ही न केवल अंग्रेजी वेश-भूषा को ही अपना लेता है, वरन् अंग्रेजी की गिट-पिट करने में ही गौरवानुभव करता है। विनम्रता आज युग-निरपेक्ष है, धर्म-पालन की बात पाखण्ड कही जाती है और ब्रह्मचर्य तो कहीं देखने में आता ही नहीं। वर्तमान शिक्षा-पद्धति ने सचमुच मनुष्यत्व को विनष्ट कर दिया है। जो विद्यार्थी दूध के स्थान पर चाय पीना अधिक लाभप्रद समझते हैं, समय-नियम के स्थान पर स्वच्छन्दता को महत्व देते हैं और अनुशासनहीनता को जीवन का अभिन्न अंग बनाते हैं, भला उनका भविष्य अन्धकारमय क्यों न होगा? लेकिन यह सब इस शिक्षा-पद्धति का ही तो प्रसाद है। अंग्रेजी की अन्धी नकल, हिप्पियों के कामान्ध प्रभाव ने हमें कुण्ठित बना दिया है। फलतः आज का छात्र उन्मत्त हो गया है, मातृभाषा और अपनी संस्कृति को भूल बैठा है।

वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में जो पाठ्य-क्रम के विषयों और तत्सम्बन्धी पुस्तकें

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का बाहुल्य है, वह छात्र के भावी जीवन के विकास में सबसे बड़ा अवरोधक है। स्वभावतः किसी एक दिशा की ओर मुड़ने के स्थान पर बालक प्रारम्भ से ही परीक्षा पास करने की कुत्सित भावना को अपना लक्ष्य बना लेता है। फलतः न ज्ञान की गहराई आ पाती है और न जीवन का आदर्श। बेकारी के मूल का आज बहुत कुछ यही कारण है। एक तो अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव ही उन्हें पथ-भ्रष्ट बना देता है, फिर इस भार से वे भविष्य के सम्बन्ध में सोच ही नहीं पाते। अत्यधिक पुस्तकों का भार माँ-बाप के लिए आर्थिक दृष्टि से भार हो जाता है। भारत के मध्यवर्गीय परिवार को इसी से अधिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है। फीस की अधिकता अलग उनकी कमर तोड़ देती है। इस प्रकार यह शिक्षा जितनी खर्चीली है, उतनी श्रम-साध्य एवं उपयोगी नहीं। यही इसका दोष है।

नैतिक चरित्र और धर्मनिष्ठा का अभाव वर्तमान शिक्षा-पद्धति का अन्य दोष है, जबकि भारत जैसे देश में ये दोनों ही मानव जीवन की अनिवार्य धुरी हैं। सह-शिक्षा के दिनोंदिन प्रचार और प्रसार ने इस दोष को और बढ़ावा दिया है। लड़के-लड़कियों में स्वच्छन्दता घर करती जा रही है। पाश्चात्य प्रभाव ने सामाजिक मर्यादा और बन्धनों को तोड़ दिया है फलतः पुरुषत्व एवं नारीत्व का लोप दिन-प्रतिदिन देखा जाता है। भोगोन्मुखी मनोवृत्ति ने उनके पतन का द्वार जैसे खोल दिया है। आज का छात्र नैतिकता से बहुत दूर इसी ओर निरन्तर गति कर रहा है। इसी से स्वतन्त्र अधिकारों की माँग का नारा बुलन्द होता है तथा छात्र-वर्ग में असंतोष एवम् अनुशासनहीनता परिलक्षित होती है तात्पर्य यह है कि वर्तमान शिक्षा पद्धति ने छात्रों को अकर्मण्य, गुणहीन, ज्ञानहीन, अनुशासनहीन और मनुष्यत्वहीन बनाकर पतन के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है।

रचनात्मक कार्यों का अभाव वर्तमान शिक्षा प्रणली का सर्वोपरि दोष है। विद्यार्थी के लिए पुस्तकीय ज्ञान ही पर्याप्त नहीं, प्रत्युत् उसे अपने अध्ययन-काल में एक ऐसे मार्ग का निर्माण करने की अपेक्षा है, जिस पर चलकर वह भावी जीवन को सुखमय बना सके। औद्योगिक शिक्षा का प्रवेश इसी से इस पद्धति में आवश्यक है। कोरे बाबू (क्लर्क) पैदा करने से न तो देश का हित हो सकता है और व्यक्ति का। अतः उसे प्रायोगिक बनाने का प्रयास करना सरकार का सर्वप्रथम कर्त्तव्य है। देश की बेकारी दूर करने का यही सर्वोत्कृष्ट हल है। स्वर्गीय बापू ने इसलिए वर्धा शिक्षा-योजना को जन्म दिया था। वे कहा करते थे कि शिक्षा-संस्थाओं को आर्थिक दृष्टि से आत्म-निर्भर होना चाहिए। भूतपूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय राजेन्द्र बाबू के शब्दों में, "यह शिक्षा विदेशी है। हमें इसे बदल कर अपनी सभ्यता और संस्कृति के अनु-कूल बनाना होगा।

शिक्षा को रोजगार से जोड़ना आवश्यक है। व्यक्ति के जीवन का सर्वांगीण विकास तो अनिवार्य है। बेरोजगारी मनुष्य को तोड़ देती है। देश का रोजगार का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अर्थ व्यक्ति को नौकरी देना मात्र नहीं है वरन् एक ऐसा कार्य देना है जिसमें व्यक्ति की योग्यता और क्षमता का उपयोग हो सके। यदि मैं शिक्षा मंत्री हो सका तो शिक्षा का ऐसा प्रारूप प्रस्तुत करूँगा जिसमें व्यक्ति की शिक्षा का उसके जीवन तथा व्यवहार से सीधी सम्बंध हो। उसका सर्वांगीण विकास हो। रोजगार मिले तथा उसकी योग्यता तथा क्षमता का मूल्यांकन हो सके। यदि ऐसा नहीं किया गया तो राष्ट्र तबाह हो जायेगा।

हर्ष का विषय है कि इसके भीषण दुष्परिणामों को देखकर भारत सरकार की आँखें खुल गई हैं और वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में सुधार के पूर्ण प्रयास हो रहे हैं। आज हमें ऐसी शिक्षा-प्रणाली की आवश्यकता है जो स्वाधीन भारत के लिए आदर्श नागरिक, कुशल कार्यकर्त्ता और चरित्रवान् सच्चे सेनानी देश-भक्त प्रदान कर सकें, ताकि छात्रों की सामाजिक, नैतिक, आत्मिक और मानसिक प्रगति संभव हो सके। सरकार ने इस दिशा में आयोग भी तैनात किया है और अंग्रेजी के स्थान पर मातृ-भाषा हिन्दी का प्रचार बढ़ रहा है। विद्यालयों में औद्योगिक तथा तकनीकी शिक्षा का विकास हो रहा है। चरित्र और धर्म की कक्षाओं की भी स्थान-स्थान पर व्यवस्था हो रही है। हाई स्कूल तक लड़कियों की शिक्षा तो निःशुल्क कर दी गई है। इस प्रकार दिनों-दिन सुधार से भारत के उज्जवल भविष्य की पूर्ण आशा है।

निष्कर्ष यह है कि वर्तमान शिक्षा-पद्धति अँग्रेजी शासन में दीन भारतीयों की रोटी की समस्या को सुलझाने के लिए निस्सन्देह श्रेयस्कर थी, परन्तु अब उसे यथा-वत् रूप में ग्रहण करना किसी भी भाँति उपादेय नहीं हो सकता। हमें अपने देश, धर्म और संस्कृति तथा वर्तमान वातावरण के अनुकूल शिक्षा के स्वरूप को निर्धारित करना आवश्यक है। यह ठीक है कि अंग्रेजी भाषा भी हम पढ़ें, साथ ही अन्य विदेशी भाषाओं का भी पठन-पाठन हो, लेकिन देश की स्थिति और संस्कृति को भुलाकर कदापि नहीं। आज यही कमी शिक्षा-पद्धति में दर्शनीय है अतः उसमें आमूल-चूल परिवर्तन की नितान्त अपेक्षा है। तभी हम देश-विदेश में अपने अस्तित्व और संस्कृति का जयनाद कर सकेंगे।

४. सह-शिक्षा

विज्ञान के चरण-चिन्हों पर निरन्तर गतिशील होने वाले विश्व में सृष्टिकर्त्ता की पावन कला के दो प्रतीक—नारी एवं पुरुष, सदैव से एक होते हुए भी दो ही रहे हैं और रहेंगे। उन्हें किसी प्रकार एक करना भले ही विविध भौतिक दृष्टियों से लाभप्रद हो, किन्तु इस प्रकार उनकी नैसर्गिकता एवं पृथक् अस्तित्व की गरिमा विनष्ट ही होगी। प्रकृति ने उनके शारीरिक गठन, गुण-अवगुण एवं स्वभाव आदि सभी में भिन्नता रखी है। इसी में मानव जाति का हित तथा गौरव है। भारतीय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जीवन की यह आधारशिला सदा हमें विश्व से भिन्न रखकर अमरता का पाठ पढ़ाती रही है। इस पृष्ठभूमि में आज देश में सह-शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार एक अतीव गहन और विचारणीय समस्या है। पश्चिमी सभ्यता के कायल और समर्थक एवं आर्थिक विकास का हल खोजने में व्यस्त उन्मुक्त विकास के कतिपय भोक्ता भले ही इसके पक्ष में हों, लेकिन भारतीयता की रक्षा इससे सम्भव नहीं। सह-शिक्षा के प्रचार के पूर्व यहाँ की समाज-व्यवस्था को पश्चिम के अनुकूल बनाना होगा जो अनुचित है। फिर भी इसके गुण-दोषों को समक्ष रखकर हमें उपयोगी मार्ग ढूँढ़ने की आवश्यकता है।

चरित्र हमारे भारतीय जीवन की सर्वोपरि सम्पत्ति है और सह-शिक्षा में चारित्रिक पतन की सम्भावना शत-प्रतिशत होती है। निदान, अवस्था का अल्हड़पन युगीन भोगोन्मुखी प्रवृति शीघ्र पथ-भ्रष्ट कर देते हैं। फिर नारी-पुरुष दोनों के कार्य-क्षेत्र भिन्न हैं, दोनों की अपनी सीमाएँ और आवश्यकताएँ हैं। विद्याध्ययन की अवस्था ही हमारे भावी निर्माण और विकास की अवस्था है। इसीलिए हमारे यहाँ प्रारम्भ में ब्रह्मचर्य-पालन और एकान्त में विद्याध्ययन की बात कही गई है। नारी इस मार्ग में सबसे बड़ी बाधक है। मन और इन्द्रियों पर काबू पाना एक कठिन साधना है। बड़े-बड़े विद्वान और संयमी उसके नेत्र-कटाक्षों के आगे झुकते देखे जाते हैं। आज की भोगोन्मुखी परिस्थितियों में फिर भला सह-शिक्षा किस प्रकार लाभप्रद सिद्ध हो सकती है।

यद्यपि मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह बहुत कुछ ठीक है कि वासना का अंकुर तभी तक पनपता है, जब तक कि स्त्री-पुरुष परस्पर दूर रहते हैं, उनके निकट आने पर नियन्त्रण रखा जाता है। लेकिन, इसकी प्रायोगिकता विचारणीय है। निकट सम्पर्क में आने पर संकोच तो उठ जाता है, स्वच्छन्द विचरण का प्रसाद उन्हें प्राप्त होता है। परस्पर एक-दूसरे को रिझाने के लिए शृंगार-सज्जा की भावना उनमें घर करती चली जाती है। भौतिक और शारीरिक आकर्षण एवं सुख ही उसका ध्येय हो जाता है। फलतः ज्ञानार्जन के क्षेत्र से वह बहुत दूर पहुँच जाता है, जबकि 'विद्यार्थिनः कुतो सुखः' कहा गया है। उनके जीवन में सह-शिक्षा के साहचर्य्य से विपरीत आचरण की स्थिति ही देखने में आती है जो लोग इस सम्बन्ध में अतीत का उदाहरण देते हैं अथवा युग की अपेक्षा को समक्ष रखते हैं, उन्हें न तो इतिहास का वस्तुतः ज्ञान ही है और न युगीन-मनःस्थिति का ज्ञान-परिज्ञान। वे स्वयं उचित और उपेक्षित मार्ग से भटके हुए हैं। आखिर, ऐन्द्रिकता ही मानव-जीवन की उपलब्धि नहीं है। फिर आज के युवक-युवतियों में संयम ही कहाँ? खाद्य पदार्थों की अशुद्धता अलग उनकी मनोवृत्तियों को दूषित बनाती है। ऐसी स्थिति में सम्भव है, कुछ लड़कियाँ अपने जीवन-साथी का चयन कर लेती हों, लेकिन उनमें भी भविष्य में तलाक की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। स्पष्ट है कि वह चयन भी गम्भीरतापूर्वक न किया जाकर आज उन्मत्त यौवन की ही एक परिणति है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकृति ने स्त्री-पुरुष दोनों की शरीर-रचना विभिन्न आधारों पर की है। एक गृह-स्वामिनी है और दूसरा बाहर का मालिक। एक सुकोमल और सुकुमारी है, तो दूसरा कठोर-हृदय। एक का गौरव कुशल गृहिणी बनने में है, तेजस्वी पुत्र-रत्न पैदा करने में है, तो दूसरे का अपने पुरुषत्व के प्रदर्शन में। अतः कार्य-क्षेत्र की भाँति दोनों की शिक्षा-दीक्षा के विषय अलग-अलग ही होने चाहिए। ज्ञानार्जन की हम उपेक्षा नहीं करते, इतिहास में विदुषी नारियों के अनेक उदाहरण मिलते हैं। किन्तु नारी-पुरुष के स्वभाव और प्रकृति के अनुसार ही शिक्षा की व्यवस्था श्रेयस्कर कही जा सकती है। यदि नारी सह-शिक्षा में गणित और विज्ञान पढ़ने लगेगी, तब क्या वह घर में बैठकर अपने पति की सेवा कर सकेगी, क्या सन्तान के लिए सर्वस्व त्याग कर सकेगी और फिर इसमें सन्देह नहीं कि वह नारीत्व से भी वंचित हो जायेगी। भले ही अति आधुनिक प्राणी इन भारतीय आदर्शों को सारहीन तथा युग-प्रतिकूल कहें लेकिन यह निश्चित है कि भारत का भविष्य इन्हीं के समक्ष रखने पर उज्जवल बन सकेगा। कभी-कभी तो ऐसे अश्लील विषय भी पाठ्यक्रम में आ जाते हैं कि उन्हें पढ़ाने में भी बहुधा संकोच होता है। कहा जाता है कि सह-शिक्षा से ही लड़के-लड़कियों में एक परिवार के आत्मीय सदस्यों की भाँति रहने की भावना का जागरण होता है, उनमें घनिष्ठ परिचय हो जाता है, वे परस्पर एक-दूसरे का आदर करना सीखते हैं। लेकिन यह परिचय क्या सचमुच कालेज छोड़ने के बाद भी उसी आदर एवं स्नेह से युक्त रहता है? यदि हाँ, तो कितने लड़के-लड़कियाँ एक-दूसरे को मुसीबत में देखकर मदद करने को उद्यत रहते हैं, यह स्वयं अनुभूति और परख का विषय है। परस्पर स्वच्छता और सफाई की भावना का जागरण तो ठीक है, लेकिन शृंगार-वर्द्धन की प्रबल आकांक्षा से उनकी प्रवृत्ति आर्थिक बचत के स्थान पर दीन-गरीब अविभावकों के लिए एक समस्या नहीं बन जाती और सफाई के साथ फैशनपरस्ती का प्रकोप नहीं होने लगता? फिर कहाँ है इस सह-शिक्षा में चरित्रोत्कर्ष की गरिमा या आर्थिक बचत का आधार। अतः स्पष्ट है कि जो व्यक्ति इसके समर्थक हैं वे या तो स्वयं इसे प्रोत्साहन देकर किसी-न-किसी प्रकार लाभान्वित होते हैं या फिर किसी राजनैतिक चाल को सफल बनाने के लिए कुचक्र रचते हैं। वस्तुतः सह-शिक्षा भारत जैसे देश में निर्माण की अपेक्षा विनाश की ही प्रेरक अधिक है।

सह-शिक्षा में जहाँ उपरोक्त अनेक दोष हैं, वहाँ लाभ बहुत कम। यों थोड़े-बहुत गुण तो प्रत्येक विचार में होते ही हैं। लड़के-लड़कियों में परस्पर उन्नति की स्पर्द्धा से निस्सन्देह विद्याध्ययन में उत्कर्ष आता है। उनकी संकोची प्रवृत्ति दिन-दिन लुप्त होती है। वे स्वच्छ रहना सीख जाते हैं और एक-दूसरे की मनःस्थिति तथा मनोवृत्ति को समझने के आदी हो जाते हैं। समानाधिकार के साथ सह-कार्य की आदत भी पड़ जाती है। पुरुषों के साथ स्त्रियाँ भी गृह के बाहर राजनीति में हाथ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बंटाने लगती हैं। माता-पिता को भी लड़की के विवाह-सम्बन्ध में थोड़ी मुक्ति मिल जाती है। आर्थिक दृष्टि से भी भले ही यह कुछ अंश तक उपादेय हो, किन्तु चारित्रिक पतन और शृंगार-सज्जा की बढ़ती प्रवृत्ति इसके अनुपादेय पहलू को ही उभारती है। अतः अभी देश में इसका अपनाया जाना उपयुक्त नहीं कहा जा सकता।

निष्कर्ष यह है कि भारत भारत ही है, यूरोप होने में इसे युगों की अपेक्षा है। हमारे जीवन का एकमात्र आधार धर्म और चरित्र है। इनकी अवज्ञा करके जीवित रहना प्रायः असम्भव है। इसी से सह-शिक्षा यहाँ उचित तथा उपादेय नहीं है। हम यह नहीं कहते कि 'स्त्री शूद्रौ नाधीयीताम्'; किन्तु अपेक्षा इस बात की है कि उनके आत्मिक एवं मानसिक विकास तथा उत्थान के लिए ही शिक्षा का स्वरूप-निर्धारण होना चाहिए। सह-शिक्षा के दुष्फल आज देश में भला किससे छिपे हैं? उनके निर्माण की आशा-आकांक्षाएँ मात्र यौवन की नैसर्गिक कामुक प्रवृत्तियों की पिपासा-शान्ति की खोज में ही रत रहती है। विद्या और सदाचार प्रायः लुप्त हो जाते हैं। फिर, सच तो यह है कि आग के पास जाकर भला कौन नहीं जलता? अतः आज की परिस्थितियों में देश के विकास की आशा से सहशिक्षा को प्रश्रय देना कदापि उचित और न्यायसंगत नहीं कहा जा सकता। आज के दुर्बल छात्रों में आत्मा की दृढ़ता ही कहाँ है? हमारे यहाँ तो 'माता स्वस्रा दुहित्रा वो नैकशय्यासनो भवेत। बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति' तक कहा गया है। अतः सह-शिक्षा को प्रोत्साहन देना भावी नागरिकों के नैसर्गिक विकास को अवरुद्ध करना है।

५. छात्रों में अनुशासन (१९७५)

अथवा

छात्र असन्तोष

अथवा

छात्र अशान्ति : कारण और निदान

अथवा

विश्व-विद्यालयीय वातावरण और अनुशासन (१९७९)

अथवा

युवा असन्तोष : कारण और निदान

संयम-नियम मानव-जीवन की विभूति हैं। इन्हीं में अनुशासन का भाव निहित है। देश-विदेश के महापुरुषों ने अनुशासन का आजीवन पालन करके ही अमरत्व प्राप्त किया है। यह हमारी प्रगति का प्रवेश-द्वार है। आज का छात्र कल का नागरिक है। उसी के कन्धों पर राष्ट्र की उन्नति-अवनति का सम्पूर्ण भार है। अतः उसका चरित्र

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जितना सुदृढ़ होगा, राष्ट्र का निर्माण भी उतना ही भव्य और स्थायी होगा। अनुशासन छात्र जीवन का आभूषण है, उसकी आधारशिला है। इसके अभाव में छात्र न तो ज्ञानार्जन कर सकता है और न जीवन में सच्ची सुख-शान्ति का अनुभव। न वह विद्यालय में अपने गुरुजनों का कृपाभाजन बनता है और न समाज में कहीं सम्मान प्राप्त कर पाता है। स्वयं को अनुशासन में रखने वाला छात्र निरन्तर उन्नति करता जाता है। उसके मार्ग की बाधाएँ स्वतः विचलित हो जाती हैं। निःसन्देह छात्र का यह परम गुण उसके सम्पूर्ण जीवनोत्सर्ग का आधार है।

'अनुशासन' शब्द का अर्थ है—शासन का अनुगमन या अनुकरण। यह शासन स्वयं अपना भी हो सकता है और दूसरों का भी। इसके लिए आत्मसंयम, नियमन तथा क्रम की आवश्यकता है। साथ ही किसी अन्य का हमसे अहित न हो जाय, हमारे कारण समाज की शृङ्खला और व्यवस्था भंग न हो जाय, आदि बातें भी इसी के अंतर्गत आती हैं। इस प्रकार इसके दो स्वरूप हमारे सामने आते हैं—एक अन्तः, और दूसरा बाह्य। प्रथम में अपनी चारित्रिक दृढ़ता के लिये इन्द्रियों पर नियन्त्रण एवं मन की कुवासना तथा कुवृत्तियों को रोकने की बात आती है और द्वितीय में सामाजिक व्यवहार कुशलता की। आशय यह है कि अनुशासन मानव-जीवन का वह गुण है, जो हमें पार्थिव से अपार्थिव की ओर ले जाता है, मनुष्यत्व से देवत्व की ओर मोड़ता है।

छात्र-जीवन ही वस्तुतः हमारे भावी जीवन के निर्माण और नाश की सर्वप्रथम सीढ़ी है। जैसे संस्कार और आदतें हमारी इस अवस्था में उत्पन्न होते हैं, आजीवन उनमें फिर कोई परिवर्तन नहीं हो पाता। छात्र वह सुकोमल लतिका है, जिसे चाहे जिस तरह मोड़ा जा सकता है। प्रौढ़ होने पर परिस्थितियों की कटुता, जीवन के उतार-चढ़ाव एवं स्वभाव की निष्ठुरता से वह टूट तो जाती है लेकिन पुनः जोड़ी नहीं जा सकती। जो छात्र इस आयु में गुणों को ग्रहण कर लेता है, उसका जीवन कुन्दन हो जाता है। जीवन के क्षणिक दुःख-सुख उसे पथ-भ्रष्ट नहीं कर पाते। अनुशासन में रहने से दैनिक-चर्य्या का एक व्यवस्थित चक्र बन जाता है। फलतः स्वास्थ्य भी ठीक रहता है और प्रतिभा भी ठीक कार्य करती रहती है। विद्यार्थी के लिये इसी कारण सदैव समय से सोने-जागने, खेलने-कूदने तथा पढ़ने-लिखने की बात कही जाती है तभी वह पग-पग पर सफलता का भागी बन पाता है।

विद्याध्ययन का सर्वोपरि वरदान जो छात्र को मिलता है—वह है विनम्रता। यह विनम्रता का गुण अनुशासन में रहने पर ही सम्भव है। इसके साथ ही दया, क्षमा, सहिष्णुता और सहानुभूति तथा परोपकार आदि गुणों का भी प्रादुर्भाव होता है। सैनिक अनुशासन तो प्रसिद्ध ही है। तभी तो न वहाँ जाति-भेद होता है और न किसी प्रकार का कोई परस्पर द्वेष-भाव। छात्रों में ऐसे ही संगठन और अनुशासन की आवश्यकता है। तभी वह बड़ों के प्रति अपने कर्त्तव्य का निर्वाह कर सकता है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और ज्ञानार्जन के क्षेत्र में गति कर सकता है। विना गुरु की कृपा के ज्ञान संभव नहीं तथा श्रद्धा के अभाव में भी इसे प्राप्त नहीं किया जा सकता—'श्रद्धावान् लभ्यते ज्ञानम्'। इसी गुण के सहारे वह समाज में व्यवहार कुशलता को सीखता है। जहाँ वह अपने अधिकार एवं कर्त्तव्यों की रक्षा के लिए उद्यत रहता है, वहाँ दूसरों के अधिकार तथा कर्त्तव्य का भी ध्यान रखता है। वह शिष्टता का व्यवहार करने लगता है तथा समाज की मर्यादित परिधि में उचित-अनुचित पर गम्भीरता से विचार करता है। स्वच्छन्दता उसके जीवन का स्पर्श तक नहीं कर पाती। बड़ों का सत्कार करने से छोटे भी उसका सम्मान करने लगते हैं। इस प्रकार वह सभी गुणों का आगार बन जाता है। स्वाभिमान तथा स्वावलम्बन के भाव भी अनुशासन के कारण उसके जीवन में जाग उठते हैं। आशय यह कि अनुशासन में रहकर ही छात्र अपने गंतव्य तक पहुँच पाता है, उसका जीवन सुख-शाँतिमय हो जाता है। अतः छात्र-जीवन में अनुशासन-पालन तथा निर्वाह की परमावश्यकता है।

अनुशासनहीनता छात्र को पतन के गर्त में ले आती है। न वह विद्या-अर्जन कर पाता है और न अन्य अपेक्षित गुणों का संचय। न वह गुरुजनों का कृपा-पात्र बनता है और न समाज में सम्मान प्राप्त कर पाता है। इसका अनुभव उसे गृहस्थ में प्रवेश करने पर होता है। उसका जीवन अपने-आपको भार हो जाता है। जीवन का कोई उद्देश्य न होने से, इस गुण के अभाव में वह जल में पड़े लकड़ी के टुकड़े की भाँति इधर-उधर मुसीबतों से ही टकराता है। पग-पग पर उसे विफलता के दर्शन होते हैं। न उसमें कर्त्तव्यपालन की क्षमता रहती है और न स्वास्थ्य तथा सौंदर्य की रक्षा का दायित्व। न वह सच्चे अर्थों में सभ्य बन पाता है और न सुशिक्षित।

आज विश्व-विद्यालयों का वातावरण विषाक्त हो गया है। छात्र-वर्ग की अनुशासनहीनता से देश के समक्ष एक समस्या उठ खड़ी हुई है। वे विद्यालयों में ज्ञानार्जन के स्थान पर राजनीति के दाँव-पेंच सीखते और पथ-भ्रष्ट होते हैं। माता-पिता और गुरु का अपमान करने में गौरव का अनुभव करते हैं। कालेज जाने पर बाजार में घूमना, सिनेमा देखना, झगड़ा करना, बिना टिकट यात्रा करना उनकी दिनचर्य्या के प्रमुख अंग बन जाते हैं। कक्षा में हाजिरी देकर खिसक जाना सामान्य बात है। परीक्षा में नम्बर बढ़वाने के लिये परीक्षक के घर पर धावा मारना, असफल होने पर उसकी पिटाई करना, विद्यालय की तोड़-फोड़, भूख-हड़ताल तथा राजनीति के कुचक्र चलाकर भोले-परिश्रमी छात्रों को पथ-भ्रष्ट करना उनके आदर्श रह गए हैं। यह सब अनुशासनहीनता का ही तो दुष्परिणाम है।

यदि हम स्थिर बुद्धि से इस अनुशासनहीनता के कारणों की खोज करें तो पता चलेगा कि इसका दायित्व बहुत कुछ हमारे परिवार एवं समाज पर है। कारण, यहीं से छात्र सर्वप्रथम शिक्षा ग्रहण करता है। समाज के बाह्य अंगों से उसका प्रभावित होना सहज स्वाभाविक है। इसके अतिरिक्त वर्तमान शिक्षा-पद्धति भी दोषपूर्ण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होने से उसमें इस गुण का प्रादुर्भाव नहीं कर पाती। स्नातक या स्नातकोत्तर परीक्षा के उपरान्त भी जब उसे रोजगार नहीं मिलता, रोटी की समस्या हल नहीं होती, श्रम करने पर भी उसके अच्छे अंक नहीं आ पाते, तब अनुशासन की सीमाएँ टूट जाती हैं और वह आक्रोश में उचित अनुचित के ज्ञान को भुला बैठता है। राजनीति के पचड़े उसे अपना मोहरा बना लेते हैं। फलतः तोड़-फोड़ तथा हड़ताल की परिस्थिति उत्पन्न होती है। दोषपूर्ण परीक्षा-प्रणाली इसका अलग कारण है। न गुरुजन अपने कर्त्तव्य का विद्यालयों में पालन करते हैं और न छात्रों की स्थिति में सुधार। अतः छात्र उन्हें समझ हीं नहीं पाते तथा अनुशासनहीन होकर उच्छृङ्खल भी हो जाते हैं। श्रद्धा का प्रश्न तो ऐसी स्थिति में उठता ही नहीं। परीक्षाओं में भेद-भाव की नीति से इस अवगुण को और प्रोत्साहन मिलता है। अधिकारियों तथा प्रोफेसरों के बच्चे अयोग्य होने पर भी न केवल अच्छे अंकों से उत्तीर्ण ही हो जाते हैं, अच्छी नौकरियाँ भी पाते हैं तथा योग्य किन्तु दीन छात्र पिछड़ जाते हैं। पाठ्यक्रम में अलग नैतिक शिक्षा की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। कक्षाओं में इतने अधिक छात्र ठूँस दिये जाते हैं कि न तो अध्यापक पढ़ा पाता है और न छात्र समझ पाते हैं। आज के स्कूल-कालेज जैसे व्यापार के प्रमुख केन्द्र हो गये हैं और इसी से राजनीति के अखाड़े भी बनते जा रहे हैं। रचनात्मक कार्यों के अभाव में अलग छात्र का मस्तिष्क स्वच्छन्द रहता है। उसको कोई दिशा नहीं बन पाती। कालेज में रहकर वह अतिरिक्त समय को यों ही खोता है। इन्हीं सब कारणों से अनुशासन की यह समस्या दिन-प्रतिदिन विकट और भयंकर होती जा रही है।

छात्र-जीवन में अनुशासन स्थापना के लिए नैतिक एवं चारित्रिक शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध होना चाहिये। माता-पिता को भी शैशव से ही बच्चों के अच्छे संस्कार बनाने का प्रयत्न करना चाहिये। शासन का कर्त्तव्य है कि विद्यालयों में रचनात्मक कार्यों की व्यवस्था की जाय, ताकि अतिरिक्त समय का छात्र वहाँ सदुपयोग कर सके। आखिर बेकार इधर-उधर भटकने, बेकार रहने से ही तो मस्तिष्क में शैतानी घर करती है। अनुशासन के इस गुण को जगाने के लिए सैनिक शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए। हर्ष का विषय है कि सरकार इस ओर गम्भीरता से कदम उठा रही है। इसके साथ शिक्षा तथा परीक्षा-प्रणाली में भी परिवर्तन परमापेक्षित है। साथ ही परीक्षा पास करने के लिए छपने वाले बाजारू नोट्स तथा प्रश्न-पत्रों पर भी प्रतिबन्ध लगाया जाना चाहिये, ताकि छात्र स्वयं परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिये परिश्रम कर सकें। वार्षिक परीक्षा के अतिरिक्त मासिक परीक्षा का भी प्रावधान किया जाय और अन्त में छात्रों की सफलता-असफलता का निर्णय लिया जाय। विद्यालय में अनुचित कार्य करने पर उसे आर्थिक-दण्ड न देकर अंकों में कटौती की जाय। तभी आज का अनुशासनहीन छात्र अपने कर्त्तव्य का पूर्णतः पालन कर, अपना और देश का हित कर सकेगा। अन्यथा उसके दुष्परिणाम तो आज स्वाधीन भारत के लिये अभिशाप सिद्ध हो ही रहे हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निष्कर्ष यह है कि छात्रों में अनुशासन की परमावश्यकता है। इसी से वे सच्चे विद्यार्थी बन पाते हैं तथा मानव जीवन के रहस्य को समझ पाते हैं। पुनः जब वे ही कल के शासक हैं, तब अनुशासनहीनता से बढ़कर भला उनका कौन शत्रु हो सकता है। अतः उनका कर्तव्य है कि सदैव अनुशासन में रहकर, राजनीति के कुचक्रों से दूर अपने गन्तव्य की ओर अग्रसर हों। इसी से उनका, समाज का तथा राष्ट्र का परम हित है। सच कहा जाय तो जिस देश के छात्र उन्नतगामी हैं, वही देश उन्नतिशील है। यह अनुशासन के मर्म को समझने और जीवन में लागू करने पर ही सम्भव हो सकता है। अनुशासन में रहकर ही हम युग-युग की दासता से मुक्त होकर स्वाधीनता को प्राप्त कर सकें और अब अनुशासन में रहकर ही उसकी रक्षा कर सकेंगे। अतः छात्रों को अनुशासित रहना सभी दृष्टियों से उपादेय है।

६. परिवार-नियोजन

अथवा

भारत में जनसंख्या की समस्या

अथवा

विकास का सोपान—परिवार नियोजन

अन्नोत्पादन का अभाव और जनसंख्या की वृद्धि किसी भी देश की उन्नति में बाधक सिद्ध हो सकते हैं। भारत के समक्ष आज ये दोनों ही समस्याएँ अपने उग्र रूप में प्रस्तुत हैं। यद्यपि प्रथम का हल तो बहुत कुछ विगत पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा प्राप्त कर लिया गया है। लेकिन द्वितीय की स्थिति अभी तो असंतोष पूर्ण ही है। इसके सम्बन्ध में परिवार-नियोजन या सन्तति-नियम के प्रयोग भारत सरकार कर रही है। आज देश में कहीं बेरोजगारी की समस्या है, तो कहीं अकाल और भूखमरी की समस्या, कहीं मूल्य-वृद्धि की समस्या है तो कहीं भाषावार-प्रान्तों की समस्या है; कहीं भिखारियों की समस्या है तो कहीं जन-वृद्धि को रोकने की समस्या है। देश चारों ओर से समस्याओं से घिरा है। इन सबमें परिवार-वृद्धि की समस्या बहुत ही भयंकर है। इस समस्या का समाधान देश के सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए परमावश्यक है।

हमारे देश में पारिवारिक जीवन की व्यवस्था बहुत प्राचीन है। गाँवों में आज भी बड़े-बड़े संयुक्त परिवार देखे जाते हैं। एक ही चूल्हे पर रोटी पकाना गौरव की बात समझी जाती है। हमारे यहाँ अधिक सन्तान होना तो भाग्यशाली का लक्षण माना जाता है। माँ गांधारी ने शत-पुत्रों को जन्म दिया। इस प्रकार अनेक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उदाहरण मिल जाते हैं। पुरानी औरतें भी सामान्यतया दस-बारह बच्चों की माँ बनी ही हैं। फिर, परिवार-नियोजन का यह प्रश्न क्या यहाँ की भूमि के लिए व्यर्थ सिद्ध न होगा ? क्या संतति-निरोध के कृत्रिम और अनैतिक साधन यहाँ की संस्कृति को कलंकित नहीं करेंगे ? यह सब होते हुए भी आज देश-विदेश की आर्थिक स्थिति पूर्णतः बदल गई है और उसी के अनुकूल हमारे जीवन-यापन की प्रक्रिया का होना अनिवार्य है। अस्तु, आर्थिक लाभ की दृष्टि से परिवार-नियोजन का सहारा लेना अपेक्षित है, भले ही प्राचीन समर्थक इस सम्बन्ध में कुछ भी कहें।

जन-वृद्धि भारत के लिए ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व के लिए विकट पहेली बनी है। सुप्रसिद्ध प्रो० कार सांडर्स का कथन है कि संसार की जनसंख्या में एक प्रतिशत प्रतिवर्ष के हिसाब से वृद्धि हो रही है। यह वृद्धि यदि इसी गति से होती रही तो पाँच सौ वर्ष पश्चात् विश्व की जनसंख्या इतनी अधिक हो जायगी कि मनुष्यों का रहना तो दूर रहा, पृथ्वी पर खड़े होने के लिए भी स्थान नहीं मिल सकेगा। अंग्रेजी अर्थशास्त्री टॉमस माल्थस का कथन है कि एक निश्चित समय में किसी स्थान की खाद्य-सामग्री के उत्पादन में जितनी वृद्धि होती है, उससे कई गुनी अधिक जनसंख्या में वृद्धि हो जाती है। वस्तुतः इसी का परिणाम है कि आज खाद्य की समस्या है। जो भी हो, देश की विविध समस्याओं के मूल में जन-वृद्धि की समस्या ही प्रमुख है। किसी भी राष्ट्र के बहुमुखी विकास में यह सबसे बड़ी बाधा है। फिर, अधिक-सन्तति से पारिवारिक जीवन भी दुःखमय बना रहता है। न माँ-बाप को सुख-शान्ति मिल पाती है और बच्चों की शिक्षा-दीक्षा एवं विकास ही सम्भव हो पाता है। न सामाजिक स्तर उन्नत हो पाता है और न बच्चों के लिए अन्य अपेक्षित सुविधाएँ उपलब्ध हो पाती हैं और न नैतिक सुधार ही सम्भव हो पाता है। न पेटभर उन्हें पौष्टिक खाद्य मिलता है और न पहिनने के लिए पर्याप्त और अच्छे कपड़े। प्रारम्भ से ही जीवन में एक निराशा और चिन्ता का घुन लग जाता है। फल यह होता है कि उन्हें अल्पायु में ही या तो संसार से विदा हो जाना पड़ता है अथवा जीवित रहकर भी जीने में सरसता की अनुभूति नहीं होती बल्कि यह जीवन भार स्वरूप हो जाता है। स्वभाव में चिड़चिड़ापन, पारस्परिक द्वेष-शत्रुता आदि के कुत्सित भाव पनपने लगते हैं। इसके विपरीत सीमित परिवार की स्थिति सभी सम्भव दृष्टियों से अच्छी और सुखद होती है। सम्पूर्ण परिवार के सदस्य सुखी और सम्पन्न बने रहते हैं तथा बच्चों के बहुमुखी विकास के सभी मार्ग खुले रहते हैं। लेकिन प्रश्न यह है कि जन-वृद्धि का कारण क्या है ? क्या व्यक्ति ही इसके लिए जिम्मेदार है अथवा कोई बाह्य शक्ति ?

यदि हम समाज में जीवन-यापन की सामान्य पद्धति का विश्लेषण करें तो विदित होगा कि जन-वृद्धि का एकमात्र कारण सामाजिक एवं आर्थिक वैषम्य है। शोषण की नीति ने इन दोनों विषमताओं को जन्म दिया है। समाज का एक अंग जी-तोड़ परिश्रम से उत्पादन करता है, फिर भी उसके उपभोग वंचित रहता है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और दूसरा विना किसी श्रम के उससे अपने विलास के साधन जुटाने में गौरवान्वित होता है।

परिश्रम के पश्चात् प्रत्येक व्यक्ति अपने श्रम-परिहार के लिए कुछ मनोरंजन चाहता है। लेकिन इस उत्पादक-वर्ग को इसकी सुविधा ही कहाँ है। फलतः यौन-तृप्ति ही उसके मनोरंजन का आधार बनती है। यही कारण है कि देश का अधिकांश सर्वहारा या मजदूर-वर्ग ही जन-वृद्धि में सहायक होता है। इसी से धनी व्यक्तियों के परिवार में सन्तान नियन्त्रित रहती है, किन्तु गरीब के घर उनके सोने-बैठने को भी स्थान नहीं मिलता। अतः इस समस्या का हल समाज के आर्थिक वैषम्य को दूर करने में ही खोजा जा सकता है।

सन्तान के भविष्य-निर्माण का दायित्व बहुत-कुछ माता-पिता की सम्पन्नता पर निर्भर करता है। इस आधार पर दो या तीन सन्तान का होना ही श्रेयस्कार है। डाक्टर लोग भी इसी से इसकी बहुधा राय देते रहते हैं। सीमित सन्तान होने से परिवार तो सुखी रहता ही है—माता पुनः-पुनः प्रसव-वेदना से मुक्त हो जाती है तथा पिता अर्थ के असह्य भार से बच जाता है। अधिक सन्तान तो परिवार के लिए अभिशाप ही है। 'नियोजित परिवार-सुखी परिवार' का नारा इसी से बुलन्द किया जा रहा है। इसी से प्रत्येक विचारशील व्यक्ति परिवार-नियोजन की योजना का समर्थन करता है। भारत जैसे निर्धन देश परिवार-नियन्त्रण की समस्या का हल खोजना परमावश्यक है।

परिवार-नियोजन से व्यक्ति ही नहीं सम्पूर्ण देश लाभान्वित होता है। शरीर तथा मस्तिष्क के स्वस्थ रहने से हमें जीवन के सच्चे आनन्द का अनुभव होता है, व्यय की अधिकता से राहत मिलने पर भविष्य में अर्थ-संचय का सुअवसर भी मिल जाता है। परिवार-नियोजन से ही समाज की अन्य विशेषताएँ भी दूर हो सकेंगी। हर्ष का विषय है कि हमारी सरकार इस ओर बहुत सतर्क है। प्रतिवर्ष लाखों रुपये इस समस्या के समाधान के लिए खर्च किये जाते हैं। प्रधानमन्त्री के आर्थिक कार्यक्रमों में परिवार-नियोजन सर्वाधिक महत्वपूर्ण सूत्र है।

इस समस्या का समाधान बहुत-कुछ कृत्रिम साधनों में ही खोजा जा सका है और इनका उपयोग भारत जैसे देश में असम्भव न सही, कठिन अवश्य है। विभिन्न प्रकार की गर्भ-रोधक अंग्रेजी दवाइयों का प्रयोग, लूप का प्रयोग तथा विशेष क्रीम आदि के प्रयोग भी हैं। फिर भी, अच्छा यही होगा कि शिक्षा के माध्यम से लड़के-लड़कियों के विचारों में इसकी महत्ता और अपेक्षा को भरा जा सके, ताकि वे प्रारम्भ से ही स्वयं को नियन्त्रित रखने का अभ्यास कर सकें। केवल ब्रह्मचर्य पालन की दुहाई देना इसका उचित हल नहीं है। गाँवों में परिवार-नियोजन केन्द्रों की स्थापना इसी दृष्टि से की जा रही है। शहरों में परिवार-नियोजन पखवारे मनाना, मुफ्त औषधियों का वितरण तथा नसबन्दी आदि की सुविधा के लिए आर्थिक सहायता तथा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आपरेशन आदि की अनेक सुविधाएँ सरकार की ओर से दी जा रही हैं और इस रूप में इस समस्या का हल खोजा जा रहा है। दुःख का विषय है कि सरकार द्वारा प्रदत्तअनुदान अस्पतालों में जनता के उपयोग में न आकर डाक्टर-डाक्टरनियों के आर्थिक लाभ का सहारा बन जाता है। उनकी लापरवाही अलग इस समस्या को भयंकर बना देती है। अतः सरकार को चाहिए कि ऐसे अधिकारियों पर कड़ी दृष्टि रखे और जनता को सच्चे अर्थों में इस समाधान से लाभान्वित होने दिया जाय। इन हलों के अतिरिक्त सामाजिक जीवन को ऐसे स्तर पर लाया जाय कि आर्थिक विषमता दूर हो जाय। आम व्यक्ति को परिवार नियोजन के महत्व का ज्ञान कराया जाय।

निष्कर्ष यही है कि आज भारत के भावी उत्थान तथा अन्यान्य समस्याओं के समाधान को पाने के लिए परिवार-नियोजन की समस्या का हल खोजना अतीव आवश्यक और अनिवार्य है। बिना इसके न हम अपनी शारीरिक शक्ति का संचय कर सकेंगे और न बौद्धिक विकास का मार्ग ही प्रशस्त कर सकेंगे। इसी में देश का उज्ज्वल भविष्य निहित है और उसका बहुमुखी विकास सम्भव है।

७. भारत में बेकारी की समस्या

अथवा

बेरोजगारी : एक अभिशाप

रूपरेखा—

(१) प्रस्तावना, (२) बेकारी के कारण—आधुनिक शिक्षा-प्रणाली, कृषि विकास के साधनों का अभाव, बढ़ती हुई जनसंख्या, धार्मिक अन्धविश्वास आदि, (३) बेकारी दूर करने के उपाय और समस्या का हल, (४) उप-संहार।

जहाँ हमें युग-युग के त्याग और बलिदान से स्वाधीनता का अमर वरदान प्राप्त हुआ, वहाँ अनेक भीषण समस्याएँ भी हमारे राष्ट्रीय जीवन में अनचाहे प्रवेश पा गई हैं। आज देश के समक्ष अनेक समस्याएँ मुँह फैलाए खड़ी हैं। देशवासियों के लिए भरपेट खाद्य का प्रश्न है तो कहीं कृषि-सुधार की उत्पादन-वृद्धि के लिए आवश्यकता। कहीं शिक्षा की समस्या है तो कहीं आर्थिक विकास का प्रश्न। कहीं सामाजिक स्तर के उन्नयन की समस्या है तो कहीं देश के कोटिशः शिक्षित-अशिक्षित-जनों की बेरोजगारी तथा बेकारी की समस्या है। यों तो ये समस्याएँ न्यूनाधिक रूप में सदैव बनी ही रहती हैं, लेकिन वर्तमान में इनका भयंकर रूप सचमुच देश की विडम्बना है। इनमें भी बेकारी की समस्या ने तो देश की सभी योजनाओं को प्रभा-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वित किया है। गाँवों की गलियों में, शहरों के कार्यालयों और फुटपाथों पर, रेलवे-स्टेशनों एवं सरकारी मन्त्रालयों के आगे एक अपार भीड़ दीख पड़ती है। मानव-कंकाल के भार को ढोते हुए ये कोटिशः बेकार बुद्धि की विचारणा को कुंठित कर देते हैं। द्वितीय महायुद्ध इसके लिये वरदान बना था। सभी को काम मिला, रोटी समस्या हल हुई। परन्तु उसकी समाप्ति पर तो जैसे कड़ी गर्मी के उपरान्त एक बार पानी पड़ने पर किंचित् शीलता का संचार होता है परन्तु तदुपरि और अधिक गर्मी फूट निकलती है। भारत जैसे निर्धन देश के लिए यह बेकारी की समस्या इसी रूप में युग-युग से घातक सिद्ध हो रही है।

यदि इस जटिल समस्या के कारणों की खोज की जाय तो विदित होगा कि क्या शिक्षा, क्या समाज, क्या धर्म, क्या सरकार की नीति और क्या मानव की परिवर्तित प्रवृत्ति सभी ने इस समस्या को प्रोत्साहन दिया है।

शिक्षित वर्ग में बेकारी का मूल कारण वर्तमान शिक्षा-प्रणाली है। बड़े-बड़े कालेजों और विश्वविद्यालयों में सर्वत्र 'बाबू' पैदा करने वाली प्रणाली को ही अपनाया जा रहा है। फलतः छात्रों में न अपने कर्तव्य-पालन की क्षमता जाग पाती है और न देशोत्थान के लिए त्याग की भावना। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त जब वह कार्यालयों के द्वार खटखटाता है तब यौवन की मधुर कल्पनाएँ धूल-धूसरित हो जाती हैं, वह अपनी शिक्षा को कोसने लगता है और अन्त में पारिवारिक सहायता का अंग न बनने से जीवन से जैसे ऊबने लगता है; बेकार सड़कों के चौराहों को नापने लगता है, बुरी आदतों को सीखता है और चारों ओर से निष्क्रिय तथा उदासीन होने पर प्राणान्त तक कर डालता है। आज हम स्वतन्त्र हैं। देश का भार छात्रों पर ही है, वे ही इसकी आधारशिला हैं। उनकी शिक्षा उन्हें पुस्तकीय कीड़े बनाकर कर्म-क्षेत्र से पृथक् कर देती है। वह 'अप-टू-डेट' बने रहने में अपना गौरव समझता है। श्रम करना उससे स्तर के बाहर है। खेती को वह अशिक्षितों का उद्यम कहता है और व्यापार को शोषण का मूल तथा मजदूरी करने की तो उसमें भला शक्ति ही कहाँ? सचमुच आज की शिक्षा प्रणाली ने शिक्षित भारतीय युवकों को शक्तिहीन तथा अकमर्मण्य बना दिया है। ऑफिस की बाबूगीरी के लिए वह सैकड़ों जगह भटकता है, किन्तु श्रम नहीं करता। वह तन और मन दोनों से जैसे पंगु हो गया है।

अशिक्षितों के मध्य बेकारी के कारणों में मूलतः कृषि-विकास के साधनों का अभाव, कुटीर-उद्योगों की कमी, धार्मिक अन्धविश्वासों में आस्था तथा स्वाधीनता का दुरुपयोग आदि हैं। भारत कृषि-प्रधान देश है। अधिकांश लोग खेती ही करते हैं, किन्तु ठाले दिनों में बेकार ही बने रहते हैं। अनाज की कमी न होने से उनके दिन तो कट जाते हैं, किन्तु गाँव का मजदूर-वर्ग बेकार हो जाता है। चौपालों पर बैठे लोग गप्पों में ही दिन गँवा देते हैं। अँग्रेजों की दमन-नीति ने ग्रामों के कुटीर-उद्योगों को भी दबा दिया था; किन्तु भारत सरकार के प्रयास में पुनः उन्हें प्रोत्साहन मिल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रहा है। फ़िर भी मशीनों की अधिकता तथा तुलना में ये कुटीरोद्योग नहीं ठहर पाते। अत; गाँव का अंशिक्षित शहरों की ओर मुड़ता है और मशीन का अंग बन जाता है परन्तु वहाँ से हट जाने पर उसकी स्थिति अधिक दयनीय हो जाती है।

गाँवों में कुछ लोग नेतागीरी का नाजायज लाभ उठाते हैं और दीन किसान-मजदूरों को ऐंठते हैं। स्वयं काम करना उनकी नेतागीरी को कलंकित करता है। जब तक उनकी दाल गलती है, रबड़ी उड़ाते ही हैं, बाद में बेकारी के शिकार बन कर भटकने लगते हैं। बेकारी की वृद्धि में हमारी धार्मिक-आस्थाएँ, अन्धविश्वास एवं रूढ़ियाँ भी सहयोग देती हैं। जब धर्म के नाम पर बिना किसी काम पेट से अधिक खाने और संचय करने को मिलेगा तो भला कौन काम करेगा? भारत में इसी से भिखारियों की एक नई समस्या उठ खड़ी हुई है। तीर्थ-स्थानों और मुख्य मन्दिरों के इर्द-गिर्द तो इन अकर्मण्य भिखारियों का मेला लगा रहता है।

देश में दिन-प्रतिदिन बढ़ती हुई जनसंख्या भी बेकारी का प्रधान कारण है। एक ओर उत्पादन वृद्धि की बात सोची जाती है, दूसरी ओर शत-शत परिवारों के बसने से रोटी की समस्या उग्र हो जाती है। शहरी आकर्षण से गाँवों के जो लोग शहरों में आकर बस जाते हैं, उनसे भी बेकारी की स्थिति पनपती है। आशय यह है कि क्या शिक्षित और क्या अशिक्षित सभी वर्गों में आज बेकारी का ताण्डव नृत्य हो रहा है। अनेक स्थायी और अस्थायी योजनाओं के फलस्वरूप भी यह समस्या कठिन होती जा रही है। यदि इसमें कमी न हुई और बेरोजगारों को रोजगार न मिला, तो देश सचमुच खतरे में पड़ जायगा।

शिक्षा के क्षेत्र में औद्योगिक तथा सृजनात्मक-प्रणाली के अभाव के कारण भी इस समस्या को बल मिलता है। छात्र-छात्राओं में न तो परिश्रम करने की मनोवृत्ति जग पाती है और न कार्यशीलता का उदय हो पाता है। फलतः पढ़-लिखने के बाद वे अपाहिज ही बने रहते हैं। इसके लिए शिक्षा प्रणाली में आमूल-चूल परिवर्तन होना चाहिए। उसका रूप विद्यार्थी को किसी उत्पादन के कार्य में योग्य बनाना होना चाहिए। प्राइमरी से स्नातकोत्तर-स्तर तक कुछ ऐसे धन्धों का कार्य छात्रों में प्रारम्भ हो, जिससे वे स्वयं अपने भविष्य का पथ प्रशस्त कर सकें तथा अपनी जीविका के अभिरुचि के अनुरूप कार्य-क्षेत्र का चयन कर सकें।

इस समस्या को दूर करने के लिए ग्रामीण क्षेत्र में पुनः कुटीरोद्योग को सरकारी स्तर पर प्रोत्साहन मिलना चाहिए, ताकि सस्ते मूल्य पर सभी आवश्यक वस्तुएँ हमें गाँवों में ही उपलब्ध हो सकें और अपव्यय से बचा जा सके। किन्तु इसके साथ-साथ विदेशी माल के आयात पर भी प्रतिबन्ध लगाना आवश्यक है। तभी स्वदेशी वस्तुओं की खपत सम्भव हो सकेगी। इस स्थिति में न तो ग्रामीणों का अतिरिक्त समय विनष्ट होगा और न उन्हें धन्धे की खोज में शहरों की ओर मुड़ना पड़ेगा। इसके साथ कृषि के विकास के लिए वैज्ञानिक प्रक्रिया का अनुसरण होना चाहिए। किसानों को सरकार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की ओर से सभी अपेक्षित सुविधाएँ दी जानी चाहिए; ताकि वे खाद्योत्पादन में अपनी सोई हुई रुचि को पुन; जगा सकें। उन्हें ऐसे खाद्य तथा साधन प्रदान किये जाने चाहिये ताकि वे फसल के अतिरिक्त नई-नई वस्तुओं को भी पैदा कर सकें। गाँवों में जहाँ भी सघन बंजर भूमि पड़ी हो, उसे उर्वर बनाकर कृषि योग्य बनाया जाना चाहिए और उसका वितरण भूमिहीनों को किया जाना चाहिए, ताकि उसके उत्पादन में वे अभिरुचि रख सकें। उन्हें भूमि मिल जाय और वे बेकार न रहें।

बेकारी को दूर करने के लिए सरकार का यह भी कर्त्तव्य है कि वह ऐसी व्यवस्था करे ताकि कोरी नेतागिरी न पनप सके। धार्मिक अन्धविश्वास का भी अब युग नहीं रहा है। अतः धर्म के नाम पर पेट पालने वाले पण्डे-पुजारियों पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए। जो दान दिया जाय, उसका उपयोग शिक्षा-संस्थाओं या अन्य सामाजिक कार्यों के लिए किया जाना चाहिए। देश की बढ़ती हुई जनसंख्या को रोकने के के लिए गाँव-गाँव में परिवार-नियोजन केन्द्रों की व्यवस्था हो और जनता की परेशानी को समझ-बूझकर उनका उचित उपचार किया जाना चाहिए। साथ ही, शिक्षा का प्रसार गाँवों में भी होना चाहिए ताकि ग्रामीणों के भीतर से कूपमण्डूकता के भावों का विवरण हो सके। पूँजीवाद अर्थ-व्यवस्था को सरकार अपने हाथ में ले तथा रिश्वत-घूस आदि अनैतिक कार्यों पर कड़ा प्रतिबन्ध लगाया जाय। शोषण की नीति को किसी भी मूल्य पर पनपने न दिया जाय। सभी मनुष्यों को अपने श्रम का उचित पुरस्कार मिले। अस्थायी योजनाओं को स्थायी बनाकर लोगों को निरन्तर कार्य मिलने की सुविधा प्रदान की जाय। संविधान के अनुसार सभी देशवासियों को समान अधिकार और कार्य एवं सुविधाएँ मिलनी चाहिए, ताकि किसी भी प्रकार का भेदभाव न पनप सके। इस समस्या को दूर करने के लिए देश-प्रेम की भावना को जगाना भी आवश्यक है। तभी देश से इस विकराल समस्या का अन्त हो सकेगा और सर्वत्र सुख-समृद्धि से सम्पन्नता व्याप्त हो सकेगी।

८. भारतीय संस्कृति

अथवा

नैतिक जीवन

अथवा

भारत और संस्कृति

रूपरेखा—

(१) प्रस्तावना, (२) संस्कृति का अर्थ एवं स्वरूप, (३) संस्कृति एवं सभ्यता, (४) भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ, (५) भविष्य, (६) उपसंहार

मानव-मस्तिष्क सदैव जीवन के विकास के लिए नैसर्गिक-प्रसाधनों की सहायता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से गतिशील और क्रियाशील रहा है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि किस प्रकार उसके प्रकृति के उलझे हुए वातावरण पर विजय प्राप्त की और फिर अपने निर्वाह-हेतु नियम आदि बनाये। इसके पश्चात् भी जब उसे अपने अस्तित्व का ज्ञान हुआ, तब किस प्रकार धर्म, दर्शन, कला तथा शिष्टाचार आदि क्षेत्रों को उसने चुना? इस रूप में विश्वविख्यात रोम, यूनान एवं मिस्र की संस्कृतियों के साथ भारतीय संस्कृति का नाम भी सदैव भूतल पर अमर रहेगा, जिसने विश्व-मानव को वेदों की अमर वाणी में व्याप्त जीवन के सम्पूर्ण रहस्यों और तथ्यों को प्रदान किया और सत्य के द्वार का निदर्शन किया। मिस्र के पिरामिड जिसकी निर्माण कला के आगे धूमिल दीख पड़ते हैं, रोम और यूनान का जीवन-दर्शन उथला प्रतीत होता है। इस देव-संस्कृति के समक्ष सदैव विश्व की आत्मा झुकी रही है। इसी संस्कृति के अमर गायक रामकृष्ण परमहंस और स्व० बापू के चरित्र आज भी भूतल पर अनुकरण के विषय बने हैं। भला कौन इनके गुणों की भूरि-भूरि प्रशंसा करके अपने को धन्य नहीं समझता। कौन इसे अपनाकर कृतकृत्य नहीं होता। यद्यपि आज भारत पाश्चात्य संस्कृति और सभ्यता से कुछ प्रभावित दीख पड़ता है; फिर भी, भारतीय संस्कृति की प्रकाशमयी किरणें अब भी विश्व-जिज्ञासुओं को, कलाकारों और वैज्ञानिकों को उसके उद्गम-बिन्दु का संकेत कर रही हैं। यह इसी पुण्यमयी संस्कृति का गौरव है और यही हमारी अक्षय निधि है।

'संस्कृति' शब्द का सम्बन्ध 'संस्कार' शब्द से है, तभी तो परम्परानुसार जीवनयापन के विविध पहलू पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलते आते हैं। यद्यपि बाह्य जीवन समय की परिस्थितियों से बदल जाता है, लेकिन संस्कृति की अन्तः सलिला चिरन्तन वेग से प्रवाहित होती रहती है। पश्चिम में इसी के लिए 'कल्चर' (Culture) शब्द का प्रयोग किया जाता है। यों तो विश्व के विभिन्न राष्ट्रों की अपनी-अपनी पृथक् संस्कृति होती है, फिर भी कोई एक ऐसा अदृश्य तत्त्व अवश्य विद्यमान रहता है, जो सम्पूर्ण मानव-जाति को एक सूत्र में पिरोये रखता है। यही जीवन की नैसर्गिकता भारतीय संस्कृति की सर्वोपरि विशेषता है। प्रत्येक देश की संस्कृति के दो रूप होते हैं—एक वह, जिसके अन्तर्गत सम्पूर्ण देशवासियों के जीवन-यापन, संस्कार और विधि-निषेध की चर्चा होती है और दूसरा वह, जिसका क्षेत्र प्रथम की अपेक्षा कुछ सीमित होता है किन्तु अपने आप में पूर्ण होता है। इसके अन्तर्गत आंचलिक संस्कृति को लिया जाता है।

सामान्यतः संस्कृति और सभ्यता (Civilization) मिलते-जुलते से ही दीख पड़ते हैं, परन्तु तत्वतः दोनों में भेद है। एक मानवीय आत्मा का भावी संतति पर अदृश्य प्रभाव है और दूसरा जीवन में भौतिक परिस्थितियों से हुए क्षणिक परिवर्तन का प्रतीक। यही कारण है कि विश्व-संस्कृति आज भी अक्षुण्ण है, लेकिन विश्व-सभ्यता हवा के झोंकों के साथ रूप बदलती रही है। एक आत्मा का सौजन्य है तो दूसरा ऊपर की चटक मात्र। एक की सीमा में धर्म, दर्शन, साहित्य-कला, संस्कार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सभी आ जाते हैं जबकि द्वितीय में रहन-सहन के विविध प्रयोग और स्तर ही आ पाते हैं। एक जीवन में अदृश्य प्रक्षेपण है और दूसरा अनुकरण के प्रयास का परिणाम।

संस्कृति और परम्पराओं में गहरा सम्बन्ध होता है। ये परम्पराएँ ही जीवन का अभिन्न अंग बनकर संस्कृति की पोषक हो जाती हैं। सभी जातियों और धर्मों की अलग-अलग परम्पराएँ होती हैं; इसी से उनकी संस्कृति का रूप भी परस्पर बहुधा भिन्न ही रहता है। भारतीय संस्कृति युग-युग से अनेक देशी-विदेशी परम्पराओं से प्रभावित होती रही है, फिर भी इसका रूप अपना विशेष अस्तित्व और महत्त्व रखता है।

विश्व-मानव के सांस्कृतिक उत्थान में युगों के पश्चात् भी भारतीय-संस्कृति अपने रूप-यौवन और गुणों के कारण पृथक् ही दीख पड़ती है। उसकी अपनी ऐसी विशेषतायें हैं, जिनके आगे झुकने में विश्व गौरवान्वित होता है। क्या ब्रिटेन और क्या रूस, क्या जर्मनी और क्या अमेरिका सभी उसके समक्ष अवनत हैं। चूँकि भारतीय जीवन की प्रमुख धुरी धर्म है, जो अपने व्यापक अर्थ में सांसारिक आचार-विचार-ज्ञान-पिपासा, गुण-ग्राहिता, कर्त्तव्य-परायणता और सत्यानुसरण आदि सभी गुणों को समेट लेता है। 'धर्म' का आशय 'धारण करने' से है और धारण उसी को किया जाता है, जो अच्छा हो, ग्राह्य हो। इसीलिए गुणों का ग्रहण हमारी संस्कृति की प्रथम विशेषता है। भारतीय दर्शन इस बात का परिचायक है कि किस प्रकार ब्रह्म-विद्या की प्राप्ति में निमग्न ऋषि-मुनि प्रकृति से अनेक प्रेरणायें लेते थे। मानव ब्रह्म का अंश है, अतः अपने अंशों में विलीन हो जाना तथा साधना से उसके गुणों को पा जाना ही मानव-जीवन का मूल प्रयोजन है। हमारे ज्ञान, कर्म और भक्ति तीनों ही उपासना-पंथ इसका जयघोष करते सुने जाते हैं। सदैव सदाचरण करना, हिंसा न करना, सत्यवादी होना, स्वार्थी न होना, अतिथि-सत्कार आदि बातें इसके लिए अपेक्षित हैं। ये सभी भारतीय संस्कृति की विशेषतायें हैं। हमारे यहाँ लौकिक और आध्यात्मिक पक्षों की अलग-अलग मीमांसा की गई है और लौकिक पक्ष को आध्यात्मिक उन्नति का साधन बतलाया गया है।

भारतीय मनीषियों ने जीवनयापन के लिए चार आश्रमों की व्यवस्था की, वहाँ लौकिक ज़ीवन और समाज को सुसंचालित करने के लिए चार वर्णों की भी स्थापना की। सभी के पृथक-पृथक नियम बनाये। उनके अनुसार चलने पर न हम किसी मुसीबत में उलझ पाते हैं और न जीवन के प्रति निराश ही हो पाते हैं। इसके विपरीत शनैः शनैः हमारी अलौकिक उपलब्धि भी सहज होती जाती है। अनेक दैवी गुण—विनम्रता, क्षमा, न्यायप्रियता आदि उदित होने लगते हैं। हम 'नर से नारायण' तक हो जाते हैं। कभी लक्ष्यहीन होकर इधर-उधर नहीं भटक पाते। अतः ब्रह्मोन्मुख जीवन की अन्तः प्रेरणा भारतीय संस्कृति की अपनी विशेषता है। इसी प्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र चारों वर्णों की व्यवस्था भी हमारे सामाजिक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ढाँचे को व्यवस्थित रखती है। इसमें किसी के प्रति हेय भावना नहीं है, बल्कि अपने कर्त्तव्य-पालन और निर्वाह की भूमिका ही प्रमुख है।

निष्काम-कर्म की भावना का प्रसार तो भारतीय संस्कृति की अभूतपूर्व देन है। इसका महत्त्व व्यावहारिक पक्ष में ही नहीं, अलौकिक पक्ष में भी उतना ही है। फिर, हमारे यहाँ लोक-पक्ष को भी अलौकिक प्राप्ति के सहायक के रूप में ही ग्रहण किया गया है। गीता के 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्' तथा रामायण के 'कर्म प्रधान विश्व करि राखा' वाक्य इसी तथ्य के द्योतक हैं। निदान फल की इच्छा ही तो समग्र दुःखों की जननी है। निष्काम-कर्म करने से किसी वस्तु में हमारी आसक्ति नहीं होती, जिसके कारण वस्तुतः दुःख और सुख की अनुभूति होती है। इसके विपरीत कर्तव्य-पालन और निर्वाह ही हमारा लक्ष्य बन जाता है। कर्म की यही कुशलता है और इसी को योग कहा गया है—'योगः कर्मसु कौशलम्'। टाटा ने इसी बात को 'वर्क इज वारशिप' कहकर व्यक्त किया है। इस प्रकार भारतीय संस्कृति हमारे लौकिक और पारलौकिक दोनों गन्तव्यों को बनाने में सहायक होती है।

जीवन में संयम और नियम के परिपालन की विशेषता भी भारतीय संस्कृति की अपनी गरिमा है। इसके लिए त्याग अपेक्षित है। राम का राज्य-त्याग, गौतम बुद्ध का गृहस्थ-त्याग और आधुनिक युग में भी स्व० बापू का सर्वस्व त्याग विश्व-संस्कृति के अनूठे आदर्श हैं। इसी से भारतीय जीवन में कृत्रिमत्ता का अभाव देखा जाता है। प्रकृति के अनुरूप जीवन का स्वरूप यहाँ की विशेषता है।

लोक-जीवन में अनेक त्यौहारों एवं उत्सवों का आयोजन और उनमें सामूहिक आनन्द और हर्ष की अभिव्यक्ति यहाँ की भूमि की अपनी सुन्दरता है। पूरे वर्ष भर कोई-न-कोई तीज-त्यौहार चलते ही रहते हैं। किसी का यदि धार्मिक पहलू होता है तो किसी का सामाजिक। यहाँ का लोक-साहित्य इस दृष्टि से बहुत अधिक सम्पन्न है। रीति-रिवाजों का सौन्दर्य तो विश्व के लिए जैसे अनुकरणीय ही है। जिस प्रकार दशहरा, दीपावली, होली और श्रावणी आदि त्यौहारों का विशेष सांस्कृतिक महत्त्व है, वैसे ही जन्म से लेकर मृत्यु तक के षोडस् संस्कार भी अपना अलग आकर्षण रखते हैं। सम्पूर्ण भारत की यह सांस्कृतिक एकता अनूठी है।

इनके अतिरिक्त भाषा, साहित्य और कला की दृष्टि से भी भारतीय संस्कृति का अपना विशिष्ट महत्त्व है। जिस देव-वाणी संस्कृत में वेदों की रचना हुई, विश्व उसके आगे आज भी झुकता है। उपनिषद् की व्याख्याएँ आज भी विश्व-मानव के ज्ञान-परिज्ञान की प्रेरणाएँ हैं। भारत जैसे बहुभाषा-भाषी देश में भी भाषागत ऐक्य देखने को मिलता है और इसका उदाहरण राष्ट्र-भाषा हिन्दी है। हिन्दी को किसी-न-किसी रूप में सभी देशवासी भली प्रकार समझ लेते हैं।

मध्यकालीन कला और साहित्य तो भारतीय संस्कृति की अनुपम देन है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अजन्ता-एलोरा की चित्रकला विश्व के कलाकारों की साधना का विषय बनी है। खुजराहो के मन्दिर, दक्षिण-भारत के अनेक मठ, जगन्नाथपुरी से मन्दिर की चित्रकला, प्रणय का साकार रूप ताजमहल वास्तुकला की दृष्टि से दर्शनीय हैं। सूर, कबीर, तुलसी और मीरा का साहित्य विश्व की गरिमा है। आत्मा-परमात्मा के मधुर प्रतीकों की रूपमयी परिकल्पना से भारतीय साहित्य आपूरित है।

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भी भारतीय संस्कृति का योगदान अनूठा ही रहा है। अग्निबाण, पुष्पक-विमान, स्वर्गारोहण के साधन आदि बातें और वस्तुएँ आज के वैज्ञानिक के लिए पहेली बनी हैं। आज हम वायुयान में बैठ सकते हैं, स्पुतनिक से अन्तरिक्ष की यात्रा कर सकते हैं, लेकिन पुष्पक-विमान का माधुर्य पाना असम्भव ही है। रावण के यहाँ पवन झाड़ लगाता था, मृत्यु पलंग से बँधी सिर धुनती रहती थी, समुद्र मणियों के उपहार लाता था, महाभारत में महाराज धृतराष्ट्र अन्धे होने पर भी सम्पूर्ण कुरुक्षेत्र की मीलों दूर बैठकर भी देख सके थे, आखिर ये सब चीजें भारतीय संस्कृति के अमर ज्ञान की परिचायक हैं। भारतीय साहित्य और ज्ञान के आगे पश्चिम के विविधवाद और आज का भौतिक विज्ञान भला ठहर ही कहाँ पाता है।

इन सब विशेषताओं से भी ऊपर समन्वय की भावना भारतीय संस्कृति की विभूति है। यहाँ के बहुदेववाद, आस्तिकता और नास्तिकता, शैव और शाक्त, ज्ञान और भक्ति तथा निराकार और साकार सभी उपासना-पद्धतियों में एक प्रकार का समन्वय देखा जाता है। सदाचार और आशावाद हमारी संस्कृति का मेरुदण्ड है। साथ ही भाग्यवाद और पुनर्जन्म में आस्था यहाँ के प्रमुख सांस्कृतिक तत्त्व हैं। व्यक्ति अपने कर्मानुसार फल का भोक्ता बनता है। इसीलिए हमारे यहाँ लोक-परलोक दोनों का अपना महत्त्व है और इसी से लोक-परलोक की आधार-भूमि बन जाता है। परस्पर भेद-भाव का त्याग और विश्व-बन्धुत्व की भावना का प्रसार भारतीय संस्कृति की विश्व को महान् देन रही है—'उदार चरितानाम् वसुधैव कुटुम्बकम्'। यहाँ सुदृढ़ पारिवारिक योजना भी सांस्कृतिक दृष्टि से अलग आकर्षण रखती है। माता, पिता और गुरु की सेवा का आदेश श्रुतियों द्वारा दिया गया है—'मातृ देवो भव। पितृ देवो भव। आचार्य देवो भव। अतिथि देवो भव।' नारी को गृहिणी कहकर तो सम्मानित किया ही गया है, बल्कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' कहकर उसके गौरव को भी बढ़ाया गया है। अहिंसा और सत्य हमारे यहाँ जीवन-यापन के बहुत बड़े आधार माने गये हैं—'अहिंसा परमो धर्मः। सत्यमेव नानृतम्।' इसी प्रकार 'सत्यं शिवं सुन्दरं' तथा 'सादा जीवन उच्च विचार' के सिद्धान्त भारतीय जीवन और संस्कृति के अनूठे स्रोत हैं।

निष्कर्ष यह है कि भारतीय संस्कृति का गौरव अक्षुण्ण है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसका योगदान सचमुच बिम्ब-संस्कृति के लिए प्रेरणा का आधार बना है। अनगिन अभारतीय विदेशी तत्व उसकी ज्योति को धूमिल नहीं बना सके हैं। क्या

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भाषा, क्या त्यौहार, क्या रीति-रिवाज और क्या दर्शन तथा लौकिक दृष्टिकोण सभी दृष्टियों से इसमें राष्ट्रीय एकता की भावना परिव्याप्त है। संसार की कोई संस्कृति इस रूप में भारतीय संस्कृति से टक्कर नहीं ले सकती। उसकी समरसता, उसकी समन्वयात्मकता, सूक्ष्म विश्लेषण की विशेषता, संयम की महत्ता, ज्ञान की गम्भीरता और लोक-परलोक की अनिवार्यता, खान-पान और रहन-सहन, भाषा, कला और साहित्य तथा दर्शन सभी बातें विश्व में कहीं नहीं मिलतीं। इसी के आलोक से आज धरा आलोकमयी हो रही है। भारत का ही नहीं, विश्व का कल्याण भी अब निश्चय ही इसी के अनुकरण और अनुसरण में सम्भव है। अतः हमारा भी कर्त्तव्य है कि इसी आधार को अपनाकर अपनी सर्वतोन्मुखी उन्नति में जुट जायँ तभी हमारा और देश का भविष्य उज्ज्वल हो सकेगा।

९. तुलसी की लोकप्रियता

अथवा

मेरा प्रिय कवि अथवा राष्ट्र-निर्माण में साहित्यकार का योगदान

रूपरेखा—

(१) प्रस्तावना, (२) तुलसी और उनका युग, (३) महाकवि एवं सुधारक, (४) 'रामचरित मानस' तथा 'विनय-पत्रिका,' (५) समन्वयवादी प्रवृत्ति और युग-प्रतिनिधित्व (६) उपसंहार।

प्रत्येक युग में मानव-हृदय अपने काव्य या साहित्य में ही आत्मशान्ति के मूल को खोजता रहा है। उसी में उसे अपनी आशा-आकांक्षाओं का समुज्ज्वल भविष्य मधुरिम रश्मियाँ छिटकाता मिला है। इसीलिए तो उसका इतना महत्त्व है। कवि या साहित्यकार अपने युग का निर्माता, द्रष्टा और भविष्य का निर्देशक होता है। उसकी लोकप्रियता का एकमात्र यही आधार है कि वह अपने युग की जनता के अन्तश का गहनता से अध्ययन कर, बीते अतीत के सहारे भावी-निर्माण और वर्तमान के उन्नयन का पथ-प्रशस्त करे। गोस्वामी तुलसीदास जी ने यही किया। जिस युग में उनका अवतरण हुआ, वह भारतीय इतिहास में सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक क्रान्ति का युग था। विशेषतः हिन्दू-जाति की अवस्था अत्यन्त शोचनीय थी। मुसलमानों के अनाचार से मानवता चीख रही थी, लेकिन उसके रक्षार्थ हिन्दुओं में शौर्य ही नहीं रह गया था। उनके सामने उनके देव-मन्दिरों को ढहाया जाता, देव-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रतिमाओं को खण्डित किया जाता तथा धर्म-ग्रन्थों को जलाया जाता एवं पद-दलित किया जाता था। फिर भी, दीन हिन्दू मौन बनकर इस विष के प्याले को पी रहे थे। ऐसे असमय में तुलसीदास जी ने हिन्दू-जाति की रक्षा के निमित्त चरित्र का आधार प्रदान किया, जिसे पाकर उसके जर्जर-प्राणों में प्राण-शक्ति का संचरण हो सका और भारतीय संस्कृति तथा समाज पतन एवं मरण के कगार पर पहुँचकर भी सुरक्षित रह सके।

साहित्यकार समाज का निर्माता होता है। साहित्यकार समाज का प्रतिबिम्ब अंकित ही नहीं करता, वरन् भविष्य की सम्भावनाओं का संकेत करता है। तुलसी ने इसे सामने रखकर काव्य रचना की यही कारण है कि आज का भारतीय समाज तुलसी निर्मित समाज है।

तुलसीदास का व्यक्तित्व न केवल एक कवि या महाकवि का ही रहा, बल्कि सच्चे अर्थों में उन्होंने समाज का नेतृत्व भी किया। 'रामचरित मानस' उनके काव्य, दर्शन, व्यवहार सभी दृष्टियों से अत्यन्त सफल महाकाव्य है। उसी प्रकार उनके अन्य ग्रन्थ भी भारतीय साधना और संस्कृति के प्रतीक हैं। 'विनय-पत्रिका' दास-भक्त की प्रभु के चरणों में भेजी गयी विनय की पाती है। 'मानस' जहाँ पंचम वेद है, वहाँ 'पत्रिका' भक्त-हृदय का सजीव किन्तु अनूठा विश्लेषण है। जहाँ 'मानस' में भारतीय साधना के मार्ग-त्रय—ज्ञान, भक्ति और कर्म का पूर्ण समन्वित रूप अंकित हुआ है, वहाँ विनय-पत्रिका भक्तों की हृदय-माला है। 'मानस' की अक्षयकीर्ति में उनका अधिक सहयोग रहा है। इसी ने भारत के टूटते भाग्य की रक्षा कर देश के गौरव को अमर बनाये रखा। सच है—'भारी भवसागर को उतारतो कवन पार, जो पै यह रामायण तुलसी न गवातो'।

महाकाव्य की दृष्टि से तो 'मानस' पूर्ण सफल है ही, साथ ही दर्शन की उलझी गुत्थियों का जो इसमें अत्यन्त सरल ढङ्ग से विश्लेषण किया गया है, वह अनूठा है। सम्पूर्ण वेदान्त जैसे यहाँ सरलीकृत हो गया है। यद्यपि इसमें अयोध्या-पति महाराज दशरथ के पुत्र श्री रामचन्द्रजी की जीवन-गाथा का ही चित्रण है, लेकिन वह इस रूप में किया गया है कि लोक-मानस को सदा उसमें गंगा जैसी पावनता, सूर्य जैसा तेज और भोर की प्रकृति जैसा मधुर आनन्द मिलता है। जीवन-यापन की वेदानुकूल रीति का यहाँ स्पष्ट विवेचन है। सचमुच यह वेद-पुराणों का सार-संचयन ही है—'नाना पुराण निगमागम सम्मतम्'। यह जितनी किसी ज्ञानी तथा दर्शनवेत्ता के लिए उपादेय है, उससे कहीं अधिक जन-जीवन को गति देने की उसमें अनूठी सामर्थ्य है। यही कारण है कि आज प्रत्येक हिन्दू-गृह में 'मानस' की पूजा होती है। स्थान-स्थान पर आये दिन अखण्ड पाठ होते हैं और गतवर्ष मानस चतुःशती आयोजन भारत में ही नहीं, विश्व-भर में बड़ी लगन से समायोजित किया गया। श्रीराम की कीर्ति और भणैंती होने पर भी वह 'सुरसरि सम सबकरि हित होई'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के गौरव से सम्पन्न है। यही कारण है कि यह महाग्रन्थ जहाँ महाकवि तुलसी की आत्म-शान्ति और आन्तरिक सुख का आधार है, वहाँ 'पर-सुखाय' और 'पर-कल्याण' की परम भावना भी इसमें परिव्याप्त है। झोंपड़ी से लेकर राज-प्रासादों तक और शिक्षित-अशिक्षित सभी के द्वारा नमस्य है। यदि सामान्य जीवों के लिए व्यवहार की कुन्चिका और निर्देशिका है, तो दर्शनशास्त्रियों के लिए ज्ञान का अथाह सागर।

जीवन की व्यावहारिक दृष्टि से 'मानस' में सभी सम्भव परिस्थितियों का समावेश है। आखिर उसके चरित-नायक राम मानव ही तो हैं। सामान्य जीवन की समता-विषमता, गुण-अवगुण सभी कुछ उनमें दृष्टव्य हैं। तभी वे इतने ग्राह्य बन सके हैं। हमारी दैनिक-चर्य्या की प्राय: सभी समस्याओं का समाधान उनमें मिल जाता है। सच कहा जाय तो 'मानस' मनुष्य को मनुष्य बनाने का सर्वोत्कृष्ट सरलतम साधन है। व्यावहारिक जीवन का कोई भी तो ऐसा अंग और क्षेत्र नहीं, जिसका स्पर्श इसमें न किया गया हो। लौकिक जीवन में देवत्व की झांकी कराने वाला ऐसा मानवीय विश्लेषण विश्व-साहित्य में खोजने पर भी न मिल सकेगा। पिता का पुत्र के प्रति, भाई का भाई के प्रति, पुत्र का माता-पिता के प्रति, गुरु का शिष्य के प्रति, सेवक का स्वामी के प्रति, पति का पत्नी के प्रति, राजा का प्रजा के प्रति और गृहस्थी का अतिथि के प्रति क्या कर्तव्य है, इसका स्पप्ट निरूपण 'मानस' में ही है। मानव जीवन का क्या धर्म है, लोक-परलोक का क्या अस्तित्व है, इन बातों की जो विवेचना यहाँ मिलती है, वह अन्यत्र नहीं। उसमें जहाँ काव्यशास्त्र का विवेचन है, वहाँ लोक-व्यवहार की भी प्रधानता है। जहाँ गृहस्थ की महत्ता का प्रतिपादन है, वहाँ वैराग्य के रहस्य का भी उद्घाटन है। तात्पर्य यह है कि सर्वत्र उसमें एक सन्तुलन है, समन्वय है दो विरोधी तत्त्वों का। खण्डन-मण्डन की प्रवृत्ति का उसमें सर्वथा अभाव है। हाँ, कलियुगी पाखण्डियों का उत्तरकाण्ड में अच्छा विश्लेषण किया गया है। कर्म-अकर्म की झाँकी उसमें अनुकरणीय है। इस प्रकार 'मानस' मानव-मात्र के लिए एक अखण्ड सहारा है जिसके सहारे वह लोक-परलोक दोनों निर्माण कर सकता है।

इसी प्रकार गोस्वामीजी की 'विनय-पत्रिका' जहाँ दर्शन और सिद्धान्त का अकाट्य काव्य-ग्रन्थ है, वहाँ दास्य-भक्ति में बेजोड़ है। विनयी भक्त के हृदय का जैसा निष्कलुष और सहज विश्लेषण यहाँ मिलता है, वैसा अन्यत्र नहीं। भक्ति का तरल-सागर इसमें तरंगायित होता मिलता है। 'मानस' जहाँ अपनी समन्वयात्मक दृष्टि से दर्शन और आचरण की अनूठी कृति है, वहाँ इससे भी परे 'पत्रिका' उनके व्यक्तित्वपरक भक्त का अच्छा विश्लेषण है। लेकिन उनके व्यक्तित्व में समष्टि घुल-मिल जाती है, यही उसकी गरिमा है। साहित्यिक दृष्टि से भी विनय-पत्रिका का गौरव अक्षुण्ण है।

साहित्यिक सौन्दर्य की दृष्टि से भी तुलसी के इन दोनों परम काव्य-ग्रन्थों का सौजन्य अनूठा है। इनमें पूर्ववर्ती साहित्यिक परम्पराओं और शैलियों को जहाँ ग्रहण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किया गया है, वहाँ तुलसी के व्यक्तित्व ने उनके रूप में चार चाँद भी लगा दिये हैं। यों 'मानस' तो प्रबन्ध-कोटि महाकाव्य है ही, 'पत्रिका' मुक्तक के साथ प्रबन्ध-गरिमा से भी आपूरित है। छन्दों की दृष्टि से भी आपने सभी नूतन-पुरातन छन्दों को अपनाया है और भाषा के मध्ययुगीन दोनों ही रूपों—अवधी तथा व्रज, पर उनका अनूठा अधिकार स्पष्ट है। जहाँ वे दर्शन और लोक-व्यवहार के मर्मज्ञ रहे हैं, वहाँ काव्यशास्त्र के भी उद्‌भट विद्वान् थे। ये सभी विशेषताएँ उनके काव्य-ग्रन्थों में मिलती हैं। भारतीय संस्कृति के उद्‌बोधक और उद्‌घोषक के रूप में वे सर्वोच्च आसन पर आसीन हैं। रस की दृष्टि से उनका अधिकार नव रसों पर रहा है और 'मानस' उसका अकाट्य प्रमाण है। सर्वत्र रस की निरूपण में भी उन्होंने अपने समन्वय को नहीं भुलाया है। लोकमत और साधुमत का सुन्दर समन्वय उनकी काव्य-गरिमा ही है। शृङ्गार-विवेचन में भी लोक-मत को उन्होंने विस्मृत नहीं किया है, जिससे उनका व्यक्तित्व सम्पूर्ण भक्तिकाल में पृथक् ही दीख पड़ता है। न वहाँ शब्द-लालित्य का अभाव है और न अलंकारों की कमी। राम का चरित्र ऐतिहासिक मानव-मात्र का ही चरित्र नहीं है, बल्कि गोस्वामीजी की कला ने उन्हें युग का प्रतिनिधि बनाकर सभी के लिए अनुकरणीय बना दिया है। वे शक्ति, शील और सौन्दर्य से युक्त हैं। भक्त-वत्सल ही नहीं, दुष्ट-दलनकारी भी हैं। उनके आदर्श और सिद्धान्त भारतीय जीवन और संस्कृति के अमर परिचायक हैं। इस प्रकार काव्य और कला, जीवन और व्यवहार, दर्शन और सिद्धान्त सभी दृष्टियों से उनके काव्य का महत्त्व अन्यतम है, अनूठा है।

निष्कर्ष यह है कि गोस्वामी तुलसीदास जैसा व्यक्तित्व लोक-जीवन और साहित्यिक क्षेत्र में अब तक पैदा नहीं हुआ। भारतीय संस्कृति और दर्शन, कला और साहित्य, लोक और परलोक तथा गृहस्थ और संन्यास का जैसा सांगोपांग समन्वय और विश्लेषण उन्होंने अपने काव्य-ग्रन्थों में किया, वह भारत की अक्षुण्ण सम्पदा है। साधन के क्षेत्र में जहाँ अद्वैत का अभाव है, वहाँ न तो भक्ति और ज्ञान को भुलाया है और न पंच-देवोपासना को विस्मृत किया है। लोकमत, साधुमत और वर्णाश्रम धर्म का उचित और सुन्दर समन्वय ही उनके समग्र काव्य-साहित्य की धुरी है। 'ज्ञानी' भक्त, कवि और समाज-सुधारक आदि सभी गुण उनके व्यक्तित्व में निहित थे। वे सच्चे युग-प्रतिनिधि साहित्यकार थे, जीवन-दृष्टा थे। उनका काव्य आज भी विश्व-मानव को दिशा दे रहा है। कवि का कथन सत्य है कि 'कविता करके तुलसी न लसे, कविता लसी या तुलसी की कला'। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व भारतीयों की ही नहीं, विश्व की अक्षुण्ण निधि हैं। यही उनकी लोकप्रियता के प्रमुख आधार और स्तम्भ हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१०. हिन्दी और राष्ट्रभाषा

अथवा

हिन्दी और राष्ट्रीय एकता

आज हम पूर्ण स्वतन्त्र हैं। चिरयुगीन दासता की बेड़ियाँ अब कट चुकी हैं। अपने देश की उन्नति-अवनति का उत्तरदायित्व अब हमारे ऊपर है। हम ही अपने और अपने राष्ट्र के निर्माता तथा भाग्य विधेयक एवं विनाशक है। देश को प्रगति-पथ पर लाने के लिए यह आवश्यक है कि हम सभी देशवासी एक-दूसरे के अत्यधिक निकट आकर परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करें, मिलकर एक हो जायें और अपने-पराये की भावना का परित्याग कर दें। इसके लिए विचारों के परस्पर आदान-प्रदान की आवश्यकता है, तभी हम एक-दूसरे को भली प्रकार समझ सकेंगे। भाषा इस विचार-विनिमय का ही एक प्रसाधन है। लेकिन भारत जैसे बहु-भाषा भाषी देश में किस भाषा को शीर्ष पर लाकर सभी के विचार-प्रतिपादन का माध्यम बनाया जाय, यह प्रश्न ही हमारे समक्ष राष्ट्रभाषा के प्रश्न को प्रस्तुत करता है। मानव-जीवन की अभिव्यक्ति के लिए जैसे भाषा अनिवार्य है, वैसे ही राष्ट्र के लिए राष्ट्रभाषा का महत्त्व असंदिग्ध है। आज भारत के समक्ष यह बहुत बड़ी समस्या है, जिसका अनेक बार हल खोजने पर भी व्यावहारिक सत्य नहीं मिल पाया है।

भाषा-विज्ञान की दृष्टि से भाषा के तीन रूप हमारे समक्ष आते हैं—एक, वह जिसका प्रयोग कोई विशिष्ट जाति या अत्यन्त लघु समाज करता है, इसे ही बोली (Dialect) कहा जाता है। दूसरा, भाषा का वह रूप है, जिसका क्षेत्र प्रथम की अपेक्षा अधिक व्यापक होता है और जो एक अंचल विशेष से बढ़कर पूरे प्रान्त की अभिव्यक्ति का माध्यम बन जाता है, इसे विभाषा कहा जाता है। प्रथम का कोई साहित्य नहीं होता, किन्तु इसका सुरक्षित साहित्य होता है। भाषा का तीसरा रूप वह है, जो सम्पूर्ण देश में बोली और समझी जाती है। यही वस्तुतः राष्ट्रभाषा है। इसी को टकसाली भाषा कहा जाता है। यह समग्र राष्ट्र का प्रतितिधित्व करती है। अतः भाषा का वह रूप, जिसे समूचे राष्ट्रवासी बोलें, समझें और व्यवहार में लायें, राष्ट्रभाषा कहलाता है। राष्ट्रभाषा के इस स्वरूप की स्थापना राष्ट्रोत्थान एवं बहुमुखी विकास के लिए अपेक्षित ही नहीं, अनिवार्य भी है। राष्ट्रभाषा ही राष्ट्र की आत्मा को शक्तिशाली बनाती है। वह शैशव से ही यदि समूचे राष्ट्र में प्रयुक्त होने लगती है, तो बच्चों के विकास की अधिक सम्भावनाएँ बन जाती हैं और कहीं भी राष्ट्र में जायें, नौकरी करने आदि में कोई परेशानी अनुभव नहीं होती। यह राष्ट्रभाषा सच्चे अर्थों में देश के स्वतन्त्र अस्तित्व की प्रतीक होती है। देश की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विचारधाराओं की वह स्रोतवाहिनी होती है। उसके साहित्य में देश के जन-जीवन की झाँकी उतरती है, वहाँ की सभ्यता, संस्कृति, रीति-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रिवाज, रहन-सहन तथा खान-पान और विचारों का उसमें सम्पूर्ण लेखा-जोखा होता है। इसी से उसके साथ समग्र राष्ट्र का गठबन्धन होता है। यही कारण है कि विश्व के सभी स्वतन्त्र राष्ट्रों की अपनी-अपनी राष्ट्रभाषाएँ हैं। रूस की रूसी, चीन की चीनी, जापान की जापानी और ब्रिटेन की अंग्रेजी उनके ऐसे ही राष्ट्रीय गौरव की प्रतीक हैं।

राष्ट्रभाषा के पद पर कोई विभाषा ही आसीन होती है। जब वह अपनी भौगोलिक सीमाओं को तोड़कर समूचे राष्ट्र की व्यावहारिक भाषा बन जाती है, तभी इस संज्ञा को प्राप्त करती है। राष्ट्रभाषा के नाम में राष्ट्र के नाम की छाप और साम्य अपेक्षित है। हमारे यहाँ यह क्षमता मात्र हिन्दी में ही है और उसका स्पष्ट साम्य हिन्दुस्तान के साथ दर्शनीय है। अतः स्वतन्त्र भारत में इस समस्या का एकमात्र समाधान हिन्दी को अपनाकर ही किया जा सकता है। हर्ष का विषय है कि उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा और बिहार प्रान्तों की राज्य-सरकारें अपना सभी काम-काज हिन्दी में ही करने लगी हैं। यों वैधानिक रूप से भी इसे राष्ट्रभाषा घोषित कर दिया गया है, परन्तु व्यवहार में आज तक उसका प्रयोग नहीं हो पा रहा है।

हिन्दीतर अन्य भारतीय भाषाओं में से किसी को भी इस रूप में न तो ग्रहण किया जा सकता है और न ऐसा रूप ही प्रदान करना सम्भव है। ये या तो अपने प्रान्त तक ही सीमित हैं तथा भारत या हिन्दुस्तान नाम के साथ कोई साम्य नहीं रखती। राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन ने स्पष्टतः स्वीकार किया था कि मेरे लिए हिन्दी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है। इतना ही नहीं, उन्होंने यहाँ तक कहा कि हिन्दी धार्मिकता और राष्ट्रीयता के उत्थान की प्रतीक है। राष्ट्रभाषा के लिए यह आवश्यक है कि वह देश की संस्कृति, धर्म और दर्शन का पूर्ण प्रतिनिधित्व कर सके। संस्कृत की उत्तराधिकारिणी होने से हिन्दी को यह सौजन्य स्वतः ही प्राप्त हो जाता है। फिर, सर्वोपरि बात तो राष्ट्रभाषा के समूचे देश में समझने-बूझने को है। आज खड़ी बोली के रूप में हिन्दी ही ऐसी देशव्यापी भाषा है, जो उत्तर से सुदूर दक्षिण तक और पूर्व से पश्चिम तक देश के कोने-कोने में प्रयुक्त होती है। यह ठीक है कि सुदूरपूर्व और दक्षिण में उसका हिन्दुस्तानी रूप ही अधिक प्रचलित है, लेकिन इससे क्या, वहाँ के निवासियों द्वारा इनका समझा जाना और बोला जाना ही इसकी व्यापकता और सर्वाधिक व्यावहारिकता का प्रतीक है। ग्वाला या चपरासी से लेकर बड़े-बड़े पूँजीपति, नेता, शिक्षाविद् और राष्ट्र नायक सभी इसका प्रयोग करते हैं। स्कूल-कालेज, बाजार, सिनेमा, रेलवे-स्टेशन और सार्वजनिक स्थान सर्वत्र हिन्दी का बहुलशः प्रयोग देखा जाता है। इसकी व्यापकता का इससे बढ़कर कौन-सा प्रमाण हो सकता है। इन आधारों पर हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुनः राष्ट्रभाषा का शब्द-भण्डार उतना व्यापक होना चाहिये कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को अभिव्यक्ति उसके माध्यग से सहज रूप में की जा सके। उसके पीछे अपना साहित्य हो, जिसे राष्ट्रीय गौरव की निधि कहा जा सके। ये दोनों ही गुण हिन्दी में विद्यमान है। उसके शब्द-भण्डार में जहाँ संस्कृत के तत्सम् और तद्भव रूप मिलते हैं, वहाँ देशज के शब्दों के अतिरिक्त अन्य प्रान्तीय और विदेशी भाषाओं के शब्द भी घुल-मिलकर जैसे हिन्दीकृत हो गये हैं। उसकी सरलता और सुगमता का तो यही प्रमाण है कि उसे सहज रूप में शीघ्रातिशीघ्र सीखा जा सकता है। वह जिस रूप में बोली जाती है, उसी रूप में लिखी भी जाती है। उसकी देवनागरी लिपि सरल, सुबोध और वैज्ञानिक है। हिन्दी की इन राष्ट्रव्यापी अनेक विशेषताओं के कारण ही डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने इसे राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया था। श्रीमती सरोजनी नायडू के शब्दों में 'हमारी कौमी जवान हिन्दी हो सकती है।' स्वयं महात्मा गाँधी इसी से हिन्दी सीखने की देशवासियों से न केवल प्रार्थना ही करते थे, वरन् उन्हें प्रेरित भी किया करते थे—"जैसे अंग्रेज अपनी मातृ भाषा अंग्रेजी ही बोलते हैं और सर्वथा उसे ही व्यवहार में लेते हैं, वैसे ही मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप हिन्दी को एक मातृभाषा बनाने का गौरव प्रदान करें।"

हिन्दी की इन विशेषताओं के कारण प्रजातन्त्र की स्थिति और भी अधिक सुदृढ़ हो सकेगी। जब सर्वत्र एक ही भाषा को लिखने-पढ़ने और व्यवहार में प्रयोग होगा, तो राष्ट्र की उन्नति सम्भव होगी। राष्ट्रीय एकता का इससे बढ़कर दूसरा आधार नहीं कहा जा सकता। शासन के कार्य में भी सरलता और सुविधा होगी। आज जो प्रान्तीय भाषाओं के झगड़े पनप रहे हैं और जिनके आधार पर देश की एकीभूत इकाई दिन-प्रतिदिन विघटित होती जा रही है, उस विघटन को भी इसके सहारे समूल नष्ट किया जा सकेगा। इन सभी कारणों से ही संविधान में उसे राष्ट्रभाषा के पद पर स्वीकार किया गया।

इतना होते हुए भी हिन्दी के विकास में अनेक विरोधी तत्व बाधक बन रहे हैं। सर्वप्रथम इन बाधक तत्वों में बड़े-बड़े अधिकारी और अफसर हैं जो स्वयं ब्रिटिश युग की उत्पत्ति रहे और अपनी सन्तान को भी उसी वातावरण में ढाल रहे हैं। फिर ऊँचे-ऊँचे सरकारी पदों पर होने के कारण उन्हें यह भी भय है कि यदि हिन्दी ही प्रयोग में राष्ट्रीय स्तर पर आ गई, तो उनकी नौकरी का क्या होगा ? ऐसे लोग जनता में भाषावाद और इस समस्या को उभारते रहते हैं और हिन्दी के प्रति घृणा व्यक्त करते हैं। अनेक मन्त्रीगण स्वयं तो देशी वेश-भूषा धारण करते हैं और बच्चों को अंग्रेजी स्कूल के वातावरण में ढालते हैं, उन्हीं का प्रभाव समाज के विविध वर्गों पर पड़ता है और हिन्दी के विकास में बाधा खड़ी होती है। सुदूर दक्षिण भारत के लोग हिन्दी का अत्यधिक विरोध करते हैं। इसका भी कारण उनका व्यक्तिगत स्वार्थ, क्योंकि ये लोग भी प्रारम्भ से अंग्रेजी ही सीखते हैं। लेकिन इन वैयक्तिक स्वार्थों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के कारण हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार न करने का कारण न तो उचित ही है और न ही तर्क संगत।

ऐसी विषम परिस्थिति में हमारा परम कर्त्तव्य है कि हम इन विरोधियों की सभी सम्भव आशंकाओं का निराकरण करें तथा उन्हें हिन्दी सिखायें। जब वे अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषा को प्रारम्भ से सीख सकते हैं, तो हिन्दी को क्यों नहीं सीख सकते। सरकार का भी इस सन्दर्भ में प्रयास करना अपेक्षित है। फिर, इसकी भी आवश्यकता है कि सभी ज्ञान-विज्ञान के सूत्रों में सर्वप्रथम हिन्दी शब्दावली का निर्माण और प्रयोग किया जाय। किन्तु इसके लिए सरलता, उच्चारण की सहजता तथा व्यावहारिकता को प्रधानता देना अपेक्षित है। हिन्दी के नाम पर शब्दों का संस्कृतीकरण उचित नहीं है। इसके लिए हमें अपने निजी स्वार्थों का परित्याग करना ही पड़ेगा। आज बंगला देश की क्रान्ति और उसकी सफलता का एकमात्र आधार वहां की राष्ट्रभाषा 'बंगला' ही थी। पाकिस्तान सरकार द्वारा उर्दू का लादा जाना वहाँ की जनता स्वीकार न कर सकी। 'आमार सोनार बांगला देश' उनका प्रसिद्ध गीत इसी तथ्य का द्योतक है ? अतः हम हिन्दी-भाषा-भाषियों का ही नहीं, समस्त भारतीयों का यह परम कर्तव्य है कि हिन्दी को अधिकाधिक व्यवहार में लायें और उसका प्रचार एवं प्रसार करें। प्रान्तीय सीमाओं को भूलकर राष्ट्र की समूची परिधि में स्वयं को राष्ट्र का कल्याण और उन्नयन सम्भव हो सकता है।

निष्कर्ष यह है कि प्रत्येक दृष्टि से हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा का गौरव प्रदान किया जा सकता है। समूचे भारत को भावात्मक सूत्र में बाँधने का प्रयास हिन्दी के अतिरिक्त अन्य कोई भारतीय भाषा नहीं कर सकती। भारतेन्दुजी की ये पंक्तियाँ इस दृष्टि से बड़ी सार्थक हैं—'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल'। हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानकर व्यवहार में लाना निःसन्देह एक सांस्कृतिक अनुष्ठान ही होगा। तभी भारत में भारती का जयघोष होगा और देश पुनः विश्व के आगे अपना मस्तक उठा सकेगा। भगवान से स्वर्गीय राष्ट्रकवि की वाणी में हमारी यही प्रार्थना है :—

"मानस-भवन में आर्यजन, जिसकी उतारें आरती।
भगवान् भारतवर्ष में गूँजे हमारी भारती।।
हो भव्य भावोद्भाविनी, वह भारती, हे सुरपते।
सीतापते, सीतापते। गीतामते, गीतामते।।"

(मैथिलीशरण गुप्त)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

११. दैनिक जीवन में विज्ञान

अथवा

विज्ञान और मानव-जीवन

परिस्थितियाँ मानव को सब कुछ सिखा देती हैं। इन्हीं के कारण उसे सागर की अतल गहराई में पहुँचकर मुक्ताओं को खोज लाने की प्रेरणा मिलती है, इन्हीं से उसे गिरि-कन्दराओं में मौन साधना-रत रहने का बल प्राप्त होता है और इन्हीं के प्रभाव से वह गगनचुम्बी पर्वत-चोटियों पर भी पहुँचने का साहस कर बैठता है। एक युग था जबकि वह प्रकृति के समक्ष अवनत बना रहता था। जड़ रूप में विविध पदार्थों की पूजा करता था। उनकी अप्रसन्नता से सदैव सशंकित बना रहता था। परन्तु आज प्रकृति उसकी अनुगामिनी बन गई है। न पवनदेव का उस पर अंकुश है, न वरुण का उसे भय है और न इन्द्र की आज उसे चिन्ता। प्रकृति का कण-कण जैसे विज्ञान का जयनाद कर रहा है। लगता है विज्ञान ही समूची प्रकृति का नियामक और नियोजक बन बैठा है। समग्र विश्व-जीवन और जगत उससे प्रभावित है। उसके नित्य नवीन आविष्कारों ने हमारे दैनिक जीवन मे अनूठी उथल-पुथल मचा दी है। यह सचमुच आज इतिहास का नूतन अध्याय बन गया है।

आधुनिक युग नित-नवीन वैज्ञानिक अनुसंधानों का युग है। चारों ओर विज्ञान की दुंदुभी ध्वनित हो रही है। कहीं लोग चन्द्र-लोक तक मानव के पहुँचने के प्रयासों और उसकी सफलता के बारे में सुनकर दंग हैं, तो कहीं स्पुतनिक की सहायता से अन्तरिक्ष की यात्रा में सफल मानव विज्ञान के समक्ष अवनत हैं। कहीं दैनिक-जीवन में समय के सदुपयोग के लिये अनेक यन्त्रों के प्रयोग से शत-शत मनुष्य इसके कृतज्ञ हैं तो कहीं चिकित्सा-क्षेत्र में भयंकर रोगों के सफल उपचारों को देखकर आश्चर्यचकित हैं। कौन ऐसा हैं जिसने आज विज्ञान की महत्ता के स्वीकार न किया हो ? देवता मानव के ज्ञान-विकास को देखकर भयभीत हो रहे हैं। जल, पवन, अग्नि और प्रकाश सभी शक्तियाँ आज उसके हाथ में हैं। विज्ञान ही जैसे सर्वोपरि सत्ता है। मानव-जाति आज इसकी चिरऋणी है। प्रकृति इसकी क्रीत-दासी है। दैनिक जीवन में उसके प्रयोगों ने आज मानव का रूप ही बदल दिया है।

हमारे दैनिक जीवन में सर्वप्रथम आवश्यकता भोजन की है। विविध प्रकार की खादों को तैयार करके विज्ञान ने बहुत-सी अनुपलब्ध वस्तुओं को हमारे लिए उपलब्ध बना दिया है। इनकी सहायता से हम पूरे वर्ष सभी प्रकार की तरकारियाँ प्राप्त कर लेते हैं। फसलों को कीड़ों से सुरक्षित रख पाते हैं। दूध का पाउडर एक देश से दूसरे देश में भेज दिया जाता है। ऐसे आलू भी तैयार किये गये हैं, जिनका स्वाद सेव जैसा मीठा है और जिन्हें उबालकर तथा बिना उबाले खाया जा सकता है। शीत-भण्डारों में अनेक खाद्य-पदार्थों को बहुत दिनों तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रेफ्रीजरेटर उसी का लघु रूप है, जिसे हम घरों में काम में लाते हैं। अनेक पौष्टिक तत्वों का खाद्य के रूप में निर्माण विज्ञान का ही आज वरदान है।

आजकल मनुष्यों में आये दिन नई-नई बीमारियाँ जन्म लेती दीख पड़ती हैं। यक्ष्मा, कैंसर आदि जैसे भयंकर रोग भी जन-सामान्य में अधिक संख्या में देखे जाते हैं। इन सभी का उचित उपचार विज्ञान ने खोज निकाला है। कोबाल्ट-किरणों से कैंसर को अन्दर ही अन्दर नष्ट किया जा सकता है। ऐक्स-रे की सहायता से शरीर के समस्त भीतरी विकारों को जाना जा सकता है। शल्य-चिकित्सा के प्रयोगों ने तो कमाल ही कर दिखाया है। मानव के दिल (Heart) तक का आपरेशन और अनेक आन्तरिक अंगों का परिवर्तन विज्ञान की अनुपम देनें हैं। संतति-निरोध के विविध प्रयोग तो आजकल बहुत ही सफल हो रहे हैं। इस प्रकार विज्ञान हमारे दैनिक जीवन का सचमुच विधाता बन रहा है—

आँख भी है बन गया और बन गया है कान।
आधुनिक युग का विधाता बन गया विज्ञान॥

शिक्षा के क्षेत्र में अन्धों की शिक्षा के सम्बन्ध में भला किसने कल्पना की थी? परन्तु आज विज्ञान के प्रभाव से वे चक्षु-प्राप्त व्यक्ति की भाँति लिख-पढ़ सकते हैं। मुद्रण-यन्त्र का आविष्कार करके हमारे ज्ञान की परिधि को विज्ञान ने अतीव विस्तार दे दिया है। जिन ज्ञानवर्धक विचारों के लिये हम एकत्रित होकर ही कुछ ग्रहण कर सकते थे, आज उन्हें पुस्तकाकार में विश्व के कोने-कोने में पहुँचाया जा सकता है। चित्रों की छपाई से शिक्षा को न केवल बच्चों के लिये ही सरल और सरस बनाया जाता है, बल्कि उसे शीघ्र ग्रहण करने के योग्य भी बनाया जाता है। सिनेमा शिक्षा के प्रसार और प्रचार में अत्यधिक सहायक होता है। विज्ञान ने आज हमें ऐसी मशीनों को भी दिया है, जिनकी सहायता से गुणा-भाग, जोड़-बाकी सभी कुछ हल करके रखा जाता है। विज्ञान के प्रसाद से जैसे शिक्षा के क्षेत्र में विश्व-मस्तिष्क एक हो गया है।

आवागमन और यातायात के क्षेत्र में तो विज्ञान ने जैसे युग ही बदल दिया है। एक युग था कि हमें यातायात में महीनों लगते थे, मार्ग में लुट जाने का अलग भय बना रहता था, परन्तु आज रेल, मोटर, वायुयान, जलयान आदि की सहायता से सैकड़ों मील की दूरी कुछ ही समय में तय कर ली जाती है। संसार हमारी सैर की क्रीड़ा-भूमि बन गया है। विश्व का इनके सहारे कोना-कोना छाना जा सकता है, भूतल की परिक्रमा की जा सकती है और गगन में विहगों की भाँति विचर सकते हैं। कम खर्च, समय की बचत और कार्य की सिद्धि तीनों ही लाभ आज सहज में प्राप्त हो जाते हैं। अनेक ग्रामीणों के लिये भले ही ये प्रसाधन कौतूहल के विषय हों, लेकिन इनकी उपादेयता दैनिक जीवन में उनसे छिपी नहीं है। बड़े बीहड़ जंगलों, पर्वत-प्रदेशों और नदियों के विकराल कलेजों को चीरते हुए हम क्षण भर में रेल की सहायता से एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँच जाते हैं। विज्ञान ने हमारी इन परेशानियों को सहज सुलभ बना दिया है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मनोरंजन का तो दैनिक जीवन में विशेष महत्व है। भोर से सन्ध्यापर्यन्त कार्य करते जब हम थक जाते हैं, तब मनोरंजन के साधन की खोज अनिवार्य हो जाती है। प्राचीन युग में लोग या तो संगीत अलापते थे या अपनी प्रिया के साथ हास-परिहास करते थे अथवा प्रकृति के सौन्दर्य को मौन निहारते और आनन्दित होते थे। परन्तु विज्ञान ने आज मनोरंजन में अनेक साधन जुटा दिये हैं। रेडियो-सैट को खोलते ही कमरे में संगीत का वातावरण गूँज जाता है, पायल की मधुर झंकार से मन प्रसन्न हो उठता है। कभी पावस में बाँसुरी पर मधुर मल्हार सुनते हुये प्रकृति का वैभव घर के आँगन में ही भरा दीख पड़ता है। इस क्षेत्र में टेलीविजन का योगदान हमें दंग कर देता है। अन्तरिक्ष में भ्रमण करते यात्रियों के चित्र अमेरिका की पृथ्वी पर इसी रूप में देखे गये हैं। सिनेमा का तो उदाहरण अनूठा है, कम व्यय और समय में पर्याप्त मनोरंजन। इनके अतिरिक्त अनेक वाद्य-यन्त्रों के आविष्कार विज्ञान की दैनिक जीवन के लिये अनूठी देन हैं।

दैनिक जीवन में बिजली के बहुलशः प्रयोग भला किससे छिपे हैं? बटन दबाते ही घोर अन्धकार में प्रकाश की किरणें फूट निकलती हैं। पंखे के चलते ही गर्मी का आतंक दूर हो जाता है। शीत-यन्त्र की सहायता के जैसे कक्ष को बरफ के समान शीतल रखा जा सकता है, वैसे ताप-यन्त्र से अग्नि के समान गरम और तापयुक्त बिजली की अँगीठी से खाना तैयार करते हैं, कपड़ों पर लोहा करते हैं और लिफ्ट की सहायता से ऊँची अट्टालिकाओं तक क्षणभर में पहुँच सकते हैं। सचमुच विज्ञान हमारा पद-पद पर पथ-प्रदर्शक बन गया है और नित्य सहचर भी।

प्रत्येक वस्तु के दो पहलू होते हैं—लाभकारी और हानिकारी। विज्ञान भी दैनिक जीवन में दोनों रूपों में प्रयुक्त हुआ है। जहाँ उसने हमारे दैनिक जीवन को सुलभ और सुखद बनाया, वहाँ वह उसके लिये अभिशाप भी बन गया है। तभी तो कहा है कि 'साइंस इज ए गुड सरवेण्ट बट ए बैड मास्टर'। मनुष्य मशीनों में काम करते-करते स्वयं मशीन हो गया है। समाज से हटकर वह व्यक्ति में ही सीमित होने लगा है। आलस्य उसके जीवन में भर गया है, साथ ही उनकी भोगोन्मयी प्रवृत्ति अधिक उभर आई है। उसका समय समाप्त होने से आत्महत्या जैसे जघन्य कृत्यों को करने में भी वह नहीं चूकता। बिजली इसमें उसका सहारा बनती है।

संलग्न

निष्कर्ष यह है कि विज्ञान के भले ही दोनों पहलू और उनके प्रभाव हमारे दैनिक जीवन में दर्शनीय हैं, फिर भी, उसने जो परिवर्तन किये हैं, वे निस्सन्देह आश्चर्यचकित कर देने वाले हैं। उसने मानव जीवन की दिशा को ही जैसे मोड़ दिया है। जीवन का कोई अन्तर्बाह्य क्षेत्र उसके प्रभाव से अछूता नहीं रहा है। हम पग-पग पर इनकी शरण लेते हैं। सचमुच आज का युग विज्ञान का युग है और वह हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग और सहचर है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१२. भारत की समृद्धि के साधन

अथवा

ग्रामीण जीवन का विकास

अथवा

राष्ट्रोन्नति के सोपान

रूपरेखा—

(१) प्रस्तावना, (२) साधन—मातृभाषा एवं राष्ट्रीय स्तर पर उसी के सहारे शिक्षा का प्रसार, सदाचरण और धर्म का अनुसरण, कृषि, की उन्नति, ग्रामीण उद्योग-धन्धों का विकास, आवागमन के साधनों की सहूलियत, विदेशों के साथ सम्पर्क, (३) उपसंहार ।

भारत की चिरकालीन परतन्त्रता ने हमें सचमुच मानव कहलाने मात्र का ही अधिकारी छोड़ा था । कभी हमें इस्लाम धर्मानुसरण के लिये अन्यायपूर्ण साधनों के आगे विवश किया गया तो कभी अंग्रेजों की कूटनीति में हठात् जकड़ जाना पड़ा । फलतः हमारी आत्मा का जैसे हनन हो गया था । न हम कुछ स्वच्छन्द होकर सोच सकते थे और न किसी के समक्ष निर्भय होकर स्वयं को अभिव्यक्त कर सकते थे ? न हममें अतीत का गौरव रह गया था और न राष्ट्र-प्रेम की रक्षा के लिए हँस-हँसकर प्राण-बलिदान का साहस । न हम अपने भौतिक विकास हेतु वैज्ञानिक पद्धतियों का अनुसरण कर सकते थे और न आत्मिक उत्सर्ग के लिये उपासना का मार्ग ग्रहण । हमारी सभी प्राकृतिक और भौतिक क्रिया-प्रक्रियायें जैसे किसी अन्य के संकेत पर ही गतिशील होती थीं । भला इससे बढ़कर मानव की अधोगति क्या हो सकती थी ? परन्तु, आज हम युग-युग के इस अभिशाप से मुक्त हो गये हैं । स्वाधीनता का अभय वरदान हमें प्राप्त हो गया है । अब भारत हमारा है और हम भारत के हैं । उसकी उन्नति-अवनति का दायित्व हमारे ही ऊपर है । लज्जावनत भारत-माँ के मस्तक को पुनः गौरवान्वित करने का स्वर्णावसर हमें प्राप्त हो गया है । संसार के अन्य राष्ट्रों के मध्य हमारा भी अपना अस्तित्व है । अतः देश की प्रगति और उन्नति करना हमारा कर्त्तव्य है ।

भारत की समृद्धि के सम्बन्ध में विचार करने पर हमारे समक्ष यहाँ की सुरम्य प्रकृति, पौष्टिक जलवायु, हरे-भरे लहराते अनाज के खेत, पारस्परिक भ्रातृभाव और सादा जीवन उच्च विचार के अनेक गौरवपूर्ण आदर्श तथा उद्देश्य आ जाते हैं । फिर मूल बात भी यह है कि कोई राष्ट्र अपनी विधि परिस्थितियों में अनुकूल साधन जुटा-कर ही समृद्ध हो सकता है । दूसरों के अन्धानुकरण से तो कुछ खोने की ही सम्भावना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और आशंका है। अतः अपनी परिस्थितियों को समक्ष रखकर ही हमें देश की समृद्धि के लिए कदम उठाने की आवश्यकता है।

स्वतन्त्र भारत की समृद्धि का सर्वप्रथम साधन है—मातृभाषा और राष्ट्रीय स्तर पर उसके सहारे शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार। जब तक शिक्षा तथा शासन-संचालन और व्यवहार के लिए एक भाषा का माध्यम न होगा, तब तक न हम एक अटूट स्नेहसूत्र में बँध सकेंगे और न देशोत्थान के लिये समग्र रूप से प्रयत्नशील। आज हिन्दी को लेकर समूचे देश में एक वितंडावाद खड़ा हुआ है। लेकिन, हिन्दुस्तान की मातृभाषा हिन्दी ही हो, इसमें दो राय नहीं हो सकतीं। प्रान्तीय भावना देशोत्थान में बाधक ही सिद्ध होती है। जो देश जितना अधिक शिक्षित होगा, वह उतना ही समृद्ध भी, लेकिन उसके माध्यम की एक ही भाषा होना आवश्यक है। आज रूस की बहुमुखी उन्नति का एकमात्र कारण यही है। बच्चे ही कल के नागरिक बन कर प्रजातन्त्र की बागडोर को संभालते हैं। शिक्षा ही वह माध्यम है जिससे हम अपने कर्तव्य एवं अधिकार को समझ पाते हैं। देश की विविध अन्तर्बाह्य समस्याओं का हल ढूंढ़ते हैं तथा वैज्ञानिक आविष्कारों में सफल होते हैं, उत्थान के लिये योजनाएँ तैयार करते हैं। शिक्षा के सहारे ही हम दूसरे देशों के सम्पर्क में आते हैं। भारत के अधिकांश व्यक्ति गाँवों में ही रहते हैं। अतः वैज्ञानिक, औद्योगिक एवं सांस्कृतिक शिक्षा का प्रचार और प्रचार देश की समृद्धि का सर्वोपरि साधन है।

भारतीय जीवन की दो आधारशिलायें—सदाचरण और धर्म-निष्ठा हमारे साथ जन्म से ही आती है। इनकी जड़ें इतनी गहरी हैं कि दासता के काल की निष्ठुरता भी इन्हें विनष्ट नहीं कर सकी। अतः इनका बहिष्कार करके हम सुखी तथा समृद्ध नहीं हो सकते। इन गुणों से सच्चे अर्थों में हम मानव बनते हैं और अन्तिम ध्येय की प्राप्ति कर पाते हैं। अत; देश के जीवन में बचपन से ही इन गुणों का प्रादुर्भाव करना देश को समृद्ध बनाने के लिये आवश्यक है।

कृषि-प्रधान देश होने से इस क्षेत्र का बहुमुखी विकास यहाँ की समृद्धि के लिये अतीव अपेक्षित है। विविध वैज्ञानिक साधनों के अभाव में भारतीय कृषक कूपमंडूक ही बना रहता है। न पैदावार में वृद्धि कर पाता है और न नई-नई वस्तुयें उत्पन्न कर पाता है। अमेरिका इसके विपरीत इस क्षेत्र में दिनोंदिन उन्नति कर रहा है, उसका एकमात्र कारण यही है। सरकारी स्तर पर किसानों को कृषि की उन्नति के लिए सभी सुविधायें उपलब्ध होनी चाहिये। हर्ष का विषय है कि सरकार इस ओर ठोस कदम उठा रही है। गाँवों में सहकारी समितियाँ और बैङ्कों की स्थापना, विकास-क्षेत्रों का गठन इसी प्रयोजन से किया जा रहा है। वहाँ से उन्हें न केवल कर्ज की ही सुविधा हो गई है, बल्कि पौष्टिक बीज, खाद तथा अन्य अपेक्षित वस्तुयें भी समयानुसार प्राप्त होती हैं। इस रूप में कृषि को प्रोत्साहन देने से अवश्य ही समृद्धि की दिशा बन सकेगी।

ग्रामीण उद्योग-धन्धों का विकास देश की आर्थिक स्थिति में सुधार के लिये

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आवश्यक है। ये कुटीर-उद्योग तो भारत जैसे देश की आधारशिलायें हैं। स्वदेशी के प्रति महत्व और समय का सदुरुपयोग, अपव्यय से मोक्ष :इनके लाभ हैं। पूज्य बापू इसीलिए हाथ से चरखा कातकर अर्थोपार्जन की बात कहा करते थे। स्वयं अतिरिक्त समय में सूत कातते भी थे। इनसे हमारा धन विदेश में जाने से रुक जायगा। भारत सरकार का इस दिशा में यह कर्तव्य होना चाहिये कि विदेशी माल का कम से कम आयात हो और उसके स्थान पर स्वदेशी वस्तुओं को ही दैनिक प्रयोग में खपाया जाय। इन कुटीर-उद्योगों के लिए धन की सुविधा दी जाय, उत्पादकों को पुरस्कार दिये जायें तथा कुशल कारीगरों को सभी सुविधाएँ प्रदान की जायें। इससे देश को दो लाभ होंगे—एक ता, वेकारी की भयंकर समस्या का स्वतः अन्त हो सकेगा और दूसरी, स्वदेशी वस्तुओं के प्रति ममत्व तथा विदेशी वस्तुओं के प्रति घृणा।

इस प्रकार अपने देश में ही उत्पादन की अधिकाधिक बढ़ोत्तरी कर हम विश्व-बाजार में भी अपने अस्तित्व की स्थापना करें और अपने माल को वहाँ खपाने की चेष्टा करें जिससे विदेशी मुद्रा का लाभ भी हमें मिल सके। इसके लिए आवागमन और और यातायात के साधनों में उन्नति आवश्यक है। गाँवों में सड़कों तथा पक्के पथों का निर्माण इसके लिए अपेक्षित है। रेल आदि की सुविधाएँ भी सर्वत्र सब समय सहज होनी चाहिए।

इन सबके अतिरिक्त हम सब मिलकर एक रहें, राष्ट्रीय स्तर पर किसी समस्या को पारस्परिक द्वन्द्व का आधार न बनने दें। देश-प्रेम की भावना का अपने अन्दर जागरण करें और परिश्रमशील बनकर इन विविध योजनाओं को सफल बनाने का निरन्तर प्रयास करते रहें, तभी हमारे स्वप्न पूरे हो सकते हैं और भारत पुनः समृद्ध हो सकता है।

निष्कर्ष यह है कि भारत की समृद्धि के लिए आज हमें प्रारम्भ से ही सभी सम्भव साधनों को जुटाकर एक बार कर्त्तव्य-पथ पर डट जाना होगा। हमें तो अब जिस नींव को खोदना है, उसी पर भव्य प्रासाद खड़ा करना है। अतः क्या भाषा, शिक्षा, धर्म, आचरण, औद्योगिक विकास और कृषि-सभी में वैज्ञानिक साधनों का प्रयोग कर अपने को बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील होना है। भारत सरकार की गत पंचवर्षीय योजनाओं के फलस्वरूप हमें बहुत कुछ उपलब्ध हो सका है। अत; हम सभी परस्पर भेद-भावों को भूलकर देश की इस समृद्धि में जुट जायें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१३. परमाणु-शक्ति और विश्व-कल्याण

अथवा

परमाणु शक्ति और मानवता

अथवा

नक्षत्र जगत में भारत का प्रवेश

रूपरेखा—

(१) प्रस्तावना, (२) परमाणु तथा परमाणु-शक्ति से तात्पर्य, (३) परमाणु शक्ति के प्रयोग, (४) परमाणु-शक्ति से लाभ, (५) परमाणु-शक्ति और विश्व कल्याण, (६) उपसंहार ।

जिन वस्तुओं के सम्बन्ध में मानव ने कभी सोचा तक न था, जो सदा उसकी कल्पना की सीमा के बाहर रही थीं, आज उन्हीं का प्रत्यक्ष प्रयोग उसे आश्चर्य-चकित कर देता है । आज विज्ञान की अनूठी शक्ति को देखकर दंग रह जाना पड़ता है । सृजन और संहार दोनों ही क्षेत्रों में वह अनूठे आविष्कारों की सफलता से ब्रह्म की मान्यता को भी जैसे मिथ्या सिद्ध करता जा रहा है । प्रकृति की शक्ति पर तो उसने विजय प्राप्त की ही स्वयं ने भी ऐसी शक्तियों को खोज निकाला है, जो पलक मारते ही सम्पूर्ण प्रकृति को नष्ट करने में सफल हो सकती है और जिसे ऊर्जा में परिणित कर लेने पर असम्भव कार्य भी सम्भव हो सकते हैं । संसार के लिए जैसे वही विष्णु और शिव है । परमाणु-शक्ति विज्ञान की ऐसी ही अनूठी देन है ।

परमाणु (Atom) पदार्थ का वह सबसे छोटा अंश होता है जो पुनः विभाजित नहीं किया जा सकता । लेकिन इसमें इलेक्ट्रोन, प्रोट्रोन तथा न्यूट्रोन विद्यमान रहते हैं जो अविनाशी और सदैव गतिशील होने के कारण रासायनिक क्रिया में भाग लेते हैं । यदि इन्हें किसी भी प्रकार तोड़ लिया जाय तो अपरिमित शक्ति का (Atomic Energy) है ।

सर्वप्रथम इङ्गलैण्ड के महान् वैज्ञानिक 'आइन्सटीन' ने सन् १६१६ में परमाणुओं के अवयवों को अलग किया था और अपने प्रयोगों से संसार को यह बतलाया कि पदार्थ को ऊर्जा में और ऊर्जा को पदार्थ में परिवर्तित किया जा सकता है । इसी आधार पर यदि परमाणु को तोड़कर ऊर्जा में बदला जा सके तो कई हजार गुनी ऊर्जा प्राप्त हो सकती है । तदुपरि इसके प्रयोग जर्मनी के द्वितीय महायुद्ध के समय किये, किन्तु उसे सफलता न मिल सकी । परन्तु अन्त में इन्हीं जर्मन वैज्ञानिकों की सहायता और सहयोग से अमेरिका के वैज्ञानिकों ने इसमें सफलता प्राप्त की । इसके सर्वप्रथम दानवीय प्रयोग को विश्व आज तक नहीं भुला सका है । अगस्त सन् १६४५ में जापान के हिरोशिमा तथा नागासाकी नगरों पर परमाणु-बम गिराया गया । फलतः वहां पेड़ों की पत्तियां भी अवशिष्ट न रहीं, सब कुछ जलकर भस्म हो गया । महाप्रलय के इस भयंकर दृश्य ने संसार को हिला दिया । आज रूस और ब्रिटेन के पास भी इस शक्ति का संचय है और भारत भी इसके लिए प्रयत्नशील है । संसार के सभी बड़े-बड़े राष्ट्र इसके संचय में जुटे हैं । विश्व इसके भीषण परिणामों से आतंकित है कि न जाने कब यह दानव-शक्ति संसार के लिए रुद्र बन जाय ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यों तो प्रत्येक वस्तु के विनाशकारी और सृजनात्मक दोनों ही पहलू होते हैं, परन्तु परमाणु-शक्ति के नाशकारी रूप को ही हमने देखा है ; मानवता जिससे चीख उठी है। परमाणु-बम का नाम ही हृदय को दहला देता है। विश्व मानव के लिए इससे बढ़कर अभिशाप और क्या हो सकता है ? इनके प्रयोगों से प्रलयकारी परिणाम समक्ष आ रहे हैं। महासागर में इसके प्रयोगों से भी भीषण परिस्थिति उत्पन्न हो रही है। वायुमण्डल तथा जल का दूषित होना, नये-नये रोगों का उत्पन्न होना और फलतः महामारी के दृश्य इसी के तो दुष्परिणाम हैं। इस विनाशकारी रूप के कारण ही संसार के सभी राष्ट्र परस्पर एक-दूसरे से आतंकित हैं, परस्पर समझौते की स्थिति की ओर गतिशील हैं। विश्व-शान्ति के पोषक राष्ट्र तथा संयुक्त-राष्ट्र संघ इसके विनाशकारी परीक्षणों को समाप्त कराने के लिए प्रयत्नशील हैं।

इसके संहारक रूप के अतिरिक्त रचनात्मक और सृजनात्मक प्रयोगों के लिए भी आज का वैज्ञानिक प्रयास कर रहा है। विनाश की अपेक्षा निर्माण ही श्रेयस्कर है। हमने ही तो परमाणु-शक्ति के इस रुद्र रूप को बनाया और प्रयुक्त किया है, इसके रचनात्मक प्रयोग से मानव का कल्याण सम्भव हो सकता है। अनेक समस्याओं का समाधान सम्भव हो सकता है, जिस प्रकार हम विद्युत-शक्ति के अनेक प्रयोगों से विविध आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। उसी के प्रसाद से न हम आज प्रकाश के लिए सूर्य के अधीन हैं और न ताप के लिए अग्नि के अधीन। जीवन की दैनिक अपेक्षाओं की पूर्ति आज विद्युत द्वारा सहज रूप में हो रही है। बड़े-बडे कल-कारखाने उसी के सहारे चल रहे हैं। इसी प्रकार यदि परमाणु-शक्ति का प्रयोग शनैः-शनैः विद्युत-शक्ति के स्थान पर किया जाय तो निस्सन्देह उसकी अपेक्षा कम समय में अधिक उत्पादन किया जा सकता है। विद्युत-शक्ति के उत्पादन में जहां हमें जल, कोयला आदि अन्य आवश्यक पदार्थों की अपेक्षा होती है, वहाँ परमाणु-शक्ति के सम्बन्ध में हम इन वस्तुओं की ओर से निश्चिन्त हो जाते हैं। सार्वजनिक मार्ग-निर्माण के लिए विद्युत से हमें बंजर भूमि को समतल बनाने अथवा किसी पहाड़ी को तोड़ने के लिए अत्यधिक मजदूर तथा समय की अपेक्षा होती है, परन्तु परमाणु-शक्ति के उपयोग से ये सभी कठिनाइयाँ क्षण-भर में दूर हो सकती है। इसी प्रकार वायुयान तथा जलयान चलाने में परमाणु-शक्ति का सदुपयोग किया जा सकता है। इसके प्रभाव से उनकी गति अधिक हो सकेगी। पनडुब्बी के चलाने में इस शक्ति का सफल प्रयोग किया जा चुका है। रेलगाड़ियाँ भी अपेक्षाकृत तीव्र गति से चलाई जा सकेंगी। विद्युत के उत्पादन में इस शक्ति का सदुपयोग किया जा सकता है। आशय बिजली के स्थान पर इसका सर्वत्र उपयोग सभी दृष्टियों से, लाभकारी सिद्ध होगा।

इतना ही नहीं, परमाणु-विस्फोट से नये-नये आइसोटोप्स का निर्माण किया जा रहा है और जिनका सदुपयोग रोगों की चिकित्सा के लिए किया जा सकेगा। इसी प्रकार उद्‌जन-बम से ईंधन की समस्या को हल करने का प्रयास किया जा रहा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है। इसी शक्ति के सहारे रूस और अमेरिका जैसे महान राष्ट्र मौसम की जानकारी कर रहे हैं, ग्रह-उपग्रह संचालित कर रहे हैं। चन्द्रमा तथा मंगल तक पहुँचने के प्रयास इसी की सहायता से हो रहे हैं। भारत भी इस ओर दिन-प्रतिदिन गतिशील हो रहा है। परमाणु-शक्ति केन्द्र (Atomic Energy Centre) स्थापित हो रहे हैं। फिर भी इस शक्ति का उपयोग विश्व-कल्याण के लिए किस प्रकार हो, इस दिशा में अणुशक्ति आयोग (Atomic Energy Commission) का गठन देश के महान् वैज्ञानिकों को मिलाकर किया गया है। स्वर्गीय डॉ० भाभा इसी आयोग के सभापति थे।

आज परमाणु शक्ति आज जीवन के लिए अपरिचित नहीं है। परमाणु शक्ति के आश्चर्यजनक प्रयोगों ने मानव को अपनी शक्ति का परिचय दिया है। आज वैज्ञानिक चाँद पर पहुँच गया है। कल का 'चन्द्र खिलौना' आज मनुष्य का क्रीड़ा-स्थल बन गया है। भारत में आज नक्षत्र लोक में पहुँच गया है। भाव तक रूस, अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन और चीन इस दिशा में अग्रणी थे। भारत परमाणु क्षेत्र में छठीं शक्ति के रूप में उभरा है। भारत ने रूस के माध्यम से आर्य भट्ट को नक्षत्र लोक में पहुँचाया था। सारा संसार भारत के इस प्रयोग पर आश्चर्य-चकित हो गया था। भारतीय वैज्ञानिकों के मन में यह खेद था कि हम भारत की भूमि से उपग्रह नहीं छोड़ सके। इस वर्ष (१६८०) में यह अभाव भी पूर्ण हो गया। हर्ष का विषय है हमारा उपग्रह भारत की भूमि से नक्षत्र लोक में पहुँचा तथा परिक्रमा देने लगा। परमाणु शक्ति का यह रचनात्मक प्रयोग प्रशंसनीय है।

परमाणु शक्ति का यह स्वरूप रचनात्मक कार्यों के लिए उपयोग करना भारत की नीति का अंग है। इससे पहिले भी भारत ने भूगर्भ में परमाणु का विस्फोट किया था जो विश्व के लिए आश्चर्यजनक कार्य था। कुछ राष्ट्र सशंकित हो उठे थे कि कहीं भारत भी परमाणु बम बनाने नहीं जा रहा। तत्कालीन भारतीय प्रधान मंत्री ने संसार को आश्वासन दिया था कि भारत अपनी नीति पर अडिग है। वह परमाणु शक्ति का रचनात्मक कार्यों में उपयोग करेगा। उसके नक्षत्र जगत में दो प्रयोग इसका उदाहरण है। विश्व के बड़े राष्ट्र भारत की प्रगति से क्षुब्ध हैं तथा उनकी ईर्ष्या जाग उठी है। अमेरिकन राष्ट्रपति कार्टर ने भारत यात्रा के समय तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई से इस सम्बन्ध में परमाणु संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए दवाव डाला था पर मोरारजी भाई ने साफ मनाकर दिया था कि विश्व के बड़े राष्ट्र पहिले हस्ताक्षर करें। अमेरिका ने पूरे नियम की सप्लाई बन्द कर दी पर भारत अपनी साधना में रत रहा। परिणाम सामने है। उसके ये शान्तिपूर्ण उपग्रह नवीन वैज्ञानिक चेतना को स्पष्ट करते हैं। अभी इस क्षेत्र में हमें और आगे जाना है। हमें विश्वास है एक दिन इस क्षेत्र में भी हम शीर्षस्थ हो सकेंगे।

इस प्रकार परमाणु-शक्ति के विश्व-कल्याणकारी प्रयोगों की ओर विज्ञान मुड़ रहा है। इस दृष्टि से जहाँ विश्व-मानव की आर्थिक समस्या का सहज समाधान

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सम्भव हो सकेगा, वह किसी भी देश में उत्पादन भी बढ़ाया जा सकेगा। यह विचार यदि दिनोंदिन पनपता रहा तो निःसन्देह विज्ञान की यह शक्ति विश्व-कल्याण का आधार तो बनेगी ही, उसके लिए अभय वरदान सिद्ध हो सकेगी। पारस्परिक द्वेष, वैमनस्य तथा शत्रुता के भाव स्वतः विनष्ट हो जायेंगे।

निष्कर्ष यह है कि जब तक हमें अपनी भौतिक-शक्ति पर अभिमान रहेगा, हम इस परमाणु-शक्ति के विनाशकारी प्रयोग को प्रोत्साहन देते रहेंगे। इसके विपरीत थोड़ा-सा भी यदि विचारकर सोच लिया गया कि विश्व-कल्याण में ही सबका कल्याण, सुख और सभी की समृद्धि है, तो वह दिन दूर नहीं जबकि इस अनूठी शक्ति के द्वारा मानव सच्चे अर्थों में मानव कहलाने का अधिकारी हो जायगा। हमारा कर्तव्य है कि हम इसके सृजनात्मक रूप को ही अपनायें और अपने साथ संसार के कल्याण के लिए इसके द्वारा यज्ञ का अनुष्ठान करें। तभी विज्ञान हमारे और विश्व के लिए उपयोगी तथा वफादार सिद्ध होगा और इसी में सच्ची आत्म-शान्ति सम्भव हो सकेगी।

१४. सहकारिता

'सहकारिता' का अर्थ है—मिल-जुलकर कार्य करना। व्यक्ति जिस कार्य को अकेला सुचारु रूप से नहीं कर पाता, उसे बहुत-से व्यक्ति मिलकर सहज रूप में कर लेते हैं। संगठन ही शक्ति है—'Unity is strength'। संगठन और सहकारिता से बड़े-बड़े जटिल काम सरल हो जाते हैं। मानव एक सामाजिक प्राणी है। अपने जीवन में पग-पग पर एक मानव को दूसरे मानव की सहायता लेनी ही पड़ती है। संसार में रहकर एकाकी जीवन की स्थिति मानव-जाति के लिए एक अभिशाप ही है। हिल-मिलकर परस्पर सहयोग से रहना ही, जीवन में सुख की नींव को सुदृढ़ करना है। जहाँ सहयोग है, वहीं सुमति और सम्पत्ति सदैव रहती है और जहाँ फूट तथा असहयोग है, वहीं कुमति और विपत्ति का साम्राज्य है। सचमुच सहकारिता हमारी भौतिक और नैतिक सभी प्रकार की उन्नति का प्रवेश-द्वार है। आज हम अनेक आर्थिक संकटों और संघर्षों में से गुजर रहे हैं। इन्हीं के समाधान के लिए देश के कर्णधारों ने सहकारिता का आयोजन किया है। पंचवर्षीय योजनाओं में सहकारिता को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है।

इस प्रकार सहकारिता के द्वारा न केवल सभी सामाजिक व्यक्ति एक दूसरे के निकट सम्पर्क और सम्बन्ध में ही आ जाते हैं। वरन् उनकी तथा देश की अनेक आर्थिक समस्याएँ भी सहज ही सुलझ जाती हैं। भारत जैसे स्वतन्त्र राष्ट्र के लिए उन्नति हेतु इसका असंदिग्ध महत्त्व है। यहाँ के गाँवों को सुसंगठित करने, उनके आर्थिक विकास, कृषि की उन्नति, गाँवों में ही सभी अपेक्षित वस्तुओं को तैयार करने, विभिन्न कार्यों के लिए अर्थ आदि की व्यवस्था करने के लिए सहकारिता की अनिवार्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आवश्यकता है। गाँव वालों के पास न तो अधिक पूँजी होती है और न उसकी व्यवस्था का कोई साधन; अतः इसके द्वारा सहकारी समितियों की स्थापना कर इस प्रकार की सभी समस्याओं का समाधान खोजा जा सकता है। फलतः गाँवों में लघु उद्योगों का विकास तो सम्भव होता ही है, कृषि आदि में भी उन्नति होती है और सर्वोपरि परस्पर सहयोग तथा सेवा-भावना का प्रसार होता है। हम सब एक सूत्र में आबद्ध हो जाते हैं। इन्हीं सब कारणों से इस सहकारिता तथा संगठन का महत्त्व और आवश्यकता स्वीकार्य है।

सहकारी समितियाँ इसी सहकारिता के उद्देश्य की पूर्ति की प्रसाधन हैं। यदि किसी गाँव में दस किसान हैं और प्रत्येक के पास दस बीघा जमीन है। एक किसान चाहने पर भी ना तो कृषि-उत्पादन के लिए वैज्ञानिक साधनों की व्यवस्था कर सकता है और न अपेक्षित श्रम करके मिट्टी को उर्वर बना सकता है। ऐसी स्थिति में दो या दो से अधिक कृषक मिलकर यदि एक सहकारी समिति बना लें, तो उनकी सभी असुविधाएँ और बाधाएँ परस्पर सहयोग से दूर हो सकेंगी। इन सहकारी समितियों से उन्हें पुष्ट बीज मिलेंगे। वैज्ञानिक साधनों के उपयोग की सुविधा प्राप्त होगी और आवश्यकता पड़ने पर बैल खरीदने, कुँआ खुदवाने आदि कार्यों के लिए ऋण की समस्या भी हल हो सकेगी। फलतः ग्रामीण जीवन में सुख-समृद्धि का वातावरण सहज-सम्भव हो सकेगा। पंचवर्षीय योजनाओं में गाँवों की इन सहकारी समितियों के लिए इसी से सरकार की ओर से सभी सुविधाएँ प्रदान की जा रही हैं। मानव समाज और गाँवों के बहुमुखी विकास की सुविधा तथा दिशा जुटाना ही इसका कर्तव्य है।

ये सहकारी समितियाँ कई प्रकार की हो सकती हैं, लेकिन उनमें दो ही प्रकार प्रमुख हैं—एक, निजी सहकारी समितियाँ, और दूसरी, सरकारी सहकारी समितियाँ। प्रथम का संगठन स्वयं व्यक्तियों द्वारा होता है और इसी से उनमें सभी सदस्यों का अपना अस्तित्व होता है, लेकिन द्वितीय में अस्तित्व जनता का न होकर सरकार का होता है, परन्तु ये जनता के सामूहिक हित और उन्नति के लिए ही विविध कार्य करती हैं। ये सहकारी समितियाँ उत्पादकों और उपभोक्ताओं दोनों की होती हैं। प्रथम के द्वारा उत्पादन में वृद्धि होती है और द्वितीय के द्वारा अपेक्षित वस्तुओं का सदस्यों के मध्य समान वितरण होता है। फलतः न तो किसी प्रकार की बाधा आ पाती है और न धन का अपव्यय ही हो पाता है।

इस प्रकार सहकारी समितियों के अतिरिक्त सहकारिता के अनेक रूप हो सकते हैं। कुछ लोग अपनी खेती अपनी इच्छानुसार करें तथा कुछ लोग स्वयं आपस में अपनी जोतों को मिलाकर खेती करें। इस प्रकार की स्वतन्त्रता से ग्रामीणों में सहकारिता की भावना को बल मिलेगा। सहयोग से गाँवों की उपज एकत्रित की जाय और उचित समय पर उसकी बिक्री का प्रबन्ध किया जाय। इसी प्रकार शिल्पियों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की भी समितियाँ बनाई जायें और उनके उत्पादन की बिक्री का प्रबन्ध किया जाय, ताकि विवश होकर उन्हें अपना माल कम मूल्य पर न बेचना पड़े। इस प्रकार की और भी सहकारी समितियों का गठन किया जा सकता है।

देश में केन्द्र से सम्बन्धित २२ राज्य सहकारी बैंक, ५०० केन्द्रीय बैंक तथा बैंक संघ, लगभग एक, लाख प्रारम्भिक ऋण-समितियाँ और ३०० के लगभग भूमि-बन्धक बैंक हैं। तीस हजार कृषि-समितियाँ और आठ हजार गैर-किसानी ऋण-समितियाँ हैं। इनमें स्वयं सरकार भी हिस्सेदार हैं। इनमें बड़ी-बड़ी समितियाँ आवश्यकता पड़ने पर सरकार से तथा रिजर्व बैंक से भी ऋण ले सकती हैं। केन्द्रीय सरकार ने इस सहकारिता के कार्य के लिए लगभग अड़तालीस करोड़ रुपया सुरक्षित रखा है। कृषि-मन्त्रालय द्वारा गाँवों में ऋण-सर्वेक्षण की सुविधा के लिए कानून बनाया गया है। गोदामों और भण्डारों का निर्माण किया गया है।

इस प्रकार सहकारिता से जनता में मिल-जुलकर कार्य करने की प्रवृत्ति का जागरण होता है। हम अपने वैयक्तिक स्वार्थों का परित्याग कर देते हैं। आय के समुचित विभाजन से एक ओर आर्थिक समस्या का अन्त होगा, वहाँ दूसरी ओर छोटे-बड़े का भेद-भाव मिट सकेगा। इसके अतिरिक्त कम मूल्य पर सभी को आवश्यकता की वस्तुयें तथा धन मिल सकेगा। नैतिकता का विकास ऐसी सुख-शान्ति में सहज स्वाभाविक है। पारस्परिक झगड़े तथा मुकद्दमेबाजी का अन्त होने लगेगा। अन्ततोगत्वा समाज, गाँव और देश का बहुमुखी विकास होगा।

देश में आज सहकारिता के फलस्वरूप गाँव की अनेक समस्याओं का अन्त हो गया है। जिन किसानों के पास खेत नहीं थे, उन्हें भूमि मिल गई है। स्वदेशी वस्तुओं के उत्पादन की वृद्धि हो रही है और किसान के समक्ष अब कोई किसी प्रकार की समस्या नहीं रह गई है। उसे कर्ज की सुविधा हो गई है तो अतिरिक्त समय में किये गये दूसरे उत्पादनों का उचित मूल्य भी मिल जाता है। इस प्रकार सहकारिता का प्रभाव देश के संगठन और आर्थिक विकास में देखा जाता है। परस्पर सेवा-भावना का प्रसार और देश के प्रति निजी उत्तरदायित्व का निर्वाह इसी सहकारिता का सुफल है।

निष्कर्ष यह है कि सहकारिता की अनेक उपलब्धियाँ राज्य तथा केन्द्रीय स्तर पर उनके विकास की सूचक हैं। गाँव की सुख-समृद्धि भला आज किससे छिपी है। आज का किसान सभी प्रकार से समृद्ध है। उनके पास न धन का अभाव है और न अन्न-वस्त्रों की कमी और न रहने के लिए मकान की कमी। गाँव-गाँव में ट्यूब वेल, सहकारी-समितियाँ, बीज-गोदाम और कच्चे माल के उपयोग की सुव्यवस्था सरकार द्वारा की जा रही है। हाँ, अपनी चारित्रिक हीनता के कारण कहीं-कहीं सरकार और समितियों के ऋण का दुरुपयोग भी होता देखा जाता है। किसान जिस कार्य के लिए ऋण लेता है, उस कार्य में उसे न लगाकर अन्य कार्य में व्यय करता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इससे सहकारिता को बड़ा धक्का लगता है। सच्ची सहकारिता तो हमें सच्चा इन्सान ही बनाती है, हम व्यक्ति से परे समाज और देश की निधि बन बन जाते हैं। एकाकीपन का भाव जीवन से उठ जाता है, अतः हम सब देशवासियों का कर्तव्य है कि देशोत्थान के लिए सहकारिता के इस आन्दोलन को सफल बनायें। तभी हमारा आर्थिक ढाँचा सुधर सकेगा और सभी आन्तरिक-वाह्य समस्याओं का सहज समाधान भी सम्भव हो सकेगा।

१५. जीवन सफलता का रहस्य (१९७८)

'जड़-चेतन गुण-दोषमय, विश्व-कीन्ह करतार' स्रष्टा के इस अनूठे कौशल को देखकर बुद्धि कुंठित हो जाती है, परन्तु मानव-प्रतिमा का कौशल इसी में है कि वह गुण-अवगुण, अच्छाई-बुराई तथा उचित-अनुचित का ठीक निर्णय करे। पुनः अपनी प्रवृत्तियों के उद्भव, मन के चांचल्य तथा इन्द्रियों से भटकाव को रोककर गुणों के ग्रहण एवं अवगुणों के त्याग में ही उत्कर्ष समझे। बस, यही एकमात्र हमारे चरित्रबल की कसौटी है। मनुष्य स्वयं एक विवेकशील प्राणी है। उसकी बुद्धि निरन्तर विकास करती चली आ रही है। तभी तो उसने एक संगठित समाज बना लिया है। यों समाज में व्यक्तियों के व्यवहार, रहन-सहन सभी अपनी इच्छानुसार चलते हैं, तथापि व्यक्ति को यह देखना ही पड़ता है कि उसकी गति-विधि का दूसरों पर कैसा प्रभाव पड़ता है, दूसरे लोग जो उसे अच्छा समझते हैं या बुरा। हर मनुष्य समाज में अपनी प्रतिष्ठा चाहता है और दूसरों की दृष्टि में भला बना रहने की कामना करता है। तभी तो उसे सम्मान मिलता है। चरित्र की इसी दृढ़ता को चरित्र-बल कहा जाता है। मानव-उन्नति का प्रवेश-द्वार है। हमारे जीवन की यही एकमात्र रीढ़ है। चरित्र-बल ही जीवन की सर्वोपरि सम्पत्ति और शक्ति है। इसी को आत्मसंयम तथा प्रयास से प्राप्त कर मनुष्य भूतल पर पूज्य बनता है और अन्त में देवत्व को प्राप्त कर अमर हो जाता है। चरित्रवान् व्यक्ति के जीवन में एक अलौकिक प्रकाश होता है। इस प्रकार चरित्र की परिधि में वे सभी मानवीय गुण एवं विशेषताएँ आ जाती हैं जो हमें ब्रह्म-रूप बनाने में सहायक होती हैं।

जीवन में सफलता पाने का एकमात्र है उत्तम चरित्र, परिश्रम और एकनिष्ठ लगन। मोटे रूप में मनुष्य के व्यक्तिगत और समाजगत व्यवहार के प्रायः सभी अंग चरित्र के परिधि में गिने जाते हैं। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति के चरित्र के दो पहलू कहे जा सकते हैं—व्यक्तिगत और सामाजिक। मनुष्य अपने वैयक्तिक जीवन में स्वतन्त्र होने पर भी, सामाजिक अस्तित्व के कारण पूर्ण स्वच्छन्द नहीं है। उसे जीवन में सीमित और संयमित होने की अनिवार्य आवश्यकता होती है। इसके लिए हमारे चरित्र-निर्माण हेतु धैर्य, क्षमा, संयम, अस्तेय, शौच, बुद्धि, सत्य, अक्रोध और इन्द्रिय-निग्रह आदि दस गुण अनिवार्य कहे गये हैं। इनका सम्बन्ध हमारे व्यवहार से है। अतः आचरण या व्यवहार की पवित्रता ही चरित्र-बल का मूल आधार है। इन विविध गुणों के परिपालन में ही चरित्र-बल की रक्षा है। यों जीवन और जगत् में इनकी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विरोधी शक्तियाँ भी होती हैं जो इन विरोधी शक्तियों को अपनी दृढ़ता से झुका देता है, वह उतना ही चरित्रनिष्ठ कहा जाता है।

जीवन में जिस प्रकार हमें अपने शारीरिक-गठन की आवश्यकता होती है और उसके लिए पुष्ट आहार तथा व्यायाम आदि अनिवार्य होते हैं, उसी प्रकार मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए चरित्र-बल से बढ़कर संसार में कोई शक्ति नहीं। पूज्य बापू के इसी गुण के आगे आज संसार अवनत हुआ है। विश्व का वैभव, राज-प्रासादों का भोग चरित्रवान् के चरणों में लेटने लगता है। सुकरात, ईसा, बुद्ध और विवेकानन्द आदि महान् विभूतियां इसी चरित्र के सहारे आज भी अमर हैं। इसी के सहारे मनुष्य अपने समाज का आदर्श, देश का कर्णधार और विश्व का उन्नायक बन जाता है। चरित्र-बल एक ऐसी अजेय शक्ति है। जिससे मनुष्य में आत्म-शक्ति का विकास होता है। वह अपने जीवन को समाज के लिए उपयोगी तो बनाता ही है, सम्मान भी प्राप्त करता है। समाज ऐसे व्यक्तियों पर गर्व करता है। जिन व्यक्तियों में चरित्र-बल नहीं होता, व्यवहार कुशलता नहीं होती, जिनके व्यवहार का समाज पर बुरा प्रभाव पड़ता है, ऐसे व्यक्ति समाज हेय समझे जाते हैं, उनकी समाज निन्दा करता है। अतः लोक में प्रतिष्ठित होने, सम्मानित होने तथा आत्मिक संस्कारों के निर्माण के लिए चरित्र-बल की मानव जीवन में अनिवार्य आवश्यकता है। खोई हुई धन-दौलत को फिर से कमाया जा सकता है, लेकिन चरित्र के एक बार विनष्ट होने पर पुनः इसका संगठन नहीं किया जा सकता। किसी अंग्रेज से ठीक ही कहा है—"When wealth is lost, nothing is lost; when health is lost, something is lost; and, when character is lost, everything is lost." अस्तु चरित्र की रक्षा करना मानव-मात्र का परम कर्तव्य है।

चरित्रवान् व्यक्ति का जीवन तपस्वी का जीवन होता है, तभी तो वहां तेज की आभा होती है। उसका अन्तःकरण क्षमा, स्नेह, सहानुभूति, परोपकार, सत्यभाषण, सहिष्णुता, सेवा, त्याग, निर्भयता, स्वावलम्बद, अध्यवसाय, क्रोधहीनता, आत्मसंयम, तथा वचन-पालन आदि गुण एवं अच्छाइयों का आगार होता है। चरित्रवान् व्यक्ति का दिन-प्रतिदिन समाज में सम्मान बढ़ता है। ऐसे चरित्र की पवित्रता से समाज की गति-विधि व्यवस्थित होती है। अन्य सामाजिकों के न्यायप्रिय मार्ग में कोई बाधा उत्पन्न नहीं होती। चरित्र के सहारे चरित्रवान् में ऐसी शक्ति का जागरण हो जाता है कि वह अपने स्वार्थ-परमार्थ दोनों की व्यवस्था बिना किसी अड़चन के कर लेता है। वह विवेकशील बनता है तो दूरदर्शिता गुण भी उसमें पनपने लगता है। इससे स्वभाव और विचारों में, कर्म और व्यवहार की दृढ़ता आती है। वह कोई समाज-विरोधी कार्य नहीं करता। उसकी स्वेच्छाचारिता स्वतः संयमित और नियमित हो जाती है। आध्यात्मिक शक्ति के विकास के साथ उसमें आस्तिकता की भावना भी पनपने तथा दृढ़ होने लगती है। उसके प्रभाव से अन्य व्यक्तियों में सुधार होता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है। ऐसे चरित्रवान् व्यक्ति समाज के लिए अनुकरणीय आदर्श तथा प्रेरणा के स्रोत बन जाते हैं। इतिहास में ऐसे महापुरुषों के आदर्श भरे पड़े हैं। अशोक, महाराणा प्रताप, शिवाजी, तुलसीदास, कबीर, स्वामी दयानन्द, पूज्य बापू आदि के जीवन आज भी चरित्र-बल के अनूठे उदाहरण हैं।

सत्यानुसरण से जहाँ ऐसे व्यक्ति में आत्म-शक्ति प्रबल होती है, न्यायप्रियता आती है, वहाँ संयम-नियम से सहिष्णुता का भाव भी उत्पन्न होता है। सामान्य मनुष्य थोड़े ही कष्टों में पथ-भ्रष्ट हो जाता है, अपने विवेक को खो बैठता है, लेकिन चरित्रवान् व्यक्ति और अधिक दृढ़ होता है। क्रोध उसे छू भी नहीं पाता। क्रोध तो मानव का सर्वोपरि शत्रु है। इसी से हमारी प्रतिभा कुण्ठित होती है, विचार शक्ति क्षीण हो जाती है, सत्-असत् विवेक नष्ट हो जाता है। ऐसे ही शत्रु पर विजय प्राप्त करना चरित्रवान् का परम कर्तव्य होता है। सहिष्णुता में वह समुद्रवत् शान्त हो जाता है। हृदय विशालता से वह लोकप्रिय हो जाता है। लोक उसकी वाणी को देव-वाणी मानने लगता है। लाखों व्यक्ति उसका पदानुसरण करने लगते हैं। समाज उसके उचितानुचित निर्णय को सहर्ष अवनत होकर स्वीकार करता है। यही कारण था कि गाँधीजी जिधर चलते थे, अपार जन-समूह उनके साथ हो लेता था।

यह चरित्र-बल की ही विभूति है कि चरित्रवान् को न मौत का भय होता है, न अपमान की आशंका, न लोभ अथवा मोह। अवसरवादिता का अवगुण उसका स्पर्श नहीं कर पाता। वह दृढ़ विचार और स्वावलम्बी होता है। इसी से कभी उसे असफल नहीं होना पड़ता। अध्यवसाय और परिश्रम से वह कभी मुख नहीं मोड़ता। दूसरों के शोषण को जघन्य पाप समझता है, किन्तु दूसरों का पोषण करना अपना धर्म मानता है। इसी चरित्र-बल के कारण उसे झोपड़ी से महलों तक सम्मान मिलता है। सचमुच चरित्र-बल का वैभव अपार है।

आत्म-संयम चरित्रवान् व्यक्ति का महान् गुण है। संसार के विविध माया-जाल हमें पथ-भ्रष्ट करने के लिए चेष्टाशील रहते हैं जो इनमें फँस जाता है, उसे भक्ति सम्भव नहीं; किन्तु जो नहीं फँस पाता, वह चमक उठता है। चरित्र-बल इसका सर्वोपरि आधार है। चरित्रवान् अपने आत्म-संयम से इन्द्रियों को भटकाने नहीं देता और दूसरों के समक्ष आदर्श उपस्थित करता है।

चरित्र बल को प्राप्त करने के लिए हमें सर्वप्रथम अपने दैनिक जीवन को ऐसे सांचे में ढालना चाहिए, ताकि हम एक ही मार्ग के पथिक बने रह सकें। इसका तात्पर्य यह नहीं कि अपनी जीवन-दृष्टि को सीमित कर लें। बल्कि यह कि एक निश्चित आधार की पुष्टि के लिए ही अन्य सभी क्रियाकलापों को करें। मन की चंचलता और उद्वेगों को रोकने के लिए ब्रह्मचर्य के नियमों का निरन्तर परिपालन करें। प्रलोभन से सदैव दूर रहकर सच्चे कर्मनिष्ठ बनें। शिक्षा-दीक्षा का स्तर तथा रूप ऐसा हो, जो हृदय में आत्मिक एवं मानसिक उन्नति के भाव को भी भरता रहे। बुरी संगति दूर रहना भी चरित्र-बल के लिए अपेक्षित है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सच्चरित्र व्यक्ति ही संसार में सुखी है, उसकी यश-चन्द्रिका से मानव जाति अलौकिक होती है। राष्ट्र ऐसे व्यक्तियों पर गर्व करता है। आज देश की स्वाधीनता इसी चरित्र-वल का सुफल है। चरित्र वल तो जीवन की विभूति है ही पर जीवन में सफलता पाने के लिए परिश्रम और एक-निष्ठ लगन भी आवश्यकता है। एकलव्य जैसी लगन वाला व्यक्ति ही जीवन में सफलता पा सकता है। व्यक्ति का लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिए। लक्ष्य के अनुकूल यदि प्रयत्न किया जाय तो सफलता अनिवार्य मिलती है। अर्जुन का लक्ष्य स्पष्ट था। सफलता ने विपरीत परिस्थितियों के होते हुए भी उसके चरण चूमें। आज तक संसार में कोई भी ऐसी महान व्यक्ति नहीं हुआ जिसने बिना प्रयत्न और लगन के सफलता पाई हो। अब्राहिम लिंकन का नाम विश्व में प्रसिद्ध है। वह एक अत्यन्त निर्धन था। सड़क पर विजली के खम्भे के नीचे बैठकर पढ़ा और अमेरिका का राष्ट्रपति वना। महान् वैज्ञानिकों की सफलता का रहस्य उनका परिश्रम है। सर आइजक न्यूटन तो यह भी भूल जाते थे कि भोजन किया या नहीं। उनके अनवरत परिश्रम का ही परिणाम विश्व के आश्चर्यजनक अनुसंधान है। चरित्र की रक्षा करना हम सभी का परम कर्म और धर्म है। इसी में मानव-हित तथा विश्व-कल्याण सम्भव है।

१६. परोपकार

यों तो संसार में सभी का अपना अस्तित्व और महत्व है, तथापि जन्म लेकर जीवन उसी का सार्थक है जो मरने के बाद भी अपना नाम इस भूतल पर छोड़ जाता है, मानव-जन्म इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय है, क्योंकि वही सृष्टि के अन्य जीवों की अपेक्षा उचित-अनुचित के न्याय की क्षमता रखता है। तभी गोस्वामीजी ने कहा है---'बड़े भाग्य मानुष तनु पावा, सुरदुर्लभ सद्-ग्रन्थन गावा।' यह निस्सन्देह पूर्व जन्म के किन्हीं पुण्यों का ही सुफल होता है और परोपकार से बढ़कर कोई अन्य पुण्य नहीं है :

अष्टादश पुराण में कियो व्यास निर्धार।
महा पुण्य उपकार है, महा पाप अपकार॥

परोपकार की भावना मनुष्य के हृदय को उदार बनाती है, उसमें त्याग की भावना को जन्म देती है। इसके सहारे हम दूसरों की सेवा में प्रवृत्त होते हैं। सेवा का यह भाव एक ओर निःस्वार्थी बनाता है तो दूसरी ओर अपने-पराये के भेद-भाव को दूर करता है। समाज में एक-दूसरे की सहायता करना समाज की रक्षा के लिए आवश्यक है और मानव समाज का ही एक विशेष अंग है। उसके विकास में समाज का विकास है और समाज के विकास में उसका विकास है। जब हम बिना किसी प्रलोभन और स्वार्थ के समाज में अन्य के सहारे बनते हैं, उसके कष्टों में सहायता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करते हैं, इसे ही परोपकार कहा जाता है। 'परोपकार' शब्द का अर्थ ही है—पर = पराया, उपकार = भलाई या सहायता। स्वार्थ-भावना के अभाव के कारण ही परोपकार स्तुत्य और अनुकरणीय माना जाता है।

सृष्टि के प्रारम्भ से ही परोपकार का भाव मानव में जगा, क्योंकि एक-दूसरे का सहारा बने बिना जीवन-यापन सम्भव नहीं। यह सहायता न केवल शारीरिक अंगों तक ही सीमित रही, बल्कि कभी-कभी हम गहनतम आर्थिक संकट में पड़ जाते हैं और उस स्थिति में भी एक-दूसरे की सहायता करते हैं। इससे भी आगे इस सहायता का रूप बौद्धिक भी हो सकता है। अतः परोपकार के अनेक रूप संसार में देखे जाते हैं। लेकिन अपेक्षा इस बात की है कि हम जिस रूप में भी दूसरों की मदद करें, बदले में उनसे कुछ लेने की कामना न करें। तभी हमारा कृत्य परोपकार की सीमा में आ पाता है। दीन-हीनों को अन्न और वस्त्र देना, दीन विद्यार्थियों की आर्थिक सहायता करना, विद्यालय बनवाना, अनाथालय बनवाना, कुएँ खुदवाना, धर्मशाला बनाना आदि कार्य परोपकार के ही अंग हैं। इनके अतिरिक्त परोपकार के सामाजिक जीवन में और भी अनेक रूप हो सकते हैं।

वस्तुतः परोपकार मानव-शक्ति का अंग है जिसके कारण ही हम सच्चे अर्थों में मानव बनने के अधिकारी हो पाते हैं। इस गुण के कारण हमारा सामाजिक अस्तित्व स्थापित होता है। व्यक्ति बहुत शीघ्र सभी के द्वारा सम्मान पाने लगता है। परोपकार से भले ही हमें भौतिक रूप में कुछ न मिले, किन्तु आत्म-शान्ति का यह अमोघ साधन है। हमारे आध्यात्मिक संस्कारों का निर्माण इसके सहारे सहज रूप में होता है। त्याग और सेवा के गुणों का प्रादुर्भाव होता है। फिर इससे कहीं हमारी आसक्ति नहीं रह जाती है। हम संसार में रहकर भी परलोक का निर्माण कर लेते हैं, अतः जीवन की सार्थकता और सफलता के लिए मनुष्य में इस गुण का होना आवश्यक है। केवल अपनी चिन्ता करने वाला व्यक्ति व्यापक रूप से सम्मानित नहीं हो सकता और इस दृष्टि से अन्य जीवों तथा मनुष्य में कोई अन्तर भी नहीं रह जाता। मनुष्य-योनि प्राप्त कर प्राणी-मात्र की रक्षा करना, उसकी सहायता करना मानवता की कसौटी है। तभी तो स्वयं मैथिलीशरण गुप्त ने कहा था :

मनुष्य है वही जो मनुष्य के लिए मरे।
यही पशु-प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे।।
अहा; वही उदार है, परोपकार जो करे।
महा अनर्थ है कि बन्धु हो न बन्धु की व्यथा करे।।

प्राचीन भारतीय मनीषी इसी से सदैव अपने लिए चिन्तित न रहकर विश्व-कल्याण और सुख-शान्ति के लिए आशान्वित रहते थे और कहते थे :

सर्वे सुखिनः भवन्तु, सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुख भागभवेत्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तात्पर्य यह है कि परोपकार मानव की आत्मा और जीवन को उच्चता प्रदान करता है और जब यही उच्चता की भावना मानवेतर सृष्टि में फैलकर असीमित हो जाती है, तभी राम तथा कृष्ण जैसे ईश्वरीय चरित्रों का विकास समाज में होता है। इस प्रकार मानव-जीवन में इसकी आवश्यकता असंदिग्ध है। बिना कुछ व्यय किये हमें यह दैवीय गुण मिल जाता है, जो हमें महानता और सम्मान दिलाता है। रहीम के शब्द यहाँ बड़े सार्थक सिद्ध होते हैं :—

रहिमन यों सुख होत है, उपकारी के अंग।
बाँटन बारे को लगै ज्यों, मेंहदी को रंग॥

परोपकार के गुण के द्वारा जहाँ मानव का आत्मोत्सर्ग होता है, वहाँ वह दूसरों की सहानुभूति भी प्राप्त करता है। मानसिक शान्ति मिलने के कारण इसके द्वारा आध्यात्मिक भावना का विकास होता है। सामाजिक सह-अस्तित्व की रक्षा में यह गुण बहुत लाभकारी सिद्ध होता है। जहाँ हम स्वयं आशान्वित होकर जीवित रहते हैं, वहाँ दीन-हीनों को भी जीवित रहने का सहारा मिलता है। अनेक बड़े-बड़े क्रियाकलाप इस गुण के द्वारा सहज सम्पन्न हो जाते हैं। परस्पर भेद-भाव के शनैः-शनैः मिटने और सेवा-भाव के जागरण से समाज में शान्ति की व्यवस्था होती है। परस्पर प्रेम-भाव बढ़ने लगता है और ईश्वर में आस्था दृढ़ होने लगती है। भौतिक दृष्टि से परोपकारी व्यक्ति सभी लौकिक चिन्ताओं से मुक्त रहता है। संसार में उसका कोई न मित्र होता है और न कोई शत्रु। इसी से उसे किसी का भय नहीं होता। इस स्थिति में वह शारीरिक और मानसिक दृष्टि से पूर्ण स्वस्थ रहता है। फलतः उसके मस्तिष्क और मन में किसी प्रकार की दुर्भावनाएं और कुविचार उत्पन्न नहीं होते। परोपकार के स्वार्थ-निरपेक्ष कार्य से मानव-जीवन सार्थक होता है। मृत्यु के बाद भी मनुष्य अमर बना रहता है। इस प्रकार लौकिक तथा अलौकिक एवं शारीरिक और मानसिक तथा भौतिक और आध्यात्मिक सभी दृष्टियों से परोपकार की मानव-जीवन में आवश्यकता है। ये ही उसके विभिन्न लाभ हैं। तभी तो गोस्वामीजी ने स्पष्ट कहा है—'परहित सरिस धर्म नहिं भाई, पर पीड़ा सम नहिं अधमाई' अर्थात् पर-हित के समान दूसरा धर्म नहीं है और पर-पीड़ा के समान नीचता नहीं है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि परोपकार ही पुण्य है और पर-पीड़ा ही पाप। सन्त-जन इसी से परोपकार का उपदेश देते सुने जाते हैं :

जो तोकूँ काँटा बुवे ताहि बोय तू फूल।
तोकूँ फूल के फूल हैं वाकों हैं तिरसूल॥

परोपकार का यह भाव मानव-जीवन में ही नहीं, मानवेतर सृष्टि में भी देखा जाता है और वह मानव के लिए अमर प्रेरणा का स्रोत बनती है। सरिता इसीलिए प्रवाहित होती है कि उसके जल से अन्य जीव तथा सृष्टि के अन्य अंग लाभान्वित होते हैं। वृक्ष स्वयं अपने लिए नहीं फलते-फूलते। उनके शरीर का पत्ता-पत्ता परोपकार में ही प्रयुक्त होता है :

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वृक्ष कबहुँ नहिं फल भखै, नदी न संचै नीर।
परमारथ के कारनै, साधुन धरा शरीर।।

निष्कर्ष यह है कि परोपकार का महान् गुण व्यक्तिमात्र के लिए अपेक्षित है। जब मानवेतर जड़-प्रकृति में ही यह गुण व्याप्त है, तो फिर भला मानव को इससे क्यों वंचित रहना चाहिए, उसकी सार्थकता तो सच्चे अर्थों में मनुष्य बनने में है, दैवीय गुणों के जागरण में है। ये सभी बातें इसके सहारे सहज ही पनप सकती हैं। सज्जन व्यक्ति परोपकार के लिए ही धन-संचय करते हैं, विद्वान् विद्या का अर्जन करते हैं। संस्कृत में इसी से कहा गया है—'परोपकाराय सतां विभूतयः' अर्थात् सज्जनों को विभूतियाँ परोपकार के लिए ही होती हैं। अतः हम सब स्वयं इस गुण के प्रादुर्भाव के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें—'पर-सेवा पर उपकार में हम निज जीवन सफल बना जायें, इसी में हमारा और विश्व का कल्याण तथा शान्ति है।

१७. भ्रष्टाचार : राष्ट्रीय अभिशाप

अथवा

राष्ट्र के विकास का शत्रु : भ्रष्टाचार

आज हम स्वतन्त्र हैं। प्रातःकाल होने पर सर्वत्र 'सत्यमेव जयते' की ध्वनि आकाशवाणी के केन्द्रों से सुनायी पड़ती है। लेकिन व्यावहारिक-जीवन में क्या हम किसी भी भारतीय को सुखी और शान्त कह सकते हैं? इस प्रश्न का उत्तर बड़ा दुरूह है। नकारात्मकता के अतिरिक्त और इसका उत्तर हो ही क्या सकता है? इसका एक-मात्र कारण देशवासियों के आचरण की भ्रष्टता है। आज जिस प्रकार देश में बेकारी, भुखमरी, शिक्षा, औद्योगिक विकास, कृषि की उन्नति, परिवार-नियोजन आदि-आदि समस्याएँ हमारे सामने हैं, उसी प्रकार वैयक्तिक और शासकीय स्तर पर भ्रष्टाचार की भी भयंकर समस्या है। सहस्रों वर्षों की दासता ने हमें सचमुच चरित्र-हीन बना दिया है और यही कारण है कि आज पच्चीस वर्ष की स्वतन्त्रता के उप-रान्त भी हम स्वयं का भली प्रकार निर्माण नहीं कर पा रहे हैं, वैयक्तिक स्वार्थों में हम, दूसरों के प्रति तथा राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य को भूले हुए हैं। न हमें समाज की चिन्ता है और न परिवार की, न हमें देश की चिन्ता है और न प्रान्त की। कहने को हम बड़ी-बड़ी डींग हाँकते हैं, बातों के महल खड़े करते हैं, योजनायें तैयार करने में अनेक आयोगों का गठन करते हैं, सभाओं में तर्कों को प्रस्तुत करते हैं, किन्तु कर्तव्य के नाम पर मौन तथा किंकर्तव्यविमूढ़ बने रहते हैं। आज हमें न किसी का भय है और न संकोच। कर्तव्य-अकर्तव्य का ज्ञान भी हम जैसे खो बैठे हैं। भ्रष्ट आचरण हमारे ऊपर हावी है। देश के पुरातन आदर्श और सिद्धान्त मात्र कहने एवं उपदेश देने की वस्तुएँ रह गई हैं। निदान, देश में सर्वत्र असत्य, अनाचार, काला बाजार, रिश्वत, सिफारिश, अनुचित मुनाफाखोरी, जमाखोरी, साम्प्रदायिकता लूट-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खसोट, चरित्रहीनता, कर्तव्य-हीनता और भ्रष्टाचार का आतंक छाया हुआ है। कोई भी राष्ट्र या संस्था ऐसी स्थिति में उन्नति नहीं कर सकता। देश में भ्रष्टाचार का बोलबाला है। लगता है जैसे इस क्षेत्र में देशवासियों में परस्पर होड़ लगी है।

सामान्यतया इस भ्रष्टाचार के दो रूप ही देखने को मिलते हैं—एक वैयक्तिक-हितों एवं स्वार्थों के लिए सामूहिक-हितों की अवहेलना करना और द्वितीय, अनुचित तथा अनियमित रूप से आर्थिक लाभ प्राप्त करना तथा जमाखोरी करना। चाहे सामाजिक-कार्य हो चाहे शासकीय-दायित्व सभी क्षेत्रों में छोटे चपरासी से लेकर बड़े-बड़े अफसरों, अधिकारियों और मंत्रियों तक में रिश्वत का बाजार गरम मिलता है। बिना रिश्वत के कोई किसी से बात नहीं करता। कायदे-कानून सब एक तरफ रखे रह जाते हैं। संसद-सदस्यों एवं विधायकों तक को रिश्वत के सहारे खरीदा जा सकता है। वित्तीय रूप का सम्बन्ध व्यापारियों और उद्योगपतियों से है। मुनाफाखोरी तथा जमाखोरी के लिए ये व्यापारी न तो शुद्ध वस्तुओं का उत्पादन करते हैं और न पर्याप्त मात्रा में जनता में उसका वितरण। मनचाहा लाभ लेकर उनका विक्रय करना, अशुद्ध रूप में अनेक खाद्य-पदार्थों तथा औषधियों का वितरण इसी भ्रष्टाचार के प्रकार हैं।

देश में परिव्याप्त भ्रष्टाचार के अनेक कारण हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह भ्रष्टाचार का अवगुण अंग्रेजों से उत्तराधिकार के रूप में मिला है। वे उन्हीं भारतीयों का सम्मान करते और नौकरियां देते थे, जो उनकी चापलूसी तथा खुशामद किया करते थे और अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए भ्रष्टाचार को अपनाते थे। आज वे ही संस्कार हम लोगों में उतर आये हैं। आज भारत के प्रायः सभी नेता और मन्त्री इसी मनोवृत्ति के पाये जाते हैं। उनके पीछे अकर्मण्य और निठल्ले चापलूस सदा बने रहते हैं और दलाल बनकर उनके भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन देते रहते हैं। सरकारी दफ्तरों में भी खुशामदी लोगों की भीड़ रहती देखी जाती है। उनमें से कुछ इस गुण के कारण अधिकारियों के इतने मुँह लग जाते हैं कि दूसरे से रिश्वत लेकर उनका शीघ्र काम करा देते हैं। अधिकारी उनकी आड़ में ईमानदारी का नाटक खेलते रहते हैं और भीतर ही भीतर भ्रष्टाचार की इस समस्या को बल मिलता रहता है। उनकी इस कमजोरी को जब कार्यालय के अन्य बाबू एवं चपरासी जान लेते हैं, तो वे भी बे-खटके भ्रष्टाचार के सहारे अपनी जेब भरने लगते हैं और नीचे से ऊपर तक यह व्याप्त हो जाता है।

भ्रष्टाचार का दूसरा कारण आज की भौतिकवादी परिस्थितियों में अर्थ की प्रधानता है। अर्थ के अभाव में व्यक्ति की ईमानदारी, सदाचारी, विद्वता, कला-साधन आदि गुणों का मूल्यांकन नहीं होता। अतः सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने तथा अधिकाधिक भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए हर व्यक्ति भ्रष्टाचार का अवलम्बन करता है। आज समाज में श्रेष्ठता का एकमात्र मापदण्ड धन है। इसीलिए प्रत्येक व्यक्ति अनुचित साधनों का उपयोग कर धनोपार्जन का प्रयास

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करता है। प्रारम्भ में वह अवश्य झिझकता है किन्तु शनैः-शनैः इसका अभ्यस्त हो जाता है। छोटे-छोटे कार्यालयों के क्लर्क इसी प्रकार धनवान् बन जाते हैं। कोई निष्कंटक रिश्वत लेता है तो कोई मिलकर सरकारी गबन करता है।

देश में भ्रष्टाचार की समस्या के पनपने का तीसरा कारण शासन में कठोरता का अभाव है। यदि भ्रष्टाचारियों के साथ कठोर व्यवहार किया जाय, कठोर दण्ड की व्यवस्था की जाय, तो यह समस्या भय से स्वतः समाप्त हो सकती है। कठोरता न बरतने और न्यायालयों में भी न्याय का गला घुट जाने से भ्रष्टाचार अपनी चरम-सीमा को छूने लगता है। आज देश में अनेक दूषित औषधियों से वितरण तथा अशुद्ध खाद्य-पदार्थों के विक्रय से कितने दुष्परिणाम निकल रहे हैं, यह भला कौन नहीं जानता? किन्तु शासन की कठोरता के अभाव के कारण उनमें वृद्धि ही हो रही है।

इनके अतिरिक्त आज की कमर-तोड़ मँहगाई ने अलग भ्रष्टाचार के लिए द्वार खोल दिया है। अगर वेतन आदि की व्यवस्था भली-भाँति कर दी जाय, तो यह परिस्थिति सम्भवतः कुछ समय के लिए टल जाय। व्यापारी वर्ग मिलावट, काला-बाजारी, मुनाफाखोरी से लाभान्वित हो रहा है। दैनिक वस्तुओं की प्राप्ति न होने पर भी जनसाधारण को रिश्वत का सहारा लेना ही पड़ता है।

भ्रष्टाचार की समस्या के पनपने का बहुत-कुछ कारण सरकार की ढुल-मुल नीतियाँ हैं। यह ठीक है कि सरकार हमारी ही बनाई हुई है, किन्तु जो लोग विभिन्न विषयों के पण्डित और विद्वान् हैं, उनसे तो यह आशा की ही जाती है कि उनकी योजनाओं का कोई न कोई व्यावहारिक पहलू अवश्य होगा। लेकिन जब ये नीतियाँ ही देश के लिए घातक बनती हैं, तब भला भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन क्यों न मिलेगा? योग्य व्यक्तियों के लिए शासन की ओर से कोई सुविधा नहीं मिलती और अयोग्य तथा अपनेपन को मात्र मत प्राप्त करने के लिए बढ़ावा दिया जाना भी इसका मूल कारण है।

देश का सम्पूर्ण राजनैतिक वातावरण आज भ्रष्टाचार से युक्त है। यही कारण है कि नेताओं में परस्पर संघर्ष होते हैं, वे एक दल को छोड़कर दूसरे दल में मिल जाते हैं अथवा अपना नया दल बना डालते हैं। कुर्सी और उसके सहारे अपरिमित धनोपार्जन ही जैसे उनका कर्तव्य रह गया है। इस दलबन्दी के कारण ही अयोग्य व्यक्ति भी राजनीति में प्रविष्ट होकर बड़े-बड़े पदों को पा जाते हैं। वे भ्रष्टाचार की समस्या को अलग पुष्ट करते हैं। राजनीति में प्रवेश पाना ही जैसे निजी स्वार्थों की सिद्धि के लिए आधारशिला तैयार करना है। दलगत शक्ति के सहारे जहाँ अनैतिक साधनों को अपनाकर चुनाव जीते जाते हैं, वहाँ शासन हाथ में आने पर बड़े-बड़े अफसरों, पुलिस के अधिकारियों, न्यायाधीशों तक पर अनैतिक और अनियमित कार्य कराने के लिए दबाव डलवाये जाते हैं। इस प्रकार शासक और शासित दोनों ही भ्रष्टाचार के अभ्यस्त हो जाते हैं। यही कारण है कि चोरी, अराजकता, बलात्कार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की बाढ़ आ गई है पर सरकार के कान पर जूँ नहीं रेंगी है। इसका प्रभाव जीवन के हर स्तर पर पड़ेगा।

सरकारी कार्यालय तो भ्रष्टाचार के प्रमुख अड्डे ही हैं। हर व्यक्ति को यहां कभी न कभी जाना ही पड़ता है और चपरासी से लेकर बाबू, बड़े बाबू तथा अधिकारियों के लिए देने की व्यवस्था करनी पड़ती है। यहाँ तक बड़े-बड़े लाभों के लिए तो धन से भी बढ़कर स्त्रियों, शराब की बोतलों तथा अन्य अनैनिक कार्यों का भी सहारा लिया जाता है। पुल तथा सड़क निर्माण, बाँध-योजनाओं में अभियन्ता-गण ठेकेदारों से करोड़ों रुपया ऐंठते हैं और उसी का प्रतिफल यह होता है कि देश प्रति-वर्ष घाटे की ओर बढ़ता जाता है। हमारी योजनाएँ सफल नहीं हो पातीं। रेल, तार, डाक आदि की भी यही व्यवस्था है। अन्यथा करोड़ों के घाटे की स्थिति पैदा ही क्यों होती ?

अस्पतालों में भ्रष्टाचार तो दानवता की प्रगति का सर्वप्रथम सोपान बन चुका है। किस प्रकार दीन-हीन रोगियों का चीखते-चिल्लाते हुए मौत के मुँह में चले जाना आँखों से देखने और स्वयं अनुभव करने का विषय है। इतने पर भी डाक्टर-डाक्टरनी मौन बने रहते हैं। अस्पतालों से लाखों-करोड़ों की औषधियाँ बाजारों में बिक जाती हैं, अधिकारियों के घरों-कोठियों पर अतिरिक्त आय का साधन बन जाती हैं, लेकिन गरीब रोगियों को वितरित नहीं हो पातीं। उन्हें जो खाना दिया जाता है, वह जेलियों से भी बदतर होता है। अधिकारी ऐश करते हैं और रोगी बिस्तरों पर कराहते मौत की पुकार करते हैं। चाँदी के टुकड़ों के हाथ स्वयं को बेचने वाले डाक्टर-डाक्टरनी भला देश का क्या उद्धार कर सकते हैं ? दूर से आये मरीजों से कोई धनाभाव में बात भी नहीं करता। भ्रष्टाचार का तांडव नृत्य यहाँ दर्शनीय है।

व्यापारी-वर्ग तो आज भ्रष्टाचार का प्रमुख आधार ही है। न बाजार में कोई शुद्ध वस्तु मिलती है और न उचित मूल्य की ही व्यवस्था है। अच्छी वस्तुओं में मिलावट तो जैसे व्यापार की आज आधारशिला ही बन गयी है। मसालों में ईंट का चूरा, घोड़े की लीद आदि, दूध में अरारोट, तेल में अलसी का तेल, सीमेंट में पत्थर, चीनी में सेलखड़ी, दवाओं में अनेक सस्ते हानिकारक पदार्थों की चर्चाएँ दिन-प्रतिदिन सुनाई पड़ती हैं। व्यापारी अनुचित कार्यों के द्वारा मुनाफाखोरी और जमाखोरी में जुटा है। किसानों में भी यह मनोवृत्ति पनपने लगी है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी भ्रष्टाचार देखा जाता है। विद्यालय आज व्यापार और अनैतिकता के प्रमुख केन्द्र बन गये हैं। न अध्यापकों के आदर्श देश में शेष रहे हैं और न छात्रों के कर्तव्य। प्रबन्ध समितियों के अन्याय, नियुक्तियों में रिश्वत, सरकारी अनुदान का दुरुपयोग, जातिवाद, प्रतिदिन बदलते पाठ्यक्रम, परीक्षा में नकल, सिफारिश के सहारे परीक्षाओं की सफलता, शिक्षकों पर आक्रमण, और छात्र-छात्राओं के अनैतिक सम्बन्ध सभी भ्रष्टाचार के ही तो अंग-प्रत्यंग हैं। इस प्रकार आज देश में जीवन और समाज का कोई अंग इस भ्रष्टाचार से अछूता नहीं कहा जा सकता।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस भयंकर समस्या को दूर करने के लिए जहाँ एक ओर देशवासियों में चरित्र-निर्माण और नैतिकता की आधारशिला को तैयार करना अनिवार्य है, वहाँ दूसरी ओर शासन की नीतियों का निर्माण भी जन-कल्याण और देशोत्थान के लिए व्यावहारिक दृष्टि से होना आवश्यक हैं। केवल कागजी घोड़ों से देश का कल्याण सम्भव नहीं हो सकता और न इस समस्या का अन्त हो सकता है। सरकार का यह भी कर्तव्य है कि वेतन आदि की सुव्यवस्था करे, ताकि हर व्यक्ति कम से कम अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। साथ ही जमाखोरी, कालाबाजारी आदि को रोकने के लिए कठोर दण्ड की व्यवस्था सरकार करे, ताकि जनता में शासन से भय-भीत होने की प्रवृत्ति जाग सके। अधिकारियों पर कड़ी दृष्टि रखी जाय तथा ऐसे कानून बनाये जायँ, ऐसी नीतियाँ तैयार की जायँ, जिनकी प्रायोगिक उपादेयता हो। शिक्षा के क्षेत्र में नैतिकता को बल दिया जाय। शासन ऐसे आदर्शों को समक्ष रखे, जिनसे अन्य व्यक्ति शिक्षा ग्रहण कर दूसरों तथा देश के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वाह कर सकें। मँहगाई को हर सम्भव उपाय से रोका जाय और उत्पादन को प्रोत्साहन देकर अपेक्षित वस्तुओं का उचित वितरण जनता में कराया जाय। तभी यह समस्या दूर हो सकती है।

निष्कर्ष यह है कि भ्रष्टाचार का भयंकर रोग सम्पूर्ण देश को खोखला कर देता है। अतः देश में इसे शीघ्रातिशीघ्र दूर करने का प्रयास करना ही श्रेयस्कर है, तभी हम स्वतन्त्रता की रक्षा कर सकेंगे।

१८. अनौपचारिक शिक्षा

अथवा

प्रौढ़-शिक्षा

निरक्षरता राष्ट्र के लिए अभिशाप है। किसी भी राष्ट्र की चेतना का प्रतीक वहाँ की शिक्षित जनता है। भारत का एक विशाल देश है। यहां साठ करोड़ व्यक्ति निवास करते हैं। प्राचीन ऐतिहासिक और सांस्कृतिक समृद्धि के होते हुए भी आर्थिक परवशता ने यहां की रीढ़ तोड़ दी। निर्धनता, शोषण और बेरोजगारी के कारण यहां की अधिकांश पुरानी पीढ़ी निरक्षर है। गांधी जी ने प्रौढ़-शिक्षा का कार्य-क्रम इसी निरक्षर जनता को साक्षर बनाने के उद्देश्य से साबरमती में प्रारम्भ किया था। गांधी जी के बाद उनके अनुयायियों ने इस दिशा में कोई नवीन कार्य नहीं किया। गांधी जी का प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम वहीं का वहीं पड़ा रहा। जनता सरकार ने प्रौढ़ शिक्षा का व्यावहारिक रूप देने का निश्चय किया है। लेकिन प्रश्न यह है कि इस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रौढ़ शिक्षा का स्वरूप क्या है तथा क्या होना चाहिए। इसी विषय पर प्रकाश डालना हमारा उद्देश्य है।

गांधी जयन्ती २ अक्टूबर १६७८ से देश में प्रौढ़-शिक्षा कार्यक्रम लागू करने का निश्चय किया जा चुका है पर उसके व्यावहारिक पहलू पर अभी तक निर्णय नहीं लिया गया है। अत्यधिक महत्वपूर्ण और उपादेय कार्यक्रम की सफलता के लिए उचित वातावरण का निर्माण होना आवश्यक है। शिक्षा सुविधाओं के बाद भी यदि निरक्षर प्रौढ़ों की संख्या बढ़ती जाती है तो इसके कारणों पर भी विचार करना आवश्यक है। हमें ज्ञात होना चाहिए कि १६७१ में हुई जनगणना में साक्षर लोगों की संख्या २६·४५% थी। तत्कालीन सरकार ने इस ओर ध्यान नहीं दिया कि देश की ७०% जनसंख्या निरक्षर है। इसके साथ ही यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि इस निरक्षर जनता में स्त्रियों की संख्या ८०% से अधिक है क्योंकि साक्षर स्त्रियों की संख्या केवल १८% थी। यह तथ्य तत्कालीन सरकार के लिए एक चुनौती थी। परन्तु उन्हें इतना अवकाश भी नहीं था और न वे इस महत्वपूर्ण पहलू पर विचार करना चाहते थे। वास्तविकता तो यह थी कि तत्कालीन सरकार कुछ व्यक्तियों के स्वार्थ साधनों की पूर्ति को ही अपना लक्ष्य समझ बैठी थी।

यह निर्विवाद रूप से माना जा सकता है कि प्रौढ़-शिक्षा व्यापकता तथा उपादेयता दोनों ही दृष्टियों से अपरिहार्य प्रतीत होती है? वैयक्तिक और राष्ट्रीय दोनों ही दृष्टियों से यह योजना अनिवार्य विषय है। इस सम्बन्ध में विचारंणीय विषय यह भी है कि प्रौढ़ों की इतनी बड़ी संख्या का कारण क्या है। क्या शिक्षा की सुविधाएँ उपलब्ध न हो पाने के कारण जनसंख्या का इतना बड़ा प्रतिशत अशिक्षित और अक्षर ज्ञान से विहीन रह गया। क्या देश में शिक्षा सुविधाओं का जो विकास हुआ। उसका लाभ सम्पूर्ण समाज को न मिलकर वर्ग विशेष को मिल रहा है? क्या जनसंख्या के बढ़ते अनुपात के साथ-साथ पिछली जनगणना से अब तक निरक्षर लोगों की संख्या में वृद्धि नहीं हुई है। पहला कारण तो यह प्रतीत होता है कि हमारी अर्थ-व्यवस्था चाहे कृषि पर आधारित हो या लघु उद्योग-धन्धों पर या मजदूरी पर निर्भर हो, यह मान लिया जाता है कि शारीरिक श्रम ही रोटी उपार्जन का साधन है। बच्चे के जन्म लेते ही उसके जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक समस्या आ जाती है। जैसे ही वह कुछ करने योग्य हुआ, उसे लाभकारी इकाई मान लिया जाता है और उसकी उम्र के अनुसार उसे कोई-न-कोई कार्य करने को दे दिया जाता है फलत: शिक्षा का प्रश्न गौण हो जाता है कहीं-कहीं तो गौणातिगौण हो जाता है। दूसरा कारण यह भी है कि हमारे देश में शिक्षा का अर्थ सही रूप में अभी तक विकसित नहीं हो पाया है। प्रत्येक सम्प्रदाय की जो व्यावसायिक आवश्यकताएँ हैं या यह भी कहा जा सकता है कि जो परम्परागत व्यावसायिक कार्य है उसकी प्रारम्भिक शिक्षा की व्यवस्था नहीं है। विद्यार्थी को जो शिक्षा दी जाती है उसकी उसके कौटुम्बिक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और सामाजिक वातावरण से कोई साम्य नहीं हो पाता और दूसरे का प्रभाव उसे पहले से विरत कर देता है फलतः निरक्षर प्रौढ़ों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती जाती है ।

यह मानकर चला जा रहा है कि देश में १५ करोड़ लोगों को प्रथम चरण में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में लिया जाना चाहिए लेकिन वित्तीय कारणों से पहिले ६ करोड़ पचास लाख लोगों को शिक्षित करने का आयोजन सरकार का है। विचारणीय विषय यह है कि कार्य की महत्ता और उपयोगिता असंदिग्ध होते हुए भी उसके कार्यान्वियन के लिए कौन-सी व्यवस्था आवश्यक है । इस सम्बन्ध में सबसे पहली आवश्यकता प्रौढ़ शिक्षा के सम्बन्ध में वातावरण बनाने की है । जब तक हमारे लक्ष्य वर्ग में प्रौढ़ शिक्षा के प्रति आकर्षण उत्पन्न नहीं होता और वह यह नहीं समझता कि उसके स्वयं के हित से इसका निकटतम सम्बन्ध है, तब तक वह इस कार्यक्रम को स्वीकार नहीं कर सकता । जब तक व्यक्ति स्वेच्छा से तथा अपनी अन्तःप्रेरणा से इस दिशा में प्रवृत्त नहीं होगा, बाह्य प्रयत्न अधिक उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकते । यदि यही दशा रही तो यह योजना कागजी योजना ही रह जायगी ।

प्रौढ़-शिक्षा का महत्वपूर्ण पहलू अक्षर ज्ञान कराना है पर यह यहीं तक सीमित नहीं है । अक्षर ज्ञान के अतिरिक्त सामान्य व्यावहारिक आवश्यकताओं की पूर्ति भी इसका लक्ष्य है । प्रौढ़-शिक्षा के अन्तर्गत विकास योजनाओं की जानकारी, खेतीबाड़ी की समस्यायें सामाजिक और राजनैतिक विचार जन-जन तक पहुँचाना भी इसका लक्ष्य है । प्रौढ़ शिक्षा में लगे व्यक्ति सही उच्चारण कर सकें—यह भी आवश्यक है । व्यक्ति वास्तव में साक्षर बन सकें यह भी उद्देश्य है । वर्णमाला सीखना उतनी बड़ी बात नहीं है पर इसके बाद कुछ न पढ़कर अपना अक्षर ज्ञान बनाये रखना आवश्यक है । नव-साक्षरों के लिए पुस्तकों और पत्रिकाओं की कमी देश में है । इस दिशा में भी सोचना आवश्यक है । अब तक केवल राजस्थान सरकार द्वारा प्रकाशित श्री वीरेन्द्र त्रिपाठी द्वारा लिखित प्रवेशिका पुस्तक प्रकाश में आयी है, इस पुस्तक में वाक्य रचना प्रधान है । लेकिन पुस्तक में किए गए उदाहरण जिज्ञासु प्रौढ़ों के स्तर से मेल नहीं खाते । पुस्तक में ऐसे वाक्य प्रयोग करने चाहिए जिन्हें प्रौढ़ दैनिक जीवन में प्रयोग करता हो ।

प्रौढ़-शिक्षा का स्वरूप और क्षेत्र निर्धारित करने के साथ-साथ यह प्रश्न भी महत्वपूर्ण है कि यह शिक्षा किसके द्वारा दी जाय । यह आवश्यक प्रतीत होता है कि जिस वर्ग के प्रौढ़ को प्रशिक्षित करना है । प्रशिक्षक को उसके जीवन की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए । इसके अभाव में दी जाने वाली शिक्षा अपूर्ण होगी । वस्तुतः कार्यकर्त्ताओं का चयन भी अत्यन्त आवश्यक है । अन्ततः राष्ट्रीय लक्ष्य केवल व्यक्तियों को अक्षर ज्ञान कराना और उनके व्यावसायिक जीवन से सम्बन्धित बातों से परिचित कराना ही नहीं है । ये दोनों विषय महत्वपूर्ण हैं परन्तु प्रौढ़ शिक्षा का लक्ष्य व्यक्ति

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का व्यावहारिक विकास है। भारत के नागरिकों हम जो दिशा देना चाहते हैं उसका यह उचित अवसर है। यहां का निवासी सहिष्णुता तथा दयालु रहा है। उसके इन गुणों का विकास ही इस शिक्षा का उद्देश्य नहीं होना चाहिए। यहाँ यह भी ध्यान देने की बात है कि उसमें किसी प्रकार की संकीर्णता का प्रवेश न हो। उसका बौद्धिक विकास हमारी राष्ट्रीय आकांक्षाओं के अनुरूप होना चाहिए। अतः जिन लोगों के हाथों में यह उत्तरदायित्व सौंपा जाय वे स्वयं इन गुणों से परिपक्व होने चाहिए। लेकिन सरकार प्रत्येक प्रशिक्षक को ५० रुपया मासिक भत्ता देना चाहती अतः इस प्रकार के प्रशिक्षक इतने कम भत्ते पर सुलभ नहीं हो सकते हैं। प्रायः यह व्यक्ति गांव का साक्षर व्यक्ति या प्राथमिक विद्यालय का शिक्षक होगा दोनों ही स्थितियों में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र का कार्य उत्साह-पूर्वक चला पाना सम्भव नहीं है।

पाठ्यक्रम का निर्धारण भी वैज्ञानिक होना चाहिए। पाठ्य-पुस्तकें क्षेत्रीय स्तर पर प्रकाशित हों जिससे उसका केन्द्रीयकरण न हो सके। यहां यह भी आवश्यक है कि प्रौढ़-शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग की जा रही शब्दावली जन-जीवन के निकट हो। अवधारणायें केवल शब्दों से ही नहीं बदलतीं।

प्रौढ़-शिक्षा का कार्यक्रम राष्ट्रीय महत्व का प्रश्न है। उसे राजनैतिक ज्ञान दिया जाना चाहिए। राजनैतिक स्वार्थ और संकीर्णता से मुक्त होकर यह कार्य होना चाहिए। शिक्षा मंत्रालय ने इस सम्बन्ध में यह विचार व्यक्त किया कि यह विराट् सार्वजनिक कार्यक्रम स्वयंसेवी संस्थाओं तथा युवा-संगठनों को भी सम्मिलित किया जायेगा। इसी प्रश्न पर आलोचनाएँ होने लगीं कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को प्रभावी भूमिका दी जायेगी। इसी प्रकार की आलोचनाएं उन राजनैतिक दलों ने की जो प्रत्येक कार्यक्रम की आलोचना ही अपना उद्देश्य समझते हैं। सरकार का मत है "प्रौढ़-शिक्षा कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में राज्य सरकारें सबसे अधिक भागीदारी होंगी। केन्द्र इस कार्यक्रम के लिए किसी राजनैतिक, ट्रेड यूनियन, युवा सांस्कृतिक या सामाजिक संगठन को धन न देगा।" इस प्रकार राजनैतिक आधारों पर राष्ट्रीय महत्व के कार्यक्रम की आलोचना करना संकीर्ण वृत्ति का परिचायक है।

१६. साहित्यकार का साहित्य के प्रति दायित्व

अथवा

साहित्य और समाज

अथवा

साहित्य और जीवन

अथवा

साहित्य समाज का दर्पण है।

साहित्य और साहित्यकार का संबंध वस्तु और निर्माता का संबंध है। साहित्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के रूप में साहित्यकार मानवीय भावों की अभिव्यक्ति करता है। वह मनुष्य के स्वार्थ सम्बन्धों के संकुचित मण्डल से ऊपर उठाकर लोक सामान्य भाव-भूमि में ले जाता है जहाँ जगत की नाना गतियों के मार्मिक स्वरूप का साक्षात्कार और शुद्ध अनुभूतियों का संचार होता है। इस भूमि पर पहुँचे हुए मनुष्य को कुछ काल के लिए अपना पता नहीं रहता। वह अपनी सत्ता को लोक सत्ता में लीन किये रहता है। उसकी अनुभूति सबकी अनुभूति होती है या हो सकती है। 'इस अनुभूतियोग के अभ्यास से हमारे मनोविकारों का परिवकार तथा शेष श्रृष्टि के साथ राजात्मक सम्बन्ध की रक्षा और निर्वाह होता है। जिस प्रकार जगत अनेक रूपात्मक है उसी प्रकार हमारा हृदय भी अनेक भावात्मक है। इन अनेक रूपों और भावों का व्यायाम और परिवकार तभी समझा जा सकता है जबकि इन सबका प्रकृत सामंजस्य जगत के भिन्न-भिन्न रूपों व्यापारों या तथ्यों के साथ हो जाय। इसी संदर्भ में यह भी कहा गया है "इन रूपों और व्यापारों के सामने जब कभी वह अपनी पृथक् सत्ता की धारणा से छूटकर-अपने आपको बिलकुल भूलकर विशुद्ध अनुभूति मात्र रह जाता है तब वह मुक्त हृदय हो जाता है। जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है उसे कविता कहते हैं।" इस प्रकार काव्य और निर्माता में अपार्थक्यभाव है क्योंकि साहित्य में मानव हृदय की अनुभूतियों का सहज चित्रण होता है। जहाँ सहज अनुभूतियों का अभिव्यक्तीकरण सहजात नहीं होता वहाँ साहित्यकार साहित्य के प्रति न्याय नहीं कर पाता। इस प्रकार का साहित्य अक्षुण्ण साहित्य की कोटि में नहीं आता तथा वह साहित्य काल के प्रवाह में कवलित हो जाता है। इसके विपरीत जब साहित्यकार मन की अनुभूतियों के धरातल को स्पर्श करके भावभूमि का सहज अभिव्यक्तीकरण करता है तब उसका साहित्य अमरत्व को प्राप्त करता है तुलसी और कालिदास का काव्य इसी कोटि का है।

साहित्य के प्रति साहित्यकार के दायित्व पर परिचर्चा करते समय साहित्य के मूल भाव का भी परिचय देना आवश्यक है। भामाह ने 'शब्दार्थौ सहितं काव्यं' कहकर काव्य की परिभाषा दी। मम्मट ने दोष रहित गुणों से मन्डित शब्दार्थ को साहित्य कहा। आचार्य विश्वनाथ ने 'रसात्मक वाक्यं काव्यं' कहकर साहित्य को परिभांषित किया तथा प्राचीन परिभाषा 'सहित भाव साहित्य' के निकट पहुँचाया। इस प्रकार आचार्य विश्वनाथ ने रसात्मकता को काव्य का आधार माना है। काव्यानन्द की उपलब्धि ही साहित्य की उपादेयता है। यह काव्यानन्द ब्रह्मानन्द सहोदर है। जिस प्रकार मधुमती भूमिका में पहुँचकर साधक योगी को ब्रह्मानन्द की प्राप्ति होती है उसी प्रकार काव्यानन्द की प्राप्ति में भी सहज सुख की अनुभूति होती है। वास्तव में काव्य सशक्त अनुभूतियों का सहजोद्रेक है। यह शान्त मनःस्थिति में भावित भाव से उत्पन्न होता है। काव्य का यह स्वरूप एक कवि द्वारा प्रतिपादित है जो काव्यानुभूति का स्वतः भोक्ता है। स्पष्ट है काव्य और अनुभूति का निकट का संबंध है। विलियम वर्डस्वर्थ का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कथन दृष्टव्य है—"Poetry is the spontaneous our flow of powerful feelings, it takes its origin from emotion recollected in Tranquality."

वस्तुतः अनुभूति साहित्य का प्राण है। साहित्य में अनुभूति शब्दार्थ के माध्यम से अभिव्यक्ति पाती है। वह वस्तु है, वह आत्मा है। अनुभूति का अभाव काव्य का अभाव है। अनुभूति और काव्य में समवाय सम्बन्ध है। अनुभूति के अतिरिक्त कम्पना, बुद्धि और शैली तत्व तो असमवाय तत्व हैं। प्रश्न उठता है कि अनुभूति जिसे हम काव्य का प्राण तत्व मानते हैं क्या है ? प्रत्यक्ष जीवन में अनेक ज्ञान क्रियाओं और अनुभूतियों का अनुभव करते हैं। क्या ये अनुभूतियाँ ही काव्य हैं। यदि लौकिक अनुभूति ही काव्य है तो फिर एक माली द्वारा देखा गया गुलाब तथा कवि द्वारा अभिव्यक्ति की गई अनुभूति समान होनी चाहिये—

"आज हसता हुआ मैंने गुलाब देखा है।
ऐसा लगता है गोया तेरा ख्वाब देखा है।।"

इस मौलिक अन्तर का कारण क्या है ? मौलिक अन्तर यह है कि काव्यानुभूति लौकिक अनुभूति नहीं है। कहने का आशय यह है हम जीवन में जो प्रत्यक्षानुभूति करते हैं वही काव्यानुभूति नहीं होती। उसकी अपनी एक विशेषता है जो इस उसे साधारण प्रत्यक्षीकृत अनुभूति से, पृथक करती है। जब प्रत्यक्ष अनुभूति का भावन व्यापार द्वारा अनुभव किया जाता है तब वह काव्यानुभूति का स्वरूप प्राप्त प्राप्त करता है। यथा—पाकिस्तान के द्वारा भारत पर किये गये आक्रमण के समय भारतीय सैनिक क्रोधावेश में प्रतिपक्षी पर सिंह की तरह टूट पड़ते थे। उनके उस रौद्र रूप की काव्यानुभूति इस प्रकार है—

"यह धूम्र आग विस्फोट ध्वंस का अहसास ?
मेरी सीमाओं पर यह कैसी हल चल है ?
यह किसका दम्भ रोष को मेरे जगा रहा है ?
किसने अपना ही चाहा आप अमगंल है ?"

क्रोध की यह अनुभूति ही काव्य है। इसमें प्रत्यक्षानुभूति ज्यों की ज्यों रही है। वरन् कल्पना के माध्यम से उसका भावन किया गया है। इसी को तो वर्डस्वर्थ ने 'Emotion recollected in Tranquality' कहा है। यह भावित भाव (Contemplated emotion) प्रत्यक्षीकृत भाव से भिन्न होता है। अनुभूति जब कल्पना के माध्यम से और अधिक तीव्र और स्पृहणीय हो जाती है तब भावन होने पर वह भाव का विषय बन जाती है और यही अनुभूति काव्यानुभूति होती है।

साहित्यकार का साहित्य के प्रति यह दायित्व होता है कि वह अनुभूति को भावन व्यापार द्वारा रस दशा की स्थिति तक पहुँचने दे। अन्यथा काव्यानुभूति का वास्तविक स्वरूप प्रस्फुटित नहीं हो सकेगा। साहित्यकार का यह भी दायित्व है कि वह अत्यधिक कल्पनाशील न हो। काव्य के चारों तत्व कल्पना, भाव, बुद्धि और शैली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तत्वों में सामंजस्य हो । जब कल्पनाशीलता अधिक बढ़ जायेगी तो साहित्य का वैभव नष्ट हो जायेगा । भाव शून्य कल्पना साहित्य को कोरा चमत्कार बना देती है । बिहारी जैसे कवि जब इस तथ्य को भूलकर कल्पना का अत्यधिक आश्रय ग्रहण करने लगते हैं तो वहाँ काव्यात्मकता नष्ट हो जातीहै । अतः साहित्य में कल्पना का उपयोग भावनाओं के चित्रण और विकास के लिए ही होना चाहिये अन्यथा वह महत्वहीन हो जाती है ।

बुद्धि तत्व साहित्य का एक अपरिहार्य तत्व है । साहित्य में किसी न किसी मात्रा में विचार और सिद्धान्तों का समावेश किया जाता है । इसके अभाव में भावना केवल स्पन्दन मात्र ही होंगी । उसका आधार तत्व विच्छिन्न हो जायेगा । कथावस्तु की सूक्ष्म रेखाओं के निर्माण के लिये, घटनाओं की शृङ्खलाओं के मिलाने के लिए और कार्य के अनुरूप फल दिखाने के लिये बुद्धि तत्व का प्रयोग होता है ।

कुछ साहित्यकार अपने व्यक्तित्व की छाप देने के लिये अतिशयता तथा अभिधेयात्मकता का प्रयोग करते हैं । फल यह होता है भाव सौंदर्य में बाधा पहुँचती है । भाव शून्य विचार काव्यानुभूति में वाधक है ।

शैली काव्य को स्वरूप प्रदान करती है । 'Style is the man himself' के अनुसार शैली ही व्यक्तित्व है । साहित्यकार जिस भाषा, जिस रूप और जिस ढंग से अपने भाव विचारों को अभिव्यक्त करता है वही शैली है । काव्य के प्रारम्भिक तीन तत्व काव्य के प्रारम्भ हैं तो शैली उसका शरीर है । जैसे बिना शरीर के प्राण नहीं टिक सकते उसी प्रकार बिना शैली के काव्य का निर्माण नहीं हो सकता । लेकिन शैली तत्व की अतिशयता एक विकार हो जाती है । जिस प्रकार केशवदास शैली की अतिशय सज्जा के कारण हृदयहीन कहलाए । इसका प्रत्यक्ष प्रभाव काव्यत्व के हनन पर पड़ता हैं । यद्यपि वामन ने शैलीगत गुणों को काव्य की आत्मा कहा ।

साहित्य का समाज के साथ अनिवार्य सम्बन्ध है । साहित्यकार शून्य में काव्य की सर्जना नहीं करता । उसके समक्ष समाज होता है, समाज की परिस्थितियाँ होती है । मानव-जीवन होता है । जो कवि या साहित्यकार इसकी उपेक्षा करते हैं, उनका साहित्य अमर साहित्य नहीं होता । भक्तिकाल के कवियों ने साहित्य को जीवन के साथ जोड़ा ।

यही कारण है कि तुलसी, सूर आज भी प्रेरणा के स्रोत हैं । रीतिकालीन कवियों ने समाज की उपेक्षा की । राज दरबारों की शोभा, नृत्य, संगीत, सुरा, सुन्दरी को ही सामने रखा । यही कारण है कि जन-जीवन में उनका काव्य समाप्त हो गया है । आधुनिक युग में प्रेमचन्द की कहानियाँ, उपन्यास जन-जीवन के इतने निकट हैं कि तत्कालीन समाज का स्वरूप देखने वाले प्रेमचंद्र के उपन्यास पढ़ते हैं । कहा जाता है स्वतन्त्रता संघर्ष का इतिहास पढ़ना है तो प्रेमचन्द्र के उपन्यास पढ़िये । कांग्रेस ने स्वतंत्रता के वाद जो जमींदारी उन्मूलन और ग्राम सुधार का कार्य किया उसका प्रारूप 'प्रसाद' के 'तितली' उपन्यास में दिया गया है । 'टेढ़े मेढ़े रास्ते' नामक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपन्यास में कानपुर उन्नाव ही नहीं पूर्वी उ० प्र० के स्वतंत्रता संघर्ष की झाँकी देखी जा सकती है। बाबू वृन्दावन लाल वर्मा के उपन्यास इतिहास की ही मनोरम झाँकी प्रस्तुत करते वरन् अपने युगों के समाज की दशा का भी वर्णन करते हैं। कहने का आशय है कि समाज और जीवन की सही अभिव्यक्ति साहित्य में मिलती है।

'साहित्य समाज का दर्पण है।' जिस प्रकार दर्पण में हम अपना प्रतिविम्ब देखते हैं, उसी प्रकार समाज का प्रतिविम्ब साहित्य में देखा जाता है जो साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब दिखाने में असमर्थ रहता है, उसे साहित्य का नाम देना भी माँ सरस्वती के मन्दिर को कलुषित करना है।'किसी भी युग का साहित्य देखा जाय तो उसमें उस युग के समाज और जीवन का प्रतिविम्ब मिलेगा। आदिकालीन युग का साहित्य ('रासो') युद्धों से भरा पड़ा है। तुलसी का साहित्य निराश भारतीय जीवन में आशा के संचार का काव्यमय स्वरूप है। सूर का साहित्य कृष्ण की लीला भूमि का चित्रण ही नहीं वरन् निराशा को उखाड़ फेंकने का रागात्मक प्रेरणा श्रोत है। भारतेन्दु का साहित्य नई शक्ति का दीप है। 'भारत दुर्दशा' में भारत की तत्कालीन झाँकी है।' निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नत को मूल' कहकर उस महामानव ने राष्ट्रीय भाषाओं के विकास की कुंजी दी है। निराला का साहित्य 'जागो फिर एक बार', 'सिंह की माँद में आया है फिर स्यार' कहकर स्वतन्त्रता संघर्ष को तेज करने का आह्वान है। प्रगतिवादी साहित्य की समाज की दयनीयता का चित्र खींचता है।

१. साहित्यकार का साहित्य के प्रति दायित्व यह है कि वह काव्यानुभूति की सही अभिव्यक्तीकरण करे। काव्य के तत्वों का सामंजस्य स्थापित करे। काव्य एक हृदय के भावों की वेगवती धारा (Spontaneous our flow of Powerful feelings) है जो मन के भावन व्यापार को अभिव्यक्त करती है। तभी तो एक समय के डाकू बाल्मीकि क्रौंच वध को देखकर चीत्कार कर उठे।

'मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमा शास्वती शमाः' यह शोक उनके हृदय में उठे भावों का ज्वार है। रीतिकालीन कवियों के काव्य में भाव ज्वार की तरह नहीं उठते थे वे अपनी प्रतिभा के बल पर भावों का निर्माण करते थे जिससे सहजता की कमी हो जाती थी। इसका आभास बिहारी और देव में मिलता है। घनानन्द ने इसी की प्रतिक्रिया करके स्वयं को इस धारा से पृथक् कहा था—

"लोग हैं लागि कवित्त बनावत
मोहि तो मेरे कवित्त बनावत।"

२. निष्कर्ष यह है साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करके तत्कालीन स्थिति का चित्रण तो करता ही है साथ ही भविष्य के लिए प्रेरणा का स्रोत उत्पन्न करता है भविष्य क्या हो यह स्वरूप साहित्य में मिलता है। यही कारण है कि कवि त्रिकालदर्शी कहा जाता है। व्यास, बाल्मीकि, कालिदास, भवभूति, तुलसी, सूर, मीरा, रसखान, भारतेन्दु, निराला, प्रसाद और दिनकर की वाणी आज भी उतना ही मार्ग दर्शन करती है जितनी अपने युग में करती थी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२०. भारत की वैदेशिक नीति

हमारे राष्ट्र की विदेश नीति के शिल्पकार पं० जवाहर लाल नेहरू थे। वे मानव-स्वातंत्र्य, विश्व-शांति और अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना के पक्षधर थे। नेहरू जी ने कहा था कि 'हमारी विदेश नीति महान शक्ति गुटों से पृथक् रहने की है। हम सभी राष्ट्रों से मैत्री बनाये रखना चाहते हैं। हम द्वन्द्व में फँसाने वाली सैनिक अथवा किसी अन्य प्रकार की संधि नहीं करना चाहते।

हमारी विदेश नीति के सिद्धांत—शांति, स्वातंत्र्य, मित्रता और सभी देशों के सक्रिय सहयोग हैं। ये सभी विचार गुट-निरपेक्षता और शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की नीतियों में समाविष्ट थे। बांदुंग कान्फ्रेंस में पंचशील के अंतर्गत पं० नेहरू ने जोर देकर कहा था कि विश्व रंगमंच पर हुए अनेक युद्धों, शक्ति संतुलन के परिवर्तन तथा नये मूल्यों के उदय, के बावजूद भारतवर्ष अपनी विदेश नीति से दृढ़तापूर्वक जुड़ा हुआ है। जवाहरलाल जी के बाद भी इसी नीति पर भारत अब भी चल रहा है।

भारत की विदेश नीति का प्रारूप निम्नलिखित है—

(क) गुट निरपेक्षता की नीति।

(ख) भारतीय परंपराओं पर चलते रहने की इच्छा।

(ग) परतंत्र लोगों के स्वातंत्र्य सिद्धांत का पूर्ण समर्थन तथा जातीय भेद-भाव के किसी रूप अथवा प्रकार का विरोध।

(घ) अंतर्राष्ट्रीय शान्ति और समृद्धि को बढ़ावा देने के लिये सभी शांति प्रेमी राष्ट्रों और संयुक्त राष्ट्र संघ के साथ सहयोग।

गुट निरपेक्षता का तात्पर्य है किसी भी राष्ट्र से सैनिक समझौता न करना। उल्लेखनीय है कि संयुक्त राज्य अमरीका ने पचास-एक देशों तथा सोवियत संघ ने एकादश राष्ट्रों से सैनिक अभिसंधियाँ कर रखी हैं। इन समझौताओं का खतरनाक पक्ष यह है कि यदि संधि-संबद्ध किसी राष्ट्र पर कोई अन्य राष्ट्र आक्रमण करेगा तो वह उस पूरे गुट पर आक्रमण माना जायगा और इस प्रकार उस गुट के सभी राष्ट्र आक्रामक राष्ट्र के विरुद्ध सक्रिय हो जायेंगे। महाशक्तियों के सैनिक प्रपंचों और पचड़ों से मुक्त रहने के लिये भारत ने गुट निरपेक्षता की नीति को उचित ठहराया है। इस नीति का औचित्य इस बात से सिद्ध है कि अगस्त, १९७६ ई० में गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों की कान्फ्रेंस में लगभग १०० राष्ट्रों ने भाग लिया और गुटनिरपेक्षता की नीति को स्वीकृति प्रदान की। विविध राष्ट्राध्यक्षों के अलावा संयुक्त राष्ट्र संघ के महामंत्री कर्ट वाल्ड की उपस्थिति इस कान्फ्रेंस के महत्व को प्रकट करता है।

स्थूल रूप से भारत की विदेश नीति को तीन कालों में बाँटा जा सकता है—

१. १९४७-५४ ई०,

२. १९५५-६२ ई०,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३. १९६३ ई० अब तक,

देश को १९४७ ई० में आजादी मिली थी। उस समय देश को सुधारने, सहेजने की सबसे अधिक अपेक्षा थी। उस समय हमारी नीति केवल यह थी कि हम गुलाम देशों की स्वतंत्रता का स्वागत करते थे और उन्हें पूरा नैतिक सहयोग देते थे। एक बार अवश्य हमें कोरियाई संघर्ष में उलझना पड़ा। सोवियत संघ में स्टालिन राजनेता थे और वे भारत की गुट निरपेक्षता को सही रूप में देखने में असमर्थ थे। उस समय हम पर आरोपित किया जाता था कि हम ऐंग्लो-अमरीकन गुट से जुड़े हुए हैं। हमारी सक्रिय निष्पक्षता की नीति की प्रशंसा करते हुए अंग्रेज प्रतिनिधि ने संयुक्त राष्ट्र संघ के चौदहवें अधिवेशन में कहा था कि सांसारिक मामलों में भारत की नीति प्रभावपूर्ण और संतुलन पूर्ण है। भारतवर्ष सच्चे अर्थ में संयुक्त राष्ट्र संघ की उपयोगिता और उद्देश्य को स्वीकारता है।

भारत की विदेश नीति उसकी सारी समझदारी के बावजूद कईबार झटके खा चुकी है। हमारी विदेश नीति को सर्वाधिक सांघातिक आघात तक १९६२ ई० में चीन के आक्रमण से सहना पड़ा था। हिमालय के उत्तर का १४,००० मील का क्षेत्र आज भी चीन के अधिकार क्षेत्र में है। हम लोग यह संतोष करके बैठे हुये हैं कि वह सारा क्षेत्र बाँझ है। वहां तो कुछ भी उपजता नहीं। इसलिये उसे जाने दिया जाय। हम लोग यह भूल बैठे हैं कि यह देश के मान-सम्मान का प्रश्न है। चीन से हमारे संबंध बिगड़ने के दो प्रमुख कारण हैं। एक तो तिब्बत के प्रति हमारा सहानुभूतिपूर्ण रुख। दूसरे सोवियत संघ की मित्रता, जब कि रूस और चीन के बीच शीत युद्ध की स्थिति पिछले अनेक वर्षों से बनी हुई है।

जनता शासन के विदेश मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखकर नवीन चेतना उत्पन्न की। चीन से संबंध सुधार कर देश का खोया भूखण्ड प्राप्त करने के लिये कोशिश में है। प्रसन्न भी किये। पाकिस्तान से संबंध भी सुधारने का प्रयास किया।

भारत की विदेश नीति के लिये चीन की भाँति ही पाकिस्तान के संबंध एक चुनौती हैं। भारत-पाक के मध्य का काँटा काश्मीर की समस्या है। १९४७ ई० के विभाजन के बाद काश्मीर को हस्तगत कर लेने के लिये पाकिस्तान कई प्रयत्न कर चुका है। पाकिस्तान की सारी सैनिक तैयारी मुख्यत: कश्मीर को हथियाने की दृष्टि से होती रहती है। बाँगलादेश के अभ्युदय के बाद भी पाकिस्तान की आँखें नहीं खुल पाई हैं। इस सबके बावजूद भारत पाकिस्तान के साथ संबंध सुधारने के लिए कुछ न कुछ करता ही रहता है। पाकिस्तान का रवैया अद्भुत है। जहाँ उसे लाभ दिखता है वह समझौता कर लेता है और जब उसे किसी शर्त की निरर्थकता उजागर होती है या उसे लगता है कि उसमें भारत का हित साधन होता है तो वह एकपक्षीय सन्धि तोड़ देता है। हमारे सामने प्रश्न उठता है कि पाकि-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्तान के मामले में हम निर्भय होकर राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए गम्भीरता से निर्णय लें ।

हमारे देश के इर्द-गिर्द कई एक दैश छोटे तथा अपेक्षतया कमजोर हैं। नैपाल, बर्मा, बांगला देश, श्रीलंका ऐसे ही देश हैं । १६६२ ई० के आक्रमण में एक बड़ी सीमा में सफल,होने के बाद से चीन नैपाम को भारत के विरुद्ध गुमराह करने के लिये तरह-तरह की कूटनीतिक चालें चलता रहा है ।

आज विदेश नीति की सफलता का अर्थ है कि किसी देश के संबंध विश्व महाशक्तियों कैसे हैं । पिछले अनेक वर्षों से संयुक्त राज्य अमरीका से भारत के संबंध लगातार तनावपूर्ण हैं । इसके कारण अमरीका द्वारा पाकिस्तान को श्रेष्ठ हथियार प्रदान करते रहना है । आश्वासनों के बावजूद कि पाकिस्तान अमरीकी हथियार भारत के खिलाफ नहीं प्रयोग करेगा, एक ही कहानी बार-बार दोहराई जाती है । सही यह है कि पाकिस्तान एक बड़ी सीमा में अमरीकन उपनिवेश जैसा है । इसलिये अमरीकी सहानुभूति पाकिस्तान के पक्ष में अधिक है। वैसे कार्टर शासन यह अनुभव करता रहता है कि उनकी विश्व राजनीति की उपयोगिता भारत से मैत्रीपूर्ण संबंध बनाने में है किन्तु पाकिस्तान दबाव उनके चित्तन को बाधित करता है । भारतीय उपमहाद्वीप में शक्ति-संतुलन बनाये रखने के बहाने वे अपने हथियारों की बिक्री करते रहते हैं । तनिक पैनी निगाहों से देखने पर यह सच्चाई उभर कर सामने आ जाती है कि अमरीका रूपी महाजन अपने हथियारों की खपत के लिये विश्व में तनाव और संघर्ष बनाये रखने की नीति में विश्वास रखते हैं। कभी ऐसा भी लगता है कि उन्हें अविकसित राष्ट्रों का स्वावलंबन सह्य नहीं। लेकिन कुल मिलाकर एक शुभ लक्षण यही है कि अमरीका और भारत मित्रतापूर्ण रिश्तों की आवश्यकता का अनुभव करते हैं । मैत्री के अंगारों पर जमती राख कभी न कभी झड़ जायगी—यह आशा दिलाई जा सकती है ।

आज अवश्यकता इस बात की है कि प्रेम, मित्रता, भाई-चारा और समता के आधार पर सभी राष्ट्रों में संबंध हों । यह एक सपना जैसा है जो मानसिक क्षितिज पर आकर धारण कर आकारहीन रह जाता है । विश्व प्रशासन के अभाव में पारस्परिक स्पर्धा, वैमनस्य, आतंक, और इस बिरादरी के अन्यान्य भाव सभ्यता-दंभित मानवता को घेरे हुए हैं । इसलिये कहीं न कहीं पड़ोसी राज्यों के बीच कोई न कोई अप्रिय प्रसंग घटता ही रहता है । उस प्रासंगिक कटुता की साझेदारी चाहे-अनचाहे सभी की वितरित होती है । अपनी गुट-निरपेक्षता की सक्रिय राजनीति के कारण भारत की प्रतिक्रिया सदा ही स्पष्ट और निष्पक्ष होती है । भारत सद्भावना, मित्रता पारस्परिक बातचीत से बिना सैनिक कार्यवाही के उलझी ग्रथियों को सुलझाने का पक्षधर है ।-भारत संसार के देशों से मानवीय दृष्टिकोण और राष्ट्रीय हित को ध्यान में रखकर संबंध बनाये हुए है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२१ भारतीय नारी

अथवा

आधुनिक नारी

भारत सांस्कृतिक दृष्टि से एक महान् राष्ट्र है। भारत की सांस्कृतिक परम्परायें राष्ट्र के विकास में योगदान देती रही हैं। स्त्री और पुरुष दोनों ही इस महत्वपूर्ण कार्य में सहभागी रहे हैं। स्त्री का भारत में महत्वपूर्ण स्थान रहा। राष्ट्र की सबसे छोटी इकाई परिवार तो स्त्री के अयोग्य तथा अक्षम होने पर सुगमतःपूर्वक चल ही नहीं सकता। स्त्री माँ के रूप में जन्मदात्री, पत्नी के रूप में परामर्शदात्री तथा पुत्री एवं अनुजा के रूप में वात्सल्य की प्रतिकृति है। इस प्रकार नारी समाज का अनिवार्य अंग है।

वैदिक युग में भारतीय समाज में नारी का महत्वपूर्ण स्थान था। पुरुष और स्त्री दोनों को ही समान अधिकार प्राप्त थे। उस समय पुरुषों की भाँति ही स्त्रियों की शिक्षा-दीक्षा का ध्यान रखा जाता था। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'। जिस समाज में नारी को असम्मान की दृष्टि से देखा जाता था वह समाज विकास नहीं कर सकता। वैदिक युग के पश्चात् भी नारी भारतीय समाज में प्रतिष्ठित रहीं। याज्ञवल्क्य के युग में गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषी और विज्ञ महिलाएँ रही हैं। गार्गी ने जनक की सभा में याल्वल्क्य को शास्त्रार्थ में पराजित किया था। विख्यात् आचार्य मंडन मिश्र की धर्मपत्नी भारती का नाम भी जगत् प्रसिद्ध है।

ज्ञान जगत में ही नहीं, वीरता के क्षेत्र में भी भारतीय नारी का गौरवपूर्ण स्थान रहा है। त्रेता में नारी की बीरता प्रसिद्ध है। आधुनिक युग में रानी दुर्गावती, महारानी अहिल्या (इन्दौर की रानी), रानी लक्ष्मीबाई की वीर गाथायें किस भारतीय का सिर गर्व से ऊँचा नहीं कर देती? वीर क्षत्राणी सारन्धा की कहानी आज भी महिलाओं के गौरव का मील का पत्थर है।

समय के परिवर्तन के साथ ही देश को अवनति के दिन देखने पड़े। राष्ट्र की अवनति के साथ ही नारियों की अवनति हुई। मुसलमानों के आने से पूर्व ही नारी को विलास की वस्तु समझा जाने लगा। पुरुष वर्ग अपनी अयोग्यता और अक्षमता नारी पर थोपने लगा। मुसलमानों के आगमन के बाद नारी पर अत्याचारों की घटनाएँ बढ़ गईं। इसका कारण यह भी था कि इस्लाम धर्म नारी को महत्वपूर्ण स्थान नहीं देता। इस्लाम धर्म के अनुयायी भारत के शासक थे। 'यथा राजा तथा प्रजा' के मतानुसार भारत में नारी का महत्व कम हो गया।

आधुनिक समय में भारत में नारी जगत के भी दो वर्ग हैं। एक वर्ग में वे नारियाँ आती हैं जो अशिक्षित या अर्द्ध-शिक्षित हैं तथा अन्ध-विश्वासों में फँसी हुई

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हैं। नारी के नाम पर जो भी सुधार किये जाते हैं वे अर्ध-विकसित या नगरीय संस्कृति में पल रही नारी के लिए हैं। आम नारी के लिए कुछ नहीं होता।

प्राचीन काल में भी नारी के साथ अन्याय हुआ था। नारी को (द्रौपदी) पाँच पतियों की भोक्ता बनना पड़ा। जुए पर द्रौपदी का दाँव लगाया गया। यह दुर्भाग्य पूर्ण स्थिति ही देश को अवनति के गर्त में ले जाने वाली बनी। नारी की दशा मध्य काल में भी दयनीय रही। श्री मैथिलीशरण गुप्त ने इस सम्बन्ध में सच ही लिखा है—

"अबला जीवन हाय ! तुम्हारी यही कहानी।
अंचल में है दूध और आँखों में पानी ॥"

आंग्ल भाषा के कवि टेनीशन के विचार भी दृष्टव्य हैं—

"Man ia the'hunter; woman is his game,
the sleek and shining Creature of chase."

भारतीय नारी का यह शोषण मुगल काल में बहुत अधिक हुआ। लेकिन स्वतन्त्रता संघर्ष में नारी ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। महारानी लक्ष्मीबाई (झाँसी) ने अपनी वीरता और बुद्धि-कौशल से अंग्रेजों के दाँत खट्टे कर दिये। श्रीमती कस्तूरबा गाँधी, अरुणा आसफ अली, कमला नेहरू, विजय लक्ष्मी पंडित, डॉ० सुशीला नैयर, राजकुमारी अमृत कौर, श्रीमती प्रभावती देवी का नाम स्वर्णक्षरों में लिखे जाने योग्य है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी भारतीय नारी ने कीर्तिमान् स्थापित किये हैं। डॉ० सरोजिनी नायडू, कृष्णन् हठी सिंह, महादेवी वर्मा, कीर्ति चौधरी, सुभद्रा ज़ोशी का नाम अग्रगण्य है।

भारतीय नारी समाज के लिए दुःखद स्थिति यह है कि हमारी सामाजिक स्थिति में नारी का स्थान गौण हो गया है। नारी माता, बहिन और पुत्री है। लेकिन पत्नी के रूप में उसका वह गौरव नहीं है। दहेज प्रथा नारी के स्थान को और भी गिराया है। यह जानते हुए कि लड़की-लड़के समान हैं सभी व्यक्ति लड़की और लड़के के अभिभावक हैं पर पुत्र और पुत्री के विवाह के समय भिन्न-भिन्न मापदण्ड क्यों अपनाए जाते हैं ? न जाने भारत में वह दिन कब आयेगा। जब समाज पुत्र और पुत्रियों को समान महत्व देगा। दहेज प्रथा का यह राक्षस भारतीय समाज को ध्वस्त कर रहा है। जितना अधिक इसका विरोध किया जाता है उतना ही बढ़ता जाता है। इसका कारण यह भी है कि प्रयास ऊपरी सतह पर हो रहा है। मन से नहीं हो रहा है। जब एक व्यक्ति लड़की का पिता होता है तो इसका विरोध करता है पर लड़के के पिता के रूप में भिन्न मापदण्ड अपनाता है। माताओं की भूमिका इस सम्बन्ध

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में और अधिक दुःखद है। दहेज प्रथा के लिए लड़के की भूमिका बहुत कुछ उत्तरदायी है।

आज भारतीय नारी ने नए रूप में अंगड़ाई ली है। जीवन के हर क्षेत्र में वह नेतृत्व कर रही है। चाहे शिक्षा हो या स्वास्थ्य, राजनीति हो या दर्शन, गृह क्षेत्र हो या युद्ध क्षेत्र, सभी जगह नारी ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। अधिकारी के रूप में वह सफल रही है तो कर्मचारी के रूप में भी वह सफल रही है। लेकिन यह परिवर्तन तथा नारी का विकास कम अनुपात में हुआ है। केवल कुछ सौ स्त्रियाँ विकसित हों, प्रगति पथ पर बढ़ें और अधिकांश स्त्रियाँ अज्ञानता, शोषण का जीवन जियें। दुर्भाग्य तो यह है कि स्त्री समाज व्यक्तिवादी है। अपने समाज को साथ लेकर नहीं चलता है।

आज भारत में स्त्री प्रधान मन्त्री है। पर जितना शोषण और उपकार आज हुआ है उतना कभी नहीं। बागपत काण्ड, नारायणपुर, काण्ड बलिया काण्ड, बाँदा काण्ड आदि बलात्कार काण्डों ने मानव समाज के मुख पर कालिख लगा दी है। जिस देश में नारी जाति का इतना अपमान है, वह देश तथा जाति सभ्य कहलाने का अधिकारी नहीं। वयोवृद्धि राजनेता आचार्य जे० बी० कृपलानी ने ठीक ही कहा है—"एक हत्यारा अपने शिकार के भौतिक शरीर का अधःपतन करता है जबकि एक बलात्कारी अपनी हविस की शिकार महिला की सूक्ष्म आत्मा का अधःपतन कर देता है।...... जिस लज्जा और ग्लानि को बलात्कार से सम्बद्ध किया जाता है वह हर प्रकार से सम्पूर्ण समाज के अपमान और कलंक का द्योतक है।"

आज आवश्यकता है नारी समाज की शिक्षा को व्यापक रूप दिया जाय। नारी का समाज में जो गौरवपूर्ण स्थान है, उसके अनुकूल उसे शिक्षा दी जानी चाहिए। प्रायः देखा गया है कि महिला संगठन ग्रामों में रहने वाली स्त्रियों की अपेक्षा शहरों में रहने वाली स्त्रियों के लिए चिन्तित रहते हैं। यह स्थिति दुःखद है। हमें नारी समाज के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयत्न करना चाहिए।

कानपुर वि० वि० में पूछे गये निबन्ध

१. निम्नलिखित विषयों में किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिये—

(क) विज्ञान और विश्व शान्ति, (क) छात्र और अनुशासन, (ग) वर्तमान परीक्षा-प्रणाली, (घ) यदि मैं अपने प्रदेश का मुख्य मन्त्री बन जाऊँ, (ङ) मेरा प्रिय कवि। (कानपुर वि० वि०, बी० ए० I, १६७५)

२. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिये—

(क) धर्म-निरपेक्ष राज्य, (ख) भारत की औद्योगिक नीति, (ग) साहित्य और राष्ट्रीयता, (घ) राष्ट्रोत्थान में नवीन आर्थिक कार्यक्रमों का महत्व, (ङ) कृत्रिम भू-उपग्रह। (कानपुर वि० वि०, १६७६)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिये—

(क) राष्ट्र निर्माण में साहित्यकार का योगदान, (ख) भारत की युवा चेतनात्मक क्रान्ति, (ग) सहअस्तित्व और विश्व शान्ति, (घ) विज्ञान और मानव-जीवन, (ङ) सह-शिक्षा।

(कानपुर वि० वि०, १९७७)

४. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिये—

(क) आधुनिक भारतीय नारी, (ख) परमाणु शक्ति और मानवता, (ग) राष्ट्रोन्नति में पत्रकारिता का महत्व, (घ) भारत की ज्वलन्त समस्यायें, (ङ) विश्व विद्यालयीय वातावरण और अनुशासन, (च) भारत का लोकप्रिय नेता।

(कानपुर वि० वि०, १९७८)

५. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिये—

(अ) वर्तमान भारत में आन्दोलन, (ब) मेरा प्रिय साहित्यकार (स) जीवन में सफलता का रहस्य, (द) आधुनिक शिक्षा पद्धति, (च) भारत की वैज्ञानिक प्रगति. (छ) साहित्य और समाज।

(कानपुर वि०, वि० १९७९)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(१) भारत में लोकतंत्र

अथवा

भारत में शासन प्रणाली

अथवा

भारत में प्रजातंत्र का भविष्य

लोकतंत्र दो शब्दों से मिलकर बना है—(१) लोक, (२) तंत्र। जिसका अर्थ यह है कि तंत्र (प्रशासन या सरकारी कार्य-प्रणाली) की शक्ति लोक के हाथों में हो अर्थात् शासन व्यवस्था जनता की इच्छा एवं जनहित के सापेक्ष हो। जिस देश में जनता द्वारा, जनता के हितों के लिए तंत्र की व्यवस्था लोक के हाथों में होती है उस शासन व्यवस्था को लोकतंत्र कहते हैं। लोकतंत्र की परिभाषा भी इसी प्रकार है—'Democracy is the government of the people (Public) for the people and by the people.' अर्थात् लोकतंत्र जनता के द्वारा, जनता के लिए चुनी हुई जनता की सरकार है। जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों के द्वारा शासन सूत्र सँभाला जाता है। जनता एक निश्चिन समय के लिए अपने प्रतिनिधियों का निर्वाचन वयस्क मताधिकार द्वारा करती है। जनता के ये निर्वाचित प्रतिनिधि जन-आकाङ्क्षाओं के अनुरूप शासन चलाते हैं। जब ये प्रतिनिधि जन-आकाङ्क्षाओं के अनुरूप कार्य करने में अक्षम रहते हैं या जन-आकाङ्क्षाओं की अवहेलना करके अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के लिए सत्ता का प्रयोग करते हैं तो लोकतंत्र विफल हो जाता है।

भारत १५ अगस्त १९४७ को स्वतंत्र हुआ था। विदेशी शासक अंग्रेज अपने देश ब्रिटेन चले गये। १९४७ में तदर्थ सरकार की स्थापना हुई जिसके प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू तथा गवर्नर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य थे। २६ जनवरी, १९५० में भारतीय संविधान का क्रियान्वयन हुआ तथा भारत में लोकतंत्रीय व्यवस्था स्थापित की गई। डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद भारतीय गणतंत्र के प्रथम राष्ट्रपति निर्वाचित हुए।' १९५२, १९५७, १९६२, १९६७, १९७१, १९७७ तथा १९८० में भारत में आम चुनाव हुए हैं जिनके द्वारा शासन व्यवस्था ने जनता द्वारा अनुमोदन प्राप्त किया है।

भारतीय गणतंत्र को इस व्यवस्था में चलते हुए ३२ वर्ष हो गये हैं। अब एक प्रश्न उठता है कि क्या भारत में सफल लोकतंत्र है तथा लोकतंत्र का भारत में क्या भविष्य है ? इस प्रश्न का उत्तर देने से पूर्व यह विचार करना आवश्यक है कि लोकतंत्र की सफलता के लिए क्या-क्या आवश्यक है ?

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१. **लोकतन्त्र की सफलता**—लोकतन्त्र की सफलता के लिए कुछ बातें आवश्यक हैं। जिन्हें हम निम्नलिखित वर्गों में विभाजित कर सकते हैं—

(१) **शिक्षा**—लोकतंत्र की सफलता के लिए शिक्षा आवश्यक है। चूंकि देश के वयस्क नागरिक देश की व्यवस्था के लिए सरकार चुनते हैं। वयस्क नागरिकों का शिक्षित होना आवश्यक है। जब नागरिक शिक्षित नहीं होगा तो वह समझ ही नहीं पायेगा कि राष्ट्र और समाज के हितों की रक्षा एवं राष्ट्रीय एकता के लिए किसे मतदान करना आवश्यक है। शिक्षा ही वह धुरी है जो लोकतंत्र को सबल बनाती है।

(२) **राष्ट्रीय चिन्तन**—देश के नागरिकों को राष्ट्रीय विचारों का चिन्तन करना चाहिए। व्यक्ति जाति और वर्ग से समाज बड़ा होता है और समाज से बड़ा राष्ट्र होता है। राष्ट्र के उत्थान के लिए लोकतंत्रीय व्यवस्था है। जब हम इस व्यवस्था को राष्ट्रहित में प्रयोग करेंगे तो उपयोगी होगी। यदि हम व्यक्तिगत हित में इसका प्रयोग करेंगे तो राष्ट्र में विवादों का जन्म होगा। इस प्रकार सफल लोकतंत्र के लिए राष्ट्रीय चिन्तन आवश्यक है।

(३) **निष्पक्ष चुनाव**—लोकतन्त्र में सरकारें निर्वाचन द्वारा ही बनतीं और ध्वस्त होती हैं। निर्वाचन लोकतन्त्र के लिए आवश्यक है। इससे भी अधिक महत्व-पूर्ण यह है कि आप किसे चुनते हैं? आपका चुना व्यक्ति समाज और राष्ट्र के लिए क्या करता है? उसका चरित्र कैसा है? वह चुनाव किस उद्देश्य को लेकर लड़ रहा है? आदि प्रश्नों का उत्तर आवश्यक है। चुनाव में जब अत्यधिक धन का प्रयोग किया जाता है तो उसकी निष्पक्षता भंग होती है जो लोग जाति, वर्ग, धर्म का नारा लेकर चुनाव में उतरते हैं वे देश में वर्गवाद, जातिवाद साम्प्रदायिकता जैसे संकीर्ण विष देश में बो देते हैं जो राष्ट्र के लिए भयंकर हानिकारक सिद्ध होते हैं। राष्ट्र में सबल और सशक्त सरकार तभी बनती है जब वह सिद्धान्त के आधार पर चुनी जाती है। कितने ही बहुमत से सरकार क्यों न चुनी गई हो यदि वह निष्पक्षता से चुनाव नहीं जीती है तो प्रचण्ड बहुमत के बाद भी सबल नहीं होती है क्योंकि उसके पीछे जनता की शक्ति नहीं है। चुनाव में विभिन्न राजनैतिक दलों एवं प्रत्याशियों ने जातिवाद, डंडे-लाठी का प्रयोग करके चुनाव जीता पर वे शासन व्यवस्था में सफल नहीं हुए। इसका कारण चुनावों में प्रयोग किया, भ्रष्ट-आचरण ही है।

(४) **कार्यपालिका और न्यायपालिका का समन्वय**—कार्यपालिका, न्याय-पालिका और विधायिका लोकतन्त्र के तीन स्तम्भ हैं। इन तीनों का जब तक समन्वय नहीं होगा तब तक कार्य सही नहीं होगा। विधायिका और कार्यपालिका के टकराव से कार्य पूर्ण नहीं होगा। विधायिका मशीनरी को दोष देगी। कभी लालफीताशाही कभी भ्रष्ट मशीनरी कहकर उत्तरदायित्व कार्यपालिका पर थोपने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का प्रयास होगा। कार्यपालिका विधायिका को दोष देगी। जब न्यायपालिका निष्पक्ष न्याय नहीं करेगी तब शासन मदान्ध हो जायेगा। ऐसी दशा में सफल लोकतन्त्र की कल्पना करना ही कल्पना प्रसून सदृश होगा।

(५) **आर्थिक स्वाधीनता**—आर्थिक दृष्टि से जब देश के नागरिक कमजोर होंगे तब वे निर्वाचन में सही निर्णय नहीं कर सकेंगे। 'भूख हर इंसान को बेईमान बना देती है।' की उक्ति इस बात का प्रमाण है कि आर्थिक स्वाधीनता के अभाव में राजनैतिक स्वाधीनता का अधिक मूल्य नहीं है। महाराणा प्रताप जैसा देखभाल भी अकबर को संधि का पत्र लिखने को विवश हो जाता है तो सामान्य व्यक्ति आर्थिक परवशता के कारण कोई गलत निर्णय लेता है तो कोई विशेष बात नहीं है। गाँधी जी ने भी कहा है कि 'भूखे व्यक्ति के लिए रोटी ही भगवान है।' आर्थिक स्वतन्त्रता लोकतन्त्र की सफलता के लिए आवश्यक है।

(६) **समानता**—आर्थिक समानता की भाँति सामाजिक स्तर पर भी समानता आवश्यक है। अस्पृश्यता समाज के लिए अभिशाप है। एक ही देश या एक ही समाज के व्यक्ति दूसरे भाई-बहिनों के साथ छुआछूत का व्यवहार करते हों वहाँ लोकतन्त्र कैसा। लोकतन्त्र तभी सफल और सबल बनता है जब देश के सभी व्यक्ति एक दूसरे के साथ समानता का व्यवहार सामाजिक स्तर पर भी करें।

(७) **कम दलों का होना**—लोकतन्त्र की सफलता के लिए दो या तीन दलों का होना आवश्यक है। अधिक दल होने से मत-विभाजन हो जाता है तथा अल्पमत की सरकार बन जाती है। भारत में कांग्रेस में ३३% मतों के आधार पर वर्षों से शासन करती रही है। अमेरिका में केवल दो ही दल रिपब्लिक तथा डेमोक्रेटिक हैं। ब्रिटेन में तीन दल हैं—(१) लेबर पार्टी, (२) कन्जरवेटिव पार्टी, (३) लिबरल पार्टी। पर भारत में अनेक दल होने के कारण अल्पमत की सरकार बन जाती है।

२. **लोकतन्त्र से लाभ और हानियाँ**—लोकतन्त्रीय प्रणाली से अनेक लाभ हैं। राजतन्त्रात्मक सत्ता में एक व्यक्ति और उसके वंशज शासक हैं शेष देश प्रजा या शासित। चाहे जितनी योग्यता हो, क्षमता हो, चरित्र हो फिर भी शासित कभी शासक नहीं हो सकता, पर लोकतन्त्र में कोई व्यक्ति कितना ही निम्न परिवार में उत्पन्न क्यों न हुआ हो पर उसे आगे बढ़ने के समान अवसर मिलेंगे। इस प्रकार योग्यता चरित्र और क्षमता का मूल्यांकन राजतन्त्र की अपेक्षा लोकतन्त्र में अधिक हो सकता है। लोकतन्त्र में सरकार चुनने की शक्ति और अधिकार जनता का होता है। यदि किसी कारण से ऐसी सरकार चुन गई है जो जन-आकाङ्क्षाओं के विपरीत हो तो जनता को यह भी अधिकार है कि आगामी चुनाव में उसे हटा दे। राजतन्त्र में जनता को यह अधिकार नहीं होता। लोकतन्त्र में यह दोष भी है कि कभी-कभी जाति वर्ग, या धन का प्रचुर प्रयोग से अयोग्य व्यक्ति भी चुने जाते हैं। कभी-कभी दल ऐसे व्यक्तियों के प्रभाव में आ जाता है जो स्वयं लोकतन्त्र में विश्वास नहीं रखते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पर छद्म वेश में नारे लगाकर जनता को भ्रम में डाल देते हैं। कभी-कभी विधायकों या पार्षदों की खरीद फरोख्त भी लोकतन्त्र को मजाक बना देती है।

३. **भारत में लोकतन्त्र का स्वरूप**—भारत में लोकतन्त्र का प्रारम्भ २६ जनवरी १९५० से हुआ। भारत ने १५ अगस्त, १९४७ को राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त की थी पर सामाजिक और आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त करना शेष था। भारत की सरकार ने डा० राजेन्द्र प्रसाद (राष्ट्रपति) और पंडित जवाहर लाल नेहरू (प्रधानमंत्री) के नेतृत्व में सामाजिक और आर्थिक स्वतन्त्रता के लिए प्रयत्न प्रारम्भ किये। कुछ क्षेत्रों में हम आगे भी बढ़े। यद्यपि हमारे यहाँ शिक्षा की कमी थी। लेकिन भारत की जनता लोकतन्त्र में विश्वास रखती थी। भारत की राजतन्त्रात्मक पद्धति में जनशक्ति का सम्मान था। अप्रत्यक्ष रूप से देश की मानसिकता लोकतन्त्रात्मक थी। भारत के गणराज्य लोकतन्त्र की ओर बढ़ चुके थे। अतः स्वतन्त्र भारत में लोकतन्त्र की स्थापना हुई। शिक्षा के क्षेत्र में हमने विकास किया। पर अभी शिक्षा जन-जन तक नहीं पहुँची देश को नागरिकों को हम लोकतन्त्रात्मक प्रशिक्षण प्रदान नहीं कर सके। भारत में आर्थिक विषमता है। एक ओर टाटा, बिरला, डालमियाँ, जयपुरिया, मोदी आदि कुबेर परिवार हैं जिनके धन की कोई गणना नहीं। दूसरी ओर निर्धन और गरीब हैं जिनके पास न रहने को मकान है न खाने को अनाज, शिक्षा चिकित्सा की तो बात ही क्या ? ये नंगे भूखे आश्रयहीन व्यक्ति देश में बहुत बड़ी संख्या में है। सामाजिक विषमता भारत में अन्य देशों से अधिक है। अस्पृश्यता का दुर्गुण हमारी एकता के लिए अभिशाप सिद्ध हुआ है। सवर्ण, और हरिजन आदिवासी, गिरवासी आदि-आदि वर्गों में बँटा हुआ समाज इस देश में है। अनेक प्रान्त हैं, अनेक भाषायें और बोलियाँ हैं। इन सबके मध्य लोकतन्त्र का स्वरूप उदय हुआ है। स्वतन्त्र भारत में इन सीमाओं को कम किया गया है। आर्थिक प्रगति पर उसे प्रमुख धन कुबेरों ने जनता तक सही रूप में नहीं पहुँचने दिया-पर पहुँची अवश्य है। स्थिति में कुछ परिवर्तन भी हुआ है। अभी बहुत कुछ करना शेष है।

प्रारम्भ में भारत में लोकतंत्र का विकास द्रुतगति से हुआ। चुनाव में जनभावनाएँ ही अभिव्यक्त हुईं। जवाहरलाल नेहरू का व्यक्तित्व भी जन-मानस में छाया रहा। देश की प्रगति हुई। चकबन्दी योजना, जमींदारी उन्मूलन अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा ग्रामीण स्तर तक चिकित्सा योजना ने लोकतंत्र का सबल बनाया। आस्थायें पनपीं। अस्पृश्यता भी कम हुई। सामाजिक स्तर पर सुधार भी हुए। ब्राह्मण हरिजन मुसलमान सभी साथ-साथ रहने लगे। पर १९६० ई० के बाद देश की राजनीति ने करवट बदला। सत्ताधारी दल में सत्ता का मोह बढ़ा। राजनीति ने अपना रंग दिखाया। देश में भाषायी और प्रान्तीय विद्रोह हुए। साम्प्रदायिक दंगे हुए। जातीयता बढ़ी। इन सबने लोकतंत्र को कमजोर किया। १९६९ के बाद साम्प्रदायिकता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और बढ़ी। इस मध्य देश पर चार बार विदेशी आक्रमण हुए। देश ने अभूतपूर्व एकता का परिचय दिया। यह इस देश का परीक्षण था जो सफल हुआ। युद्ध में हम हारे भी, जीते भी। जनता जीती। सैन्य शक्ति जीती पर हमारे राजनीतिज्ञ हारे। शिमला समझौता, ताशकन्द संधि हमारी पराजय थी। जनता से किये गये वादों पर कुठाराघात था।

२६ जून, १६७५ हमारे देश के लोकतंत्र के नाम पर कलंक था। तत्कालीन सरकार की असफलता को छिपाने का एक नया हथकंडा आपात्कालीन घोषणा के रूप में हुआ। देश के अनेक नेता गिरफ्तार हुए। फिर जनता की गिरफ्तारी हुई। सत्ता का नेता नृत्य सामने आया। देश में १६ महीने तक जनता के मुँह पर ताला लगा दिया गया। १६ माह बाद आपात्काल समाप्त हुआ। सरकार ध्वस्त हुई। जनता की सरकार बनी। उसमें जन-सुधार हुए। जनता को अपना अधिकार मिला। लोकतंत्र बहाल हुआ। पर इस सरकार में भी कुसी लोलुप थे जो पूर्व सरकार के सहयोग से सत्ता तक पहुँची और जनशक्ति को तोड़ा। जनता पार्टी का विघटन हुआ १६८० में पुनः चुनाव हुए। भूतपूर्व सामन्त, देश के अराजक तत्व तथा पूँजीवादियों में गठजोड़ हुआ तथा यह गठजोड़ सत्ता मे पहुँचा। सम्पूर्ण देश में पुनः आपात्काल के नायक राजसत्ता में आये। आये दिन डकैती, राहजनी, बलात्कार के कुकृत्य शासन की छाया में होने लगे। आकाश चूमती मँहगाई ने जनता की कमर तोड़ दी। किसी-किसी वस्तु में ५००% की वृद्धि हुई। दुगुनी और तिगुनी तेजी बढ़ी। खाद, बिजली, डीजल, मिट्टी का तेल, पेट्रोल, सिंचाई की दरें आम जनता के उपयोग की वस्तुएँ इतनी मँहगी हो गई कि जनता का जीना दूभर है। भ्रष्टाचार इस सीमा तक बढ़ गया कि जनता को अपना अस्तित्व बनाये रखना कठिन लगने लगा। अराजक तत्व, पूँजीवादी और सामन्तवादी तत्वों के सत्ता में पहुँचने पर यह होना अनिवार्य था और हुआ भी।

वह भी लोकतंत्र का एक प्रयोग है। लोकतंत्र में अनेक दृश्य होते हैं। पर जनता की शक्ति जनता के पास है। देश में लोकतंत्रात्मक शक्तियाँ विद्यमान हैं। लोकतन्त्र का विनाश इस देश में होना असम्भव है। भारत की रग-रग मे लोकतंत्रीय विश्वास और आस्थायें हैं। विभिन्न स्थितियों से इस देश की जनता गुजरी है। फिर जनता की शक्ति विजयी होगी। देश में लोकतंत्र विजयी होगा। सामन्तवादी और पूँजीवादी शक्तियाँ पराभव को प्राप्त होंगी। भारत में लोकतंत्र का भविष्य उज्ज्वल है। शिक्षा की प्रगति के साथ-साथ लोकतन्त्र और सबल होगा। अभी शिक्षा जगत में क्रान्तिकारी परिवर्तन की आवश्यकता है। सामाजिक और आर्थिक स्तर पर विषमताएँ कम होंगी। भारत का लोकतंत्रीय विश्वास अपने वास्तविक स्वरूप में साकार होकर रहेगा।

---

(२) राष्ट्रभाषा की समस्या और समाधान

राष्ट्रभाषा का अर्थ स्पष्ट करने से पूर्व राष्ट्र की व्याख्या करना आवश्यक है। राष्ट्र वह विशेष भूभाग है जो कुछ विशिष्ट भौगोलिक सीमाओं में रहकर एक विशेष

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक विचारधारा को संजोये रहता है। इस भौगोलिक भूखण्ड की सांस्कृतिक विचारधारा निश्चित होती है। इसके नैतिक और सामाजिक मानदण्ड निश्चित होते हैं। इसकी सांस्कृतिक थाती विचारधारा की नियामक होती है। ऐसे राष्ट्र मिटते नहीं। राज्य मिटते और बनते रहते हैं पर राष्ट्र नहीं मिटते। राज्य सत्ताओं में परिवर्तन होता रहता है पर राष्ट्र के नियामक तत्व विकसित होते हैं पर मिटते नहीं। भौगोलिक सीमायें बदला करती हैं कभी संकुचन और कभी विस्तार। पर राष्ट्र की संस्कृति और उसकी परम्परायें अक्षुण्ण रहती है। यही कारण है कि राष्ट्र नहीं मिटा करते। भारत एक राष्ट्र है। अनेक तूफान इसकी सत्ता को मिटाने के लिए आये और चले। कभी सीमायें अफगानिस्तान और ब्रह्मा-थाईलैंड तक थी। आज संकुचन हो गया पर राष्ट्रीय थाती आज भी विद्यमान है। इजराइल भी एक राष्ट्र है। वहाँ के लोगों को देश से भागना पड़ा। रेगिस्तान की धूल चाटनी पड़ी। पर उनकी सांस्कृतिक थाती उन्हें मिटने से बचाती रही और अपनी सांस्कृतिक थाती की रक्षा उन्होंने प्राण देकर की। इसलिए आज इजरायल जिन्दा है।

राष्ट्रों की सांस्कृतिक परम्पराओं को वहन करने की सामर्थ्य रखने वाली भाषा ही राष्ट्रभाषा कही जाती है। राष्ट्रभाषा ही राष्ट्र की आशा-आकांक्षाओं को वहन करने की सामर्थ्य रखती है। किसी राष्ट्र को विजित करने से उसे मिटाया नहीं जा सकता। भारत को मिटाने की षड्यंत्र मुगल, हूण, कुषाण, अंग्रेज आदि करते रहे पर भारत आज भी विश्व के मस्तक पर गौरव के साथ विद्यमान है। यह भारत की सांस्कृतिक परम्पराओं के कारण हैं। पुरातन काल में भारत की राष्ट्रभाषा संस्कृत थी। संस्कृत भारत की सम्पर्क भाषा भी थी। भारत की अन्य भाषाओं को संस्कृत ने पल्लवित किया। संस्कृत से पाली, प्राकृत, अपभ्रंश का उदय हुआ। अपभ्रंशों से भारतीय आर्य भाषाओं का विकास हुआ। भारत के स्वतंत्र होने के बाद से हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित हुई है। अब प्रश्न उठता है कि जब हिन्दी राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित हो गई तो राष्ट्रभाषा की समस्या क्या है ? इस प्रश्न पर हमें विचार करना है—

हिन्दी जनता के लिए राष्ट्रभाषा है, पर राजनीतिज्ञों ने इस भाषा को राजनैतिक ढङ्ग से सोचा और समझा तथा गुत्थी बना दिया। भारत के राजनीतिज्ञों में कुछ ऐसे भी थे। जिन्हें हिन्दू की तरह हिन्दी भी साम्प्रदायिक दिखाई देती थी। पं० जवाहर लाल नेहरू उनमें अग्रगण्य थे। वे अंग्रेजी के पक्षपाती थे। साथ ही हिन्दू-मुस्लिम समस्या, उत्तर-दक्षिण की समस्या, काश्मीर की समस्या, पूर्वी भारत, आसाम, नागालैण्ड आदि की समस्या की भाँति राष्ट्रभाषा की समस्या भी जवाहर लाल नेहरू की मस्तिष्क की उपज है। उन्हें यही भय था कि हिन्दी के राष्ट्रभाषा बनाने पर दक्षिण के नागरिक अप्रसन्न हो जायेंगे। यह सदैव भारतीय नागरिकों को भारतीय नागरिक न समझकर अल्पसंख्यक, बहुसंख्यक, उत्तरी और दक्षिणी समझा करते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

थे। हिन्दी और संस्कृत को राष्ट्रभाषा पद पर प्रतिष्ठित करने में उनका यही दृष्टिकोण आड़े आया। भारत की संविधान सभा ने १४ सितम्बर, १९४९ को राष्ट्रभाषा के प्रश्न पर विचार किया। पंडित जवाहर लाल नेहरू (तत्कालीन प्रधानमन्त्री भारत सरकार) ने तीव्र विरोध किया। जवाहर लाल नेहरू का विरोध करना उस समय कठिन कार्य था पर राष्ट्रगौरव राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन, सेठ गोविन्ददास, प्रभृति विद्वानों ने अपनी मेधा तथा प्रतिभा तथा राजनीतिक सूझबूझ से जवाहर लाल नेहरू को संविधान सभा में अल्पमत में खड़ा कर दिया। हिन्दी बहुमत से राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित हो गई। लेकिन जवाहर लाल नेहरू तथा उनके निकटस्थ राजनैतिज्ञों की अंग्रेजी-परस्त नीति ने एक और अड़ंगा लगाया। उन्होंने पन्द्रह वर्ष (१९६५ ई० तक) अंग्रेजी के प्रचलन की छूट संविधान सभा से प्राप्त कर ली। इस प्रकार अंग्रेजी को राजभाषा के रूप में पुनः प्रतिष्ठित कराने में वे सफल हो गये। संविधान सभा ने इस सम्बन्ध में जो प्रस्ताव पारित किया था, उसका सारांश यह है कि २६ जनवरी १९६५ ई० तक अंग्रेजी भाषा का प्रयोग उन सभी कार्यों के लिए होता रहेगा जिनसे लिए पहले होता रहा है। राष्ट्रपति अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी के प्रयोग की अनुमति भी देते रहेंगे। पाँच-पाँच वर्ष बाद तीन भाषा आयोग गठित किये जायेंगे जिनका कार्य हिन्दी के उत्तरोत्तर विकास के लिए संस्तुतियाँ करना होगा तथा सरकारें (केन्द्रीय तथा राज्य) उन संस्तुतियों को क्रियान्वयन करेंगी।

डॉ० हरिदत्त शास्त्री का कहना है "यह कार्य भारतीय संविधान में भारत संघ के पुनीत कर्त्तव्यों के रूप में अंकित है। किन्तु दुर्भाग्य है भारत सरकार संविधान के अनुसार कार्य न कर सकी और एक साजिश की शिकार हो गई कि कौन से हथकन्डे अपनाए जायें ताकि अंग्रेजी बनी रहे। प्रथम आयोग के गठित किये जाने के बाद कुछ स्वार्थी तत्वों ने दक्षिण में (अहिन्दी भाषी प्रान्तों में) हिन्दी विरोध की ज्वाला सुलगाई और उनसे आन्दोलन करा कर हिन्दी का विरोध और अंग्रेजी भक्ति की नींव रखी और १९६३ का वह भाषा विधेयक काला विधेयक सिद्ध हुआ जिसके आधार पर अंग्रेजी के प्रयोग की छूट अनिश्चित काल के लिए दे दी गई इसके साथ ही अंग्रेजी को पनपाने वाले स्वर्गीय प्रधान मन्त्री पंडित नेहरू ने अहिन्दी भाषी प्रान्तों के रहने वालों को यह आश्वासन भी दिया कि जब तक भारत का एक राज्य भी हिन्दी का विरोधी होगा तब तक उसे राजभाषा पद पर आसीन नहीं कराया जायेगा। इस प्रकार अंग्रेजी के बने रहने की पेचकश की गई।" परोक्ष रूप से पंडित जवाहरलाल नेहरू अपनी राष्ट्रभाषा विरोधी कुत्सित नीति से एक बार फिर राष्ट्रभाषा पर आक्रमण किया। जवाहर लाल नेहरू के बाद उनके राजनैतिक अनुयायिओं ने सदैव हिन्दी को राष्ट्रभाषा पद पर प्रतिष्ठित होने में बाधायें उपस्थित कीं।

राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का विरोध करने वाले यह तर्क देते हैं कि हिन्दी उत्तरी भारत की भाषा है इसके राष्ट्रभाषा बनते ही दक्षिण के लोगों को हिन्दी तथा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रादेशिक भाषा दोनों सीखनी तथा पढ़नी पड़ेगी तथा हिन्दी भाषी व्यक्तियों को केवल एक भाषा। उनका दूसरा तर्क है हिन्दी के विकास से दक्षिणी भारत की भाषाओं का विकास अवरुद्ध हो जायेगा तथा हिन्दी दक्षिण की भाषाओं पर छा जायेगी। तीसरा तर्क है हिन्दी के राष्ट्रभाषा होते ही उत्तरी भारत के युवक प्रशासनिक एवं राष्ट्रीय सेवाओं में छा जायेंगे और अहिन्दी भाषा पिछड़ जायेंगे। उनका चौथा तर्क है हिन्दी एक क्लिष्ट भाषा है इसके सीखने में व्यावहारिक कठिनाइयाँ तथा इसके द्वारा शिक्षा का स्तर गिर जायेगा।

ऊपर दिये गये तर्कों का विश्लेषण करने के बाद सीधा सा उत्तर यह है—

हिन्दी राष्ट्रभाषा और राजभाषा बनने के बाद दक्षिण तथा अहिन्दी भाषी नागरिकों को दो भाषायें सीखनी पड़ेगी आज भी दक्षिण के छात्र प्रादेशिक भाषाओं के साथ अंग्रेजी भी सीखते हैं। यहाँ यह संशोधन किया जाय कि माध्यमिक स्तर तक प्रादेशिक भाषा के साथ संस्कृत, प्रादेशिक भाषा तथा हिन्दी भाषी छात्रों को एक अन्य राष्ट्रीय भाषा का अध्ययन त्रिभाषा सूत्र योजना में सीखना अनिवार्य हो। हिंदी भाषी क्षेत्रों में अहिन्दी क्षेत्रों की प्रमुख समृद्ध भाषाओं के सीखने की व्यवस्था की जाय इस योजना से हिन्दी और अन्य राष्ट्रीय भाषायें और अधिक समृद्धिशाली होंगी।

दूसरे तर्क के उत्तर में यह कहा जा सकता है कि हिन्दी या संस्कृत के विकास से अन्य भारतीय भाषाएँ विकसित होंगी। इतिहास साक्षी है कि संस्कृत तथा आर्य परिवार की भाषाओं ने द्रविण तथा मुण्डा परिवार की भाषाओं से बहुत कुछ ग्रहण किया है—(ध्वनियों द्वारा भी, शब्दों द्वारा भी) तथा बहुत कुछ दिया भी। अत: भाषायी साम्राज्यवाद की कल्पना भी यथार्थ से परे है।

तीसरे तर्क के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि प्रशासनिक सेवाओं के माध्यम राष्ट्रभाषा होने से केवल उत्तरी भारतीयों को ही लाभ नहीं होगा वरन् सम्पूर्ण राष्ट्र का लाभ है। साथ ही प्रादेशिक राष्ट्रीय भाषाओं को भी माध्यम बनाया जा सकता है।

चतुर्थ तर्क का उत्तर है कि हिन्दी एक वैज्ञानिक भाषा है। संस्कृत की परंपरा में हिन्दी का विकास हुआ है। इसका व्याकरण सरल है। साहित्य भी विपुल है। इस दृष्टि से इसका सीखना सरल तथा ज्ञानवर्द्धक है।

इन सब विशेषताओं के बाद भी योजनाबद्ध तरीके से राष्ट्रभाषा के विरोधी कोई न कोई समस्या खड़ी कर देते हैं। कभी उर्दू का ही प्रश्न खड़ा कर दिया जाता है। ये सभी समस्यायें राजनैतिक चालें हैं जिसका उत्तर जनता को देना है। भारतीय प्रशासनिक सेवाओं में अंग्रेजी मनोवृत्ति के उच्च अधिकारी हिन्दी के प्रसार में बाधा उत्पन्न करते हैं। कागजी योजनाएँ चलती हैं तथा ऐसे व्यूह रचे जाते हैं जिससे हिन्दी के विकास में बाधायें उपस्थित हैं। कष्ट होता है यह देखकर कि हर राष्ट्र की राजभाषा वहाँ की राष्ट्रभाषा है पर भारत की कोई भाषा यह गौरव पा ही नहीं सकी। अनेक अवसरों पर भारतीय नेताओं को अपमान झेलना पड़ता है। जब विदेशी राज-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नंयिक अपने राष्ट्र की भाषा में बात करते हैं पर भारतीय अंग्रेजी में बात करते हैं। उनसे कहा जाता है कि क्या भारत की कोई विकसित भाषा नहीं है। पर जिनमें दास्य प्रवृत्ति घर कर गई है, उनमें आत्मसम्मान की भावना देखना भी कठिन है। राष्ट्र में अनेक स्तरों पर इन विरोधों के बाद भी राष्ट्रभाषा के प्रसार के लिए कार्य हो रहा है। इन प्रयासों में तीव्रता आने की आवश्यकता है। आशा भी है कि एक दिन राष्ट्रभाषा को उसका सम्मान प्राप्त होगा।

---

(३) राष्ट्रीय भावात्मक एकता और हिन्दी

भारत एक महान् राष्ट्र है। भारत की पुरातन संस्कृति है। भावात्मक स्तर रागात्मक एकता देशवासियों की विशेषता रही है। आपात्कालीन परिस्थितियों में जब देश पर विदेशियों ने आक्रमण किया है राष्ट्रवासियों ने अपनी एकता का परिचय दिया है। लेकिन प्रश्न उठता है कि सामान्य परिस्थितियों में एकता क्यों नहीं है? भावात्मक एकता का प्रश्न बार-बार क्यों उठाया जाता है। ये प्रश्न कुछ ऐसे हैं जिन पर विचार करना आवश्यक है।

भारत एक विशाल देश है। विभिन्न धर्म, जातियों और सम्प्रदायों के व्यक्ति यहाँ रहते हैं। उनका रहन-सहन, खाना-पीना, वेश-भूषा, रीति-रिवाज इतने अलग-अलग हैं—साम्य का आधार ढूँढ़ना कठिन कार्य लगता है। भारत में अनेक भाषायें बोली जाती हैं। चौदह भाषायें तो भारतीय संविधान ने ही स्वीकार की हैं। छोटी-बड़ी सभी भाषायें ७२० हैं—जिसे इस देश के नागरिक बोलते हैं। इस कारण भाषा, धर्म, मत, सम्प्रदाय प्रदेश वर्ग जाति, उच्च, निम्न, पर्वतीय, प्रदेशीय, मैदानीय आदि अनेक वर्ग देश में हैं। कभी-कभी इन वर्गों में संघर्ष भी हो जाता है। पर इसके बाद भी हम भारतीय हैं। भले ही हम भिन्न-भिन्न भाषायें बोलते हैं। भले ही हम भिन्न प्रकार की उपासना पद्धति स्वीकार करते हों। हमारी वेश-भूषा, हमारे रीति-रिवाज भिन्न क्यों न हों? हम भिन्न-भिन्न भाषा क्यों न बोलते हों, अलग-अलग प्रदेशों के निवासी क्यों न हों फिर भी हम भारतीय हैं। हम भारत माता के पुत्र हैं। भारत की एकता, अखण्डता समृद्धि और विकास हमारा लक्ष्य है। आपस के वैचारिक मत-भेद राष्ट्रीयता के विपरीत नहीं होंगे।

समस्या यह है कि कभी-कभी व्यक्तिगत या संकीर्ण विचार हमारे चिन्तन पर हावी हो जाता है तो राष्ट्रीयता का प्रश्न गौण हो जाता है तभी समस्यायें खड़ी जाती हैं। "यह तभी होता है जब हम ऊपर से विविध रूपों, दिशाओं में चिन्तन करें और भीतर से हमारे हृदय में भाव भी विभिन्न रूपों से उठें। तब इस अन्तर्जगत के वैविध्य को समाप्त कर समस्त भारतीयों के हृदय में एक-सी भावना जगाने का प्रयत्न ही भावात्मक एकता कहकर पुकारा जायेगा। यह भावात्मक एकता राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने के लिए नितान्त आवश्यक है।"

भारत में विविधता में एकता है। यहाँ विविध प्रकार की जलवायु है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रेगिस्तानी मैदान हैं, चेरापूँजी जैसे विश्व के सबसे अधिक वर्षा वाले स्थान भी हैं। गर्म प्रदेश भी हैं, शीतल प्रदेश हैं। भिन्न-भिन्न प्रकार फसलें उगती हैं। विभिन्न जातियाँ हैं, विस्तृत भूखण्ड है। इस विशालता को देखकर भारत को उप महाद्वीप कहकर भी पुकारा जाता है। कुछ देश इस उप-महाद्वीप शब्द को विकृत रूप में भी प्रस्तुत करते हैं। उनका योजनाबद्ध उद्देश्य है कि भारतीयों के हृदय में राष्ट्र जैसी इकाई की भावना खण्डित हो। डॉ० हरिदत्त शास्त्री ने ठीक ही लिखा है—"इतना तो स्पष्ट ही है कि इतने विशाल राष्ट्र में यद्यपि ऊपर से विशेषताएँ दिखाई देती हैं किन्तु फिर भी अनेकता में एकता का सूत्र भी अनुस्यूत देखा जा सकता है। भारतवर्ष में यह राष्ट्रीय एकसूत्रता या सांस्कृतिक दृष्टि से मूलभूत एकता की विद्यमानता, उनकी मूल भावनाओं, सांस्कृतिक विरासत तथा भाषा की सूत्रबद्धता विषयक शक्ति के आधार पर सुरक्षित रखा जा सकता है। यद्यपि यहाँ विचारों के क्षेत्र में कोई एकरूपता न रहते हुए भी समस्त भारतीयों के हृदय में राष्ट्रीय परिवेश में प्रेम, त्याग, बलिदान आदि की भावनाएँ समान रूप से व्याप्त दिखाई देती हैं।"

भारत की इस एकता का कारण भारत की समन्वयात्मक प्रवृत्ति ही है। में समन्वय की भावना युगों से विद्यमान है। यहाँ वही महान् व्यक्ति माना गया जो समन्वय कर सके। महात्मा बुद्ध समन्वयकारी थे, शंकर समन्वयकारी थे। तुलसी समन्वयकारी थे। इसी कारण ये तीनों ही लोकनायक बन सके। समन्वय की यह विराट् चेष्टा भी भारतीय संस्कृति का मूलाधार है। धर्म के क्षेत्र में, सगुण-निर्गुण, द्वैत-अद्वैत, विशिष्ट द्वैतवाद, शैव, शाक्त, वैष्णव आदि अनेक मत मतान्तर भारत में हैं पर उन सबके मध्य समन्वयकारी विचारधारा भी इस देश में सदैव रही है। यह विचारधारा ही भारत की भावात्मक एकता के लिए वरदान सिद्ध हुई है। डा० हरिदत्त शास्त्री ने भारत की इस एकता की कड़ी राष्ट्र भाषा को माना है। राष्ट्र भाषा ही राष्ट्रवासियों के विचारों को समन्वय की सीढ़ी तक लाती है। उनका कहना है "...भाषा का ही एक ऐसा माध्यम रहा जो इस विशाल भूखण्ड की विविधताओं को एक सूत्र में पिरोये रहा या अपना सम्पर्क सूत्र बनाये रहा। अपने देश की इतनी बड़ी भौगलिक सीमायें रहते हुए भी संस्कृत भाषा के प्रयोग के आधार पर उत्तर से दक्षिण तक और पूर्व से पश्चिम तक हमारे वैचारिक भावनागत संस्कार की दूरी कम रही आयी और इस प्रकार इस भाषा के सम्पर्क सूत्र के आधार पर ही, हम भले ही भौतिक दूरी के कारण दूर रहे विभिन्न वेश-भूषा पहनते रहें, रहन-सहन आवासादि के क्षेत्र में भिन्नताएं पालते रहे, परन्तु हृदय में एक से भाव राष्ट्र के प्रति यहाँ के निवासी अपनी भारत भू के सपूतों के प्रति पालते रहे।"

संस्कृत भारत की राष्ट्र भाषा के रूप में इस देश में विद्यमान रही। यद्यपि तमिल, तेलगू, मलयालम, कन्नड़, मुण्डा परिवार की भाषायें, आदि भी इस देश में बोली जाती थीं पर वे एक दूसरी की विरोधी नहीं थीं। एक भाषा दूसरी से कुछ ग्रहण करती थी तो कुछ देती भी थी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यद्यपि मलयालम द्रविड़ परिवार की भाषा है पर उसमें साठ प्रतिशत शब्द संस्कृत के हैं। अनेकों ध्वनियाँ और शब्द भी संस्कृत ने द्रविड़ परिवार की भाषाओं ग्रहण किये हैं। बाद में, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश भी सम्पर्क सूत्र का कार्य करती रहीं। अपभ्रंशों के कई रूप भी हुए। उनसे आगे चलकर आर्य भाषा परिवार की भाषायें बनीं। पर किसी में विरोध नहीं। एक ने दूसरी ने पुष्ट किया। विचारों के आदान-प्रदान में सहयोग किया। यद्यपि हिन्दी का क्षेत्र व्यापक रहा पर अन्य भाषा-भाषियों को परेशानी नहीं हुई। ब्रजभाषा ने संस्कृत की गरिमामय परम्परा का पालन करते हुए सम्पर्क भाषा का कार्य किया।

भाषा-विवाद की समस्या संकीर्ण राजनीति की उपज है। भारत में मुगल शासन के समय ही इस संकीर्णता का विष-वमन हुआ था। मुगल शासकों ने अरबी-फारसी की शैली पर आधारित उर्दू को राजभाषा बनाया तथा भारत की राष्ट्रीय भाषाओं की अवहेलना की। मुगलों के सत्ता-च्युत होने के बाद अंग्रेजों ने अंग्रेजी को राज भाषा के पद पर प्रतिष्ठित किया। बाद में यहाँ के हिन्दू और मुसलमानों में फूट डालने के लिए उर्दू को द्वितीय राज भाषा बनाया। अंग्रेजी भाषा अंग्रेजों के चले जाने के बाद भी भारत में राष्ट्रीय एकता को कमजोर बनाने का कार्य कर रही है। अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज्य करो' की नीति का अनुगमन कांग्रेस शासकों ने किया तथा भाषा के आधार पर दंगे कराना प्रारम्भ किया। वह विष-बीज आज भी राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा उत्पन्न कर रहा है।

अब प्रश्न यह है कि राष्ट्र-भाषा या सम्पर्क भाषा में राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने की सामर्थ्य है तो इसके मार्ग में बाधाएँ डालने वाले कौन हैं? उनका उद्देश्य क्या है? प्रश्न का उत्तर स्पष्ट है कि निहित स्वार्थी वाले तत्व राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा हैं। भाषा, जाति, धर्म, सम्प्रदाय वर्ग आदि के लिए प्रारम्भ में कांग्रेस नेताओं ने संघर्ष कराया। संविधान में धर्म निरपेक्षता का राष्ट्रीय स्वरूप है पर इन नेताओं ने अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक के नाम पर राष्ट्रवासियों में भेदभाव किया। आज भी धर्म के नाम पर किये जा रहे पक्षपात राष्ट्र के लिए अभिशाप सिद्ध हो रहे हैं। नेहरू परिवार की अंग्रेजी परस्त नीति आज भी हिन्दी या भारतीय अन्य भाषा को राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित में व्यवधान उपस्थित कर रही है। भारत में केवल २% अंग्रेजी बोलने वाले हैं पर देश के सरकारी कार्यालयों का कार्य, लोक सेवा आयोग का कार्य आज भी विदेशी भाषा में हो रहा है।

राष्ट्र भाषा की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(१) राष्ट्र भाषा राष्ट्र-विशेष की सांस्कृतिक परम्पराओं की पोषक होती है। विदेशी भाषा यह कार्य नहीं कर सकती।

(२) राष्ट्र भाषा उस देश की सम्पर्क भाषा होती है।

(३) राष्ट्र भाषा राजभाषा होती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(४) धार्मिक संकीर्णता या जाति से सम्बन्ध रखने वाली भाषा भावात्मक ऐक्य स्थापित करने में समर्थ नहीं हो सकती।

(५) राष्ट्र भाषा अन्य भाषाओं के विकास में सहायक होती है।

(६) राष्ट्र भाषा देश की अधिकांश जनसंख्या द्वारा बोली और समझी जाती है।

(७) राष्ट्र भाषा की लिपि सरल, सुगम तथा बोधगम्य होती है।

संस्कृत भारत की पुरातन भाषा है। भारत की अधिकांश भाषायें संस्कृति की परम्परा में ही विकसित हुई हैं। द्रविड़ परिवार की भाषायें भी संस्कृत से प्रभावित हुई हैं अतः संस्कृत सम्पूर्ण राष्ट्र की निधि है। हिन्दी संस्कृत की परम्परा में विकसित तथा देश में समझी जाने एवं बोली जाने वाली भाषा है। इसका शब्द सामर्थ्य एवं साहित्य भी विपुल है। हिन्दी किसी धर्म की भाषा भी नहीं है। इस प्रकार सभी संकीर्णताओं के घेरे से ऊँची उठी हुई है।

अंग्रेजी अंग्रेजों से, अरबी अरबों से, उर्दू मुसलमानों से जुड़ी होने के कारण राष्ट्र भाषा नहीं हो सकती। इन भाषाओं के बोलने वाले २% हैं। उर्दू तथा फारसी धार्मिक संकीर्णता तथा सत्ताभिमुख होने के कारण आम जनता की भाषा नहीं रही है। भारत की अन्य भाषायें क्षेत्रीय भाषायें हैं। उनकी राष्ट्रीय विचारधारा को वहन करने तथा उसकी प्रसारण करने की क्षमता नहीं होती। यह अवश्य है क्षेत्रीय भाषा में राष्ट्र भाषा के विकास में सहायक होती हैं। जिस प्रकार एक बड़ी नदी में अन्य नदियाँ मिलकर उसकी धारा को तेज करती हैं उसी प्रकार प्रादेशिक या क्षेत्रीय भाषायें भी राष्ट्र भाषा के विकास में सहायक होती है तथा राष्ट्र भाषा प्रादेशिक एवं क्षेत्रीय भाषाओं को पल्लवित करती है।

हिन्दी इस कार्य में पूर्ण सक्षम है। हिन्दी भारत के ६० प्रतिशत लोगों द्वारा बोली जाती है तथा समझी जाती है। इस प्रकार हिन्दी भारत की राष्ट्र भाषा तथा सम्पर्क भाषा बनने में सक्षम है। भारत की सांस्कृतिक और सामाजिक परम्परा का वहन हिन्दी द्वारा सुगमता से हो सकता है।

---

(४) भारत का नक्षत्र जगत में प्रवेश

अथवा

भारत का अन्तरिक्ष युग में प्रवेश

अथवा

भारतीय उपग्रह आर्यभट्ट

भारत एक विकासशील देश है। यद्यपि अतीत में विज्ञान और तकनीकी में भारत की गौरवशाली परम्परा रही है। पर पराधीनता के साथ-साथ भारत की यह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परम्परा भी विलुप्त हो गई। कहा भी गया है—"भारतवर्ष का विज्ञान प्राचीन काल में अपने चरमोत्कर्ष पर था। यहाँ के यान दसों-दिशाओं में आते-जाते थे। पर काल की कराल दृष्टि ने परतंत्रता के गर्भ में उस सत्यता को धराशायी कर दिया। हर्ष का विषय है कि भारत ने फिर अन्तरिक्ष में प्रवेश करने का प्रयत्न किया है।"

१६ अप्रैल १६७५ का स्वर्णिम दिन। भारतीय इतिहास का एक गौरव है। भारत के गौरव पूर्ण इतिहास में इस दिन ने एक नया पृष्ठ जोड़ा है जिस पर पीढ़ियाँ भी गर्व से अपना मस्तक ऊँचा उठायेंगी। उस दिन भारत ने सोवियत राकेट की सहायता से दोपहर को ठीक १२ बजकर ५६ मिनट और ११ सेकेन्ड पर आर्यभट्ट नामक उपग्रह को अंतरिक्ष में छोड़ा गया। यह उपग्रह ३६० किलोग्राम (के० जी०) वजन का है। यह पृथ्वी से ६०० किलोमीटर वाली कक्ष में परिक्रमा कर रहा है। इस उपग्रह के वृत्त का झुकाव ५०.४° अंश है। उसकी परिक्रमा का एक पूरा चक्कर में ६६.४४ मिनट में पूरा होता है।

इस उपग्रह के अंतरिक्ष युग में प्रवेश के साथ ही भारत उन विकसित देशों मे पंक्ति में लग गया है जो अंतरिक्ष में अपनी वैज्ञानिक प्रतिभा का परिचय दे चुके हैं। विश्व के ये राष्ट्र निम्नलिखित हैं—१. सोवियत संघ (रूस), २. यू० एस० ए० (अमेरिका), ३. फ्रान्स, ४. ब्रिटेन, ५. चीन, ६. जापान, ७ आस्ट्रेलिया ८. पश्चिमी जर्मनी, ६. कनाडा, १०. जी० डी० आर०, ११. भारत। इस उपग्रह के छोड़ने के साथ ही भारत विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण हो गया।

इस उपग्रह का नाम आर्यभट्ट रखा गया। आर्यभट्ट हमारे देश के गौरवशाली सपूत थे। पंद्रहवी सदी में आर्यभट्ट का जन्म इस देश में हुआ था। वे एक प्रसिद्ध खगोल शास्त्री थे। गणित और खगोल विज्ञान में वे अतुलनीय थे। उनके नाम पर उपग्रह का नाम रखकर हमारे आधुनिक वैज्ञानिकों नें उनका सम्मान किया है—यह उचित ही है।

"यह उपग्रह व्यास में १.४७ मीटर है। ऊँचाई में ११६ सें० मी० तभा भार ३६० किलोग्राम है। इसका रंग नीला और बैंगनी है और इसके २६ मुख हैं। इस उपकरण का निर्माण ६०% भारतीय उपकरणों तथा १०% रूसी उपकरणों के सहयोग से हुआ है। यह उपकरण सोवियत निर्मित अड्डों से छोड़ा गया क्योंकि भारत के पास अपना अन्तरिक्ष अड्डा नहीं है। आर्यभट्ट की अपनी गति के लिए ४५ वाट्स शक्ति की अपेक्षा होती है जिसके लिए उसकी सतह पर सौर सेल्स का एक सैट लगाया गया है जो सूर्य की किरणों को विद्युत् में परिवर्तित कर देता है।"

—डॉ० हरिदत्त शास्त्री

आर्यभट्ट का नमूना पीनिया नामक क्षेत्र (जो बंगलौर के निकट है) में तैयार हुआ था। यह इण्डियन एयर स्पेस रिसर्च इन्सटीट्यूट बेंग्लौर द्वारा तैयार किया गया था। इसके निर्माण में ५ करोड़ रुपया व्यय हुआ। २६ माह के प्रयत्न के बाद इसमें

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सफलता मिली । हीरे के आकार का यह उपग्रह पृथ्वी के चक्कर लगा रहा है तथा सूचनाएँ भेज रहा है ।

इस उपग्रह के निर्माण में सोवियत संघ द्वारा जो सहायता प्राप्त हुई उसके हम ऋणी हैं । रूस की सहयता के बिना उड़ान ही सम्भव नहीं थी । सोवियत रूस के उपकरण भी प्रयोग किये गये । ये उपकरण निम्नलिखित हैं :—

(१) सौर-सेल्स का नियोजन जो उपग्रह के लिये सौर किरणों को विद्युत् में परिवर्तित करता है ।

(२) विद्युत् को संग्रह करने वाली बैट्री ।

(३) टेप-रिकार्डर—जो सूचनाएँ संग्रह करके नीचे भेजता है ।

(४) एक स्पिन अप सिस्टम जिससे उपग्रह अपनी कक्षा में संतुलन बनाए रखता है ।

आर्यभट्ट की परिक्रमाओं का स्थायी रूप से एवं व्यवस्थित रीति से भारतीय वैज्ञानिक अध्ययन कर रहे हैं । हरकोटा (आन्ध्र) विक्रम साराभाई केन्द्र त्रिवेन्द्रम् सूचनाएँ एकत्रित कर रहे हैं । भारत में इस दिशा में १९६१ ई० से ही प्रयास चल रहे थे । भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री पंडित जवाहर लाल नेहरू की यह इच्छा थी कि अपना देश अणु-विज्ञान में अग्रणी रहे । डॉ० जहाँगीर होमी भाभा ने इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया । डॉ० विक्रम साराभाई ने डॉ० भाभा के कार्य को आगे बढ़ाया । इस समय अहमदाबाद, बैंग्लोर, त्रिवेन्द्रम् में सब प्रयोगशालाएँ हैं जो अंतरिक्ष विज्ञान पर अध्ययन कर रही हैं । थाम्बा (त्रिवेन्द्रम्) का अन्तरिक्ष प्रशिक्षण केन्द्र (राकेट लोंचिग स्टेशन) ने इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया है । ये स्थल हमारे राष्ट्र के गौरव हैं । भारतीय अणु उर्जा आयोग के प्रयासों से १९७२ ई० में आर्यभट्ट का नमूना बनाया गया । निरन्तर सुधार होते रहे तथा १९७५ में हमारे वैज्ञानिकों को सफलता मिली ।

यद्यपि इस उपग्रह द्वारा ६ माह तक ही सूचनाएँ उपलब्ध हुईं । १९७८ तक ही आर्यभट्ट ने अपनी कक्षा में परिभ्रमण किया पर अपनी सफलता से विश्व में भारत का मस्तक ऊँचा उठाया ।

भारतीय अन्तरिक्ष प्रक्षेपण केन्द्र हरकोटा (आन्ध्र प्रदेश) में स्थापित हुआ है । अभी इस केन्द्र को पूर्ण रूप से सफल होने में समय लगेगा । भारत ने अपना एक और उपग्रह छोड़ दिया है जो भू-सम्पदा के सम्बन्ध में सूचनाएँ देगा ।

भारत की यह नीति है कि अणु-परमाणु शक्ति का लोक कल्याणकारी कार्यों में उपयोग हो । सृजनात्मक शक्तियों के विकास में अणु परमाणु शक्तियों का उपयोग होना ही विज्ञान का सही दिशा में कदम है । विश्व के जिन देशों ने अणु-परमाणु शक्ति का विनाशकारी उपयोग किया है वे स्वयं उसकी विनाशकारी शक्ति से परेशान हैं । अनेक सम्मेलनों में इन राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने यह घोषणा की है कि अणु-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शक्तियों से विश्व की रक्षा के प्रयास हों। भारत की- ओर विश्व की दृष्टि लगी हुई है।

भारत के ये वैज्ञानिक प्रयोग विश्व-शान्ति के लिए अमर संदेश हैं। पोकरण में भारत ने शान्तिमय परमाणु विस्फोट किया था। उससे विश्व स्तभित रह गया था। पर भारतीय प्रधानमन्त्री ने विश्व को आश्वासन दिया था कि भारत परमाणु-शक्ति का रचनात्मक प्रयोग करेगा। अणुभट्ट के निर्माण ने इस दिशा में हमारा मनोबल बढ़ाया है। आर्यभट्ट का प्रक्षेपण हमारी अनुसंधान प्रगति का सफल सोपान है। हम आगे बढ़े हैं और आगे बढ़ेंगे।

यद्यपि देश अनेकों समस्याओं से ग्रसित है। हम उनका भी सामना कर रहे हैं। हरित क्रान्ति और श्वेत क्रान्ति के माध्यम से खाद्य समस्यायें हल कर रहे हैं। उद्योग-धन्धे विकसित हो रहे हैं। समस्यायें हैं तो उनका समाधान है। पर इसका अर्थ यह नहीं कि हम वैज्ञानिक प्रगति का कार्य तब तक रोक दें जब तक ये समस्यायें हल न हो जायें। हम सर्वाङ्गीण विकास की दिशा में गतिशील हैं। हमें आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि विज्ञान तथा अन्तरिक्ष जगत में हमें पुनः इतिहास के अतीत की भाँति ही गौरवपूर्ण स्थान मिलेगा।

---

(५) तुलसी की समन्वय साधना

हिन्दी साहित्य में महात्मा तुलसीदास समन्वय की विराट् चेष्टा लेकर उत्पन्न हुये। तुलसी ने अपने काव्य में विचार, संस्कृति, काव्य शैली, धर्म का सुन्दर समन्वय किया। तुलसी भारतीय संस्कृति के ज्वलन्त प्रतीक है। पाश्चात्य दर्शन के अनुसार द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद विकास का मूल है लेकिन भारतीय दर्शन और संस्कृति के अनुसार समन्वय विकास का मूल है। यही अन्तर है भारत और पाश्चात्य जगत के चिन्तन में। तुलसी ने तत्कालीन समाज की परिस्थितियों को देखा, तुलसी के इन ग्रन्थों से इस बात का स्पष्ट आभास मिल जाता है कि उस समय समाज किसी ऊँचे आदर्श पर नहीं चल रहा था। उच्च स्तर के लोग विलासिता में चूर थे और निचले स्तर के लोग अशिक्षित थे। उस समय जीवन में पलायनता आ चुकी थी। देश की धार्मिक दशा भी अच्छी नहीं थी। धार्मिक क्षेत्र में नाना प्रकार के सम्प्रदाय और अखाड़े थे। एक ओर अलख जगाने वाले नाथ पंथी योगी थे जो अशिक्षित वर्ग पर अपना प्रभाव जमा रहे थे, दूसरी ओर कबीर जाति-पाँति विरोधी समन्वित समाज में अलखोपासना का सन्देश दे रहे थे। शाक्त में भी दक्षिणपंथी और वामपंथी दो भेद हो गये थे। द्वैतवाद, अद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद, शुद्धाद्वैतवाद और न जाने कितने दार्शनिक मतवाद परस्पर व्यवहार में आ गये थे।

तत्कालीन समाज की आर्थिक दशा अत्यन्त शोचनीय थी। इस सम्बन्ध में तुलसी ने लिखा है--

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"खेती न किसान को, भिखारी को न भीख बलि,
बनिक को बनिज न, न चाकर को चाकरी,
जीविका विहीन लोग, सीद्यमान सोचि बस,
एक एकन सो कहैं, कहाँ जाय का करी।"

ऐसे उस विपन्न युग में तुलसी का आविर्भाव हुआ।

आर्थिक दृष्टि से भारतीय समाज अत्यन्त विपन्न था। तुलसी के अनुसार कलि-काल का अत्यधिक प्रभाव हो चला था। वेद और धर्म से लोग दूर हो गये थे। भूप, भूमि चोर बन गये थे, सज्जन लोग सर्वत्र दुःखी और चिन्तित थे, सर्वत्र पाप ही पाप था, कहने का तात्पर्य यह है कि तुलसी के समय का समाज नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से ह्रासोन्मुख था। प्रबुद्ध चेत्ता, स्वतन्त्र कलाकार, जनता के प्रतिनिधि कवि तुलसी के समक्ष एक महान् कार्य था जिसे उन्होंने अत्यन्त कौशल तथा कलात्मक ढंग से सम्पन्न किया। जिस प्रकार महाभारत काल में योगीराज कृष्ण ने ज्ञान कर्म और भक्ति के समन्वय से तत्कालीन जन समूह का मार्ग प्रशस्त किया और जिस प्रकार महात्मा बुद्ध ने वैदिक कर्मकाण्ड और हिंसावाद का घोर विरोध करके जनता का नेतृत्व किया उसी प्रकार तुलसी ने भारत देश की विभिन्न विचार पद्धतियों, साधनाओं, विरोधी-संस्कृतियों और विभिन्न जातियों सामंजस्य स्थापित करके जीवन साहित्य और दर्शन सभी क्षेत्रों में समन्वयवाद का विराट् आदर्श उपस्थित किया। उन्होंने यह महत्वपूर्ण कार्य करके स्वयं को लोकनायक सिद्ध कर दिया।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का कहना है—"लोक नायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके, क्योंकि भारतीय जनता में, नाना प्रकार की परस्पर विरोधी संस्कृतियाँ, साधनायें, जातियाँ, आचार-निष्ठा और विचार पद्धतियाँ प्रचलित हैं। बुद्ध देव समन्वयकारी थे। गीता में समन्वय की चेष्टा है। तुलसी भी समन्वयकारी थे। वे लिखते हैं "उनका सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है लोक और शास्त्र का समन्वय, गृहस्थ और वैराग्य का समन्वय, भक्ति और ज्ञान का समन्वय, भाषा और संस्कृति का समन्वय, निर्गुण और सगुण का समन्वय, पांडित्य और अपाण्डित्य का समन्वय, रामचरित मानस शुरू से अन्त तक एक समन्वित काव्य है।" इस समन्वय काव्य में उन्हें अतीव सफलता मिली। इसका कारण यह है एक समन्वयवादी लोक नायक में समझौते की जो प्रवृत्ति होती है वह उनमें थी, क्योंकि समन्वय का अर्थ है कुछ झुकना और कुछ झुकने के लिये बाध्य कर देना। तुलसी को ऐसा करना पड़ा है ऐसा करने के लिये जिस असामान्य क्षमता की आवश्यकता थी उनमें समन्वय करने का अपार धैर्य था और साथ ही भारतीय समाज की नाना संस्कृतियों, भावनाओं, विचार पद्धतियों को उन्होंने खुली आँख से देखा था। वे स्वयं समाज के विभिन्न स्तरों का जीवन जी चुके थे। कहना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चाहें तो कह सकते हैं कि तुलसी की यह समन्वय साधना उनका भोगा हुआ यथार्थ है। तुलसी ने एक ओर जहाँ उच्चकुल में जन्म लिया वही दरिद्रता के कारण दर-दर भटकना पड़ा वे अशिक्षित वर्ग के सम्पर्क में भी रहे, दूसरी ओर संस्कृत के प्रकाण्ड-पण्डितों के सम्पर्क में भी रहे, एक ओर जीवन की आशक्त पराकष्ठा उनमें थी तो दूसरी ओर साधना भी अपनी चरम सीमा पर थी। एक ओर उन्हें कटु-से-कटु निन्दा सुननी पड़ी। विरोधों का सामना करना पड़ा। दूसरी ओर उन्हें आशातीत आदर और सम्मान मिला। उन्होंने लोक-जीवन का अध्ययन भी किया था। दूसरी ओर नाना पुराण निगमागम का भी अध्ययन किया था। उन्होंने अपने समय में प्रचलित सभी काव्य शैलियों का अध्ययन किया। भारत में प्रचलित में सभी धर्म और मतोंका भी अध्ययन किया। तुलसी ने उस समय के समाज की मनोवैज्ञानिक स्थिति का अध्ययन किया। इस प्रकार उन्होंने अपने युग के सभी विरोधी तत्वों का परिहार एवं समाज के विकृत रूप का वर्णन करते हुये धर्म, दर्शन, साहित्य और समाज में समन्वय की भावना को मूर्तरूप दिया, तथा सच्चे लोक धर्म की प्रतिष्ठा करने लोक नेतृत्व का दायित्व पूरा किया।

तुलसी ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों जैसे धार्मिक, सामाजिक तथा साहित्यिक का समन्वय करके एक महत्त्वपूर्ण कार्य किया। अब इन क्षेत्रों का हम वेशद् वर्णन करगे।

धार्मिक क्षेत्र—तुलसी के समय में धार्मिक कट्टरता के कारण अन्तर्विरोध एवं वैमनस्य था,। शैव और वैष्णव शाक्त और बौद्ध तथा वामपंथी एक दूसरे से द्वेष करते थे। तुलसी ने रामचरित मानस में इस कटुता को दूर करने का प्रयास किया है। राम शिव के उपासक हैं शिव राम के उपासक हैं।

इस प्रकार दोनों अभिन्न हैं। तुलसी ने स्पष्ट लिखा है—

"शिव द्रोही मम दास कहा सोनरमोहे सपनेहुँ नहिं भावा" उन्होंने सगुण और निर्गुण के मध्य के अन्तर्यामी परिहार करते हुये लिखा है :—

"अगुनहिं सगुनहि नहिं कछु भेदा,
गावै श्रुत पुरान बुध वेदा।
अगुन अरूप अलख जग जोई,
भक्त प्रेम वस सगुण सु होई॥"

तुलसी ने लोक-संग्रह की भावना से धार्मिक समन्वय किया है। उन्होंने सारे संसार को सिया राम मय माना है। उन्होंने लिखा है—

"सिया राम मय सब जग जानी,
करऊ प्रनाम जोर जुग पानी।"

धार्मिक क्षेत्र में तुलसी का यह समन्वय भारतीय समाज के लिये वरदान सिद्ध हुआ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सामाजिक क्षेत्र—तुलसी के समय का समाज आदर्श विहीन, संस्कृति रहित, मर्यादा पतित एवं ह्रासोन्मुख था। तुलसी ने समाज के समक्ष एक आदर्श समाज प्रस्तुत किया। जिसमें राम जैसा राजा, दशरथ जैसे पिता, सीता जैसी आदर्श पत्नी हैं। लक्ष्मण और भरत जैसे भाई हैं, हनुमान जैसे सेवक हैं। कौशिल्या अपने पुत्र को विमाता के आदर्शों को भी उसी निष्ठा के साथ स्वीकार करने को कहती हैं—

"जो केवल पितु आयसु ताता, तो जनि जाहु जानि बड़माता।
जो पितु मातु कहेउ बन जाना, तो कानन सत अवध समाना।।"

तुलसी ने हिन्दू राष्ट्र के जर्जर शरीर में अपार शक्ति का संचार किया। लोगों में यह विश्वास उत्पन्न हुआ कि विपरीत परिस्थितियों में भी धर्म की रक्षा की जा सकती है। इसीलिये आज का हिन्दू राष्ट्र तुलसी निर्मित राष्ट्र है। तुलसी समाज के लिये मर्यादा आवश्यक मानते हैं लेकिन मर्यादा के कारण यदि समाज की हानि होती है तो वे उस मर्यादा का विरोध भी करते हैं।

साहित्यिक क्षेत्र में भी तुलसी ने अद्भुत समन्वय का परिचय दिया। उन्होंने उस समय प्रचलित सभी प्रकार की काव्य पद्धतियों को अपनाया, चन्द्र के छप्पय और कुंडलियाँ, कबीर के दोहे और विनय के पद, सूर और विद्यापति की गीत पद्धति, जायसी और ईश्वरदास की दोहा और चौपाइयों की शैली, गंग आदि भाट कवियों की सवैया कवित्त पद्यति, रहीम के बरवै सभी को उन्होंने अपनाया। इस प्रकार अनेकों प्रकार को काव्य शैलियाँ तुलसी के समन्वयकारी व्यक्तित्व की छाप लेकर प्रस्तुत हुई। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है "उन्होंने नाना पुराण निगमागम का अध्ययन किया था और साथ ही लोकप्रिय साहित्य और साधना मार्ग की नाड़ी पहचानने का अवसर उन्हें मिला था। उस युग में प्रचलित सब प्रकार की काव्य पद्धतियों को उन्होंने अपनी शक्तिमती भाषा की सवारी पर चढ़ाया था। उनकी काव्य पद्धतियों का अध्ययन करने से उनकी अद्भुत समन्वयात्मिका बुद्धि का परिचय मिलता है।" प्रो० बल्देव प्रसाद मिश्र ने कहा है—गीता का अनाशक्ति योग बौद्धों और जैनों का अहिंसावाद, वैष्णवों और शैवों का अनुराग, शाक्त का जप, शंकर का अद्वैतवाद, रामानुज की भक्तिभावना, आर्य समाज का आर्य संगठन आदि सब कुछ तो उसमें है ही साथ ही ईसाइयों की श्रद्धा और करुणा भी क्रीड़ा कर रही है।"

गोस्वामी तुलसीदास अपनी इसी समन्वय साधना के कारण जनता के प्रतिनिधि कहे जा सकते हैं उनका यह समन्वय स्वान्तः सुखाय होते हुये भी सर्वहिताय सिद्ध हुआ है। उनके अन्तःसंघर्ष में लोग संघर्ष और उनकी भक्ति में लोक संघर्ष दिखाई देता है भक्ति और साहित्य दोनों ही क्षेत्रों में जितनी सफलता गोस्वामी तुलसीदास को मिली है उतनी अन्य किसी कवि को नहीं। उनकी कविता में मानव जीवन के अनेकों पक्ष हैं वे सभी लोक जीवन को सशक्त बनाने के लिये ही हिन्दू

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समाज के भग्नहृदयों को जोड़ने के लिये तुलसी ने अमृत की वर्षा की है। उनकी वाणी एक ओर तो व्यक्तिगत' साधना के मार्ग में वैराग्यपूर्ण शुद्ध भक्ति मार्ग का उपदेश देती है तो दूसरी ओर लोकपक्ष में आकर पारिवारिक और सामाजिक कर्त्तव्यों का सौंदर्य दिखाकर मुग्ध करती है। इसीलिये कहा गया है कि राम चरित मानस के पात्रों द्वारा तुलसी ने जिन नैतिक मूल्यों की स्थापना की वे जनता के मनोबल को दृढ़ करने वाले थे उसे संघर्ष के रास्ते पर आगे बढ़ाने वाले थे। तुलसी के काव्य ने उनके समन्वयवाद ने समाज को सशक्त बनाया है। विदेशी विद्वान् नोक्स (knox) का कहना है—"भारत का किसी दूसरे देश के नेताओं से अधिक सुसंस्कृत है इस बात का श्रेय बिना किसी पक्षपात के तुलसी को दिया जा सकता है। क्योंकि आज के भारत का धर्म और संस्कृति तुलसी सम्मत धर्म और संस्कृति है।" इस दृष्टि से तुलसी का रामचरित मानस समन्वयवाद का लोक ग्रन्थ है। मानस के अतिरिक्त विनय पत्रिका, दोहावली, गीतावली, बरवै रामायण आदि ग्रन्थ भी तुलसी के समन्वयवाद के सहयोगी हैं। विशेष बात तो यह है तुलसी के पात्र अलौकिक होते हुये भी सामान्य मनुष्यों जैसे हैं। वे जीवन की विकट परिस्थितियों में भी संघर्ष करते हैं। यही कारण है राम चरित मानस रंक की कुटिया से लेकर राजा के महल तक लोकप्रिय है।

———

(६) सूर-सूर तुलसी शशि

सूर और तुलसी दोनों ही माँ-भारती के उज्जवल नेत्र हैं। सूर ने कृष्ण का गायन किया है, और तुलसी ने राम का इन दोनों ही कवियों ने अपने-अपने क्षेत्रों में काव्य का ऐसा स्वरूप प्रस्तुत किया जो अपनी दिशा में सर्वप्रथम और सर्वश्रेष्ठ है। रामचरित गान करने वालों में तुलसी सर्वश्रेष्ठ है और कृष्ण चरित के गायन में सूर सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। इनमें न कोई बड़ा है न छोटा ही। दोनों कवियों को अपने-अपने क्षेत्र में अपूर्व सफलता प्राप्त हुई है।

सूर द्वारा गृहीत कृष्ण उनकी निजी उद्भावना का प्रतिफल है, सूर के कृष्ण मनमोहन और रसिक शिरोमणि हैं। भ्रमर-गीत की कल्पना उनकी मौलिक देन है। बाद के कवियों ने इस परम्परा का अनुकरण तो किया है लेकिन वे इस कार्य में कृतकार्य न हो सके। शृंगार और वात्सल्य का जैसा वर्णन सूर ने किया है वैसा किस अन्य कवि ने नहीं किया है। वात्सल्य का तो वे कोना-कोना झाँक आये हैं। इसीलिये तो कहा जाता है कि सूर वात्सल्य सूर, मात्र सूर के कारण ही वात्सल्य रस काव्य में स्वीकार हो सका है।

तुलसी ने नाना पुराण निगमागम, बाल्मीकि रामायण, आध्यात्म रामायण, रघुवंश तथा हनुमन्नाटक आदि का आधार लिया है इसके अतिरिक्त अनेक नवीन प्रसंगों की उद्भावना की है। तुलसी के राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, जो नर होकर भी नारायण हैं। उनमें शील, सौंदर्य, और शक्ति का समन्वय है। तुलसी में एक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और बाल्मीकि और कालिदास का कवित्त है तो दूसरी ओर आध्यात्म रामायण को आध्यात्मिकता और धार्मिकता। रामचरित मानस हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ होने के साथ ही एक महान् पवित्र धर्म ग्रन्थ है।

सूर काव्य की सृष्टि स्वान्तः सुखाय है। सूर विशुद्ध रूप से लीलावादी कलाकार हैं। इनके कृष्ण का रूप लोकरंजनकारी है। सूर के काव्य का उद्देश्य केवल आनन्द है। आध्यात्म पक्ष में सूर इतने ऊँचे हैं कि वे लोकपक्ष को भूल गये, वे कृष्ण के माधुर्य और प्रेममय रूप में इतने तन्मय हो गये कि स्वयं गोपाल हैं, स्वयं गोपी है, स्वयं नन्द और स्वयं यशोदा हैं। वे पुष्टि सम्प्रदाय के जहाज और शुद्धाद्वैतवाद के कर्णधार।

तुलसी समाज-सुधारक, भक्त, कवि, राजनीतिक, महात्मा और लोकनायक सब कुछ है। तुलसी राम-काव्याकाश में इतने ऊँचे उठे कि इस दिशा में इन तक कोई न पहुँच सका। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि तुलसी के बाद राम साहित्य का विकास प्रायः अवरुद्ध सा हो गया। कदाचित् इसका कारण परवर्ती राम कवियों का तुलसी की महत्ता को न पहुँच पाना था। अस्तु दोनों की महत्ता अपने-अपने क्षेत्रों में अक्षुण्ण है।

सूर में सख्य भाव, माधुर्य भाव और दैन्य भाव की भक्ति दृष्टिगोचर होती है पर प्रधानता सख्य भाव की है। सूर अपनी वृत्ति में मस्त रहने वाले जीव हैं। समाज किधर जा रहा है इस बात की उन्हें परवाह नहीं है। इन्होंने कृष्ण जीवन को कोमलतम अंशों को अपने वर्णन का विषय बनाया है।

तुलसीदास दास्य-भाव के भक्त हैं, अतः उन्हें मर्यादा और नैतिकता का पग-पग पर ध्यान है। इनके काव्य में लोक पक्ष अत्यन्त उभरा हुआ है। तुलसी की भक्ति में सर्वांगीण जीवन का चित्रण है जिसे मानवता की व्याख्या कहा जा सकता है।

सूर में वात्सल्य शृङ्गार तथा शान्त रस का प्रमुख रूप से चित्रण हुआ है। वात्सल्य और शृङ्गार रस में तुलसी क्या कोई भी कवि उन तक नहीं पहुचा है। आचार्य शुक्ल ने इस सम्बन्ध में लिखा है "यद्यपि तुलसी के समान सूर का काव्य क्षेत्र इतना व्यापक नहीं कि उसमें जीवन की विभिन्न दशाओं का समावेश हो पर जिस परिमित पुण्य भूमि में उनकी वाणी ने उनका संचरण किया उसका कोई कोना अछूता न छूटा। शृङ्गार और वात्सल्य के क्षेत्र में जहाँ तक इनकी दृष्टि पहुँची वहाँ तक किसी और कवि की नहीं। इन दोनों क्षेत्रों में तो इस महाकवि ने मानो औरों के लिये कुछ छोड़ा ही नहीं।" आगे चलकर वे लिखते हैं—

"गोस्वामी तुलसीदास ने गीतावली में बाल लीला को इनकी देखा-देखी बहुत अधिक विस्तार दिया तो सही पर उसमें बाल सुलभ भावों और चेष्टाओ की वह प्रचुरता नहीं आई उसमें रूप लावण्य की ही प्रचुरता रही। बाल चेष्टाओं के स्वाभाविक मनोहर चित्रों का इतना बड़ा भण्डार और "कहीं नहीं" इस क्षेत्र में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तुलसी की असफलता का कारण है उनकी दास्य भावना और मर्यादा-वादिता। सख्य भाव की भक्ति में 'खेलन में को काको गुसैंया' वाली अभिन्नता और नाट्य में व्यवधान उपस्थित करती है। यह सच है कि इन क्षेत्रों में सूरदास ने भगवान को भगवान से मिलाया है।

मानव प्रकृति चित्रण में दोनों ने अत्यन्त मनोवैज्ञानिक सूझ-बूझ से काम लिया है। चरित्र-चित्रण में निश्चित रूप से तुलसी सूर से आगे हैं। डॉ० हजारी प्रसाद के शब्दों में—"चरित्र-चित्रण में तुलसीदास की तुलना संसार के जिन चुने कवियों के साथ की जा सकती है। उनके सभी पात्र उसी प्रकार हाड़-माँस के जीव हैं, जिस प्रकार काव्य का पाठक परन्तु फिर भी उनमें अलौकिकता है। सबसे अद्भुत बात यह है कि इन चरित्रों की अलौकिकता समझ में आने वाली चीज है। जीवन्त पात्र सिर्फ श्वास, प्रश्वास ही नहीं लेते, सिर्फ हमारी भाँति नाना प्रकार की संवेदनाओं को ही नहीं अनुभव करते, बल्कि वे आगे बढ़ते हैं, पीछे हटते हैं अपनी उदात्त वाणी और स्फूर्तिप्रद क्रियाओं से हमारे अन्दर ऊपर उठने का उत्साह भरते हैं, हमें साथ ले लेते हैं। हम उनका संग पा जाने पर उल्लसित होते हैं, उमंगते हैं और सन्मार्ग पर लने में जो विघ्न बाधायें आती हैं, उन्हें जीतने का प्रयास करते हैं। तुलसी के जीवन्त पात्र इस श्रेणी के हैं।"

सूर एक उत्तम गायक हैं। इसी सम्बन्ध में आचार्य शुक्ल लिखते हैं—"सूर संगीत वर्णन" प्रेम संगीतमय जीवन की गहरी चलती धारा है जिसके अवगाहन करने वाले को दिव्य माधुर्य के अतिरिक्त और कुछ नहीं दिखाई पड़ता। राधा कृष्ण के रंग रहस्य के इतने प्रकार के चित्र सामने आते हैं कि सूर का हृदय नाना उमंगों का अक्षय भण्डार प्रतीत होता है।"

सूर ने लोक प्रचलित ब्रजभाषा का प्रयोग किया है, ब्रजभाषा का साहित्यिक रूप काफी सुन्दर है उसे सर्वथा निर्दोष नहीं कहा जा सकता है। उसमें वाक्य दोष, लिंग दोष सम्बन्धी त्रुटियाँ हैं। कई शब्दों की (पादपूर्ति के लिये) निरर्थक आवृत्ति है। कहीं-कहीं पर क्रियाओं के पुराने रूपों का व्यवहार किया गया है।

तुलसी ने ब्रज और अवधी का समान सफलता के साथ प्रयोग किया है सूर की अपेक्षा ब्रजभाषा पर तुलसी का अधिक अधिकार है। तुलसी की भाषा शुद्ध और परिमार्जित है, उसमें संस्कृत की कोमलता कान्त पदावली की मधुर झंकार है। ये सभी बातें तुलसी के पाण्डित्य की परिचायक हैं। इस सम्बन्ध में यह स्मरणीय है कि तुलसी की ब्रजभाषा शुद्ध भले ही है पर सफलता उन्हें अवधी में ही मिली है।

उक्ति का अनूठापन काव्य के उत्कर्ष में विशेष महत्व रखता है। उक्ति वैचित्र्य दोनों में हैं जो कि अत्यन्त मर्मस्पर्शी है। विद्वानों का कहना है कि सूर, तुलसी की अपेक्षा इस क्षेत्र में अधिक सफल हुये हैं। सूर के काव्य में उपालम्भ, कसावट, तीखी, मीठी चोट दर्शनीय है। "उर में माखन चोर गाढ़े", "ऊधौ मन नाही दस बीस",

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"वह मथुरा काजर की कोठरि जे आवहि ते कारे", "लरकाई को प्रेम कहौ अलि कैसे छूटै", "जोग ठगोरी ब्रज न बिकैहैं" आदि उक्तियाँ सीधे ही हृदय को पकड़ती हैं। तुलसी में भी यह उक्ति वैचित्र्य तो है पर सूर के समान नहीं।

दोनों कवियों का दृष्टिकोण और क्षेत्र भिन्न-भिन्न है। अपने-अपने क्षेत्र में दोनों कवि पूर्णतया सफल रहे ऐसी दशा में एक को सूर्य और दूसरे को चन्द्र कहना सर्वथा अनुचित है। तुलसी के महान् सन्देश हैं, उन्होंने जन-जीवन को आलोकित किया, जीवन के दोषों को दूर किया, गुणों की ओर अग्रसर किया। सूर ने अपनी रसवंती प्रांजल ज्योति से तथा आमोद-प्रमोद और रस रंग की धारा से मानव जन की अनुरंजनकारी वृत्ति को रस स्निग्ध किया। सूर की ज्योति में तेज की वह प्रखरता नहीं, उनमें तो चन्द्रमा का सौम्य तथा आह्लादकत्व है। तुलसी ने सूर्य के समान अपने प्रकाश से मानव-मन से मोह, भ्रम और ह्रास के अन्धकार को दूर किया। अब प्रश्न उठता है—"सूर सूर तुलसी शशि" ऐसी उक्ति क्यों? इसके कई कारक हैं या तो अनुप्रास अलंकार लाने के लिये ऐसा कहा गया है यह अथवा कालक्रमानुसार सूर पहले आते हैं और तुलसी बाद में सूर का काफी अनुकरण किया अथवा ये भी हो सकता है कि चन्द्रमा अपने प्रकाश को सूर्य से लेता है इस प्रकार सूर सूर हो सकते हैं और तुलसी शशि। किसी को सूर या चन्द्रमा कहिये कोई फर्क नहीं पड़ता दोनों ही हिन्दी साहित्य और हिन्दू समाज के गौरव तथा शृङ्गार हैं।

(७) हिन्दी काव्य में प्रकृति-चित्रण

हिन्दी साहित्य में प्रकृति चित्रण प्राचीन काल से होता रहा है। प्रारम्भ से अब तक मानव की प्रेरणास्रोत प्रकृति ही है, मात्र प्रेरणास्रोत ही नहीं, बल्कि कवियों के लिये प्रकृति सौंदर्य का अक्षय भंडार भी है। आदि काल से ही कलाकारों ने खिलते हुये फूलों में, हँसते हुये चाँद में, बिखरे हुये तारों में, पहाड़ों की ऊँचाई से गिरते हुये झरनों पर, हरी घास पर पड़ी हुयी सवेरे की हल्की ठण्डी शबनम में मानव कल्याण की अनमोल छवियाँ देखीं और उन्हें अनुकरण की अलबम में रोपायित किया। इससे स्पष्ट होता है कि मानव और प्रकृति का सम्बन्ध अति घनिष्ठ है। मानव और प्रकृति के इस अटूट सम्बन्ध की अभिव्यक्ति धर्म, दर्शन, साहित्य और कला में चिरकाल से होती रही है। साहित्य मानव जीवन का प्रतिबिम्ब है, अतः उस प्रतिबिम्ब में उसकी सहचरी प्रकृति का प्रतिबिम्बित होना स्वाभाविक है। आदि कवि का दो प्रकृति के सजीव प्राणियों में से एक का वध देखकर हृदय द्रवित हो उठा उसके मुख से कदाचित् ही ये पंक्तियाँ निकल गईं—

"माँ निषाद प्रतिष्ठाम् त्वम् गमः सरस्वती समः
यत क्रोंच मिथुना देखभवधी।"

काव्य में प्रकृति का प्रयोग कई रूपों में किया जाता है—(१) आलम्बन रूप, उद्दीपन, मानवीकरण, प्रतीकात्मक, बिम्ब-प्रतिबिम्ब, उपदेशिका, अलंकार दर्शन,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दूतिका, रहस्यात्मक आदि रूपों में कवि ने प्रकृति को निहारा है। विश्व के प्राचीन-तम उपलब्ध साहित्य-ऋग्वेद, से ही प्रकृति की सुदृढ़ परम्परा प्राप्त होती है। इस ग्रन्थ में ऊषा, सूर्य, मारुति, इन्द्र, आदि की अलौकिक शक्तियों के रूप में स्वीकार करते हुये उनके मानवीय क्रिया-कलापों का चित्रण किया गया है।

आदि-कवि बाल्मीकि प्रकृति के रोमांचकारी प्रभाव से पूर्णतः परिचित थे। मानवी भावों के उद्दीपन के लिये उन्होंने स्थान-स्थान पर प्रकृति का आश्रय ग्रहण कर लिया हैं।

हिन्दी काव्य में प्रकृति — हिन्दी के प्रारम्भिक काव्य में प्रकृति का चित्रण प्रायः उद्दीपन और उपमान रूप में हुआ है। रासो ग्रन्थों के रचयिताओं ने जहाँ सौंदर्य निरूपण के लिये प्रकृति से उपमान ग्रहण किये हैं। वहाँ संयोग वियोग की अनुभूतियों के उद्दीपन के रूप में विभिन्न ऋतुओं का वर्णन भी किया है।" बीसलदेव रासो की नामिका की विरहाग्नि भादों की झाड़ियों से और भी प्रदीप्त हो उठती हैं।

"भादवड बरसई मगहर गम्भीर जल थल महीपल सहू भरया नीर,

× × × ×

सूनी सेज विदेश पिया, दोऊ दुःख नाल्ह क्यूँ सइहणा जाई॥"

कवि के अनुसार भला एक दुःख तो सहन किया जा सकता है किन्तु प्रकृति के मादक वैभव ने तो विरहिणी बाला के शोक संताप को द्विगुणित कर दिया है।

विद्यापति ने तो प्रकृति सौंदर्य को विभिन्न रूपों में प्रस्तुत किया है। नारी के रूप वैभव को प्रकृति के अंगराग से सुसज्जित करने की कला में जैसी दक्षता विद्यापति को प्राप्त है, वैसी सम्भवतः किसी अन्य कवि को प्राप्त नहीं हुई। वे प्रकृति को विभिन्न अलंकारों के रूप में प्रयुक्त करते हैं।

"पीन पयोधर दूबर गता, मेरू उपजल कनक लता।"

उद्दीपन के रूप में—

"फुटल कुसुम नव कुञ्ज कुटीर बन, कोकिल पंचम गावे रे।
मलयानिल हिम सिखर सिधारल, पिया निज देश न आवै रे॥"

इसके अतिरिक्त मानवीकरण का भी विद्यापति में अभाव नहीं है। उदाहरण के लिये निम्न पंक्तियाँ हैं—

"माई हे सीत वसंत विवाद, कओन विचारव जय अवसाद॥
दुई दिस मधथ दिवाकर मेल, दुजबर कोकिल साखी देत॥"

प्रकृति को माया समझने वाले संत और भक्त कवियों ने भी काव्य में उसे महत्वपूर्ण स्थान दिया है। कबीर ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिये प्रकृति को माध्यम बनाया है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"जैसे जलहि तरंग, तरंगिनि. ऐसे हम दिखलावेंगे ।
कहें कबीर सुख सागर हंसहि, हंस मिलावेंगे ।।"

संसार की नश्वरता का प्रतिपादन करते हुये वे कहते हैं—

"माली आवत देखकर, कलियन करी पुकार ।
फूले-फूले चुन लिये, काल्हि हमार वार ।।"

साधना जन्य अनुभूतियों के प्रकाशन के लिये भी प्रकृति की लीला से बढ़कर और कोई रूपक कबीर को दृष्टिगोचर नहीं होता हैं—

"अंतर कँवल प्रकासिया, ब्रह्म वास वहाँ होई ।
मन भँवरा वहाँ लुवधिया जागैगा जनकोई ।।"

महाकवि जायसी ने प्रकृति को उद्दीपन, उपमान, प्रतीक आदि रूपों में प्रयुक्त किया है । रानी पद्मिनी के सौन्दर्य चित्रण में प्रकृति के उपादानों का प्रयोग भरपूर किया गया है ।

"भँवर केस वह मालति रानी, बिसहर लुरहि लेहि अरधानी ।
बेनि छोरि झारू जौं वारा, सरग पतार होई अँधियारा ।।"

प्रेम निरूपण में भी जायसी ने प्रकृति के क्रिया-कलापों को सादृश्य रूप में प्रस्तुत किया है ।

"फूल फूल फिरि पूछौं, जो पहुँचों ओहि केत ।
तन निछावर के मिलौं, ज्यों मधुकर जिव देत ।।"

× × ×

"हौ रे पथिक पखेरू, जेहि बन मोर निबाहू ।
खेलि चला तेहि बन कहँ, तुम अपने घर जाहू ।।"

यहाँ प्रेमी के लिये मधुकर और पक्षी का रूपक भावनाओं के उत्कर्ष में गहरा योग देता है, भक्तिकाल के अन्य कवियों ने भी भावाभिव्यक्ति के लिये प्रकृति के वैभव को साधन रूप में स्वीकार किया है । कृष्ण भक्त कवियों के आराध्य-देव की तो क्रीड़ा-स्थली ही प्रकृति की रंग-भूमि थी । अतः उनके काव्य में इसकी छवि सर्वत्र दृष्टि-गोचर हो तो कोई आश्चर्य नहीं ।

रीतिकालीन काव्य में प्रकृति चित्रण—रीतिकाल का प्रमुख विषय शृङ्गार चित्रण होने के कारण इस युग में प्रकृति चित्रण को और भी अधिक प्रश्रय मिलना स्वाभाविक है । विहारी, देव, पद्माकर आदि कवियों ने प्रकृति को अनेक प्रकार से चित्रित किया है । बिहारी ने लिखा है—

"लपटी पुहुप पराग पट, सनी स्वेद मकरन्द,
आवति नारि नवोढ़ लौं, सुखद वायुगत मंद
सघन कुञ्ज छाया सुखद, सीतल मन्द समीर,
मन ह्वै जात आजौ ह्वै, वा जमुना के तीर ।"

'बिहारी'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"भौंरन को गुंजन विहार बन कुंजन में, मंजुल मलारन को गावनो लगत है ।
कहैं पद्माकर गुमान हूँ ते मान हूँ प्राण हूँ ते प्यारो मन-भावनो लगत है ।।"

'पद्माकर'

आधुनिक युग—आधुनिक युगीन हिन्दी काव्य में प्रकृति की छटा का सूक्ष्म चित्रण पर्याप्त सूक्ष्मता, सरसता एवं विशदता से हुआ है । विशेषत: छायावादी काव्य तो प्रकृति के वैभव से इतना अधिक रंजित है । कुछ विद्वानों ने प्रकृति के वैभव से इतना अधिक रंजित है कुछ विद्वानों ने प्रकृति वर्णन के विशेष प्रकार को ही छायावाद मान लिया है । पन्त ने प्रकृति को ही अपना सब कुछ माना । छायावादी कवि ने प्रकृति को एक नये रूप में देखा । प्रकृति के उन्मत्त वातावरण में उसे शान्ति मिली । पुरानी समाज व्यवस्था में उसकी वैयक्तिकता खो गई थी । प्रकृति में पुन: प्राप्त हुई इसीलिये प्रकृति को उसने सखी, सहचरी माँ, तथा प्रेयसी माना इस प्रकार प्रकृति की ओर दौड़ना व्यक्तिगत स्वच्छंदता के लिये भी था । प्रकृति दर्शन से छायावादी कवि को नया आलोक मिला । उसने सामान्य रूप से सम्पूर्ण जीवन-दृष्टि ही बदल दी । उसे पहलो बार प्रकृति की स्वतन्त्र सत्ता का आभास हुआ तथा प्रकृति उसे सजीव मालूम हुई । प्रभात की पहली किरण स्वप्न में कवि को चौंका देती है । प्रथम रश्मि ने पंत की बाल विहंगिन को गाना सिखाया उसके हृदय में आशा की लहर भर दी और अन्त में पन्त का बाल हृदय बाँह खोलकर गले लगकर प्राणों को जोड़ लेता है—निम्नलिखित पंक्तियों में कवि ने इसे प्रस्तुत किया है—

"प्रथम रश्मि का आना रंगिणि, तूने कैसे पहचाना ?
कहाँ, कहाँ है बाल विहंगिन, पाया तूने यह गाना ?"

प्रकृति के प्रति नवीन सौन्दर्य बोध उसे अनुप्राणित करता रहा । प्रकृति सजीव हो गई । एक स्थान पर और भी पन्त ने लिखा है—

"कहो कौन तुम परिहत वसना ।
म्लान मना भू पतिता सी ।।"

पन्त, प्रसाद, निराला आदि कवियों ने प्रकृति का काफी विशद् और सजीव वर्णन किया है । प्रसाद ने लिखा है—

"उषा सुनहले तीर बरसती, जयलक्ष्मी सी उदित हुई ।
उधर पराजित काल रात्रि भी, जल में अन्तर्निहित हुई ।"

मानवीकरण के रूप में—

"पगली हाँ संभाल ले, तेरा छूट पड़ा कैसे अंचल ।
देख बिखरती मणिराजी, अरी उठा ओ बेसुध चंचल ।।"

× × ×

"सिन्धु सेज पर धरा वधू अब, तनिक सकुचित बैठी सी ।
प्रलय निशा की हलचल स्मृति में, मान किये सी ऐंठी सी ।।"

'प्रसाद'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"सरल भौंहों में था आकाश,
हास में शैशव का संसार,
तुम्हारी आंखों में कर वास,
प्रेम ने पाया था आधार।"

'पंत'

"अरे कौन तुम दमयन्ती सी हो तरू के नीचे सोई,
हाय ! तुम्हें भी त्याग गया क्या, अलि नल सा निष्ठुर कोई।"

'पंत'

"दिवसा-वसान का समय,
मेघमय आसमान से उत्तर रही है।
वह सन्ध्या सुन्दरी परी सी,
धीरे, धीरे, धीरे.................."

'निराला'

उपमान रूप में प्रसाद ने अन्यत्र भी लिखा है—

"नील परिधान बीच सुकुमार, खिल रहा मृदुल अधखिला अंग,
खिला हो ज्यों बिजली का फूल, मेघवन बीच गुलाबी रंग।"

आधुनिक काव्य में प्रकृति और मानव दोनों एकाकार हो गये हैं। हिन्दी कवियों के प्रकृति प्रेम का इससे बढ़कर प्रमाण और क्या होगा कि उन्होंने प्रकृतिके वैभव के समक्ष युवती, बालाओं के मनमोहक सौंदर्य तक को ठुकरा दिया।

"छोड़ द्रुमों की मृदु छाया,
तोड़ प्रकृति से भी माया,
बाले ! तेरे बाल जाल में,
कैसे उलझा दू लोचन,
छोड़ अभी से इस जग को।"

—————

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कानपुर विश्वविद्यालय में पूछे गये निबन्ध

१. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर निबन्ध लिखिये—

(क) विज्ञान और मानव कल्याण, (ख) अनिवार्य सैनिक शिक्षा,
(ग) जनसंख्या की समस्या, (घ) भारत में प्रजातंत्र का भविष्य,
(ङ) चलचित्रों की सामाजिक उपयोगिता, (च) साहित्य और समाज।

(कानपुर वि० वि०, १९७३)

२. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर निबन्ध लिखिये—

(क) विश्व-शान्ति : समस्या और समाधान, (ख) भारतीय समाज में नारी,
(ग) मेरी कल्पना का भारत, (घ) हमारे पड़ोसी राष्ट्र,
(ङ) विद्यार्थी और राजनीति, (च) विनान की नवीनतम उपलब्धियाँ।

(कानपुर वि० वि०, १९७४)

३. निम्नलिखित विषयों में से एक पर निबन्ध लिखिये—

(क) साहित्य समाज का दर्पण है। (ख) स्वतन्त्र भारत की समस्यायें,
(ग) भारत की विदेश नीति, (घ) विज्ञान और मानव-कल्याण,
(ङ) युवा असंतोष : कारण और, निदान, (च) हमारी औद्योगिक नीति,

(कानपुर वि० वि०, १९७५)

४. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिये—

(क) साहित्य और समाज, (ख) विद्यार्थी और समाज,
(ग) विज्ञान किस ओर, (घ) ओलम्पिक खेल,
(ङ) भारतीय संविधान, (च) हमारी परीक्षा-पद्धति
(छ) भारतीय कृषि की समस्यायें।

(कानपुर वि० वि०, १९७६)

५. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर निबन्ध लिखिये—

(क) विज्ञान और मानव कल्याण, (ख) विद्यार्थियों की समस्यायें,
(ग) गोस्वामी तुलसीदास, (घ) भारतीय शासन पद्धति।

(कानपुर वि० वि०, १९७७)

६. निम्नलिखित विषयों में से एक पर निबन्ध लिखिये—

(क) युवा असन्तोष : कारण और निदान, (ख) भारत की विदेश नीति,
(ग) भारतीय निर्यात व्यापार, (घ) कहानीकार प्रेमचन्द,
(ङ) नई कविता, (च) मेरी अध्ययन पद्धति,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(छ) नारी समस्यायें,

(कानपुर वि० वि०, १९७८)

७. निम्नलिखित विषयों में से एक विषय पर निबन्ध लिखिये —

(क) भारत में लोकतन्त्र का भवष्यि,

(ख) राष्ट्रीय चरित्र निर्माण की समस्या,

(ग) गुट-निरपेक्ष देशों के सम्मेलनों का महत्व,

(घ) स्वतन्त्रता के बाद की कविता,

(ङ) युग निर्माता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र,

(च) वर्तमान शिक्षा का स्वरूप और नई पीढ़ी का अन्तर्द्वन्द्व,

(छ) सूर-सूर तुलसी शशि ।

(कानपुर वि० वि०, १९७९)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh